

वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली



क्रम संख्या

७१५

कालि नं०

२५३

११८८

सं०

JAINA INSCRIPTIONS.

(*Containing Index of Places, Glossary of Names of Acharyas, &c.*)

Collected & Compiled

BY

Puran Chand Nahar, M.A., B.L., M.R.A.S.,

Vakil, High Court, Calcutta; Member, Asiatic Society of Bengal; Bihar &
Orissa Research Society; Bhandarkar Institute, Poona; Jain Swetambar
Education Board, Bombay; &c. &c.

PART II.
(With Plates.)

1927.

Price Rs. 5/-

PRINTED BY
Turantlal Mishra
at the
VISWAVINODE PRESS,
48, Indian Mirror Street,
Calcutta.

Published by the Compiler
48, Indian Mirror Street,
CALCUTTA.

जैन लेख संग्रह ।

कतिपय चित्र और आवश्यक तालिकाओं से युक्त

द्वितीय खंड ।

संग्रहकर्ता

पूरण चंद नाहर, एम० ए०, बी० एल०,

बर्काल्ट हाईकोर्ट, रयाल एसिआटिक सोसाइटी, एसियाटिक सोसाइटी

बंगाल, रिसार्च सोसाइटी विहार—उड़ीसा आदिके मेम्बर,

विश्वविद्यालय कलकत्ता के परीक्षक इत्यादि २

कलकत्ता ।

वीर सम्बत् २४५३

मूल्य — ५५



Figure 1. View of the Fawajir from the North view



आज बड़े हर्ष के साथ "जैनलेख संग्रह" का दूसरा खंड पाठकों के सम्मुख उपस्थित करना हूँ। इसका प्रथम खंड प्रकाशित होने के पश्चात् द्वितीय खंड शीघ्र ही प्रकाशित करने की इच्छा रहते हुए भी कई अनिवार्य कारणों से विलम्ब हुआ है। न तो प्रथम खंड में कोई विस्तृत भूमिका दी गई थी और न यहां ही लिख सके।

जैनियों का खास करके हमारे मूर्त्तिपूजक श्वेताम्बर भाइयों का धर्मप्राण शताब्दियों तक बराबर आचार्यों के उपदेश से देवालय और मूर्त्तिप्रतिष्ठा की ओर कहां तक अग्रसर था और वर्त्तमान समय पर्यन्त कहां तक है यह "लेख संग्रह" से अच्छी तरह ज्ञात हो सकता है। ऐतिहासिक दृष्टि से जिस प्रकार उपयोगी समझ कर प्रथम खंड प्रकाशित किया था यह खंड भी उसी इच्छा से विद्वानों की सेवा में उपस्थित करना हूँ।

सन् १९१८ में प्रथम खंड प्रकाशित होनेपर प्रसिद्ध ऐतिहासिक श्रद्धेय श्रीमान् राय बहादुर पं० गौरीशंकर ओभा जी ने पुस्तक मेजने पर उस संग्रह के उपयोगिता के विषय में जो कुछ अपना वक्तव्य प्रकट किये थे उसका कुछ अंश नीचे उद्धृत किया जाता है। उक्त महोदय अजमेर से ता० २६-१०-१९१८ के पत्र में लिखते हैं कि :—

"आपके जैनलेख संग्रह को आदि से अंत तक पढ़ गया हूँ। आपका यह ग्रन्थ इतिहासवेत्ताओं तथा जैनसंसार के लिये रत्नाकर के समान है। अंत में दी हुई ताक्षिकार्यों की बड़े काम की बनी हैं उनसे त्रिन्न १ गद्यों के अनेक आचार्यों के निश्चित समय का पता लगता है, यदि इसके दूसरे जाग की निकलेंगे तो जैन इतिहास के लिये बड़े ही काम के होंगे।"

प्रथम खंड में साधारण सूत्री के अतिरिक्त "प्रतिष्ठास्थान", "श्रावकों की ज्ञानि-गोत्रादि" और "आचार्यों के गच्छ और सम्भत्" की सूची दी गई थी। इस बार इन सबके शिवाय राजा महाराजाओं के नाम, जो इन लेखों में पाये गये हैं, उनकी तालिका भी समय २ पर आवश्यक होती है समझ कर इस खंड में दी गई है।

मैं प्रथम खंड की भूमिका में कह चुका हूँ कि केवल ऐतिहासिक दृष्टि से यह संग्रह प्रकाशित हुआ है। जिस समय यह खंड छप रहा था उसी समय श्री राजगृह तीर्थ में श्वेताम्बर दिगम्बरों में सुकदमा छिड़ गया था पश्चात् कैसे आपस में नै हो चुका है अतएव इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु मुझे बड़े खेद के साथ लिखना पड़ता है कि दिगम्बरो लोग मुझे ऐसे कार्यमें उत्साहित करने के बड़े स्वार्थवश उक्त मुकदमे में इजहार के समय मेरे जैनलेख संग्रह पर हर तरह से हियान किये थे।

हाल में बेलोग मुह्रें होकर श्री पावापुरी तीर्थ पर जो मुकदमा उपस्थित किये हैं उस में मेरा भी मुद्दालहों में नाम रख दिये हैं। मैं प्रथम से ही धार्मिक भगड़ों से अलग रहता था परन्तु जब सर पर बोझ पड़ा है तो उठाना ही पड़ेगा। दुःख इसी बात का है कि शासननायक वीर परमात्मा के परम शान्तिमय निर्वाणस्थान में मुकदमेबाजी से अशांति फैलाना अपने जैनधर्म पर धम्बा लगाना है। मैं इस समय इस संबंध में कुछ मतामत प्रकाश करना अनुचित समझता हूँ। इसी वर्ष के अज्ञयतृतीया के दिन मेवाड़ के अन्तर्गत श्री केशरियानाथजी तीर्थ में मंदिर के ध्वजादंड आरोपन के उपलक्ष्य में जो धीमत्स कांड हुआ है वह भी दूसरा दुःख का समाचार है। काल के प्रभाव से इस तरह प्रायः हम लोगों के सर्व धर्मस्थान और तीर्थों में अशांति देखने में आती है।

ई० सम्बन् १९९४।९५ से मुझे ऐतिहासिक दृष्टि से जैन लेखों के संग्रह करने की इच्छा हुई थी तबसे अद्यावधि संग्रह कर रहा हूँ और उन सब लेखों को जैसे २ सुभीता समझता हूँ प्रकाशित करता हूँ। यद्यपि मैंने इस संग्रह-कार्य के लिये तन, मन और धन लगाने में ऋति नहीं रखी है फिर भी बहुत सो भूलें रह गई हैं। राय बहादुर पं० गौरीशंकर ओभाजी मुझे प्रथम खंड के ऋतियों पर अपना मन्तव्य सूचित किये थे जिस कारण मैं अन्तःकरण से उनका आभारी हूँ और उस पर मैंने विशेष ध्यान रखने की चेष्टा की है। यह लेख संग्रह का कार्य बहुत कठिन और समय सापेक्ष है, कई जगह समय की अल्पता हेतु और कई जगह मेरे ही भ्रम से जो कुछ पाठ में अशुद्धियां रह गई हैं उनके लिये मैं पाठकों से क्षमाप्रार्थी हूँ तथा ऐसी २ ऋतियां रहने पर भी विद्वानों की तथा अनुमतिस्सूजनों को उस ओर दृष्टि आकर्षित करने की इच्छा से इन लेखों को प्रकाशित करने का साहस किया हूँ।

प्रथम खंड में १००० लेखों का संग्रह प्रकाशित हुआ था। उनमें जो कुछ नंबर छूट गये थे वे पुस्तक के अंत में दे दिया था। इस खंड में १००१ से २१११ तक याने ११११ लेख प्रकाशित किये जाते हैं। इस वार भी भ्रमवश २ नंबर छूट गये हैं। नं० ११८७ पुस्तक के अंत में छप गया है और नं० १६६० यहां दिया जाता है।

श्वेताम्बरों के प्रसिद्ध स्थान जेसलमेर दुर्ग (जेसलमेर) के मंदिर के लेखों को संग्रह करने की अभिलाषा बहुत दिनों से थी। वहां भी क्षेत्रस्पर्शा हो गई है और निकटवर्ती " लोदपुर (लोदवा) " नामक प्राचीन स्थान भी दर्शन किया है। आगामो खंड में वहां के लेखों को प्रकाशित करने की इच्छा रही।

नं० ४८ इण्डियन मिरर प्रिंट,
कलकत्ता ।
सं० १९८४-ई० सं० १९२७ }

निवेदक
पूरण चंद नाहर ।

[1690] •

संवत् १९७१ वर्षे श्यागरा वास्तव्य कल्याण सागर सूरिः ।

• यह लेख पढ़ने के पास 'फतुहा' के दिगम्बर जैन मंदिर में श्वेत पाषाण की खंडित श्वेताम्बर मूर्ति के चरण चौकी पर है ।



सूचीपत्र ।



स्थान	पन्नांक	स्थान	पन्नांक
कलकत्ता ।		श्री कान्नापुरी तीर्थ ।	
श्री आदिनाथजी का देरासर (कुमारसिंह हाल) ...	१,२५८	कानपुरवालों का मंदिर ...	२११
हीरालालजी गुलाबसिंहजी का देरासर ...	२	लाला कालिकादासजी का मंदिर ...	२१२
लाम्बखंडजी सेठ का घर-देरासर ...	२	श्री चंद्रप्रभुजी का मंदिर ...	२१३
इंडियन म्यूजियम ...	३	” पार्श्वनाथजी का मंदिर ...	२१३
अजिमगंज - मुर्शिदाबाद ।		” सुभस्वामीजी का मंदिर ...	२१४
श्री नेमिनाथजी का मंदिर ...	३	श्री राजगृह तीर्थ ।	
सैतीया - बीरभूम ।		श्री गांधी मंदिर ...	१५८, २६५
श्री आदिनाथजी का मंदिर ...	५	” जल मंदिर ...	२६३
रंगपुर - उत्तर अंग ।		” समोसरण ...	२६४
श्री चंद्रप्रभस्वामी का मंदिर ...	५	महताव बिबि का मंदिर ...	२६४
श्री सम्मत्तेशिखर तीर्थ ।		श्री द्वात्रीकुंड तीर्थ ।	
टोक पर के चरणों पर ...	२०५	श्री गांधी मंदिर ...	२१५
श्री जल मंदिर ...	१५८, २०७	” वैभार गिरि ...	२१६
मधुवन ।		” सोन भंडार ...	२१६
श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर ...	१५६	” मणियार मठ ...	२१६
जगतसेठजी का मंदिर ...	२०८	श्री द्वात्रीकुंड तीर्थ ।	
प्रतापसिंहजी का मंदिर ...	२०६	श्री जैन मंदिर ...	१६०
		सठवाड़ ।	
		श्री जैन मंदिर ...	१६१

स्थान	पन्नांक	स्थान	पन्नांक
पटना ।		रायसाहब का घर-देरासर	१३८
शहर मंदिर	२२१	लाला खेमचंदजी का घर-देरासर	१३६
दिगम्बरी मंदिर	२२१	हीरालालजी चुन्निलालजी का घर-देरासर	१३६
म्यज्ञियम	२२१	श्री श्रोमंदिरस्वामीजी का मंदिर	१४१
बनारस ।		„ वासुपूज्यजी का मंदिर (सहादतगंज)	१४२
शिखरचंदजी का मंदिर	२२२	„ पार्श्वनाथजी का मंदिर („ „)	१४२
चंड्रावती ।		„ ऋषभदेवजी का मंदिर („ „)	१४३
श्री जैन मंदिर	१५५	„ शांतिनाथजी का मंदिर („ „)	१४३
अयोध्या ।		„ दादाजी का मंदिर	१४५
श्री अजिनाथजी का मंदिर	१४६	देहली ।	
„ समोसरणजी	१४८	लाला हजारीमलजी का देरासर	२२५
नवराई ।		चिरखाने का मंदिर	२२५
श्री जैन मंदिर	१५०	मथुरा ।	
फैजाबाद ।		श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर	१५
श्री शांतिनाथजी का मंदिर	१५३	आगरा ।	
सखनउ ।		श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर	६७
श्री शांतिनाथजी का मंदिर (बोहरनटोला)	११५	„ श्रोमंदिरस्वामीजी का मंदिर	१०५
„ ऋषभदेवजी का मंदिर (बोहरनटोला)	१२१	„ सूर्यप्रभस्वामीजी का मंदिर	१०८
„ महाधीरस्वामी का मंदिर (बोहरनटोला)	१२४	„ गौडीपार्श्वनाथजी का मंदिर	१०८
„ आदिनाथजी का मंदिर (चूड़ीवाली गली)	१३७	„ वासुपूज्यजी का मंदिर	११०
„ महाधीरस्वामी का मंदिर (सुंधीटोला)	१२८	„ केशरियानाथजी का मंदिर	१११
„ चिन्तामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर („ „)	१३१	„ नेमनाथजी का मंदिर	१११
„ संभवनाथजी का मंदिर (फूलवाली गली)	१३६	„ शांतिनाथजी का मंदिर	११२
लाला माणिकचन्द्रजी का घर-देरासर	१३८	„ महाधीरस्वामी का मंदिर	११४

स्थान	पन्नांक	स्थान	पन्नांक
ग्वालियर - लस्कर ।		१) जैन उपासना ६७
श्री पंचायती मंदिर ७२	२) चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर ६७
॥ पार्श्वनाथजी का मंदिर ७८	३) श्रीमंदिरस्वामीजी का मंदिर ६८
॥ शांतिनाथजी का मंदिर ८३	मोरखानो - बीकानेर ।	
मुरार - लस्कर ।		श्री देवी मंदिर ६९
श्री जैन मंदिर ८४	चुरू - बीकानेर ।	
ग्वालियर दुर्ग ।		श्री शांतिनाथजी का मंदिर ७१
श्री जैन मंदिर ८५	नागौर ।	
सुइानीय - ग्वालियर ।		श्री ऋषभदेवजी का मंदिर ४४
श्री जैन मंदिर ९४	॥ आदिनाथजी का मंदिर ६०
जयपुर ।		॥ सुमतिनाथजी का मंदिर ६१
श्री सुपार्श्वनाथजी का मंदिर ९५	॥ शांतिनाथजी का मंदिर ६२
॥ सुमतिनाथजी का मंदिर ९३	सूरपुरा - नागौर ।	
॥ आदिनाथजी का मंदिर ९८	श्री माताजी का मंदिर १६५
॥ पार्श्वनाथजी का मंदिर ४१	उसतरां - नागौर ।	
चंदन चौक ।		श्री जैन मंदिर १६५
श्री जैन मंदिर १६२	रत्नपुर - मारवाड़ ।	
आश्वेर ।		श्री जैन मंदिर १६३
श्री चंद्रप्रभस्वामी का मंदिर ४३	गांधाणी - मारवाड़ ।	
अलवर ।		श्री जैन मंदिर १६४
श्री जैन मंदिर ४४	जोधपुर - मारवाड़ ।	
बीकानेर ।		राजवैद्य भट्टारक श्री उद्यचंद्रजी का देरासरा २२६
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी का मंदिर ६३	नगर - मारवाड़ ।	
		श्री जैन मंदिर १६६

स्थान	पत्रांक	स्थान	पत्रांक
जसोस - मारवाड़ ।		करेड़ा - मेवाड़ ।	
श्री जैन मंदिर ...	२२६	श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ...	२३२
नाकोड़ा - मारवाड़ ।		” बावन जिनालय ...	२३५
श्री शांतिनाथजी का मंदिर ...	२२७	नागदा - मेवाड़ ।	
वाड़मेर - मारवाड़ ।		श्री शांतिनाथजी का मंदिर ...	२४३
श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ...	२२८	देखवाड़ा - मेवाड़ ।	
घाणेश्वर - मारवाड़ ।		श्री पार्श्वनाथजी का बड़ा मंदिर ...	२४४
श्री महावीरस्वामी का मंदिर ...	१६७	” नया मंदिर ...	२५०
खारची - मारवाड़ ।		” ऋषभदेवजी का मंदिर ...	२५२
श्री जैन मंदिर ...	२८३	” पार्श्वनाथजी का बस्ती ...	२५४
खंडप - मारवाड़ ।		” तपागच्छ का उपासरा ...	२५४
श्री जैन मंदिर ...	२८४	” खंडहर उपासरा ...	२५७
मांकलेश्वर - मारवाड़ ।		शिलालेख ...	२५७
श्री जैन मंदिर ...	२८४	गुडली - मेवाड़ ।	
नगर - खेड़गढ़ ।		श्री जैन मंदिर ...	२८३
श्री शांतिनाथजी का मंदिर ...	१६७	आबू रोड ।	
उदयपुर - मेवाड़ ।		श्री आदिनाथजी का मंदिर (धर्मशाला) ...	२५६
श्री शीतलनाथस्वामी का मंदिर ...	६	श्री आबू तीर्थ ।	
” बासुपूज्यजी का मंदिर ...	२१	श्री आदिनाथजी का मंदिर (देखवाड़ा) ...	२५६
” गौड़ीपार्श्वनाथजी का मंदिर ...	२२	” शांतिनाथजी का मंदिर (अचलगढ़) ...	२६०
” पार्श्वनाथजी का मंदिर ...	२२८	” ऋषभदेवजी का मंदिर (”) ...	२६२
” ऋषभदेवजी का मंदिर, हाथीपोल ...	२२६	पिंडवाड़ा - सिरोंही ।	
” ऋषभदेवजी का मंदिर, कसेरी गली ...	२२६	श्री महावीरजी का मंदिर ...	१७०
” ऋषभदेवजी का मंदिर, सेठोंकी हवेली के पास ...	२३०	उधमण - सिरोंही ।	
		श्री जैन मंदिर ...	२७६

स्थान	पन्नांक	स्थान	पन्नांक
रोहेड़ा - सिरौही ।		श्री तारंगा तीर्थ ।	
श्री जैन मंदिर ...	२०६	श्री अजितनाथ स्वामी का मंदिर ...	१७१
जारज - सिरौही ।		श्री शत्रुंजय तीर्थ ।	
श्री जैन मंदिर ...	२०८	दिगम्बर मंदिर ...	१७६
गुड़ा - सिरौही ।		पल्लीताना ।	
श्री जैन मंदिर ...	२०८	श्री सुमतिनाथजी का मंदिर ...	१७४
तिवरी - सिरौही ।		तल्लाजा - काठियावाड़ ।	
श्री जैन मंदिर ...	२०८	जैन मूर्ति पर ...	१८८
पाडीव - सिरौही ।		शिलालेख ...	१८८
श्री जैन मंदिर ...	२०६	सिहोर - काठियावाड़ ।	
मफिया - सिरौही ।		श्री सुपाश्वनाथजी का मंदिर ...	१७४
श्री जैन मंदिर ...	२०६	घोधा - काठियावाड़ ।	
निंबज - सिरौही ।		श्री सुविधिनाथजी का मंदिर ...	१८१
श्री जैन मंदिर ...	२०६	खोरवाड़ - जुनागढ़ ।	
तुड़वाल - सिरौही ।		श्री जैन मंदिर ...	१८०
श्री जैन मंदिर ...	२८०	शोयालबेट - काठियावाड़ ।	
अँजार ।		श्री जैन मंदिर ...	१८३
श्री पाश्वनाथजी का मंदिर ...	१६८	जामनगर - काठियावाड़	
खीमत - पालणपुर ।		श्री शान्तिनाथजी का मंदिर ...	१८५
श्री जैन मंदिर ...	१७१	,, आदोश्वरजी का मंदिर ...	१८७
डीसा ।		मांगरोल - काठियावाड़ ।	
श्री आदीश्वरजी का मंदिर ...	२८०	श्री जैन मूर्ति पर ...	१८६
१. महावीर स्वामी का मंदिर ...	२८१		

(६)

पत्रांक	स्थान	पत्रांक
	बेरावल - काठियावाड़ ।	घरदेरासर (गाम देवी) ... २०४
श्री जैन मंदिर ... १८६	सिरपुर - सी० पी० ।	
शिलालेख ... १८६	श्री जैन मंदिर ... २०४	
	ऊना - काठियावाड़ ।	शिलालेख ... २०४
श्री जैन मंदिर ... २००	रायपुर - सी० पी० ।	
	गाणेश - गुजरात ।	श्री जैन मंदिर (सदर बजार) ... २०४
श्री जैन मंदिर ... १६२	हैदराबाद - दक्षिण ।	
	प्रजासपाटण - गुजरात ।	श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर (बेगम बजार) ... २६६
श्री बाबन जिनालय मंदिर ... १६३	„ पार्श्वनाथजी का मंदिर (कारवान साहुकारी) ... २६८	
	खंजात - गुजरात ।	„ पार्श्वनाथजी का मंदिर (रेसीडेन्सी बजार) ... २६६
श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर ... १६५	„ पार्श्वनाथजी का मंदिर (चार कथान) ... २६६	
	पोसिना - जरुअह ।	मद्रास ।
श्री जैन मंदिर ... १६६	श्री चंद्रप्रमस्वामी का मंदिर (शूला बजार) ... २०१	
	वरुवई ।	„ चंद्रप्रमस्वामी का मंदिर (साहुकार पेठ) ... २०२
श्री आदिनाथजी का मंदिर ... २०३	„ जैन मंदिर (" ") ... २०३	
		दादाजी का बंगला ... २०३





प्रतिष्ठा स्थान ।



	लेखांक		लेखांक
अकबराबाद १४५५	इंदलपुर १३६१
अखलगढ़ महापुरा २०२७	इंद्रिय १२७७
अजीमगंज १८११	उदर्राज २०१०
अजुपुर १७१७	उग्रसेनपुर १४५६
अणहिलपुर (पत्तन)	१७८६, १७८८, १८८०, १८८३	उज्जयंत १७८१
अमदावाद १२५४	उथमण २०७०
अयोध्या	१६४७, १६४८, १६४९, १६५१, १६५३, १६५४, १६५५, १६५६, १६५७, १६७९	उदयपुर (मैदपाट)	१०२८, ११०६, १११५, १११६, १८६८
अमरगलपुर	... १४५४, १४७८, १४९९	उन्नतपुर	... १७१७, १७९६
अर्बुदगिरि २०२५	उस १०९३
अलघर १४६४	कईउलि १६१५
अलाचलपुर १५७४	कच्छ-मांडवी १८१२
अष्टापद १८०८	कछोली १०५३
अहमदाबाद (गुर्जरदेश)	१०३०, १३०८, १४७५, १५४०, १६३५, १७६५, १८८०	करहेटक (करेड़ा) १६५७
भागरा	१४४९, १४५२, १४५३, १४५७, १४६७, १४६९, १५०१, १५२०	कर्क रा १११७
भागरा दुर्ग	१५८०, १५८१, १५८३, १५८४, १५८५	कंधरावी १६२७
भागोया १०६२	कंपिलपुर	... १६११, १६३०
भाजुलि १५६०	काशी	१६६२, १६६४, १६६५, १६८२
भानंदपुर	१५३१, १५३२, १६४६, १६६७, १६६८, १६७३	कोठारा १४८६
भाबरगि १७६६	कुण्णिगिरि १०८४
भासपुर १०२८	कुतबपुर १५८३
		कुमारगिरि १२१४
		कूकरवाड़ा १३८७

(७)

प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक	प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक
रुण्डगाढ	... ११६७	जयनगर	... ११७६, १२२७, १२२८
कन्नोकराड (पन्नोकराड)	... १८४७	जयपुर (जयनगर)	१६४७, १६४८, १६५०, १६५१, १६५३, १६५४, १६५५, १६५६
किरहालू	... ११६५	जाबू	... १७५७, १७७४
खोमसा	... १२७८	जालोर महादुग	... ११००
खीमंत	... १७२३	जाधर	... १३८६
मंधार	... १००४	जीणंधारा	... १५६६
बाणउलि	... १७८८	जूहाख्द	... १२८१
गिरनार	... १८०८	जैनगर	... १२०५
गिरिपुर	... १०८६	ज्यायपुर	... ११०४
गुंडलि	... १५५१	भाड़उलि	... १६०२
गोपगिरि	... १४२८	टिंथानक	... १७७७
गोपीचल	... १२३२	टौबानी	... १२६८
गोपाचल दुर्ग	... १४२६, १४२७	डूंगरपुर	... २०२६
गोपाचलगाढ दुर्ग	... १४२६	तारंगा दुर्ग	... १७२४
धनौध	... १७७१, १७७३	दिल्ली	... १७६६
धकवर्तिनगर (गूर्जरदेश)	... १७६३	दीवर्गदिर (दीघ)	१७४३, १७६२, १७६३, १७६४
चंकिनी	... १५४४	देउलवाड़ा (मेवाड़)	... २००६
चंदेरा	... १२०६	देकावाड़ा	... १३२३
चंद्रावती	... १६८१, १६८६	देलवाड़ा	... १६६२
चंपापुर	... १८१०	देवकापाटण	... १७८७
चारकवाण	... २०५२	देवकुलपाटक (पुर)	१११२, १६५८, १६६४, २००८
चारकवाण	... २०५३	देवड़ा	... २०२५
चित्रकूट	... १७८६, १६५५	दौलसी बाघ	... २०४८
चित्रकूट दुर्ग	... १४१६	द्वीप बन्दिर	... १७६०, १७६७
चौरवाटक (जुनागढ)	... १७६६	धवलकका	... १७८३
जहतपुर	... १४३७	धार नगर	... ११६१
अयतलकोट	... १२७३		

(ए)

प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक	प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक
नगर (मारवाड़)	... १७१३, १७१४	बिहार	... १६६७
नटोपद्र	... १६४६	भोलुद्राम	... २०७३
जयाछ	... १३०७	भेष	... १५७०
नवोननगर	... १७८२	मकदावाद् (मधुदावाद्)	१०१८, १७०३, १८१०, १८११, १८१२, १८१३, १८१४, १८१६
नव्यनगर (हल्लार देश)	... १७८१	मद्रास (शूला)	... २०६६
नंदानि	... १६६४	मद्रासत पत्तन (साहकार पेंठ)	... २०७०
नागपुर	१२७४, १६७६	मधुमती	... १७७६
नागोर	... १४१७	मधुवर्मा	... १८२७
नारदपुरी	... १८६१	मलारणा	... १४८५
नासणुलो	... १६३३	महिसाणा	११२७, १५६५
नेवोआण मगम	... १३०२	मंगलपुर	... १७६६
पत्तन	२०१६, २२०२, १३५४, १४०५, १५३६, १६१०, १६६०, १७१३, १७१४, १७६१, १६८८, २०६१, २१०६	मंडप	... १४७२
पन्नन नगर	... १६०६, १६१३, २०११	मंडप दुर्ग	... १३१४
पाटण	... १४६७	मंडास्ता	... १०१५
बादलिनगर	... १६७१	मंडोवर	... १३५०
पालणपुर	११६०, १२६१, २०७४	मामुलक	... १२३३
पावापुरो	१८०८, २०३६, २०३७	मारबीआ	... १२१२
पूर्वाचलगिरि	... १६६४	मालपुर	... ११३२
पीरोजपुर	... १३४६	मांगलोर	... १७८७
पेंथापुर	... १७३०	मांडल (गुर्जर देश)	... १८०८
बडली	... ११८१	मांडलि	... १५०५, १६२४
बालूबर	२०१७, १०१८, १०१६, १८२१, १८२४	मांही	... १०६७
बोकातेर	१२०५, १३४६, १३५०, १४४१, १६४६	मिरजापुर	... १६५६
बलदउठ	... १६०४	मुरारि	... १४२५
बलासर	... १७३५	मूडहटा	... १५७२
बंगलादसति	... १६७६	मेडना	... ११६७, १३२८, १४२५

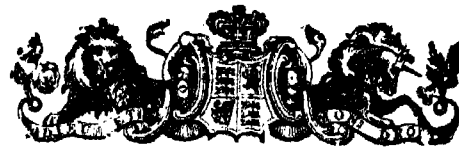
प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक	प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक
मेड़ता नगर	...	बद्धमान	...
मेहणा	...	बाडज	...
मोरखोयाणा	...	बाणारसी	...
योगिनीपुर	...	बाराणसी	...
रणासण	...	बाराही	...
रत्नपुर	...	विक्रमनगर	...
रत्नपुर (अयोध्या)	१६६२, १६६३, १६६४, १६६५, १६६६	विक्रमपुर	...
रत्नपुर (मारवाड)	...	विद्यापुर	...
रंगपुर	...	विश्वलनगर	...
राजगृह	...	बोबावेड़ा	...
राजनगर	१०१४, १५१६, १७५०, १८४०, २०४२	वीरमग्राम	...
राजपुर (सी० पी०)	...	वीरमपुर	...
रामगढ दुर्ग	...	वीरवाडा	...
रालज	...	बोचलापुर	...
रेवत	...	बोसनगर	...
रेवत	...	बोसलनगर	...
लक्षणपुर	१५२६, १५३०, १५३१, १५३३, १५३५	व्यवहार गिरि	...
लखनऊ	१५२५, १५२६, १५२७, १५२८, १५३२, १५८६	शाल्मलीयपुर	...
लूद्राड़ा	...	शिखरगिरि	...
लाद्राद्र	...	शूलाग्राम	...
बटपद्र	...	धागर	...
घट्टनगर	...	सषबाराही	...
घडली	...	सखारि	...
बड़ेबा	...	सत्यपुर	...
घणद्र	...	समेतशैल	...
घनरिया	...	सम्मेतगिरि	...
करखुद	...	सम्मेतशिखर	...

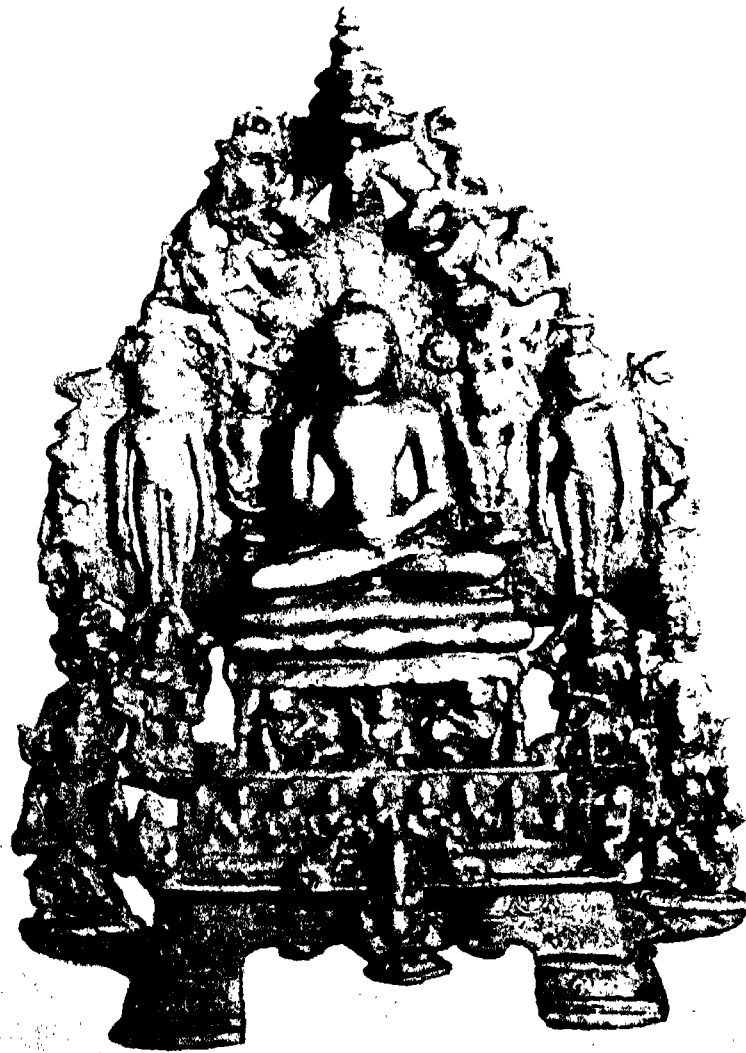
प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक	प्रतिष्ठा स्थान	लेखांक
सवाई जयनगर (जेनगर)	११७८, १२१६, १४४१	सोरोहो	१२८३, १३३६, १४६५
सहाजगपुर	... १७७८	सीहा	... १४७७
सहूआला	११६३, १७५३	सुजाउलपुर	... ११७३
साकर	... ११६८	सुद्रोयाणा	... १२६६
साचुरा	... १७२६	सुरमाणपुर	... १७०७
सावलटन	... ११६५	साजात	... १३२०
साहराज	... १४६६	सम्मतीर्थ (स्वभात)	११६६, १२१५, १७५६, १७६३, १७६४, १६४२
सानपुर	... १३६८	सम्मतीर्थ वंदिर	... १७६६, १८००
सिद्धक्षेत्र	... १४८६	स्वातराय नगर (वाग्घरदेश)	... १७६५
सिद्धपुर	१३३६, १४४४	खिराट	... २०६७
सिंहपानाय	... १४२६	हालावाडा	... २०६४
सिंहदुद्रहा	... १७७६	हावल ग्राम	... २१०६
साणुरा	... १०६१	हुगली	... १८४७
सातापुर	... १०११	हंदराबाद (दक्षिण)	... २०६१
सोपोर	... १८२६		
साकंज	... १७५१		

राजाओं की सूची ।

संवत्	नाम	स्थान	लेखांक	संवत्	नाम	स्थान	लेखांक
१६३३	अकबर, सुरत्राण		१७८२	१७१३	अकबर, पातिसाहि		१७६७
१६५२	अकबर, पातिसाहि		१७६६	१४६१	कुंभकणे, राणा	मेवाड़	२००६
१६६१	" "		१७६४	१४६४	कुंभकणे, भूपति	देवकुलपाटक	१६५८
१६७०	अकबर, सुरत्राण		१६२८	१६६३	जगत्सिंह, राणा	उदयपुर	१७२६

संवत्	नाम	स्थान	लेखांक	संवत्	नाम	स्थान	लेखांक
१८०१	जगतसिंह, महाराणा	उदयपुर	१११५	११५०	महीपाल	..	१४२६
१५६६	जगमाल, महाराजाधिराज	अचलगढ	२०२७	११५०	मूलदेव	गोपाचल	१४२६
१५४८	जशसिंध, राजा		२०३६	११५०	मंगलराज	..	१४२६
१६७८	जसवंतसिंहजी, जाम,	नवानगर	१७८१	१२७२	रणसिंह, मिहरराज	टिंवान	१७७७
१६७१	जहांगीर, पातिसाह	आगरा दुर्ग १५८०-८१-८२	१७६८	१७६८	राघव, राजा	देवकुलपाट रु	२००८
१६७१	" "	आगरा १५८३-८४	१६६७	१६६७	लक्ष्मराज, जाम	नवानगर	१७८१
१६७१	जहांगीर, पातिसाह सवाई सुरत्राण	१५७८-७९	१०३४	१०३४	वज्रदाम, महाराजाधिराज		१४३१
१६७१	" "	उग्रसेनपुर	१४५६	११५०	वज्रदाम	..	१४२६
१६७४	जहांगीर साह,		१४६०	१२११	वस्तुपाल, महामात्य	अणहिलपुर	१७८८
१४६७	डूंगरसिंह, महाराजाधिराज	गोपाचल	१४२७	१५६२	धीकाजी, महाराजा राई	धीकानेर	१३५०
१५१०	" "	गोपगिरि	१४२८	१६३३	शबसल, जाम	नवीननगर	१७८२
१५१०	डूंगरसिंहदेव, राजाधिराज	गोपाचल	१२३२	१६७६	शत्रुसत्य, जाम,	नवानगर	१७८१
१५२५	डूंगरसिंह, रावधर सायर	अर्बुदगिरि	२०२५	१६७१	शाहजहां		१५२०
१६६६	तेजसिजी, राउल	बारमपुर	१७१५	१८६३	सहादतअलि, नवाय	लखनऊ	१५२५
११५०	त्रैलोक्यमल	"	१४२६	१६८६	साहजांह, पादशाह		१७६५
११५०	देवपाल	गोपाचल	१४२६	१६८८	साहिजां, पातिसाह सवाई	अमगलपुर	१४५४
११५०	दशपाल	"	१४२६	१६६८	साहजांह, पातिसाह		१६६७
१३६२	पृथ्वीचंद्र, महाराजाधिराज	चित्रकूट	१६५५	१८५६	सुरतसिंह, महाराज	धीकानेर	१३४६
१५४६	भीमसिंध, रावल	मरडासा	१०१५	११५०	सूर्यपाल	"	१४२६
११५०	भुवनपाल	"	१४२६	१५२६	सोमदास, राउल	डूंगरपुर नगर	२०२६
१५५२	मल्लसिंहदेव, महाराजाधिराज.	गोपाचल	१४२६	१६६६	हठीसिंहजी, महाराज	रामगढ दुर्ग	१८६६





METAL IMAGE OF SHRI ADINATH

Dated, V. S. 1077, (A. D. 1020.)

JAIN INSCRIPTIONS.

जैन लेख संग्रह ।

दूसरा खण्ड ।

कलकत्ता ।

श्रीआदिनाथजी का देरासर ।

कुमारसिंह हाल—न० ४६, इण्डियन मिरर स्ट्रीट ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[1001] *

- (१) पञ्जक सुत अंब
(२) देवेन ॥ सं १०९९

[386] ×

(१) ब्रह्माल सत्क सं

* चित्र देखो । लेख पश्चात् भागमें खुदा हुआ है । यह प्राचीन मूर्ति भारतके उत्तर पश्चिम प्रान्त से प्राप्त हुई है । दोनों तर्फ कायोत्सर्ग की खड़ी और मध्यमें पद्मासनकी बैठी मूर्तियाँ हैं । सिंहासनके नीचे नवग्रह और उसके नीचे वृषभ युगल है, इस कारण मूल मूर्ति श्रीआदिनाथजी की और यक्ष यक्षिणी आदियों के साथ बहुत मनोर और प्राचीन है ।

× यह लेख प्रथम खण्डमें छपा था, पुनः जोधपुर निवासी पण्डित रामकर्णजी का यह संशोधित पाठ है । इसमें भी दोनों तर्फ कायोत्सर्गकी और मध्यमें पद्मासनकी मूर्ति है और गुजरात प्रान्तसे मिली है ।

(३)

- (१) पंकः श्रिया वे सुन
(२) स्तु पुन्नक श्राऊः सी
(४) सगस सूरि जक्तश्चन्द्र कु
(५) छे कारयामासः ॥
(६) संवतु
(७) १०७२

[1002]

संवत् १६४२ वर्षे पो० सु० १२ सोमे श्रीअजित बिंबं का० सा० नानू जुदिजाकेन प्र० श्रीहीरविजय सूरि ।

धातुकी चौविशी पर ।

[1003]

ॐ ॥ श्रीमन्निवृत्तगण्डे संताने चाम्रदेव सूरीणां । महणं गणि नामावा चेष्टी सर्व देवा गणिनी ॥ वित्तं नीतिश्रमायातं वितीर्य शुजवारया । चतुर्विंशति पट्टाकं कारयामास निर्मलं ॥

हीरासालजी गुलाबसिंहजी का देरासर—चितपुर रोड ।

धातु की चौविशी पर ।

[1004]

संवत् १५०६ वर्षे श्रीश्रीमास्रहातीय दोसी मूंगर जार्या म्यापुरि सुत मुंजाकेन जार्या सोही सुत वीका युतेन आ० श्रेयसे श्रीसुविधिनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगण्डे श्रीअमरसिंह सूरि पट्टे श्रीहेमरत्नगुरुपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गन्धार वास्तव्य ॥ शुजं जवतु ॥ श्रीः ॥

साजचन्दजी सेठ का घर देरासर—पुलिस हस्पिटैस रोड ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[1005]

संवत् १६२३ ज्येष्ठ शुक्ल ५ महोपाध्याय युग प्र० विजयेन प्रतिष्ठितं जं । यु । प्र । ज श्रीजिनरंगसूरि राज्ये ।

(३)

[1006]

संवत् १९२९ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ९ रवौ खरतरगङ्गीय महोपाध्याय रामविनयगणिना प्र० पार्श्वबिम्बं ।

स्फटिक के बिम्ब पर ।

[1007]

संवत् १७९९ मा । सु० १३ प्र । ख । श्रीजिनचन्द्र सूरिजिः ।

रौप्य के चरण पर ।

[1008]

जंगम युग प्रधान जटारक श्रीजिनदत्त सूरीश्वराणां पाडुके । श्रीजिनकुशलसूरीश्वराणां पाडुके । वीर संवत् २४४७ वि० १९९९ आषाढ शुक्ल १ चन्द्रे रांका गोत्रीय साजचन्द्र शेठेन आत्मकल्याणार्थं इमे पाडुके निर्मापिते, श्री वृ० ख० ग० ज० युग० जटारक श्रीजिनचन्द्र सूरि विजयराज्ये श्रीमद्विद्मण्णुसाचार्य श्रीनेमिचन्द्रसूरि अन्तेवासि पं० श्रीहीराचन्द्रेण यतिना प्रतिष्ठापिते श्री शुभं भूयात् ।

इण्डियन म्युजियम—चौरङ्गी रोड ।

धातु की मूर्ति पर ।

[1009]*

संवत् १४५९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ श्रीमूखसंघे प्रतिष्ठाचार्य श्रीपद्मनन्दि देवोपदेशेन श्रीजीमदेव । जार्या महदे । सुत गणपति जार्या करमू ॥प्रणमति ।

—•••—

अजिमगञ्ज—मुर्शिदाबाद ।

श्रीनेमनाथजीका मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1010]

संवत् १५१९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ दिने सोमवारे उकेश वंशे छोटा गोत्रे सा० वीशख जार्या

* यह चौविशी हाल में यहां पर दिल्ली से आई है ।

(४)

जावसदे तत्पुत्र सा० कर्मा तज्जार्या कउतिगदे तत्पुत्र सा० सहसमस्र श्रावकेण सपरिवारेण
आत्मश्रेयोर्थं श्रीचन्द्रप्रज्ञ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगळे श्रीजिनराजसूरि पढे
श्रीजिनचन्द्रसूरिजिः ॥

[1011]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ४ सोमे श्रोब्रह्माणगळे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि विरूच्या
जार्या मुक्ति सुत हीरा जार्या हीरादे सुत जावड करूच्याच्यां स्वपित्रोः श्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथ
विंबं पञ्चतीर्थी कारापितः प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागरसूरि पढे श्री विमल सूरिजिः ॥ सीतापुर
वास्तव्यः ॥

[1012]

संवत् १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्ले ७० ज्ञातीय विद्याधर गोत्रे । सा० सूमण ।
जा० सूमस्रदे । पु० वेला जा० बगू नाम्ना पु० सोमा युतथां स्वत्रातृ पुण्यार्थं श्रीआदिनाथ
विंबं का० प्र० वृहज्जळे धोकनीयावटके (?) श्रीधर्मचन्द्रसूरि पढे श्रीमलयचन्द्र सूरिजिः ।
खोद्राड ग्राम ॥

[1013]

॥ ५० ॥ संवत् १५२२ वर्षे आषाढ सुदि ७ उकेशिज्ञातीय रुवेयता गोत्रे । सा० केसराज
जार्या रतनाकेन श्रेयसे श्रीसुमति विंबं प्रतिष्ठितं धर्मघोषगळे श्रीसाधु ॥

[1014]

संवत् १९०६ व । ज्ये । गु० श्री राजनगरवास्तव्य । प्राग्वाटज्ञातीय वृहद्दशाषायां सा०
रुषजदास जा० ऊहु नाम्न्या श्रीनमिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तषागळे । ज० । श्री ५
श्रीविजयानन्दसूरिजिः ॥ आचार्य श्री ५ श्रीविजयराजसूरि परिकरितैः ॥ श्रीरस्तु । ज ॥ १ ॥

पाषाण की मूर्ति पर ।

[1015] *

संवत् १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीमूलसंघे जट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवा सा० राज
पापडीवाल सप्रणमति का० श्रीजीमसिंघ रावस । सहर मण्णासा ।

* धरणेन्द्र पद्मावती सहित श्रीपाश्वनाथजीकी श्वेत पाषाणकी २ मूर्तियां पर एकही तरहके २ लेख हैं ।

(५)

सैंतीया (वीरभूम)

श्री आदिनाथजी का मन्दिर ।

धातुकी पञ्चतीर्थी पर ।

[1016]

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ श्रीजणसवंशे दोण वकूआ चार्या मेघू पुत्र जईता सुश्रावकेण जाण जीवादे त्रातृ जटा सहितेन स्वश्रेयसे ॥ श्रीअंचलगहेश्वर । श्रीजयकेसरि सूरीणामुपदेशेन श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन श्री पत्तने ॥ ठः ॥

रङ्गपुर (उत्तर बङ्ग)

श्रीचन्द्रप्रजस्वामी का मन्दिर—माहीगञ्ज ।

शिल्ला लेख नं० १

[1017]*

- (१) अत्यद्भुतं सज्जनसिद्धिदायकं जव्यांगिना मो
- (२) ककरं निरन्तरं जिनालये रङ्गपुरे मनोहरे चन्द्रप्रजं
- (३) नौमि जिनं सनातनं ॥ १ ॥ संवत् १७९३ मि । माघ वदि १ । र
- (४) वौ श्रीरङ्गपुरे । ज । श्रीजिन सौजागा सूरिजी विजयी ।
- (५) राज्ये वा । आनन्दवह्मजगणेरुपदेशात् श्रीमह्मुदावा
- (६) द बालूचर वास्तव्य हू । निहालचन्द तत्पुत्र बाबू इन्द्रचण
- (७) न्द्रेण श्रीचन्द्रप्रज जिनः प्रासादः कारापितः प्रतिष्ठापि
- (८) तश्च । विधिना ॥ सतां कव्याण वृद्ध्यर्थम् ॥
- (९) श्रीरस्तुः ॥ १ ॥

* यह शिलालेख श्याम वर्णके पत्थर पर लंबाई ६३-१४ चौड़ाई ६३-६ सभामण्डप के दक्षिण तर्फ की दीवार पर लगा हुआ है ।

(६)

शिक्षा खोल नं० २

[1018] *

- (१) अत्यद्भुतं सज्जनसिद्धिदायकं जव्यांगिना
- (२) मोक्षकरं निरन्तरं जिनालये रङ्गपुरे मनोहरे चं
- (३) ड्रप्रज्ञं नौमि जिनं सनातनं ॥ १ ॥ संवत् १९
- (४) ३२ शाके १७९७ मिति आषाढ सुदि ए चन्द्रवासरे
- (५) रङ्गपुरे । ज । श्रीजिनहंस सूरीजी विजे राज्ये ॥ श्री
- (६) हंसविद्यास गणि तत्शिष्य श्री कनकनिधान मुनि
- (७) रूपदेशेन । श्रीमधुदादाद बाबूचर वास्तव्य ॥
- (८) डूगड़ इन्द्रचन्द्रजी जीर्णोद्धार कारापितं ॥ नाहटा मौ
- (९) जीरामजी तत्पुत्र नाहटा गुलाबचन्दनी तत्पुत्र इन्द्र
- (१०) चन्द्रजी मारफत श्री चन्द्रप्रज्ञ जिन प्रासादस्य सिषरं
- (११) नवीन रचिता वेदका नवीन निजद्रव्यै कारापितं ॥ प्रति
- (१२) ष्टितं विधिना सतां कट्याण वृद्ध्यर्थम् ॥ १ ॥
- (१३) ॥ मिस्तरी षोडाराम सिखावट बाबू मक्सूदका

मूल नायक की पाषाण की मूर्त्ति पर ।

[1019]

संवत् १७९३ वर्षे.....सुदि दिने.....श्रीचन्द्रप्रज्ञ विंमिदं प्रतिष्ठितं ज० श्रीजिनहर्ष सूरी कारापितं.....शीलचन्द्रेन । बाबूचर मध्ये ।

पाषाण की मूर्त्तियों पर ।

[1020]

संवत् १९३६ मिति आ०.....शुक्रवारे यु । प्र० श्री.....जी विजयराज्ये श्री शान्ति जिन कारापितं आणन्दवद्वज्जनी तत् शिष्य.....प्रतिष्ठितं ।

* यह मिर्जापुरी पत्थर पर खुदा हुआ न० १ के समान साइज का बायें तर्फ दीवार पर लगा हुआ है ।

(७)

[1021]

सं० १९३६—सौजाग्यसूरिजी विजय राज्ये नाहटा मौजीरामजी तत्पुत्र गुलाबचन्दजी श्री आदिजिन कारापितं श्री आणन्द..... ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[1022]

सं० १९२० मि० फा० कृ० २ बुधे सा० प्रतापसिंहजी डुगड़ जार्या महताब कुँवर श्री श्रेयांस जिन बिंबं कारापितं ।

[1023]

सं० १९२० मिः फा० कृ० २ बुधे सा० प्रतापसिंह जार्या महताब कुँवर श्री अग्निदत्त २२ जिन बिंबं का० ।

चौविशी पर ।

[1024]

संवत् १९०१ मित्ती आषाढ सुदि १३ कारितं चोरबेड़ीया सा० सांवख पतिना ॥ प्रतिष्ठितं उ० श्री कर्पूरप्रिय गणित्तिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1025]

सं० १५१३ व० ज्येष्ठ वदि ११ उके० झा० कोठारी गोत्रे सा० मफुणा जा० काउ पु० नेता डूंगर नेताकेन जा० नेतादे स० श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारि० प्र० श्रीसंडेर गढे श्री ईश्वर सूरित्तिः

[1026]

संवत् १५५७ वर्षे पोष सुदि १५ प्राग्वाट झातीय सा० सायर जा० रत्नादे पु० सा० माळाकेन जा० हांसू पुत्र गोइन्दादि कुटुम्बयुतेन निज श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री हेमविमल सूरित्तिः ॥ श्रीः ॥

(७)

दादाजी का मन्दिर-माहीगञ्ज ।

पाषाण के चरण पर ।

[1027]

संवत् १८७९ रा वर्षे जेठ मासे शुक्ल पक्षे १० तिथौ बुधवासरे श्री चन्द्रकुलाधिप ।
वृहत् श्री खरतरगञ्जे जंगम युगप्रधान जट्टारक । श्री १०८ श्री जिनदत्त सूरिजी श्री १०८
श्री जिनकुशल सूरिणां चरण स्थापितं । उ । श्री रत्नसुन्दरजी गणि उपदेशात् साह श्री डूगड़
बुधसिंहजी तत्पुत्र । बाबू श्री प्रतापसिंहजी कारापितं ॥ श्रीसङ्घ हितार्थम् । जङ्गमयुगप्रधान
जट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिजी विजय राज्ये श्रीरस्तु ॥ श्रीकल्याणमस्तुः ॥

उदयपुर (मेवाड़)

श्री शीतलानाथस्वामी का मन्दिर ।

[1028]*

ॐ ॥ संवत् १६९३ वर्षे कार्तिक वदि ॥ सोमवासरे उदयपुर राणा श्री जगत्सिंह राज्ये
तपागञ्जे श्री जिन मन्दिरे श्री शीतलजिन बिंबं पित्तलमय परिकर कारितः आसपुर वास्तव्य
वृद्धशाखा प्राग्वाट ज्ञातीय पं० कान्हा सुत पं० केसर जार्या केसर दे तत्सुत पं० दामोदर
स्वकुटुम्बयुतैः ॥ जट्टारक श्री विजयदेव सूरेश्वर तत्पट्टप्रजाकर आचार्य श्री विजयसिंह
सूरेश्वर निदेशात् सकलसङ्घयुतैः पण्डित श्री मतिचन्द्र गणिजिः वासहेपः श्री सकलसङ्घस्य
कल्याणं ज्ञूयात् ॥

धातु की चौविशी पर ।

[1029]

संवत् १४०९ वर्षे जे० व० ११ प्राग्वाट दो० सूरु जा० पोमी सुत दो० आसाकेन
जा० रूपिणि सुत राउल माणिकलाल जोगादि कुटुम्बयुतेन स्वत्रात् गोला स्वसुत सारङ्ग
श्रेयोर्ष श्री पार्श्वनाथ चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० तपागञ्जनायक जट्टारक प्रभु श्री सोमसुन्दर
सूरिजिः ॥ श्रीरस्तु ॥ वीसलनगर वास्तव्यः ॥

* मूल बिंब श्वेत पाषाण का प्राचीन है, लेख मालूम नहीं होता ; पश्चात् धातु की परकर बनी है उस पर यह लेख है ।

(६)

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1030]

सं० १५१७ वर्षे पोष वदि ७ रवौ प्राग्वाट झा० सा० कूंगर जा० सुहासिणि पुत्र लषम सिंहेन जा० सोनाई पुत्र नगराजादि कुटुब युतेन स्वपितुः श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं । प्रतिष्ठितं तपागञ्जे श्री रत्नशेखर सूरिजिः अहिमदाबाद वास्तव्यः ।

[1031]

सं० १५५७ वर्षे मार्गशिर सुदि ९ शुक्रे श्री नाष्ठा वासुगञ्जे उस० कावू गोत्रे का० सोंगा जा० सोंगसदे पु० धूसाकेन चार्या पूजी सहितेन पूर्वज पूण्यार्थ श्री शीतलनाथ बिम्बं का० श्री महेन्द्र सूरिजिः ॥

पञ्चतीर्थी और मूर्तियों पर । *

[1032] *

१ सं० ७७ गे० पद्मा विनिगो बाज० लृगापति कारितं ।

[1033]

ॐ ॥ संवत् ११९६ माघ सुदि ११ गुरौ सहज मत्साम्बा श्री ऋषजनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रामदेव सूरिजिः ॥

[1034]

संवत् १२५७ जेष्ठ सुदि १० रवौ । श्रे० चाण्सीदेन निज कुटुम्ब सहितेन पार्श्वनाथः कारितः प्रतिष्ठितः श्री देवजद्र सूरिजिः ।

[1035]

सं० १२६२ फागुण सुदि १० रवौ श्रे० प्रवदेव सुत वीराणसदेव श्रेयार्थ का० प्र० श्री जावदेव सूरिजिः ।

* ये मूर्तियां श्री मन्दिर जी के प्राङ्गनके द्वाहिने कोठरी में रखी हुई हैं ।

× यह मूर्ति बहुत प्राचीन है परन्तु अक्षर बिल जाने के कारण स्पष्ट पढ़ा नहीं गया ।

(१०)

[1036]

१३.....आषाढ सुदि ७ जवएस वाधि सीद्देण पु० गामा माढ्हाज्यां पितृ श्रेयोर्थं बिम्बं
कारितं प्रतिष्ठितं श्री सर्वगुप्त सूरिजिः ।

[1037]

सं० १३३३ ज्येष्ठ सुदि १.....श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उद्योतन
सूरिजिः ॥

[1038]

सं० १३३५ वर्षे फागुण सुदि ४ शुक्ले । श्रे० धामदेव पुत्र रणदेव धारण जा० आसन्नदे
श्रे० राम श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं श्री कक्क सूरिजिः ।

[1039]

सं० १३३७ वर्षे वैशाख शु० ६ षण्केरक गह्ने श्री यशोज्ञ सूरि सन्ताने सा० सद्गणेश
जा० जरुदह पु० रुण श्री आस सिंह जा० मीढ्हा.....काया बिम्बं कारितं प्र० श्री इत्य
सूरिजिः ।

[1040]

सं० १३३९ वैशाख वदि ९ शुक्ले कठु जदा जार्या ललतू श्रेयसे कर्मणेन श्री आदिनाथ
बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं ।

[1041]

संवत् १३५२ वर्षे फागुण सुदि १० बुधे श्री चैत्र गष्ठिय धर्कट वंशे नाहर गोत्रे सा०
हापु सुत सा० विजयसीद्देन जातु धारसीद्दे श्रेयसेमाग्यकेन श्री वासपूज्य बिम्बं कारितं
प्र० श्री गुणचन्द्र ।

[1042]

सं० १३७४ माघ व० १० गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० पुन पाल सुत सोमल पितृ पुन
पाल श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं श्री रामं (?) प्रायागह्ने प्रतिष्ठितं श्री शीखज्ज
सूरिजिः ॥

(११)

[1043]

सं० १३७५ वर्षे फागुण सुदि.....श्री पार्श्वनाथ विम्बं कारिता प्रतिष्ठितं श्री कक्क
सूरिजिः ॥

[1044]

सं० १३७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १२ बुधे श्री माल ज्ञातीय पितामह श्रे० वीद्वहण पितृ श्रे०
सोमा पितृव्य साजण ज्ञातृ माहा.....श्रेयोर्थ सुत राणा धरणिकाज्यां श्री पार्श्वनाथ पञ्च-
तीर्था का० ।

[1045]

संवत् १३७७ वर्षे माघ वदि ११ गुरौ श्री...दाहड़ वीरम श्री चन्द्रप्रज विम्बं प्रतिष्ठितं ।

[1046]

सं० १३५१ मङ्गारुकीय गङ्गे श्रे० पादा ज्ञा० जाइल पु० कर्म सीद्देन पित्रो श्रेयोर्थ श्री
महावीरं श्री रत्नाकर सूरि पट्टे श्री सोमतिलक सूरिजिः ॥

[1047]

संवत् १३७७ वै० सुदि १ प्राग्वाड़ श्री अठाड़ा जार्या वादहु.....विम्बं प्र० श्री भावदेव
सूरि ।

[1048]

सं० १४०५ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ पेटा मातृ जगतल देवि
तयो श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नागेन्द्र गङ्गे श्री रतनागर सूरिजिः ॥

[1049]

सं० १४०६ वर्षे ज्येष्ठ सु० ए रवौ सा०...कुटुम्ब श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ विम्बं कारितं
प्रतिष्ठितं जीरापल्लीयैः श्री रामचन्द्र सूरिजिः ॥

[1050]

सं० १४०७ वैशाख वदि ४ रवौ श्री माल ज्ञातीय पितामह उदयसीह पितृ लषणसीह
श्रेयसे सुत षोषाकेन श्री आदिनाथ विम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री गुणसागर सूरि शिष्य
श्री गुणप्रज सूरिजिः ।

(११)

[1051]

सं० १४०९ वर्षे फागुण सुदि २ बुधे हुंबड़ झातीय ज्ञातृ पातल श्रेयसे ठ० वीरमेन
श्री आदिनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री सर्वानन्द सूरि सहितैः श्री सर्वदेव सूरिजिः ॥

[1052]

सं० १४११ वर्षे माघ वदि ६ दिने नाहर गोत्रे सा० देवराज जा० रुपी पु० सा० लोखा
जार्या नाड्ही.....पौत्रादि सहितै आत्मश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिम्बं कारितं श्री रुद्रपल्लीय
ग० ज० श्री जिनहंस सूरि पदे श्री जिनराज सूरिजिः ॥

[1053]

सं० १४१२ वर्षे वैशाख सु० ११ बुधे प्राग्वाट झा० कडोली वास्तव्य श्रेष्ठि तिहुणा जा०
वांद्णि पितृ श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री रत्नप्रज सूरिजिः ।

[1054]

सं० १४१३ फागु० सु० ७ सोमे प्रा० व्य० हरपाल जार्या आड्हुण दे पु० विजयपालेन
पित्रो श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं का० प्र० श्री शालिजद्र सूरिजिः ॥

[1055]

सं० १४१३ फागुण सु० ९ सोमे श्रीमाल व्य० जोहण जा० माड्हुण दे सुत आड्हा
पाड्हाज्यां पितृव्य आसपाल ज्ञातृद्राज्यां श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिम्बं कारितं श्री अजय
चन्द्र सुरिणामुपदेशेन ।

[1056]

सं० १४३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने मंलि दलीय गोत्रे सा० सारङ्ग जा० सारू पु० सीधरण
जा० सुड्हुवदे पुत्र सा० मांज मैस परवतादि युतेन श्री कुन्थुनाथ बिम्बं का० प्र० श्री
खरतरगळे श्री जिनजद्र सूरि पदे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥

[1057]

संवत् १४३७ वर्षे वैशाख वदि १० सोमे। श्री कारंटगळे श्री नन्नाचार्य सन्ताने उपकेश
झा० श्रे० सोमा जा० सूमलदे पुत्र सोनाकेन पितृ मातृ श्रे० श्री आदिनाथ बिम्बं का० प्र०
श्री सांवदेव सूरिजिः ।

(१३)

[1058]

सं० १४५० वर्षे मगसिर वदि ६ रवौ उपकेश झातीय सा० षाषण जा० भीमसिरि तयो
श्रियोर्य सुत आदहा ऊदा देवाकेन श्री वासुपूज्य बिम्बं पञ्चती० का० प्र० श्री नागेन्द्रगळे
श्री रत्नसंघ सूरि पट्टे श्री देवगुप्त सूरिजिः । जारा सलषा श्रेयोर्य ॥ श्री ॥

[1059]

सं० १४५३ वर्षे वैशाख सुदि २ हुंवड़ झा० श्रे० देवड़ जा० चामल देवि पुत्र हापाकेन
हापा जा० हलू पु० सु० पातल सुत जीला हुंवड़गळी श्री सर्वानन्द सूरि प० श्री सिंहदत्त
सूरिजिः ।

[1060]

सं० १४५५ विणचट गोत्रे सा० तीषण जा० तिहुणश्री पु० मोषाटन आत्मपूर्वजनिमित्तं
चन्द्रप्रत्त बिम्बं का० प्र० धर्मघोष गळे श्री सर्वाणन्द सूरिजिः ।

[1061]

सं० १४५७ आषाढ सुदि ५ गुरौ प्रा० झा० व्यव० ठाहड़ जार्या मोखलो पुत्र त्रिचुवणा
केन पित्रो श्रे० श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं साधु पू० प० श्री धर्मतिलक सूरि उपदे०

[1062]

सं० १४६० वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ रवौ उकेश वंशे गाहडीया गोत्रे सा० देपाल पुत्र आना
जार्या जीमिणि श्रेयोर्य श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितं प्रति० उपकेश गळे श्री देवगुप्त
सूरिजिः ॥

[1063]

सं० १४७२ वर्षे फाटगुन वदि २ शुक्रे श्रीमाल संघे श्री पद्मनन्दि गुरू हुंवड़ झातीय
व्य० पेथड़ जार्या हीरादे सु० छय सारग सायर बध गोत्रे श्री आदिनाथ बिम्बं

[1064]

ॐ ॥ सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ शुक्रवारे वावेल गोत्रे नरवच पु० आदहा पादहा
मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिम्बं कारापितं श्री धर्मघोष गळे श्री पद्मसिंह सूरिजिः ॥

(१५)

[1071]

सं० १४७३ वर्षे द्वि वैशाख वदि ५ गुरौ श्री प्राग्वाट झा० व्य० स्त्रीमसी जा० सारू
पुत्र व्य० जेसाकेन पुत्र वीकन आसाच्यां सहितेन श्री सुनिसुब्रत स्वामि बिंबं श्री अंचल
गहनायक श्री जयकीर्ति सूरि गुरूणां उपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[1072]

सं० १४७४ वर्षे वैशाख वदि १२ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० कूता जा० कुंवरदे पुत्र
जका जा० जावखदे पु० सायर सहितै श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० उपकेश गह सिद्धाचार्य
सन्ताने मेदरथ श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[1073]

सं० १४७४ वर्षे ज्ये० सु० ५ बुधे श्री नागेन्द्र गह उपकेश झा० सा० सादहा जा० मादहा
पु० धांगा जा० सामी पितृमातृ श्रे० श्री संजवनाथ बिंबं का० प्र० पद्माणंद सूरिजिः ॥

[1074]

सं० १४७५ वर्षे वैशाख सु० ६ गुरौ व० धरणा जा० पूनादे सुत हीराकेन जा० हीरादे
पुत्र श्री सुमतिनाथ बिंबं श्री सोमसुन्दर सूरि प्र० ।

[1075]

सं० १४७५ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे ओसवंशे पंचाणेचा सा० वस्ता जार्या लीलादे पुत्र
ऊमाकेन सपरिवारेण स्वपुण्यार्थ श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० खरतर ग० श्री जिनसागर
सूरिजिः ॥

[1076]

सं० १४७५ वर्षे ज्ये० व० ११ प्राग्वाट सा० अरसी जा० आदहाणदे सुत चाचाकेन
जा० चादहाणदे सुत तोला बाळा सुहका राणा पांचादि युतेन स्वसुत कोसा श्रेयसे श्री नमि-
नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सोमसुन्दर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1077]

सं० १४७५ ज्येष्ठ सुदि १४ बुधे सांपुला गोत्रे सा० वीदिल पु० चांसा जा० चापखदे
पु० लाषाकेन जा० लषमादे पुण्यार्थ श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गह
श्री पद्मशेषर सूरि पट्टे ज० श्री विजयचन्द्र सूरिजिः ॥

(१६)

[1078]

सं० १४९६ वर्षे फागुण वदि २ शुके हुंवड़ ज्ञातीय उ० देपाल जा० सोहग पु० उ०
राणाकेन मातृपितृ श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं निष्ठतिगळे श्री सूरिजिः ॥

[1079]

सं० १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ गुरौ सुराणा गोत्रे सा० सोनपाल जा० तिहुणी पु०
घिणराजेन गुणराज दशरथ सहसकिरण समन्वितेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं
प्र० श्री धर्मघोष गळे ज० श्री पद्मशेषर सूरि प० ज० श्री विजयचन्द्र सूरिजिः ॥

[1080]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ शुके दहदहड़ा श्री अरुनाथ बिंबं का० प्र० राम
सेनीया वरफे (?) श्री धर्मचन्द्र सूरि पट्टे श्री मलयचन्द्र सूरिजिः ।

[1081]

सं० १५०५ वर्षे वैशाख सु० ६ सोमे श्री संडेरगळे ज० झा० वासुत गोत्रे सा० गांगण
पु० पैरु पु० बुलाकेन सा० गोगी पुत्र ठाड़ा कुंजा सहितेन स्वपुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं
का० प्र० श्री ।

[1082]

सं० १५०६ मा० सु० ० दिने श्री उपकेशज्ञातौ सिरहठ गोत्रे सा० सहदेव जा० सुहवदे
पु० साखिगेन पित्रो निमित्तं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रति० श्री सर्व सूरिजिः ॥

[1083]

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० उप० चिपड़ गोत्रे सा० रावा जा० जेठी पु० देनाकेन
मातृपितृ पुण्या० आत्म श्रे० श्री शान्तिनाथ बिंबं का० उपकेश गळे० प्रति० श्री कक्क
सूरिजिः ।

[1084]

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठ शु० १३ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सोमा जा० धरमिणि सुत
मालाकेन लाला जा० गेळू राजूं युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री वर्द्धमान बिंबं कारितं प्र० तपा श्री सोम
सुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिजिः ॥ कृष्णिगिरि वास्तव्य ॥

(१७)

[1085]

सं० १५०९ वै० शु० ३ प्राग्वाट व्य० मेघा चार्या हीरादे पुत्र व्य० आसा कोमा जा०
कैलू आदहा पुत्र शिखरादि कुटुम्ब युताज्यां स्वश्रेयोर्थे श्री युगादि वि० का० प्र० तपा
श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

[1086]

सं० १५१० वर्षे वैशाख वदि ५ सोमे गिरिपुर वास्तव्य हुंवाड ज्ञाति डेनिकठ गोयद (?)
जा० वारू सु० जाला जा० हीसू सु० आसाकेन जा० रूपी युतेन स्व० श्री सुविधिनाथ
वि० का० श्री वृ० तपापद्मे श्री रत्नसिंह सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[1087]

सं० १५११ वर्षे माह वदि ६ गूर दिने उप० झा० चलाद (?) गोत्रे सा० ठाड़ा जा०
सहवादे सा० जाड़ा जा० जसमादे ... सहितया स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंब का० प्र०
श्री ज० रामसेनीया अटकरा० श्री मलयचन्द्र सूरिजिः ॥

[1088]

॥ सं० १५१३ व० वै० सु० ६ गुरौ उपकेश वं० ताल गो० सा० महिगज पु० सा०
कादहा जा० कलसिरि सु० धना जा० धरण श्री पु० बोषा यु० श्री शितलनाथ बिंब का०
प्र० धर्मबोष ग० श्री साधुरत्न सूरिजिः ॥

[1089]

॥ सं० १५१३ पौष शुदि ७ ऊकेश वंशे विमल गोत्रे सं० नरसिंहांगज सा० जाऊणेन
श्री कुंथु बिंब का० प्र० ब्रह्मणी उदयप्रज सूरि तपा जट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे हेम
हंस सूरिजिः ॥

[1090]

॥ सं० १५१५ वर्षे जे० सुदि ५ उपकेश झा० जोजा उरा सा० वीदा जा० वारू पुत्र
गांगा हुदाकेन पूर्वज निमित्तं श्री कुंथनाथ बिंब का० प्र० श्री चैत्रगळे ज० श्री रामदेव
सूरिजिः ॥

(१७)

[1091]

सं० १५१७ वर्षे फा० शु० ११ शनौ सीणुरावासि प्राग्वाट व्य० चूरा चा० गजरी पुत्र
सा० देह्हाकेन चा० रूपिणि पुत्र गरु आदि कुटुम्ब युतेन निज श्रेयसे श्री श्री विमलनाथ
मूलनायक विंबासकृत चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० तपागळे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री
लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

[1092]

सं० १५२३ वर्षे माघ सु० ६ रवौ रेवती नक्षत्रे प्राग्वाट श्रे० घेघा चा० जमलू सुत श्रे०
रीकी जार्या श्रे० सोमा जार्या बाह्यक्षदे पुत्र। हुलू नाम्ना स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं का०
प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ आगीया ग्रामे ।

[1093]

सं० १५२५ वर्षे चैत्र वदि १० गुरौ उस वास्तव्य हूंषड् ज्ञातीय वररजा (?) गोत्रे
पे० कर्मणजा चा० नानू सुत (?) कान्हा श्रेयोर्य श्री आदिनाथ विंबं प्रति० श्री ज्ञान
सागर सूरिजिः ॥

[1094]

सं० १५२७ वर्षे आषाड् सु० १३ रवौ ऊ० ज्ञातीय गूंदोचा गोत्रे सा० जांका चा०
मापुरि पु० मांका चा० वाह्दणदे पु० मूना पाह्हा सहितेन सुता श्रेयसे श्री सुमतिनाथ
विंबं का० प्र० श्री चैत्रगळे श्री सोमकीर्त्ति सूरि पट्टे श्री श्री चारुचन्द्र सूरिजिः ॥

[1095]

॥ संवत् १५२९ वर्षे ज्येष्ठ सु० शुक्रे उशवाल ज्ञा० ताहि गोत्रौ सा० मूलू चा० लूणादे
द्वि० सुहागद पु० सा० जाषर चा० नीली पु० रणधोर जगा हडो रहा घोपा श्रेयोर्य श्री
सुविधिनाथ विंबं का० प्र० खरतर गळे श्री जिनचन्द सूरिजिः ।

[1096]

संवत् १५३१ वर्षे फागुन सु० ७ शनौ उप० ज्ञा० ईटोडना गो० सा० गपो चा० मानू
पु० माका बेढा रतना जाला ऊबू पु० जादा सहितेन आत्म श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंबं
का० प्रति० श्री चैत्रगळे श्री सोमकीर्त्ति सूरि पट्टे श्री श्री नारचन्द्र सूरिजिः ॥

(१९)

[1097]

संवत् १५३३ वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री प्राग्वाट ज्ञातीय सा० नाळ जा० हांसी पुत्र सा० ठाकुरसी सा० वरसिंघ जातू सा० वीसकेन जा० सोची पुत्र सा० जीणा सहितेन श्री अंचलगणेश श्री श्री श्री जयकेसरि सूरिणामुपदेशेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री संघेन मांही ग्रामे ॥ श्री श्री ॥

[1098]

॥ सं० १५३५ वर्षे मार्ग वदि १२ साषुळा गोत्रे साह पाट्टा जा० रहणादे पु० सा० तेजा जा० तेजसदे पु० बलिराज वीसख लोला । माणिकादि युतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्री धर्मघोषगणेश श्री पद्मशेषर सूरि पट्टे श्री पद्माणंद सूरिजिः ॥

[1099]

सं० १५३६ वर्षे मार्गसिरि सुदि १० बुधवासरे श्री संकेर गणेशे ऊ० तेलहरा गो० सा० ध्वना पु० काट्टह पूजा जा० खलतू पु० टोहा हीरा टोहा जा० वरजू पु० स्वश्रे० साळा निमित्तं श्री शीतलनाथ बिंबं का० श्री जिण जद्र (?) सूरि सं० श्री साखि सूरिजिः ॥

[1100]

सं० १५४२ वर्षे फा० व० २ दिने जाळतर महाडुर्गे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० पोष जा० पोमादे पुत्र सा० जेसाकेन जा० जसमादे जातू साषादे कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयोर्य श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्र० तप श्री सोमसुन्दर सन्ताने विजयमान श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ श्रयोस्तु ॥

[1101]

सं० १५५९ वर्षे आषाढ सुदि २ उसवास ज्ञाती कनोज गोत्रे सा० षेढा पु० सहसमख जा० सुहिसालदे पु० ठाकुरसि ठकुर युतेन आत्मश्रेयसे माट्टहण पितृपुण्यार्थं शीतलनाथ बिंबं का० ॥ प्र० श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[1102]

सं० १५६६ वर्षे वै० व० १३ र० पत्तनवासि प्रा० दो० माणिक जा० रबकू सुत पासाकेन जा० ईडू सु० नाथा सोनपाळादि कुटुम्बयुतेन श्रेयोर्य श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं तपागणेश श्री हेमविमल सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

(१०)

[1103]

सं० १५६६ वर्षे फ० व० ६ गुरौ प्रा० सा० तोला जा० रुपमिणि पु० गांगाकेन जा० पीबू पु० लाला लोला लापादि कुटुम्बयुतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० तथा श्री सोमसुन्दर सूरि सन्ताने श्री कमलकलस सूरि पट्टे श्री नन्दकल्याण सूरिजिः ॥ श्रीः ॥ श्री चरणसुन्दर सूरिजिः ॥

[1104]

सं० १५६६ वर्षे ज्ये० शु० २ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय ज्यायपुर वा० सा० हापा जा० दानी पु० सुश्रावक सा० सरवण जा० मना ज्ञा० सा० सामन्त जा० कम्म पु० सा० सूरि सा० सीमा पेशा प्रमुख समस्त परिवार युतैः निज पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्र० श्रीमत्तपा गच्छे श्री पूज्य श्री ध्यानन्दविमल सूरि पट्टे सम्प्रति विजयमान राजा श्री विजयदान सूरिजिः ॥

[1105]

सं० १६६७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ लोढा गोत्रे प । साता हर्षमदे सु० कण्ठराकेन सुत वार दास प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० तथागच्छे श्री विजयसेन सूरीणां निदेशात् उ० श्री सायविजय (?) गणिजिः ॥

[1106]

संवत् १६७६ वैशाख सुदि ७ उदयपुर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय वरनिया गोत्रे सा० पीथाकेन पुत्र पोषादि सहितेन विमलनाथ बिंबं का० प्र० त० चट्टारक श्री विजयदेव सूरिजिः । स्वाचार्य श्री विजयसिंह सूरिजिः ॥

[1107]

सं० १६७० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ सोमे उकेस वंशे मांगरेचा गोत्रे सा० गोविन्द ज्ञार्या गारवदे पुत्र सा० समरथ श्री खरतरगच्छे श्री जिनकीर्त्ति सूरि श्री जिनसिंह सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

(११)

[1108]

संवत् १६९४ वर्षे वैशाख श्री अनन्तनाथ बिंबं का० प्र० च तपगुहाधिराज
• जहारक श्री विजयदेव सूरिजिः ॥ स्वोपाध्याय श्री सावण्यविजय गणि का० ज०

[1109]

सं० १७०३ सा० तेजसी कारिता श्री विमलनाथ बिंबं ।

[1110]

संवत् जीवा पु० सीद्दड़ चार्या श्रीया देवि पु० राजापाल प्रजापाल श्री श्री आदि-
नाथ बिंबं का० प्र० श्री वर्द्धमान सूरिजिः ॥

[1111]*

॥ सं० १४९३ श्री ज्ञानकीय गच्छे । सा० बाहड़ जा० प्रमी पु० पाट्टहा लोखाज्यां
अद्धप्रा (?) कारिता ॥

श्री वासुपूज्यजी का मन्दिर ।

धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[1112]

संवत् १५०६ व० ऊकेश सा० बछराज सु० सा० हीरा जा० हेमादे हरसदे पु० सा०
जगा जा० फट्टु श्रेयसे श्री शीतल बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरिजिः
श्री देवकुलपाटक नगरे ।

[1113]

सं० १७४२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ गुरुवार सुराणा गोत्रे सा० चेतन पु० नारायण सु०
लीला गोकुलदास श्री चन्द्रप्रज बिंबं कारितं ।

* यह मूर्ति देवी की है और बाहन घोड़ा है ।

(३३)

श्री गौड़ीपार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

धातुकी मूर्तियों पर ।

[1114]

सं० १९०५ माघ सु० १३ सोमे राणा श्री

[1115]

सं० १८०१ ज्ये० सु० ए उदेपुर महाराणा श्री जगतसिंहजी बापणा गोत्र साह श्री ।

[1116]

सं० १८०० वर्षे शाके १६९३ जेठ सु० ए बुधे तपा श्री विजयदेव सूरि श्री विजय धर्म सूरि राज्ये उदयपुर वास्तव्य पोरवाड़ जण्णारी जीवनदास जार्या मटकू श्री पार्श्व बिंबं कारापितं ।

धातु की चौबीशी पर ।

[1117]

ॐ ॥ सं० १५३३ वर्षे पो० व० १ गुरौ कक्केरा वासि उकेश व्य० जेसा जा० जसमादे सुत व्य० वस्ता जार्या बीऊलदे नाम्न्या पुत्र व्य० जीम गोपाल हरदास पौत्र कर्मसी नरसिंग थावर रूपा प्रमुख कुटुम्बयुतया निजश्रेयसे श्री शान्ति बिंबं का० प्र० तपागछ श्री लक्ष्मी सागर सूरि श्री सोमदेव सूरिजिः । श्रेयः ॥

धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[1118]

ॐ सं० १५११ वर्षे वैशाख वदि ५ शनौ श्री मोढ़ झातीय मं० जीमा जार्या मजु सुत मं० गोरकेन सुत जोला महिराज युतेन स्वपितुः श्रेयोर्य श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं विद्याधरगछे श्री विजयप्रज सूरिजिः ॥

[1119]

सं० १५४९ वर्षे पोष वदि १० बुधे ज० झातीय सा० कोला जार्या बीमाई पु० दीना

जा० साडिकि नाम्न्या देवर सा० हेमा जा० फट्ट पु० धरणादि युतया स्वश्रेयसे श्री शान्ति
नाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री जयचन्द्र सूरि शिष्याण आ० श्री जयरत्न सूरि उपदेशेन
वरुक्षी ग्रामे ।

धातु के यंत्र पर ।

[1120]

सं० १५३४ श्री मूलसंधे ज० श्री भूवनकीर्त्ति श्री ज० श्री ज्ञानचूषण हूं० दो० साषा
जा० अमरा जातृ दो० हीरा जा० अरषू सु० जूग जगिणि सु० माणिक ।

जण्णार की धातु की पञ्चतीर्थियों पर ।

[1121]

सं० १३३० वर्षे चैत्र वदि ७ शुक्ले महं० हीरा श्रेया महं० सुत देवसिंहेन श्री पार्श्वनाथ
बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[1122]

सं० १३६१ ज्येष्ठ सु० ए बुधे श्रे० आसपास सुत अजयसिंह तद्गार्या श्री लहणदेवि
तयोः सुत कान्हड़ पूनाज्यां पितृव्य लूणा श्रेयसे श्री शान्तिनाथ कारितः । प्र० श्री यशो
जद्र सूरि शिष्यः श्री विबुधप्रज सूरिजिः ॥

[1123]

सं० १४३७ वर्षे द्वि (?) वैशाख व० ११ सोमे श्योश० व्य० नरा जा० मेघी पु० जीम
सिंहेन पित्रो श्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० ब्रह्माणीय श्री रत्नाकर सूरि पट्टे श्री
हेमतिप्रक सूरिजिः ।

[1124]

सं० १४४९ वर्षे वैशाख शुदि ३ सोमे श्री श्रीमास ज्ञा० पितृ धीमा मातृ षेतलदे
श्रेयोर्य सुत बाढाकेन श्री संजवनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री नागेन्द्र गष्टे श्री उदयदेव
सूरिजिः ।

(११)

[1125]

सं० १४७७ ज्येष्ठ व० १ प्राग्वाट ठ० ठठलसीकेन पित्रो ठ० पूनसीह जा० पूमलदे ...
श्री चन्द्रप्रज्ञ बिंबं का० प्र० मलधारि श्री मुनिशेखर सूरिजिः ।

[1126]

सं० १५०१ माघ वदि ५ गुरौ प्राग्वाट व्य० धणसी जा० प्रीमलदे सुत व्य० लाषा
जा० लषणदे सुत व्य० षीमाकेन निज श्रेयसे श्री सुमति बिंबं कारि० प्र० तपा श्री मुनि
सुन्दर सूरिजिः ।

[1127]

सं० १५१६ वर्षे वै० व० १२ शुक्रे उकेश ज्ञाती व्य० नारद जा० घरघति पुत्र बाघाकेन
जा० वडहादे जा० पहिराजादि कुटुम्ब युनेन स्वपितु श्रेयोर्थ श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र०
श्री सूरिजिः ॥ महिसाणो वास्तव्य ॥

[1128]

सं० १५२० वर्षे वैशाख सु० ३ सोमे उपकेश ज्ञा० मह० कालू जा० आषू पुत्र ३ जावड
रतना करमसी स्वमातृनिमित्तं श्री चन्द्र प्रज्ञ स्वामि बिंबं करापितं उपकेश गष्टे श्री कक्क
सूरिजिः सत्यपुर वास्तव्यः ॥

[1129]

सं० १५२४ वर्षे ज्ये० सु० ए श्री श्री वंश स० समधर जार्या जीविणि सुता वाडही
पि० हेमा युतया पितृ मातृ श्रेयसे श्री अंचल गष्ट श्री जयकेशरी सूरिणामुपदेशेन श्री
सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री संघेन ।

[1130]

सं० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० दिने प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० साजण जा० माडहू पुत्र
डगडा देवराज जा० देवलदे स्वपुण्यार्थ श्री श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० मडाहड गष्ट
रत्नपुरीय ज० गुणचन्द्र सूरिजिः । उ० आणंदनंद सूरि तेन उपरिकेन ।

(३५)

[1131]

संवत् १५६९ वर्षे आषाढ शुदि २ मेडतवाल गोत्र सा० इला जा० मीढहा पुत्र ताडहा
जार्ग तिलसिरि खपितृश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गछे
श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[1132]

सं० १६५२ माह सुदि १० श्री मूलसंधे ज० श्री प्रजचन्द्र देवा तल्पटे ज० श्री चन्द्र
कीर्त्ति तदाम्नाये चंदवाड़ गोत्रे सं० चाहा पुत्र तेजपाल पुत्र केसै । सुरताण श्रीवंत नित्य
प्रणमंति मालपुर वास्तव्य ॥

—•••—

जयपुर ।

श्री सुपार्श्वनाथजी का पञ्चायती बड़ा मन्दिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1133]

सं० १३३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १ गुरौ व्य० महीधर सुत जांऊणेन आत्मश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ
बिंब कारितं प्रतिष्ठितं सूरिजिः ।

[1134]

ॐ सं० १३४० वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ रवौ गूर्जर ज्ञातीय उ० राजड़ सुत महं देवहणेन
पितृव्य वीरम श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री चैत्रगछिय श्री देवप्रज सूरि
सन्ताने श्री अमरजद्र सूरि शिष्यैः श्री अजितदेव सूरिजिः ।

[1135]

सं० १३९० वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री काष्ठासंधे श्री लाडवा गण्णणे श्रीमत्

(१६)

आचार्य श्री तिहुणकीर्ति गुरूपदेशेन हुंवड़ ज्ञातीय व्य० बाहड़ जार्या लाली सु० व्य०
बीमा जार्या राजूल देवि श्रेयोर्थ सु० का० देवा जार्या राजूल देवि नित्यं प्रणमन्ति ।

[1136]

सं० १४३७ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि गोहा जार्या ललतादि
सुत मूजाकेन । पितृत्रातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ का० प्र० श्री रत्नप्रज सूरिणामुपदेशेन ।

[1137]

सं० १४३९ वर्षे पौष वदि ९ सोमे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्री मा० पितृ माषसी जा०
मोषखदे प्र० सुत सोमखेन श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर
सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

[1138]

सं० १४६५ वर्षे आत्मार्थ श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ।

[1139]

सं० १४६९ वर्षे ऊकेशवंशे नवस्रषा गोत्रे सा० साधर आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ
बिंबं कारितं प्रति० खरतर ग० । जिनचन्द्रेण स्तव्य ।

[1140]

संवत् १४७९ वर्षे पोस सुदि १२ शुके श्री हुंवड़ ज्ञातीय धावेका गखनयोः पुत्रेण था०
हापाकेन स्वत्रातृ धावड़ा मुखसी श्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री
बृहत्तपागच्छे श्री रत्नसिंह सूरिजिः ॥ शुभं चवतु ॥ श्री ॥ ४ ॥

[1141]

सं० १४९४ माह सु० ११ गुरो श्री संकरगच्छे ऊ० था० संवादि गौष्ठिक सा० सुरतण
पु० धर्मा जा० धर्मसिरि पु० वासखेन जा० कानू पु० नापा नाट्टहा स० पित्रोः श्रेयसे श्री
श्रेयंस तु० का० प्र० श्री शान्ति सूरिजिः शुभं ।

(१९)

[1142]

सं० १५०१ वर्षे माह सुदि १० सोमे श्री संकेरगढे उपकेश झा० साह कालू जार्या
वाल्ही पुत्र कान्हा जार्या सारू पितृमातृश्रेयोर्य श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रति० प०
श्री सांति सूरिजिः ।

[1143]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे श्री ज्ञानकापगढे उपकेश० लोलस गोत्रे साह कान्हा
जार्या कर्म सिरि पुत्र आद्य जार्या जाकु पुत्र धाना रामा काना जार्या अरपू आत्म श्रेयसे
श्री आदिनाथ बिंबं कारा० प्रति० श्री शान्ति सूरिजिः ।

[1144]

सं० १५०१ माह सुदि १० सोमे विरुत गोत्रे सा० माण्हा पु० अरजुण जार्या साण्ह
पुत्र कान्हाकेन जा० इंदी ... पु० दफ्खा श्री पद्मप्रजः का० प्र० श्री धर्मघोषगढे श्री
महीतिलक सूरिजिः आ० विजयप्रज सूरि सहितैः ॥

[1145]

संवत् १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ शनौ ऊ० झा० जाजा उटाणा सा० कर्मा जा०
सागू पु० पेना जइतापेण जा० राणी पु० पंचायण जयता जा० मूंतो पित्रोः श्रे० श्री शान्ति-
नाथ बिंबं का० श्री चैत्रगढे प्र० श्री मुनितिलक सूरिजिः ।

[1146]

सं० १५०२ वै० ब० ५ प्रा० व्य० लाषा लाषणदे पु० सामन्तेन सिंगारदे पु० पाड्हा
रतना कीन्हादि युतेन श्री कुंथु बिंबं का० प्र० तपा रत्नशेखर सूरिजिः ।

[1147]

सं० १५०४ फागुण शुदि ११ जूंगटिया श्रीमाल सा० साधारण पुत्रेण सा० समुधरेण
श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठितं श्री तपाजहारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पटे श्री हैमहंस
सूरिजिः ॥

(१६)

[1148]

सं० १५०५ आषाढ सुदि ए श्री उप० सुचिंतित गोत्रे सा० सीद्दा जा० जाबटही पु०
सा० सोलाकेन पुत्र पौत्र युतेन आत्म पु० ... श्री बन्धुप्रज विं० का० प्र० श्री उपकेशगह
श्री कक्क सूरिजिः ।

[1149]

सं० १५०६ फा० ब० ए श्री उ० ग० श्री ककुदाचा० गो० सा० समधर सु०
श्रीपाल जा० परवाई पु० मुद ... जब ससदा रंगाच्यां पितु श्रे० श्री सम्प्रवनाथ विं० कारितं
प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजिः ।

[1150]

ॐ सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर सुदि ३ शुके उपकेश ज्ञातीय जढर गोत्रे संदणसीह
जार्या दादाह वीसल जाती महिपाल पु० मगराज साधी आत्मपुण्यार्थ श्री विमलनाथ
विं० का० प्र० श्री वृहज्ज्जे श्री सागर सूरिजिः ।

[1151]

सं० १५०७ वर्षे चैत्र वदि ५ शनौ सोढा गोत्रे । श्रे० गुणा जार्या गुणश्री पुत्र श्रे०
पूजा कचरौच्यां पितृव्य धन्ना पुण्यार्थ श्री धर्मनाथ विं० का० प्र० खरतर श्री जिनज्ज
सूरि श्री जिनसागर सूरि ।

[1152]

सं० १५१० वर्षे चैत्र वदि ४ तिथौ शनौ हिंगड गोत्रे गौरम्ब पुत्रेण सा० सिंधकेन निज
श्रेयो निमित्तं श्री सुविधिनाथ विं० कारितं प्रति० तपा० ज० श्री हेमहंस सूरिजिः ।

[1153]

सं० १५१२ माघ सुदि ७ बुधे श्री ओसवाल ज्ञाती आदित्यनाग गोत्रे सा० सिंधा पु०
ज्येढ्हा जा० देवाही पु० दशरथेन ज्ञातृपितृश्रेयसे श्री अनन्तनाथ विं० कारितं श्री उपकेश
गह श्री ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजिः ॥

(१६)

[1154]

सं० १५१५ वर्षे फागुण शुदि ४ शुक्रवारे श्योसवाल झातीय वछश गोत्रे सा० धीना
जा० फाई पु० देवा पद्मा मना बाला हरपाल धर्मसी आरमपुण्यार्थ श्री धर्मनाथ बि० का०
प्र० श्री मलधार गछे ... सूरिजिः ।

[1155]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख सुदि २ बुधे श्री श्री मा० श्रे० जइता जा० खालू तयो० पु०
माधव निमित्तं खालू आरमश्रेयोऽर्थ श्री शान्तिनाथ बिंबं का० पिप्पल ग० ज० श्री विजयदेव
सू० मु० प्र० श्री शालिजड सूरिजिः ।

[1156]

सं० १५२३ वर्षे वैशाख सुदि ४ बुधे जालह राइा० मंचूणा जा० देऊ सुत पितृ पांचा
मातृ तेजू श्रेयसे सुत गोयंदेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं पूनिम गछे श्री साधुसुन्दर सूरि
उपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

[1157]

। सं० १५२३ वर्षे वैशाख सुदि १३ दिने मंत्रिदलीय झातीय मुंरुगोत्रे सा० रतनसी
चार्या बाकुं पुत्र सा० देवराज चार्या रामाति पुत्र सा० मेघराज युतेन स्वपुण्यार्थ श्री
विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतरगछ श्री जिनहर्ष सूरिजिः ॥

[1158]

सं० १५२७ वर्षे विदि १ सोम दिन श्रीमाल वंशे जूनीवाल गोत्रे सा० दासा पुत्र
सा० बिठराजकेन समस्तं परिवारेण आत्मश्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिंबं का० श्री परतर
गछे श्री जिनप्रज सूरि अजिप्रतिष्ठितं श्री जिनतिलक सूरिजिः । शुभं चवतु ॥ छ ॥

[1159]

सं० १५२९ वर्षे आषाढ सु० २ रवौ श्री श्योसवाल झा० चांणाचाल गछे पांमलेचा
गोत्रे सा० साडूच चार्या मेघादे पु० जाषर चार्या जावलदे पु० मोहण हरता युतेन मातृ
मेघ निमित्तं श्री पद्मप्रज बिंबं कारितं प्र० ज० श्री वजेश्वर सूरिजिः ।

(३०)

[1160]

सं० १५३० वर्षे माघ वदि २ शु० पालणपुर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० नरसिंग
जा० नामलदे पु० कांहा जा० सांवल पु० बीमा प्रभू माषी जा० सीचू श्रेयोर्थ श्री नमिनाथ
बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे ज० श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[1161]

सं० १५३० वर्षे मा० व० १० बुधे प्राग्वाट सा० सिवा जा० संपूरी पुत्र सा० पादहा
जा० पादहणदे सुत सा० नाथाकेन ज्ञातृ ठाकुरसी युतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत बिम्बं
का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः धार नगरे ।

[1162]

सं० १५३३ वर्षे वै० सुदि ६ दिने श्रीमाल वंशे स० जईता पु० स० मारुण जा० लीलादे
पु० बीमा जातइ युतेन श्री सुपार्श्व बिंबं का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनचन्द्र सूरि
पट्टे श्री जिनजद्र सूरिजिः ।

[1163]

सं० १५३४ वर्षे कार्तिक शुदि १३ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० गोत्रजा अम्बिका श्रेष्ठि चांद्रसाव
जा० जमकु सुत वानर जा० ताकू सुत जागा जा० नाथी सहितेन स्वपूर्वजश्रेयसे श्री
शान्तिनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्रगच्छे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[1164]

सं० १५३४ फा० शु० २ वासावासि प्राग्वाट व्य० आदहा जा० देसू पुत्र परवतेन जा०
जरमी प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे
श्री रत्नशेषर पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[1165]

॥ सं० १५३७ फा० व० ८ बुधे ऊ० षांटइ गो० म० पूना जा० अचू पु० राणाकेन जा०
रयणादे पु० हरपति गुणवति तेज । हरपति जा० हमीरदे प्रमुख कुटुम्ब सहितेन स्वश्रेयसे

(३१)

श्री सुमति बिंबं का० प्रतिष्ठितं जावकहरा गह्वे श्री जावदेव सूरिजिः ॥ खिरहाखु
वास्तव्येन ॥

[1166]

संवत् १५४५ वर्षे माघ शु० १३ बु० लघुशाखा श्रीमाखी वंशे मं० घोषल जा० अकार्ई
सुत मं० जीवा जा० रमाई पु० सहसकिरणेन जा० ललनादे वृद्ध जा० इसर काका सूरदास
सहितेन मातु श्रेयसे श्री अंचलगह्वेश श्री सिद्धान्तसागर सूरीणामुपदेशेन श्री आदिनाथ
बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन श्री स्तम्भतीर्थे ।

[1167]

सं० १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ५ रवौ उपकेशज अचोवल्ल० द्वागोत्रे सा० साज जा०
तेजसर पु० कुंभ कोन्हा सहिसा सीधरा अरष युतेन स्वपुण्यार्थं श्री नमिनाथ बिं० का०
प्र० श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे श्री मणिचन्द्र सूरिजिः ।

[1168]

संवत् १५५७ वर्षे शाके १४३२ वैशाख सुदि ५ गुरौ चाण्डाख्या गोत्रे सा० तेजा जा० रूपी
पु० अचला जा० देमी आत्मश्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं कारापितं श्री मलयधार गह्वपति
श्री गुणवषान सूरिजिः ।

[1169]

सं० १५६२ व० माघ सु० १५ गु० उ० वौक० गोत्र० सा० जेसा जा० जिसमादे पुत्र
राणा जा० पूणदे पु० अरुवाल तेजा आ० श्रे० श्रेयांस बिं० कारि० बोकड़ी० श्री मलयचन्द्र
पट्टे मुणिचन्द्र सूरिजिः ।

[1170]

संवत् १५६६ वर्षे फागुण सुदि ३ सोमे विश्वलनगरे प्राग्वाट झातीय श्रे० जीवा जार्या
रंगी पुत्र रत्न श्रे० काहीआ ज्ञातृ श्रीवन्त । केन जार्या श्री रत्नादे द्वि० दाक्षिभवे सुत
षीमा जामादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागह्व
जहारक श्री हेमविमल सूरिजिः ॥ कल्याणमस्तु ॥

(३१)

[1171]

संवत् १५७१ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ उप० सा० धरमा जा० काउ सु० सोता मांडण
सु० रूपा सोता जा० सुहड़ादे सु० नरसिंघ आढ्हा नापा माला मारुण जार्या माणिकदे पु०
गांगा मोका पद्म रूपा जार्या हासू सु० सेटा नोमा सुकुटुम्बेन रूपा नापा निमित्तं श्री
शान्तिनाथ विंबं का० प्र० श्री दैवरत्न सूरिजिः ॥

[1172]

सं० १५७७ वर्षे पोस वदि ६ रवौ प्राग्वाट ज्ञातीय प० काका जा० बाक सुत प०
पहिराज जा० वरवागं आत्मश्रेयोर्थं श्री चन्द्रप्रज्ञ स्वामी विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः
श्रीरस्तुः ॥

[1173]

सं० १६७७ वर्षे ज्येष्ठ सु० १ दिने सुजाउलपुर वास्तव्य श्री० तिलका श्री सुविधिनाथ
विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री विजयदेव सूरिजिः ।

धातु की चौवीशी पर ।

[1174]

सं० १५०७ वर्षे आषाढ सुदि २ सोमे उसिवाख ज्ञातीय सूरणा गौत्रे सा० लषणा
जा० सषण श्री पु० सा० सकर्मण सा० सिवराजेन श्री कुन्थुनाथ चतुर्विंशति पद्म कारितं
प्रतिष्ठितं श्री राजगढे जहारक श्री पद्माणंद सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1175]

संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ रणासण वासि श्री श्रीमाख ज्ञातीय श्रे० धर्मा
जा० धर्मादे सुत जोजाकेन जा० जळी प्रमुखकुटुम्बपुतेन स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ
चतुर्विंशतिः पद्मः कारितः प्रतिष्ठितं श्री सुविहित सूरिजिः । श्रीरस्तु ॥

(३३)

धातु की मूर्तियों पर ।

[1176]

संवत् १६०१ वर्षे श्री आदिकरण बोटा बा० रंजा श्री श्रीमाखी न्यात श्री धर्मनाथ श्री विजयदान सूरि ।

[1177]

संवत् १५४४ वर्षे फागुण सुदि १ तिथौ बुधवासरे तपागङ्गाधिराज जट्टारक श्री विजय प्रज सूरि निदेशात् श्री पार्श्वनाथ विंबं प्रतिष्ठितं बा० मुक्तिचन्द्र गणित्तिः कारितः ।

धातु के यंत्र पर ।

[1178]

सं० १७५२ पोस सुदि ४ वृहस्पतिवासरे श्री सिद्धचक्र यंत्रमिदम् प्रतिष्ठितं बा० लालचन्द्र गणिना कारितं सवाई जैनगर वास्तव्य से० वषतमल्ल तत् पुत्र सुषल्लालेन श्रेयोर्थ । ७ ।

[1179]

सं० १७५६ माघ मासे शुक्लपक्षे तिथौ ५ गुरौ श्री सिद्धचक्र यंत्रं प्र० श्रीमद् वृहत् खरनरगङ्गे ज० श्री जिनचन्द्र सूरित्तिः जयनगर वास्तव्य श्रीमाल्लान्वय फोफल्लिया गोत्रीय अनन्दराम त० पूवचन्द्र तत् पुत्र बहादुरसिंघ सपरिकरेण कारितं स्वश्रेयोर्थ ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1180]

सं० १४७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ सोमवासरे जाईल्लवाल पवित्र गोत्रे संघवी ढीहल्ल पुत्र सं० जेजा जित्त जस पु० बाहड सहितेन आत्मश्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोषगङ्गे श्री महीतिल्लक सूरित्तिः ॥

(३४)

[1181]

सं० १४९१ आषाढ वदि ९ श्री श्रीमाखवंशे वडली वास्तव्य सं० सांभा जा० कामखदे पुत्र सं० मना जा० रशदे पुत्राच्यां सं० समधर सं० साखिज अर्ज्यो जा० राजू साधू सुत मिषा माणिक रत्ना प्रमुख कुकुम्ब सहिताच्यां श्री सुपार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागह्याधिराजैः श्री सोमसुन्दर सूरिजिः शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

[1182]

सं० १४९३ वेशाष सुदि ५ उप झा० आदित्यनाग गोत्रे । सा० पदमा पु० बेडा जा० पूजी पुत्र बीमाकेन श्री श्रेयांसनाथ विंबं का० श्री उपकेशगह्ये कुक० प्र० श्री सिद्ध सूरिजिः ॥

[1183]

सं० १५०६ वर्षे माह वदि ९ श्री कोरंटकीयगह्ये श्री नत्राचार्य सन्ताने । ऊ० ती० सुचन्ती गोत्रे जा० आजरमुण्या पु० हाता जा० हुती पु० मांकण जा० माणिक पु० वेतादि श्री वासपूज्य विंबं कारापितं प्र० श्री सांबदेव सूरिजिः ।

[1184]

सं० १५१३ ओसवाळ मं० चारमह्य जावळदे पुत्र रत्नाकेन जा० अपू झा० टीड्हा शिवादि कुकुम्बयुतेन श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री सोमसुन्दर सूरि श्री मुनिसुन्दर सूरि श्री जयचन्द्र सूरि शिष्य श्री रत्नशेषर सूरिजिः ।

[1185]

संव० १५१९ वर्षे चैत्र शु० १३ गु० प्राग्वाट झा० सा० लषमण जा० साधू पुत्र साह गोवळे जा० राजू युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्व विंबं का० प्र० तपागह्येश श्री मुनिसुन्दर सूरि तत् पदे श्री रत्नशेषर सूरिजिः ॥

[1186]

सं० १५४९ फा० सु० ११ जौ० श्री मू० त्रिभुवनकीर्ति देवा० तत् पद्मान्व सा० पची । जा० वरम्हा पु० सा० जनु । जा० चादंगदे पु० बहू जा० नूपा । त्रि० पु० सा० बेदा जा० दानसिरि व० पु० अजित् जा० नैना कके (?) विजसी ।

(३६)

[1193]

संवत् १५९७ वर्षे पोस वदि ५ सकरे सहूआला वास्तव्य प्राग्वाट वृद्ध शास्त्रार्थ दोष
वीरा जा० जाणा जा० जरमा दे तेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिन
साधु सूरिजिः ॥

[1194]

सं० १६१२ वर्षे फागुण शुदि २ तिथौ श्री ओसवाल वंशे सा० आढत जा० रेणमा
सणी सा० चतुह धर्मते कारापितं श्री उहितेरा गछे ज० श्री जावसागर सूरि त० श्री धर्म-
मूर्ति सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री अनन्तनाथ ।

[1195]

॥ संवत् १६२४ वर्षे माहा शुदि ६ सोमे ओसवाल ज्ञातीय दोसी जामा संत दोसी
पू० । ज । जार्था बाई मेलाई सुत वानरा श्री धर्मनाथ विंबं कारापितं ॥ तपागड श्री ७
श्री द्वारा विजय सूरि प्रति० साबलटन नगरे ।

[1196]

सं० १६५३ वर्षे असाई ४२ संवत् ॥ माघ सुदि १० दिने सोमवारे उकेश वंशे शंख-
वाल गौत्रीय सा० रायपाल जार्था रूपा दे पुत्र सा० पूना जार्था पूना दे पुत्र मं० पाता मं०
देहाच्यां पुत्र जिणदास म० चांपा मूला दे मू । सामल सपरिकराच्यां श्री शांतिनाथ विंबं
कारितं प्रतिष्ठितं च श्री वृहत् खरतर गछाधीश्वर श्री अकबरसाहिप्रतिबोधक श्री जिन-
माणिक्य सूरि पट्टाक्षकार युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ।

[1197]

सं० १७०३ वर्षे मार्गशिर्षे सित १ दिने मेडता नगरे वास्तव्य शंखवालेचा गोत्रे सा०
कूंगर पुत्र सा० माईदासकेन श्री मुनिसुवत विंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागडाधिराज सुवि-
हित चटारक श्री विजयदेव सूरि पट्टे आचार्य श्री विजयसिंह सूरिजिः ॥ कृष्णगढ नगरे
मुदपत जयचन्द्र(?) प्रतिष्ठायां ॥

(३५)

[1188]

सं० १५५९ वर्षे वैशाख सुदि १३ सोमे श्री ब्रह्माण गढे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्ठि मंडईया जार्या माणिक सुत सामख जार्या सारू सु० धर्मण धाराकेन स्वपित्र पूर्वज श्रेयोर्थ श्री धर्मनाथ बिंबं कारापितं प्र० श्री त्रिमल सुरि पढे श्री बुद्धिसागर सूरिजिः वण्ड वास्तव्यः ॥

[1189]

ॐ सं० १५५९ वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे अोसवाल ज्ञातौ तातद्वु गौत्रे सा० आढ जा० गोपाही पु० सुखसित । जः० सांगर दे स्वकुटुंबयुतेन श्री कुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ककुदाचार्य सन्ताने उपकेश गढे ज० श्री देवगुप्ति सूरिजिः ।

[1190]

सं० १५६३ माह सु० १५ गुरु श्री संदेर गढे उसवाल पूगखिस गोत्रे स० काजा जा० रानू पु० नरवद जा० राणी पु० तिहुण करमा कुवाला सहसा प्र० आत्म पु० श्री मुनिसुत्र स्वामि बिंबं कारापितं प्रति० श्री शान्ति सूरिजिः ॥

[1191]

सं० १५६९ वर्षे वैशाख सुदि ६ दिने सूरणा गोत्रे सं० चांपा सन्ताने । सं० सगारू मु० सं० गांडा जा० धणपालही पु० सं० सहसमल्ल ज्ञातृ आढा पु० सोमदम युनेन मातृ पुण्यार्थ श्री शान्तिनाथ बिंबं का० श्री धर्मघोष गढे प्र० ज० श्री नन्दिवर्द्धन सूरिजिः ॥

[1192]

सं० १५७४ वैशाख वदि ५ अोसवंशे वरहन्विया गोत्रे सा० खाषा पुत्र सा० हर्षा जार्या हीरा दे पुत्र सा० टोरर श्रावकेण स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च अखत्र गढे श्रावकेण श्रेयोस्तु ॥

(३७)

धातु की चौबीशी पर ।

[1198]

॥ संवत् १५३२ वर्षे वैशाख वदि २ शुके प्राग्वाट झातीय व्य० मामल जा० काई सु० पाता जा० वाऊं सु० देवाकेन जा० देवलदे प्र० ब्रातु सामंत जा० खानी सु० समधर जा० अजी सु० मांरुण जोजा राणा द्वि० ब्रा० ऊदा जा० बाई पु० साईया जा० सहिज्यादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री संजवनाथ चतुर्विंशति पदः जीवितस्वामी पूर्णिमापदे श्री पुण्यरत्न सूरिणामुपदेशेन का० प्र० सुविधिना साकरग्रामे ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[1199]

सं० १६३२ श्री संजवनाथ बिंब पास० ।

[1200]

सं० १७७४ माघ तिन २३२ वासा गुलालचन्द श्री सुमति बिंब कारितं ।

[1201]

सं० १७३१ वर्षे मार्गशिर वदि १ शनौ रोहिणी नक्षत्रे ज० श्री विजयधर्म सूरेश्वरराज्ये मुनि श्री रुद्धिविजय गणि प्रतिष्ठितं पं० विद्याविजय गणि श्री वृषजनाथ बिंब कारापितं स्वश्रेयसे ।

[1202]

श्री कृष्णदेवजी मीती माग श्री सु० ३ सं० १९०६ ।

[1203]

श्री हुंसराज श्रेयोर्थ श्री अजिनन्दन बिंब ।

(३०)

धातु के यंत्र पर ।

[1204]

संवत् १७४७ आश्विन शुक्ल १५ दिने तपागङ्गाधिराज श्री विजैजिनेन्द्र सूरिजिः
प्रतिष्ठितं सिद्धचक्र यंत्रमिदं कारापितं पटणी बाहादुरसिंहेन स्वश्रेयसे पं० पुन्यविजै
गणीनामुपदेशात् ॥

[1205]

संवत् १७५२ पौष सुदि ४ दिने वृहस्पति वासरे श्री सिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं
जैनगरमध्ये वा० लालचन्द्र गणिना वृहत् खरतरगङ्गे कारितं बीकानेर वास्तव्य जै० मधेन
श्रेयोर्थं ॥ श्री ॥

श्री आदिनाथजी का (नया) मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1206]

संवत् १४९६ वर्षे माघ वदि ११ तिथौ श्री मालान्वये ढोर गोत्रे सा० तोट्टा तन्नार्या
आ० माणी तत् पुत्र सा० महाराज श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगङ्गे
ज० श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥ शुभं भवतु ॥

[1207]

सं० १४९९ फागुण वदि २ गुरौ श्री उपकेश झातो श्री धरकट गोत्रे सा० हरिराज
प्रसिद्धनाम सा० ब्रगुला पुत्रेण सा० लाषा श्रावकेन नार्या गजसीही पुत्र बलिराज युतेन
श्री संजवनाथ बिंबं का० प्र० श्री वृहज्जे श्री रत्नप्रज सूरिजिः ।

[1208]

॥ सं० १५२४ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ५ ज० सा० लाषा जा० लषमादे सा० गुणराज धर्म

(३९)

पुत्री श्रा० धारू नाम्न्या श्री सुविधिनाथ विंभं कारितं प्र० तपागहनायक श्री सोमसुन्दर
सूरि संताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ सा० गुणराज सुत सा० कासू सुत सा० सदराज ॥

[1209]

सं० १५३१ वर्षे चैत्र वदि ७ बुधे चंदेरा वास्तव्य आसवाल सा० दापा जा० हरषमदे
सुत समराकेन जार्या शीतादे सु० वेला मेघराज हंसराज प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री
अनंत विंभं का० प्र० श्री परतरगह्णे ज० श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[1210]

सं० १५३६ ज्येष्ठ शु० ५ रवौ जप० सीसोदिया गोत्रे सा० देवायत जार्या देवलदे पु०
षेता जार्या षेतलदे पुत्र जाषर युतेन स्वपुण्यार्थ श्री नमिनाथ विंभं कारापितं प्रति० संकेर-
वाल्लगह्णे श्री सालि सूरिजिः ।

[1211]

॥ सं० १५४२ वर्षे वैशाख सुदि ९ शुक्रे ऊकेश झा० सिंघारिया गोत्रे सं० रेना सं० सा०
कदा जार्या जदतदे पु० सा० कारू श्रीमल जिणदत्त । पारस युतेन आ० पु० श्री मुनिसुव्रत
विंभं का० श्री मेरुप्रज सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1212]

संवत् १५५९ वर्षे माघस (मार्गशीर्ष) शु० १५ सोमे श्री श्रीमाल ज० वरसिंग जा०
देमी० सु० हेमा सु० हराज सु० जयता पोमा सु० पांचाकेन आत्मश्रेयसे श्री संजवनाथ
विंभं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री मनसिंह सूरिजिः प्रतिष्ठितं मारबीआ (ग्रामे ?) ।

[1213]

॥ संवत् १५७० वर्षे माघ सुदि १३ भूमे श्री प्राग्वाट० सा शेवा जा० सहजलदे पुत्र
हरषा रूपा हरषा जा० लारुकि पुत्र मातृपितृज्रातृ भृ० श्रेयोर्थ श्री श्री श्री आदिनाथ विंभं
कारापितं । प्रतिष्ठितं श्री नागेन्द्रगह्णे जहा० श्री हेमसिंघ सूरिजिः ।

(४०)

[1214]

॥ संवत् १६२० वर्षे फाल्गुन शुदि ७ बुधे कुमरगिरि वासि प्राग्वाट झातीय वृद्ध शाखायां शंवाई गोत्रे व्यवहा० खीमा जा० कनकादि पुत्र व्य० ठाकरसी जा० सोजागदे पुत्र देवर्ण परिवारयुतेन स्वश्रेयोर्य श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपागच्छे श्री पूज्याराध्य श्री विजयदान सुरि पट्टे श्री पूज्य श्री श्री श्री हीरविजय सुरिजिः आचं-
द्रार्कं नन्यात् श्रीः ॥

[1215]

संवत् १६३० वर्षे माघ शुदि १३ सोमे श्रीस्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री श्रीमाल झातीय सा० वस्ता जा० विमलादे सन सा० थावरवल्ली ... आ श्री ज्ञान्तिनाथ बिंबं कारापिनं श्रीमत्तपागच्छे जटारक श्री हीरविजय सुरिजिः प्रतिष्ठितं शुभं जवतु ॥

धातु की चौबीशी पर ।

[1216]

संवत् १५६९ वर्षे वैशाख शुदि ९ शुके श्री बायडा झातीय म० माण्यक जा० गोमति स० वेलाकेन जा० वनादे सु० लहूंआ लारुण लहूंआ जा० लालू सकुटुम्ब श्रेयोर्य श्री आदिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारापितं श्री आगमगच्छे श्री सोमरत्न सुरि प्रतिष्ठितं विधिना श्रीरस्तु ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[1217]

सं० १७१० ज्येष्ठ सुदि ६ सा० कपूरचन्द । चन्द्रप्रज्ञ ज । तपागच्छे प्रतिष्ठितं ।

[1218]

सं० १७२७ वर्षे ॥ घाड । सावर । शेन । श्री कृष्णनाथ बिंबं श्री तपागच्छे ।

(४१)

धातु के यंत्र पर ।

[1219]

संवत् १८५२ वर्षे ८ पोष सुदि ४ दिने सिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं वा० लालचन्द्र
गणिना कारितं सवाई जयनगरमध्ये समस्त श्रीसंघेन वृहत् परतरगच्छे । शुभमस्तु ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर—श्रीमालोंका महल्ला ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1220]

सं० १४६५ वर्षे वैशाख सुदि ३ सापुठा गोत्रे सा० वेला चार्या स० वीढ्णदे पु० साधु
षिमराज पेमाच्यां पितृ मातृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं ॥ प्र० श्री धर्मघोषगच्छे
श्री सोमचन्द्र सूरि पट्टे श्रीमल्लचन्द्र सूरिनिः ॥

[1221]

सं० १५११ वर्षे माघ शु० ५ गुरू श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मकुणसी चार्या नाऊ सुत
कीयाकेन पितृमातृनिमित्तं आत्मश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे
श्री मुनिचन्द्र सूरिनिः मेहूणा वास्तव्य । श्री ।

[1222]

संवत् १५३० वर्षे पोष वदि ६ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० मंत्रि समधर जा० श्रीयादे सुत
बीकाकेन आत्मश्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री पिप्पलगच्छे श्री गुणदेव
सूरि पट्टे श्री चन्द्रप्रज्ञ सूरिनिः राल्लजग्रामे ।

[1223]

सं० १५३१ वर्षे वै० शु० १० सोमे उत्सवंशे लोढा गोत्रे सा० चाइइ जा० देढ्ह सु०

(४२)

नीलहा जा० सोनी करमी सु० सा० हासकेन त्रातृ सा० नाऊ सा० पेउ हासा जार्या रतनी
सु० सा० ठाकुर सा० ईलटला० ऊधादि प्रमुखयुतेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का०
प्रति० श्री वृहज्ज श्री सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[1224]

॥ संवत् १५५५ वर्षे फागुण सुदि ए बुधे सीधुन गोत्रे ठधरि गरुपाल जा० गोरादे सुत
वस्तुपाल त्रातृ पोमदत्त वस्तपाल जा० वल्हादे पुत्र त्रैलोक्यचंद्र श्रेयोर्थ श्री संजवनाथ
बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगछे ज० श्री जिनसमुद्र सूरिजिः ॥

[1225]

संवत् १६२४ वर्षे वै० शुदि १ शुक्रवासरे तपगछे नायक ज० प्रज श्री हीरविजय सूरि
मनराजो श्री पद्मप्रज बिंबं प्रतिष्ठितं प्रतिष्ठापितं नागपर गहिलड़ा गोत्र सा० अमीपाल
जा० अमूलकदे पु० कूअरपाल जा० कुरादे प्रतिष्ठितं शुभं जवति ॥

धातु की मूर्ति पर ।

[1226]

सं० १७७७ माघ शुक्ल १३ बुधे श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं कारितं । प्र० वृ० त ख०
श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ।

धातु के यंत्र पर ।

[1227]

संवत् १७५६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्ष तिस्रौ ३ बुधे श्री सिद्धचक्र यंत्रं प्रतिष्ठितं
ज० जिनअक्षय सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनचन्द्र सूरिजिः जयनगर वास्तव्य श्रीमालान्वये
सीधुन गोत्रीय किसनचन्द्र तत्पुत्र उदयचंद्र सपरिकरेण कारितं स्वश्रेयोर्थ ॥

[1228]

सं० १९०२ वर्षे आश्विन मासे शुक्ले पक्षे पूर्णमासी तिस्रौ बुधे जयनगर वास्तव्य

(४३)

श्रीमालवंशे फोफलिया गोत्रीय चुनीलाल तत् पुत्र हीरालालेन श्री सिद्धचक्र यंत्र कारितं
चारित्र्यउदय उपदेशात् प्र० ज० खरतरगह्वीय श्री जिननन्दीवर्द्धन सूरिभिः पूजकानां
ती चूयात् ।

आम्बेर । *

श्री चन्द्रप्रज्ञ स्वामी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1229]

✓ सं० १३७० वर्षे पोष सुदि १२ सोमे श्री काष्ठासंघे सुत ताहड़ श्रेयोर्य श्री
सुमतिनाथ प्रतिष्ठितं ।

[1230]

सं० १५२५ वर्षे मार्गसिरि वदि १२ शुके उपके० वावेस गोत्रे सा० अह पुत्र लोला जार्या
लाकिमदे स्वश्रेयसे पितृमातृपुण्यार्थ श्री चंद्रप्रज्ञ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मल्लधार
गह्वे श्री गुणसुन्दर सूरिभिः ।

[1231]

॥ सं० १५४२ वर्षे फागु० व० २ दिने सीतोरेचा गो० ओस० सा० सूर्या जा० सूरमादे
पु० परवत जा० सहजादे तथा परवत देवू समधर बीजा सहस जा० पगमल्लदे सहित जा०
सहजा पुण्यार्थ श्री संजवनाथ विंबं का० प्र० श्री नाणकीयगह्वे श्री धनेश्वर सूरिभिः ॥७॥

* जयपुर शहरसे ५ मैल पर यह स्थान है और यहांका विशाल प्राचीन दुर्ग प्रसिद्ध है ।

अलवर ।

पाषाण के मूर्ति पर ।

[1232] *

- (१) ॥ सिद्धि ॥ संवत् १५१० वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ दिने शुक्रवासरे श्री गोपाचल नगरे राजाधिराज श्री डूंगर-सिंह-देवराज्ये जकेश विं (वं) शे ।
- (२) [पं] चखउट गोत्रे जण्णारी देवराज जार्या देवदहणदे तत्पुत्र जं० नाथा जार्या रूपार्ई स्वश्रेयोर्थ श्री संजवनाथ विंबं कारितं प्रति-
- (३) छितं श्री परतरगछे श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य श्री जिनसागर सूरिजिः ॥
॥ श्रीरस्तु ॥ ठ ॥

नागौर ।

श्री कृषजदेवजी का बड़ा मंदिर—हीरावाडी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1233]

- १ । ॐ संवत् सु० १०६६ फाट्गुन विदि २
- २ । मा मुखक व सतो पाहूरि सा-
- ३ । वकेणं सन्तरसुतेन नित्य-
- ४ । श्रेयोर्थ कारिताः ॥

[1234]

संवत् १३६१ वर्षे सुदि २ सोमे श्रेष्ठि धणपाळ जार्या पाट्ट् पुत्रेण कुमारसिंह श्रावकेण आत्मश्रेयोर्थ श्री महावीर विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री

* यह लेख राय गौरीशङ्करजी बहादुर से मिला है उनके विचार से इस लेख का राजाधिराज डूंगरसिंह देव ग्वालियर का तंवर (तोमर) वंशी-राजा डूंगरसिंह ही हैं । इस मूर्ति की मूल प्रतिष्ठा ग्वालियर में हुई थी, यहां से किसी प्रकार अलवर पहुंची है ।

(४५)

[1235]

संवत् १४३० वर्षे चैत्र सुदि १५ सोमे रावगणे वोवे (?) नेपाल जा० पूरी पु० सा० पेथा
स्वपितृमातृश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं श्री धर्मघोषगच्छे श्री मलयचन्द्र सूरि
पट्टे प्रतिष्ठितं श्री पद्मशेषर सूरिजिः ॥

[1236]

संवत् १४५० वर्षे वैशाख वदि २ बुधे उपकेश ज्ञातीय केकडिया गोत्र जा०
रूढी ७ जेस जा० जसमादे पित्रोः श्रे० श्री चन्द्रप्रजस्वामि बिंबं का० रामसेनीय श्री
धनदेव सूरि पट्टे श्री धर्मदेव सूरिजिः ॥

[1237]

संवत् १४५० वर्षे फाद्युण वदि १ शुक्रे उपकेशीय हृद्युचायि जोमा० सा० पानात्मज
सा० सजना जा० श्रीयादे पुत्र मठूणवकेन श्री सुमति बिंबं कारितं प्रति० श्री पद्विगच्छे
श्री शान्ति सूरिजिः ॥

[1238]

संवत् १४५३ वर्षे बैशाख वदि १ उपकेशवंशे श्रे० ठाडा पुत्र श्रे० केदहाकेन कुमारपाल
देपालादियुतेन श्री शान्तिनाथ बिंबं स्वपुण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे श्री जिनवर्द्धन
सूरिजिः ॥

[1239]

संवत् १४५४ वर्षे फाद्युन वदि २ सूरणा गोत्रे से० हेमराज जा० हीमादे पुत्र सं०
पेदहाकेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धर्मघोषगच्छे श्री मलयचन्द्र सूरि पट्टे
श्री पद्मशेखर सूरिजिः ॥

[1240]

संवत् १४५५ वर्षे मागसिर वदि ४ दिने वक्राह्ना गोत्रे सा० डुंगर पुत्रेण सा० शिखर
केन निजश्रेयसे श्री आदिनाथ प्रतिमा कारिता प्र० तथा श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे जद्वारक
श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

(४६)

[1241]

संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ७ चौमे प्राग्वाद् ज्ञातीय व० साढा श्री चादी पु० सहसा जा० सीतादे पु० पाढहा स० आत्मश्रेयसे श्री संजवनाथ विंभं कारितं प्रति० पूर्णिमा पक्षे श्री सर्वानन्द सूरिजिः ॥

[1242]

संवत् १४७० वर्षे माह सुदि ११ पक्षे श्री आसवंशे कन्नग ज्ञातीय सा० अजीआ सुत सा० जेसा जार्या जासू पुत्र पोमासाणादिजिः अश्वलग्नेश श्री जयकीर्त्ति सूरिणामुपदेशेन श्री चन्द्रप्रज्ञ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[1243]

संवत् १४७३ वर्षे वैशाख सुदी ३ सोमे उपकेश ज्ञातीय सा० टाहा जा० कर्मादे पुत्र मेघा जा० अणुपमदे सहितेनात्मश्रेयसे श्री वासुपूज्य विंभं कारितं प्रति० श्री अमरचन्द्र सूरिजिः ॥

[1244]

संवत् १४७३ वर्षे फादगुन विदि १ दिनै श्रीवीर विंभं प्रतिष्ठितं श्री जिनचन्द्र सूरिजिः उपकेशवंशे सा० बाहरु पुत्र पूजाकेन कारितम् ॥

[1245]

संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुध उपकेश वंशे लघुशाखा मण्ण सा० मन्दलिक जार्या फदकू सुत सा० मूंगरसी जार्या दढहादे पुत्र सा० सोना जीवा थिनेन मातृपुण्यार्थं श्री मुनिसुव्रत विंभं कारितं प्रति० श्री खरतरगण्ठ श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि तत् पट्टे श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

[1246]

संवत् १४७६ वर्षे फादगुण सुदि ७ बुधे उपकेश ज्ञातीय व्यव० शाखा जा० चांपू पुत्र ऊधरणकेन जार्या देपू सहितेन आत्मश्रेयसे श्री वासुपूज्य विंभं कारितं प्रति० बोकन्यागळे जहा० श्री धर्मतिलक सूरिजिः ॥

(४९)

[1247]

संवत् १४९८ वर्षे फाट्गुण विदि २ फांफटिया गोत्रे सा० मोहण चार्या कुमरी पुत्र सा० मेहाकाहाच्यां स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्यं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोषगच्छे श्री पद्मशेखर सूरि पट्टे श्री विजयचन्द्र सूरिजिः ॥

[1248]

संवत् १५०१ वर्षे आषाढ सुदि ९ दिने उपकेशवंशे करमदिया गोत्रे सा० वीढ्हा तत् पुत्र सा० धना पुत्र चापा वाढ्हा वाढा प्रमुख परिवारेण श्री सुविधिनाथ विंबं कारितं प्रति० श्री खरतरगच्छे श्रीमत् श्री जिनसागर सूरि शिरोमणिजिः ॥ शुभम् ॥

[1249]

संवत् १५०४ व्य० (वर्षे) गवढ्हो रत्नदे पुत्र लक्ष्मण जाढ्हणदे पुत्र नाथू जा० दोया ज्रातृ चीढा युतया सूढ्ही नाम्ना कारितः श्री सुपार्श्वः । प्रति० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

[1250]

संवत् १५०७ वर्षे कार्तिक सुदि ११ शुके प्राग्वाट कोठा० लाषा जा० लाषणदे पुत्र को० परवत जोझा काहा नाना कुंगर युतेन श्री संजवनाथ विंबं कारितं उएस गच्छे श्री सिद्धाचार्य सन्ताने प्रति० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[1251]

सं० १५०७ वर्षे माह सुदि १३ शुके षटवडु गोत्रे सा० साढ्हा चार्या सोना पुत्र सा० कुसमाकेन जा० कमलश्री पुत्र धानादियुतेन श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोषगच्छे पद्माणन्द सूरिजिः श्री हेमचन्द्र सूरिणामुपदेशेन ॥

[1252]

✓ संवत् १५०९ वर्षे चैत्र सुदि १२ श्री काष्ठासंधे श्री मलयकीर्ति श्री राढ्हा चार्या चीढ्हा

पुत्र राजा जार्या साद्वही द्वितीय पुत्र णहराणी राजा सुता इरूकु पउमदरा रतस एतेषां प्रणमति ॥

[1253]

संवत् १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ३ उपकेश ज्ञातीय आर्शरी गोत्रे सा० लूणा पुत्र सा गिरिराज जा० सुगुणादे पु० सोनाकेन ठाकुर देवात् श्री चन्द्रप्रज्ञस्वामि बिंबं का० उपकेश गच्छे ककुदा० प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[1254]

संवत् १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ९ बुधे श्री ओसवंशे वृद्धशाखीय सा० हता जा० रंगादे पुत्र सा० माका श्री सुमतिनाथ बिंबं कारापितं श्री साधु सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु श्री अमदाबाद वास्तव्य ॥

[1255]

संवत् १५०९ वर्षे मार्गशिर सुदि ७ दिने उपकेशवंशे साधुशाखायां सा० लखमण सुत सा० महिपाल सा० वीढहाख्यौ तत्र सा० महिपाल जार्या रूपी पुत्र ण० तेजा सा० वस्ताच्यां पुत्रादि परिवारयुताच्यां स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री खरतर श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनजद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[1256]

संवत् १५०९ वर्षे माह सुदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे सा० कूरसी पु० पासड जा० जइनलदे पु० पारस जा० पाढ्हणदे पु० पदा परवतयुतेन पितृश्रेयसे श्री संजवनाथ बिंबं कारितं उ० श्री ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजिः ।

[1257]

संवत् १५०९ वर्षे माघ सुदि १० शनौ श्रीमान् जा० मुठीया गोत्रे सा० षिडंपाल पु० सोनाकेन आत्मश्रेयसे आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनतिलक सूरिजिः ॥

(४६)

[1258]

संवत् १५१० वर्षे चैत्र सुदि १३ गु० प्राग्वाट सा० गोगन चार्वा सद् पुत्र सा० जेसाकेन
जा० राणी चातृ जामा जा० हीरू प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं
कारापितं प्रति० तपागच्छेश श्री रत्नसागर सूरिजिः ॥

[1259]

संवत् १५११ वर्षे मार्गशिर सुदि ५ रवौ उपकेश ज्ञातीय शाह आसा जा० अहविदे सु०
शाह ठाकुरसी जा० जानू स्वहितन पितृ चातृ श्रेयर्थ श्री आदिनाथ बिंबं कारापितं श्री
कोरण्टगच्छे प्रति० श्री सावदेव सूरिजिः ॥

[1260]

संवत् १५१२ मार्ग० शुदि १५ वारे प्राग्वाट श्रेष्ठि गोधा जा० फली सुत नरदे
सहसा कटा च्या० धीराकेन जा० तारू सुत खीमाविकुटुम्बयुतेन निजश्रेयसे श्री आदिनाथ
बिंबं का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ।

[1261]

संवत् १५१२ माघ विदि ७ बुधे उपकेश ज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० तेजा पुत्र सुहमा
जा० सोना पु० सादावछा हंसा पासादेवादिजिः पित्रोः श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं
प्रतिष्ठितं उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सन्ताने श्रीकृष्ण सूरिजिः ।

[1262]

संवत् १५१२ वर्षे फाट्युन सुदि ९ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० तरसी सुत काला
सुतवर्द्धमान सुत दो० बालाकेन जा० कूचरि सुत सा० अरण प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वचातृ
जयारामा तौ श्रेयर्थ श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री श्री रत्नशेखर
सूरिजिः ।

(५०)

[1263]

संवत् १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि १२ श्री उपकेशगङ्गे श्री कक्कुदाचार्य सन्ताने श्री उपकेश ज्ञातौ श्री आदित्यनाग गोत्रे सा० आसा जा० नीबू पुत्र ठानू जा० ठाजलदे पितृ-मातृश्रेयोर्य श्री आदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजिः ॥

[1264]

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख सुदि ५ शुक्रे गूंदोचा गोत्रे सा० धीरा जार्या धारलदे पु० देता जा० सहजलदे पाट्टा जा० पोमादे० स्वश्रेयोर्य संजवनाथ बिंबं का० प्र० श्री चित्रा-बालगङ्गे श्री मुनिमित्तक सूरि पट्टे श्री गुणाकर सूरिजिः ।

[1265]

संवत् १५१३ वर्षे आषाढ सुदि २ गुरू दिने उपकेश ज्ञातीये मण्णलेचा गोत्रे सा० वुहथ जा० कहणदे पुत्र रणमल जार्या रतनादे पु० माहायुतेन श्री आत्मश्रेयसे श्री सुविधि-नाथ बिंबं कारिपितं प्रति० श्री वृहज्जे जानोरावटंके जट्टा० श्री हेमचन्द्र सूरि पट्टे श्री कमलप्रज सूरिजिः ॥

[1266]

संवत् १५१३ पोस सुदि ७ उपकेश वंशे लोढा गोत्रे सा० जूणा पुत्रेण सा० साढ्हाकेन निज जार्या निमित्तं श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० तथा जट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

[1267]

संवत् १५१७ वर्षे माघ वदि ५ दिने श्री उपकेश ज्ञातौ डूगरु गोत्र सा० सुहमा जा० गुणपाल ही पु० नगराज जा० नावलंदे पु० नानिगमूला सोढद बीरदे हमीरदे सहितेन श्री श्रेयांस बिंबं कारितं श्री रूद्रपत्नी गङ्गे श्री देवसुन्दर सूरि पट्टे श्री सोमसुन्दर सूरिजिः ॥

(५१)

[1268]

संवत् १५१९ वर्षे वैशाख विदि ११ टौबाची वासि प्राग्वाट ज्ञातीय ण० केसव जा० जोली सुत सा० लामणेन जा० मरगादे सुत जसवीर प्रमुखकुटुम्बयुतेन निजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ विंबं कारितं प्र० तपागछाधिराज श्री श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1269]

संवत् १५१९ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे श्री ब्रह्माणगछे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्ठि देवा जा० हरषू सुत चाम्पाकेन जार्या जईती करणकुंजायुतेन पित्रा श्रेयसः श्री धर्मनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बुद्धिसागर सूरि पट्टे श्री विमल सूरिजिः ॥ सुद्रीयाणा वास्तव्य ।

[1270]

संवत् १५१९ वर्षे माघ सुदि १० उपकेशवंशे शुजगोत्रे सा० गूजरेण जा० गउटपे पुत्र पेदा अजाण्डू जा० कुसजगदे पाटेवाट (?) सहितेन श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्र० श्री खरतरगछे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥

[1271]

संवत् १५२० वर्षे मार्गशीर्ष वदि १२ उपकेश० ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे वैद्य शा० सांगण पुत्र स० सोनाकेन जार्या लाठलदे पुत्र समस्त स० वृद्धपुत्र संसारचन्द्रनिमित्तं श्री चन्द्रप्रज्ञ स्वामि विंबं का० प्र० उपकेश गछे ककुदाचार्य सन्ताने श्री कक्क सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

[1272]

संवत् १५२१ माघ सुदि १३ गुरौ प्रा० ज्ञातीय व्यव० नींबा पुत्र खीमा जार्या डूळी पुत्र जांघा हेमा पाढहा सहितेन श्री नेमिनाथ विंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

(५३)

[1273]

संवत् १५३४ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे दिने प्रा० वंशे सा० आका जार्या ललतादे तयोः
पुत्र धारा जार्या बीजलदे श्री अञ्जलगच्छे श्री श्री केशरि सूरिणामुपदेशेन निज श्रे० श्री
शीतलप्रज विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ जयतलकोट वास्तव्यः ॥

[1274]

संवत् १५३४ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि ११ शुक्ले उपकेश ज्ञातो आदित्यनाग गोत्रे सा०
सीधर पुत्र संसारचन्द्र जार्या सादाही पुत्र श्रीवन्त शिवरताच्यां मातृपुण्यार्थं श्री शीतलनाथ
विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य सन्ताने श्रीकक्क सुरिजिः ॥
नागपुरे ॥ श्रीः ॥

[1275]

संवत् १५३५ वर्षे ज्येष्ठ विदि १ गुप्तै उपकेश ज्ञातीय खावही गोत्रे साह भूषी जा०
द्वुणादे पुत्री बाई कर्पूरी आत्मपुण्यार्थं श्री नेमिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री कृष्णरुषि
गच्छे तथा शाखायां जट्टारक श्री कमलचन्द्र सुरिजिः शुभम् श्रीरस्तु ॥

[1276]

संवत् १५३७ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे उप० ज्ञा० सा० आना जा० पूरी० पु० देपाकेन
जा० देवलदे पु० वच्छा हर्षा नयणा युतेन श्री शीतलनाथ विंबं काराणितं प्रति० मलाह०
ज० श्री नयचन्द्र सुरिजिः ॥

[1277]

संवत् १५३७ वर्षे पौष विदि १ सोमे इन्डीयवासि उपकेश मं० कान्हा जार्या उमी सुत
मं० कुम्पाकेन जा० सावित्री सुत तेजादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रतस्वामि विंबं
कारितं प्रतिष्ठितं श्री सुरिजिः ॥ श्री ॥

(५३)

[1278]

संवत् १५१७ वर्षे पौष विदि ६ शुक्ले उप० गह्वरिका गो० सा० षेढा जा० दामिदे
प्रभृति पुत्रादियुतेन स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गच्छे
श्री विद्यासागर सूरि पट्टे श्री गुणशेखर सूरिजिः ॥ स्त्रीमसा वास्तव्य ॥

[1279]

संवत् १५१७ वर्षे प्राग्वाद् सा० प्रथमा जा० पारुहणदे सुत सं० परवत जा० चाम्पू
सुत सा० नीसखेन जा० नाई श्रेयोर्थं सुत जगपालादि कुटुम्बयुतेन श्री श्रेयांसनाथ विंबं
कारितं प्रति० तपा लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[1280]

संवत् १५१७ वर्षे वैशाख विदि ६ चंद्रे उपकेश ज्ञातौ पूगड़ गोत्रे सा० सिखा जा०
यक्षी पुत्र धनपालेन जा० मारू पु० नागिन सोनपाल प्रमुख सहितेन स्वश्रेयसे श्री शीतल-
नाथ विंबं कारितं प्रति० श्री बृहन्नगछे श्री मेरुप्रज सूरिजिः ।

[1281]

संवत् १५१७ माघ सुदि ६ सोमे श्रीमास ज्ञातीय पिण्डवेलापट (?) नामसदे सु० ताजा
जा० राजसदे सु० कर्मसी तेजा सा० श्री श्रेयांसनाथ विंबं कारितं श्री पूर्णिमापक्षीय श्री
साधुसुन्दर सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं । जूहारुद्र वास्तव्यः ॥ श्री ॥

[1282]

संवत् १५३० वर्षे वैशाख सु० ३ उपकेश ज्ञातीय सा० रणसिंह जा० तेजसदे पुत्र सा०
कीताकेन जा० कुनिगदे प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत स्वामि विंबं कारितं
प्रतिष्ठितं तपागहनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ वृद्धामा वास्तव्य ॥ शुभं नवतु ॥ श्रीः ॥

(५४)

[1283]

संवत् १५३० वर्षे माघ सुदि ४ प्रा० झा० रादा जा० आघू पु० सिरौही वासी सा०
मांरुणेन जा० माणिकदे पु० लषमादियुतेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं तपा श्री सोमसुंदर
सूरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

[1284]

सं० १५३० वर्षे फाट्गुण सुदि ७ बुधे श्रीमाल झातीय सा० राना जा० राजलदे जागेयर
स्वश्रेयोर्थ श्री अंचलगछे श्री जयकेसरि सूरिणामुपदेशेन श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं
प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

[1285]

संवत् १५३१ वर्षे वैशाख सुदि १० शुके श्री जएसवंशे चण्णालिया गोत्रे सा० नेमा
जा० र्नीकी पुत्र सा० सोहिल जार्या मार्हठी पुत्र सा० पहिराज जार्या पाट्हणदे पुत्र सा०
रत्नपाल सुश्रावकेण पितृव्य शाह जोपाल प्रमुख कुटुम्ब सहितेन पितुः श्रेयसे श्री सुविधि-
नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गछे श्री पुण्यनिधान सूरिजिः ॥ पहिराज
पुण्यार्थ ॥

[1286]

संवत् १५३३ वर्षे चैत्र सुदि ४ शुके ओसवंशे बात्रेल गोत्रे सा घेदहा पुत्र शा० खेता
जा० खेतश्री पुत्र शा० देदाकेन स्वपिता श्रेयसे श्री अजिनन्दन नाथ बिंबं कारितं
प्रतिष्ठितं श्री मलधारि गछे श्री गुणसुन्दर सूरि पट्टे श्री गुणाननिधान सूरिजिः ॥

[1287]

संवत् १५३४ वर्षे ज्येष्ठ शित १० दिने सोमे उपकेशवंशे कटारीय गोत्रे जापचा
जार्या पाट्हणदे पुत्र सामरसिंह श्रीरकेण श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रति० श्री परतरगछे
श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥ श्रेयसे ॥

(५५)

[1288]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ उप० कण्णया गोत्रे सा० लषमण जार्या लषमादे पु० टिता साजा जा० कीट्हुणदे स्वश्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्र० जापकाण गष्ठे श्री कमलचन्द्र सूरिजिः ॥

[1289]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ ऊकेश वंशे जहड गोत्रे सा० उगच पुत्र सा० खरहकेन जा० नीविणि पुत्र मासा वला पासड सहितेन धर्मनाथ बिंबं निज श्रेयार्थ कारापितं श्री खरतरगष्ठे जहा० श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥

[1290]

संवत् १५३४ वर्षे माह वदि ५ तिथौ सोमे उपकेश झाती धरावही गोत्रे लठण बीपां म० कान्हा जार्या हीमादे पुत्र सतपाक तिहुश्रणाज्यां पित्रोः पुण्यार्थ श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं श्री कन्हारसा तपागष्ठे श्री पुण्यरत्न सूरि पट्टे श्री पुण्यवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[1291]

सं० १५३४ मा० शु० १० डा० व्य० नरसिंह जार्या नमलदे पुत्र मेलाकेन जा० बीराणि सुत रातादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ पालणपुरे ॥

[1292]

संवत् १५३५ वर्षे आषाढ द्वितीया दिने उपकेश झातीय आयार गोत्रे लूणाउत शाखायां सा० जांजा पु० चउत्थ० जा० मयलहदे पु० मूलाकेन आत्मश्रेयसे श्री पद्मप्रज बिंबं कारितं ककुदाचार्य सन्ताने प्रतिष्ठितं श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[1293]

संवत् १५४६ वर्षे आषाढ विदि २ ओसवाल झातौ श्रेष्ठि गोत्रे वैद्य शाखायां सा०

(५६)

सिंघा जा० सिंगारदे पु० वीजा ठाजू ताच्यां पुत्र पौत्र युताच्यां श्री चन्द्रप्रज बिंबं सा०
सिंघा पुण्यार्थं कारापितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[1294]

संवत् १५५२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ ओसवाल झातीय म० साहेजा जा० केव्ही
सु० ठाकुरसीकेन जार्या गिरसू सहितेन आत्मश्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री
वृद्धतपापके ज० श्री जिनसुन्दर सूरिजिः प्रतिष्ठितं च विधिना ॥

[1295]

संवत् १५५५ वर्षे चैत्र सुदि ११ सोमे उपकेश वंशे मेडतावाल गोत्रे शा० पगारसीह
सन्ताने शा० सहसा सु० हा० श्रवण जा० साखिगसुतेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्र०
हर्षपुरीय गळे जहारक श्री गुणसुन्दर सूरि पढे ॥ श्री ॥

[1296]

संवत् १५५६ वैशाख सुदि ३ शनौ श्री सफेरगळे ऊ० बढाला गोत्रे सा० लूसा लीला
पु० साखा हरा लोजा जार्या तारू पु० हरासजइ (?) तू पु० पु० सु० श्रे० श्री शान्तिनाथ बिंबं
कारितं प्र० श्री शान्ति सूरि ।

[1297]

संवत् १५५७ आषाढ सुदी १० बुधे श्री पद्दुवरु गोत्रे शा० तोला सन्ताने कुंथरपाल
पुत्र साधू वेत जा० देवल० पु० णप रूपचंद युतेनात्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं
प्र० वृहज्जळे ज० श्री मेरुप्रज सूरि पढे श्री मुनिदेव सूरिजिः ॥

[1298]

संवत् १५५७ वर्षे माह सुदि १० दिने शनिवारे उपकेशवंशे सखवाल गोत्रे सा गुणदत्त
जार्या जंगादे पुत्र सा० धणदत्त जार्या धन श्री पुत्र सा० हीरादे परिवारयुतेन श्री शीतल

(५७)

नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनसमुद्र सूरि पट्टे श्री जिनहंस सूरिजिः ॥
कल्याणमस्तु ॥ श्रीः ॥

[1299]

संवत् १५६३ वर्षे माह सुदि १५ उ० उच्छितवालगोत्रे संघवी देवा ज्ञा० देवददे सा०
वीणा ज्ञार्या वीढ्णदे पुत्र तेजा वस्ता धन्ना आत्मपुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं
प्र० श्री धर्मघोषगच्छे श्री श्री श्रुतसागर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

[1300]

संवत् १५६६ वर्षे फाट्गुन सुदी ३ सोमवासरे उपकेशवंशे रांका गोत्रे शा० श्रीरंग
ज्ञा० देऊ पु० करमा ज्ञा० रूपादे स्वश्रेयसे आत्मपुण्यार्थं नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० उपकेश
गच्छे ज० श्री सिद्ध सूरिजिः ॥

[1301]

संवत् १५७२ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे श्री श्रीवंशे मं० सिंघा ज्ञा० रद्दा पु० मं० करण
ज्ञा० रमादे पु० मं० अजा सुश्रावकेण ज्ञा० आहवदे पु० राणा तथा पितृव्य पु० मा० गोगद
प्रमुखसहितेन मातृ साधुपुण्यार्थं नागेन्द्रगच्छे सुगुरूणामुपदेशेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं
प्रतिष्ठितं श्री संघेन वीवलापुरे ॥

[1302]

संवत् १५७६ वर्षे चैत्र सुदि ५ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० राजा ज्ञा० रमादे पुत्र
खीमाकेन ज्ञा० हीरादे पुत्र धनादि समस्त कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रतस्वामी
बिंबं कारितं श्री पूर्णिमा पट्टे जीमपल्लीय ज० श्री चारित्रचन्द्र सूरि पट्टे श्री मुनिचन्द्र
सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ नेवीआए मगम वास्तव्य ॥

[1303]

ॐ संवत् १५७६ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ९ उ० सुराणा गोत्रे शा० हेमराज ज्ञार्या स० हेमश्री

पुत्र ज्ञा० देवदत्तेन स्वपितृपुन्यार्थेन कारितं श्री आदिनाथ विंभं प्रतिष्ठितं श्री धर्मबोध
गण्डे जट्टारक श्री पयाणंद सूरि पट्टे श्री नन्दिवर्द्धन सूरिजिः ॥

[1304]

सं० १५९६ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ उप० ज्ञा० टप गोत्रे छे० सदा ज्ञा० सक्तादे पु०
थिरपाल ज्ञा० घेमलदे पु० सहसमल्ल हापा जगा सहितेन पितृ नि० श्री मुनिसुव्रत विंभं
कारितं प्र० श्री सण्फेरगण्डे श्री शांतिसुन्दर ॥

[1305]

संवत् १५९९ वर्षे आषाढ सुदि ९ दिने आदित्यनागगोत्रे तेजाणी शाखायां शा०
मुहना पु० हासा पुत्र सखारण दा० नरपाल सधारण जार्था सूहवदे पुत्र ४ श्री करणरंगा
समरथ अमीपाला सखारण स्वपुण्याय कारितं । श्री उपकेश गण्डे जट्टा० श्री सिद्ध सूरिजिः
श्री अजिनन्दन विंभं प्रतिष्ठितं स्वपुत्रपौत्रीय श्रेये मातु ॥

[1306]

संवत् १५९९ वर्षे वैशाख विदि १३ सोमे श्री सण्फेरगण्डे ऊ० जण्फारी गोत्रे ज० ईसर
पु० वीसल ज्ञा० कीढ्ढूपत्ते निमित्तं श्री नेमिनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिजिः ॥

[1307]

संवत् १६१५ वर्षे वैशाख विदि १० सोमे जवाठ वास्तव्य हूंबरु ज्ञातीय मंत्रीश्वर गोत्रे
दोसी श्रीपाल जार्था सिरीआदे सुतं दोसी रूढाकेन ज्ञा० राणी गुतै श्री पद्मप्रज विंभं तपा०
श्री तेजरत्न सूरिजिः प्रति० ॥

[1308]

संवत् १६४३ वर्षे फादगुन सित ११ अहंमदावाद वास्तव्य बाई कोमकीसङ्गया प्राग्वाट
सेठि मूला ज्ञा० राजलदे पुत्री श्री आदिनाथ विंभं प्रतिष्ठितं श्री विजयसेन सूरिजिः
श्री तपागण्डे ॥

(५९)

[1309]

संवत् १६९६ वर्षे मिंगसिर सुदि १० रवौ उपकेश झातीय लघु शाखायां बुरा गोत्रे
फुमण गोत्रे बाइ गेलमादि पुत्र ठाकुरसी टाइसिंघ श्री कुन्थुनाथ बिंघं कारापितं श्री
तपागठे गुरु श्री विजयदेव सूरि तल्पटे विजयशिव सूरिः प्रतिष्ठितं ॥

[1310]

संवत् १६९९ वर्षे वैशाख शुक्ल ९ दिने श्री शांतिनाथ बिंघं कारितं
प्र० तपागठे श्री विजयसिंह सूरिजिः ॥

[1311]

संवत् १६९९ वर्षे फादगुन विदि ३ तिथौ सा० पुरुषाकेन शीतल बिंघं कारितं प्रतिष्ठितं
..... गठे आचार्य श्री विजयसिंह सूरिजिः ॥

[1312]

संवत् १७१५ श्री श्रीमाल झातौ शाह आसा जार्या अणुपमदे पुत्र धिर पाखेन ज्ञात
दूणसिंह निज जार्या निमित्तं श्री पञ्चतीर्थी का० प्र० श्री नागेन्द्र गठे श्री
पद्मचन्द्र सूरि पट्टे श्री रत्नाकर सूरिजिः ॥

चौवीसी पर ।

[1313]

संवत् १५१० वर्षे पौष विदि ५ शुके श्रीमोठ झातीय मे० काण्हा जार्या काचू सु०
जुराकेन जा० माई सु० अजनरामा सहितेन पितृज्जातृश्रेयसे स्वपूर्वजनिमित्तं श्री कुन्थुनाथ
चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रति० श्री विद्याधरगच्छे श्री विजयप्रज सूरि पट्टे श्री हेमप्रज
सूरिजिः ॥ वर्द्धमान नमरे ॥

(६०)

[1314]

संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ मण्डपदुर्गे प्राग्वाट सं० अजन जा० टबकू सुत सं० वस्ता जा० रामा पुत्र सं० चाहाकेन जा० जीविणि पुत्र संजाग आनादिकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री चन्द्रप्रज २४ पट्ट का० प्र० तथा पट्टे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

श्री आदिनाथजी का मन्दिर—दफ्तरियों का महह्वान ।

[1315]

संवत् १५२३ माघ शुक्ल ७ बुधे श्री उसवाल झातौ लोढा गोत्रे सा० जूचर जा० सरू पु० हंरू जा० सहर्नाई पु० जरहूकेन पितृ श्रेयसे श्री विमलनाथ विंबं कारितं श्री रुद्रपट्टीय गच्छे श्री देवसुन्दर सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री सोमसुन्दर सूरिजिः ॥

[1316]

संवत् १५२७ वर्षे आषाढ सुदी २ गुरौ उपकेश झातीय तावअजा जार्या आहलदे पुत्र नीवा जा० मानू सहितेन आत्मश्रेयोर्थ श्री मुनिसुव्रत विंबं कारितं । प्रतिष्ठितं अखलगच्छे श्री जयकेसर सूरिजिः ॥

[1317]

संवत् १५३४ वर्षे आषाढ सुदि २ दिने उपकेशवंशे बोथरागोत्रे शा० जेसा पु० थाहा सुश्रावकेण जा० सुहागदे पुत्र देवहा मानी वाकि युतेन माता लखी पुण्यार्थ श्री श्रेयांस विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥

[1318]

संवत् १५३४ वर्षे मिंगसिर वदि ५ उपकेश झातीय नाहर गोत्रे शा० चाहरु जार्या हरखू पुत्र बीजाकेन जा० वीजलदे पुत्र केशवयुतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ विंबं कारितं प्रति० श्री धर्मघोषगच्छे श्री धर्मसुन्दर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

(६१)

[1319]

संवत् १५३४ वर्षे प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० सोमा जा० देऊसु जोटाकेन जा० वानरि त्रातृ
जोजा प्रमुखकुटुम्बेन युतेन श्री संजवनाथ विंबं का० प्र० तपापद्दे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥
वीसनगरे ॥

[1320]

संवत् १५६० वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने सोजात वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय शा० जाणा
जा० जावलदे पु० आशाकेन जा० की३ सुत वापा वीदा प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्रेयोर्थ श्री
वासुपूज्य विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री हेमविमल सूरिजिः ॥

[1321]

संवत् १५७७ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमवार पुष्य नक्षत्रे नाहर गोत्रे सं० पटा तत् पुत्र
से० पासा चार्या पालजदे तत् पुत्र सं० लाखणार्येन तद् चार्या जाषणदे तत् पुत्र सं०
नानिग सं० खीमसिंह सहितेनात्मश्रेयसे विंबं कारितं श्री शांतिनाथस्य श्री धर्मघोष
गढे जट्टारक श्री नन्दिवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितः जडं जवनात् ॥

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1322]

संवत् १५९७ वर्षे पौष विदि ५ शुके प्राग्वाट श्रे० हरराज जा० अमरी पु० समधरेण
जा० नार्ह प्रमुखकुटुम्बसहितेन स्वश्रेयसे श्री कुन्धुनाथ विंबं कारितं प्रति० श्री उपकेश
गढे सिद्धाचार्य सन्ताने श्री देवगुल्ल सूरि पद्दे श्री सिद्ध सूरिजिः ॥

(६२)

चौबीसी पर ।

[1323]

संवत् १५३२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्री वायरु ज्ञातीय मं० माहव जा० ह्यु सु० म(हा)देवदास जा० जीवि सु० सिंहराज त्रातृ हरदास माही आसुरा पञ्चायण अमीपाल श्रेयसे श्री पार्श्वनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः आगमगच्छे श्री अमररत्न सूरि गुरुपदेशेन प्रतिष्ठितश्च विधिना ॥ देकावाक्का वास्तव्य ॥

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—(घोडावतों की पोल)

पंचतीर्थियों पर ।

[1324]

संवत् १३१६ वर्षे चैत्र विदि ६ जौमे श्री बृहज्ज्ठीय श्री उद्योतन सूरि शिष्यैः श्री हीरज्ज् सूरिजिः प्रतिष्ठितं । श्रे० शुक्रंकर जार्या देवः तयोः पुत्रेण श्रे० सोमदेवेन जार्या पूनदेवि पुत्र श्रीवह्म नागदेवादियुतेन आत्मश्रेयोर्थं श्री वीरजिन बिंबं कारितं ॥

[1325]

संवत् १५०३ वर्षे माहू गोत्रे सा० जाखर जरमी श्राविकायाः पुण्यार्थं मा० खडाकेन लीवा लीदा जीदा जादा पुत्र युतेन कारितं स्वपुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनज्ज् सूरिजिः ॥ श्रीखरतरगच्छे ॥

[1326]

संवत् १५२७ वर्षे वैशाख विदि ५ ओसवाल ज्ञातौ सूरणा गोत्रे सा० सखर सहस्र-वीरेण जार्या जोजी पु० मीमा वरता रंगू रत्नू युक्तेन स्वजार्या पुण्यार्थं श्री धर्मनाथ बिंबं कारितः प्रति० श्री धर्मघोषगच्छे श्री पञ्चाणन्द सूरिजिः ॥

(६३)

[1327]

संवत् १५४५ वर्षे ज्ये० विदि ११ दिने वीरवाडा वासि प्राग्० क्वाति सा० रत्ना जा०
माघू पु० सा० जीमाकेन जा० हेमी कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्री
श्री श्री सूरिजिः ॥ श्रिये ॥

[1328]

संवत् १५६६ वर्षे फाट्गुण सुदि ३ सोमे श्री नाणावालगह्णे उसन्न गोत्रे को० बुद्धय जा०
चाहिणदे पुत्र वीवावणा वधा दोहावणी पुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री शांति
सूरिजिः ॥ मेरुता नगरे ॥

चौबीसी पर ।

[1329]

संवत् १४९० वर्षे फाट्गुण शुक्ल ९ जाइलंवाळ गोत्रे सा० शिखर पुत्राज्यां शा० संग्राम
सिंह धनाज्यां निज मातृ साढ्हीं श्रेयो निमित्तं श्री सुविधिनाथ चतुर्विंशति पट्टं कारितः
प्रतिष्ठितं । तथा जट्टारक श्री पूर्णचन्द्र सूरि पट्टे जट्टारक श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

—•••—

बीकानेर ।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

ध्यासानियों का महह्ला—बांठियों के उपासरे के पास ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1330]

सं० १४९६ फागुण वदि ६ बुधे ऊकेश झातीय सा० जगसी जा० ऊवकू पुत्र्या था०

(३३)

रोहिणी नाम्न्या क० जिणंद वासा खजर्तृनिमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री
कोरंटगढे श्री कक्क सूरि पढे श्री सावदेव सूरिः ॥

[1331]

सं० १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ सोमे प्राग्वाट व्य० जज्ञता जार्या वरजू पु० बुग स०
आत्मश्रेयोर्थं श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मं श्री मुनिप्रज्ञ सूरिजिः ॥

[1332]

सं० १५०० वर्षे वै० सु० ५ दिने सोमे श्रोसवाल झातीय सुचिंती गोत्रे सा० धन्ना जार्या
अमरी पु० तोदूकेन स्वपूर्वज रीजा पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[1333]

सं० १५०९ वर्षे माघ सु० ७ ज्जकेशवंशे माळू शाषायां सा० पूना सुत सा० सहसाकेन
पुत्र ईसर महिरावण गिरराज माळा पांचा महिपा प्रमुख परिवारेण स्वश्रेयोर्थं श्री कुंयुनाथ
बिंबं कारितं श्री खरतरगढे श्री जिनराज सूरि पढे श्री जिनजद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[1334]

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्री उपकेशगढे ककुदाचार्य संताने जाद्रगोत्रे सा०
साधा सा० सारंग जा० तब्ही पु० भीमधर जा० जेठी पु० बेता बेनायुतेन आत्मश्रेयसे श्री
संजवनाथ बिंबं का० प्रति० श्री कक्क सूरिजिः ।

[1335]

संवत् १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० दिने ज्जकेशवंशे दोसी सा० जादा पुत्र सा० धणदत्त
तथा ठकण पुत्र सा० वच्छराज प्रमुखपरिवारयुतेन श्री शीतल बिंबं मातृ अपू पुण्यार्थं कारितं
प्र० खस्तर श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ।

(६५)

[1336]

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० ५ बुधे ज्जकेश शुभ गोत्रे श्रे० आसधर पुत्र श्रे० पूनइ जार्या
कली पुत्र सा० करमबोन जार्या कर्मादि धर्म पुत्र सा० समरा जार्या सहजसंद सुत तेजादि
कुटुम्बयुतेन श्री प्रथम तीर्थकर विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः । श्री सिद्धपुर वास्तव्य ॥

[1337]

सं० १५३३ फा० सुदि श्री संजवनाथ विंबं श्री संदेरगछे जट्टारक श्री ।

[1338]

सं० १५३४ वर्षे मा० सुदि ५ स्मै श्री उपकेश बांज गोत्रे । स्व० बहा ज्ञा० वीरिणि
पु० स्व० सचू ज्ञा० लषमादे मानृपितृ पु० आस्म पु० श्री कुंथुनाथ विंबं कारापितं श्री
मसधर ग० प्र० श्री गुणविमल सूरिजिः ॥

[1339]

सं० १५३६ वर्षे फागु० सु० २ रवौ श्योसवाल धामी गोत्रे सा० पदमा जार्या प्रेमसदे
पु० जेला ज्ञा० जावलदे पु० देवराज युतेन स्वपुण्यार्थ श्री विमलनाथ विंबं कारापितं प्र०
ज्ञानकीय गछे श्री धनेश्वर सूरिजिः ॥ सारो ।

[1340]

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सु० ३ तइट गोत्रे सा० सीधर पुत्र गुरपतिना ज्ञा० गरसंदे
पु० सहसा पुनि जार्या रासारदे पुत्र करमसी पहराज युतेन श्री कुंथुनाथ विंबं निज पुण्यार्थ
कारितं प्र० नमवाल गछे श्री देवगुप्त सूरिजिः ।

[1341]

सं० १५३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने ज्जकेश रा गोत्रे सा० डूढहा पुण्यार्थ पुत्र सा०
अषयराज तद् ज्ञातृ ली युतेन श्री नमिनाथ विंबं का० प्र० श्री खरतरगछे श्री जिनजट्ट
सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥ श्री ॥

(६६)

[1342]

सं० १५३९ वर्षे वैशाख सुदि ४ शुक्रे उ० ज्ञातीय प्राह्येचा गोत्रे व्य० चांदा जा०
धर्मिणि पु० गांगा जा० म्यापुरि सहितेन श्री पार्श्वनाथ विंबं का० प्र० जात्रड गळे श्री
जावदेव सूरिजिः ।

[1343]

संवत् १५४९ वैशाख सु० ५ बुधे काष्ठासंघ जट्टारक श्री तस्यान्नाये

[1344]

सं० १५५२ वर्षे फा० शु० ६ शनौ आम० ज्ञातीय सा० मुंज जा० मुजादे पु० सा०
परवत जा० अमरादे सा० पर्वत श्रयार्थ श्री विमलनाथ विंबं कारितं प्र० तपागळे श्री
हेमविमल सूरि ।

[1345]

संवत् १५६१ वर्षे माह सदि ५ दिने शुक्रे हुंबड ज्ञातीय श्रे० विजपाल जा० हीरू
सु० श्रे० पदमाकेन जा० चांपू सु० षोना जा० रषी सु० कर्मसी प्रमुखपरिवारपरिवृत्तेन
स्वश्रेयार्थ श्री विमलनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागळाधिगज श्री लक्ष्मीसागर सूरि
तत्पट्टे श्री सुमनिसाधु सूरि तत् पट्टे साम्प्रत विद्यमान परमगुरु श्री हेमविमल सूरिजिः ॥
वीचावेका वास्तव्य ॥

[1346]

सं० १५७७ वर्षे वैशाख वदि ७ श्री आमवंशे उजलाणी गोत्रे । पीगेजपुर स्थाने ।
सा० धनूतार्या सुत सा० वीरम सुत दीपचंद उधरणादि कुटुम्बयुतेन
श्री संजवनाथ विंबं कारितं । प्रतिष्ठितं

[1347]

संवत् १५९६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमवार श्री अदित्यनाग गोत्रे चोरवेढ्या शाखार्या

सा० पासा पुत्र ऊदा जा० पऊमादे पु० कामा गयमल देवदत्त ऊदा पुण्यार्थं शांतिनाथ
बिंबं कारापितं उपपल सिद्ध सूरिजिः प्रति ।

[1348]

संवत् १६२७ वर्षे पोष वदि ३ दिने साह काजड़ गोत्र साह चापसी चार्थी नारंगदे
पु० श्री वासपु श्री वासुपूज्य बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री हीरविजय सूरिजिः ।

जैन उपासरा का शिला लेख ।

[1349]

- (१) पृथ्वी तल मांहे प्रगटः बड़ो नगर बीकाण ।
- (२) सुगतसींह महागजजुः राज करै सुविहाण ॥ १ ॥
- (३) गुणी हामामाणिक्य गणिः पाठक पुन्य प्रबान ।
- (४) बाचक विद्या हेमगणिः सुप्रत सुख संस्थान ॥ २ ॥
- (५) सय अढार गुणसठ में महिरवान महाराज ।
- (६) नठय बनाय उपासरो दियो सदा थित काज ॥ ३ ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मन्दिर—बाजार में ।

शिलालेख ।

[1350]

॥ संवत् १५६२ वर्षे आषाढ़ सुदि ९ दिने वार रवि । श्री बीकानेर मध्ये महागजा
राई श्री श्री श्री बीकाजी विजयराज्य । देहरो कगयो श्री संघ ॥ संवत् १३८७ वर्षे श्री
जिनकुशल सूरि प्रतिष्ठितः ॥ श्री मंजोवर मूलनायक ॥ श्री श्री आदिनाथ चतुर्विंशति

(१७)

३३ ॥ नमःसकल शसत्र पुत्र नमःसकल राजशसत्र पुत्र श्री नमःसकल सा० त्रैलोक्य सुखवनेश
साह वीरम दुसाऊ देवचंद्र कान्हरु महं ॥ संवत् १५५१ वर्षे श्री श्री श्री नरवीर इन्द्रजी
रो परधो महं वठावते जरायो ठे ॥

चौबीस जिनमाता के प्रह पर ।

[1351]

॥ संवत् १६०६ वर्षे फागुण वदि ७ दिने श्री वृद्धत खरतरगच्छे । श्री जिनचंद्र सूरि
सन्ताने । श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिनसमुद्र सूरि पढे ॥ श्री जिनहंस सूरि तत पढाखंकार
श्री जिनमाणिक्य सूरिजिः प्रतिष्ठिता श्री चतुर्विंशति श्री जिनमातृणां पट्टिका कारिता ।
श्री विक्रमनगर संघेन ॥

चरण पर ।

[1352]

संवत् १७०५ वर्षे शाके १७७० प्रमिने माधव मासे शुक्ल षडे पौर्णिमास्यां तिथौ गुरुवारे
वृद्धत खरतर गणाधीश्वर ज० । जं० । युग प्र० श्री १०० श्री हर्ष सूरि जित्पाडुके श्री संघेन
कारापितं प्रतिष्ठितं च ज० । जं० । यु० । प्र० । श्री जिनसौजाग्य सूरिजिः श्री विक्रमपुर
वरे ॥ श्री ॥

श्रीमन्दिर स्वामी का मन्दिर—जांफासर ।

[1353]

सं० १५३७ वर्षे मार्ग सुदि १२ जकेश झातीय बांहरटिया गोत्रे सा० समुवर पुत्रेण
सा० जालु युतेन श्री पद्मप्रज बिंबं कारितं तपा ज० श्री हिमसमुद्र सूरि पढे श्री
हेमस्त्र सूरिजिः ।

[1354]

सं० १५७७ वर्षे प्राग्वाट श्रे० गोगेन जा० राणी सुत वरसिंग जा० बीबू वाम्भ्या प्रात्

(१२)

अमल नरसिंह सोरखादि कुटुम्बयुतया श्री संजव विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री इन्द्रनन्द
सूरिजिः पत्तने ॥ श्री ॥

कुंठ और नहर पर की शिलालेख ।

[1355]

॥ श्री नेमिनाथाय नमः ॥

श्री बीकानेर तथा पूरब बंगाला तथा कामरू देस आसाम का श्री संघ के पास
प्रेरणा करके रुपया जेला करके कुंड तथा आगोर की नहर बनाया सुश्रावक पुण्य प्रजावक
देवगुरुक्तिकारक गुरुदत्त को जक्त चोरडिया गोत्रे सीपानी चुन्निखाल रावतमलाणि
सिरदारमल का पोता सिंधिया की गवाड़ में वसता मायसिंध मेघराज कोठारी चोपड़ा
मकसुदाबाद अजिमगंजवाले का गुमास्ता और कुंड के ऊपर दारईकेखाव (?) बकतावर
चंद सेठिया बनाया संवत् १७५४ शाके १७९० प्रवर्तमाने मासोत्तममासे चाड्रवामासे शुक्ल
पक्षे पंचम्यां तिथौ जौमवासरे ।



मोरखानो-बीकानेर ।

[1356] *

१. ॥ ॐ ॥ श्री सुसाणं कुखदेव्यै नमः ॥ मूलाधारनिरोधबुद्धफणिनीकंदादिमंदानिले ।
(५) नाक्रम्य ग्रहराज मंठ

* यह स्थान " देशलोक " से दक्षिण-पूर्व कोण १२ मील पर है । यहां के देवी मंदिर में काले पाषाण पर यह लेख
खुदा हुआ है और टेसिटोरी साहब ने अपने ई० सं० १९१६ की रिपोर्ट में छापी है । See J & P of the A. S. of Bengal
Vol XIII. pp. 214-215.

१. सधिया प्राग्पश्चिमांतं गता । तत्राप्युज्वलचंद्रमंडलगलत्पीयूषपानोद्धसत्कैव-
ल्यानुज्वया सदास्तु जगदानं
२. दाय योगेश्वरी ॥ १ या देवेन्द्रनरेन्द्रवंदितपदा या जडतादायिनी । या देवी किल
कल्पवृक्षसमतां नृणां दधा-
४. ... लौ । या रूपं सुरचित्तहारि नितरां देहे सदा विव्रती । सा सूरणासवंश
सौख्यजननी ज्ञयात्प्रवृद्धि क-
५. री ॥ २ तत्रैः किं किल किं सुमंत्रजपनैः किं जेषजैर्वा वरैः । किं देवेन्द्रनरेन्द्र-
सेवनतया किं साधुभिः किं धनैः । ए-
६. का या जुवि सर्वकारणमयी ज्ञात्वेति ज्ञो ईश्वरी । तस्याध्यायत पादपंकजयुगं
तद्भ्यानक्षीनाशयाः ॥ ३ ॥ श्री भूरिर्द्धर्म-
७. सूरी रसमयसमयांजोनिधेः पारदश्वा । विश्वेषां शश्वदाशा सुरतरुसदृशस्त्या-
जितप्राणिर्हिंसां । सम्यग्दृष्टि ...
८. मनणु गुणगणां गोत्रदेवीं गरिष्ठां । कृत्वा सूरणावंशे जिनमतनिरतां यां चका-
रात्मशक्त्या ॥ ४ तद्द्यात्रां महता महेन
९. विधिवद्विज्ञो विधायस्त्रिले निर्गो मार्गणचातकपृणगुणः सत्तारटंकठटः । जातः
क्षेत्रफले ग्रहिर्मरुधरा धारा-
१०. धरः ख्यातिमान् संघेशः शिवराज इत्ययमहो चित्रं न गर्जिध्वजः ॥ ५ तत्पुत्रः
सच्चरित्रे वचनरचनया जूमिराजः
११. समाजालंकारः स्फारसारो विहित निजहितो हेमराजो महौजाः । चंगप्रोचुंग-
शृगं जुवि जवनमिदं देवयानोप-
१२. मानं । गोत्राधिष्ठातृदेव्याः प्रसृमरकिरणं कारयामास जक्त्या ॥ ६ संवत् १५७३
वर्षे ज्येष्ठमासे सितपक्षे पूर्णिमा-

१३. स्यां शुक्रे ऽनुगधायां बीमकर्णे श्री सूरणवंशे सं० गोसल तत्पुत्र सं० शिवराज
तत्पुत्र सं० हेमराज तत्तार्या सं० हेमश्री त-
१४. त्युत्र सं० धजा सं० काजा सं० नादहा सं० नरदेव सं० पूजा तार्या प्रतापदे पुत्र
सं० चादइ जा० पाटमदे पुत्र सं० रणधीर
१५. सं० नाथू सं० देवा सं० रणधीर पुत्र देवीदास सं० काजा तार्या कउतिगदे पुत्र
सं० सहसमल सं० रणमल
१६. सहसमल पुत्र मांण । रणमल पुत्र पेता बीमा । सं० नादहा पुत्र सं० सीहमल
पुत्र पीथा सं० नरदेव पुत्र मोकला-
१७. दिसहितेन । सं० चादकेन प्रतिष्ठा कारिता सपरिकरेण श्रीपद्मानंद सूरि तत्पदे
त्र० श्री नंदिवरुन सूरिश्वरेज्यः ॥

चुरू-बीकानेर ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1357]

सवत् १३०४ गढे कारितं श्री पार्श्वनाथ विंबं ।

[1358]

॥ सं० १३०० ज्येष्ठ सु० १४ श्री जणसगढे धे० म ला जा० मोषलदे पु० देहा
कमा पितृ मातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्र० श्री ककुदाचार्य सं० श्री कक
सूरिजिः ।

(३)

[1359]

सं० १४६९ वर्षे फा० वदि २ शनौ नागर ज्ञातीय अक्षियाण गोत्र श्रे० कर्मा चार्या
भाण सुत कूग चातृ सांगा श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० अंचलगुह ना० श्री
मेरुतुंग सूरिजिः ॥

[1360]

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० आसवंशे नाहरे गोत्रे सा० हेमा जा० हेमसिरि पु०
तेजपालह आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० धर्मघोषगुहे ।

[1361]

सं० १५३० वर्षे फा० व० २ रवौ प्राग्वाट ज्ञा० साह करमा जा० कुनिगदे पु० सा०
दोला जा० देवहा चोला चातृ जुणा स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णि० कठोली-
वासगुहे ज० श्री विद्यासागर सूरीणामुपदेशेन ।

[1362]

॥ सं० १५४५ वर्षे माह सु ३ गुरौ उपकेश ज्ञा० श्रेष्ठि गोत्रे साह आसा जा० ईसरदे
पु० जईता जा० जीवादे पुत्र चाहा युतेन पित्रो श्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं
महाहरउ गुहे ज० श्री कमलचंद्र सूरिजिः ॥

गवालियर (लस्कर) ।

पंचायती मंदिर — सराफा बजार ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1363]

सं० ११९० ज्येष्ठ सु० १२ देवम सुतया वीटिकया कारितेयं प्रतिमा ।

(७३)

[1364]

सं० १३४० वै० सुदि २ गुरौ श्रीमाल ज्ञातीय श्री प्रद्युम्न सूरिजिः ।

[1365]

संवत् १३७६ वर्षे वैशाख सु० ३ प्रणमंति ।

[1366]

सं० १४९१ माघ सुदि ६ बुधे उप० बोहड़ वर्धमान गोत्रे सा० राणा जा० सूहवदे पु० महिषा मोकल श्रेयोर्थ श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं खरतरगछे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरि प्रति० ॥

[1367]

सं० १४९८ फागुण वदि १० चंजेजरिया गोत्रे । सा० धर्मा पुत्रेण जीणाजूणाच्यां निजपितृनिमित्तं श्रीपद्मप्रज बिंबं कारितं प्र० तपागछे जट्टारक श्री हेमहंस सूरिजिः ।

[1368]

संवत् १५०० वर्षे वैशाख सुदि ३ जाज श्रीमाल ज्ञातीय । श्रे० सादा जा० मनुं सुत माईच्या जा० अषू सुत देवराजेन पितानिमित्तं श्री शीतलनाथ पंचतीर्थी बिंबं कारापितं प्रति० श्री ब्रह्माणगछे प्र० ज० श्री विमल सूरिजिः ।

[1369]

संवत् १५०१ वर्षे मा० सु० ५ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० जांषर सुत जट्टसा जा० जामि पु० सायकरणा परनारायजिः पित्रो श्रे० चंद्रप्रज स्वामि बिंबं प्र० श्री वृहत् सा गछे प्र० श्री मंगलचंद्र सूरिजिः ।

[1370]

सं० १५०५ वर्षे वै० सु० १३ शान्ति बिंबं का० प्र० तपापद्मे श्री जयचंद्र सूरिजिः ।

(७४)

[1371]

सं० १५०७ वैशाख सु० ९ जूका बेबिकाच्यां स्वश्रेयसे कारिता ।

[1372]

सं० १५०९ वर्षे माघ सु० १० शनौ जकेशवंशे माढू गोत्रे मं० जोजराज जा० जमादे पुत्र सं० देवोकेन त्रा० मं० सोनार संग्रामादि सहितेन सू(?) जा० देवलदे श्रेयोर्थ श्री अजित बिं का० प्र० श्री खरतरगळे श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

[1373]

सं० १५१२ माघ सु० १ बुधे श्री ओसवाल ज्ञानौ सुहणाणी सुचिंती गो० सा० सारंग जा० नयणी पु० श्रीमालेन जा० बीमी पु० श्रीवंत युतेन मातृश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं उपकेशगळे ककुदाचार्य सं० प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[1374]

सं० १५१३ पौष सु० ७ जकेशवंशे वि क गोत्र सं० नरसिंहांगज सा० मार पुत्रेण सा० कीट्टाकेन निजमातृपुण्यार्थ श्री नमि बिंबं का० प्र० ब्रह्माण तपागळे उदयप्रज सूरि जट्टारक श्री पूर्णचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिजिः ।

[1375]

सं० १५१३ वर्षे माह सु० २ जकेश षीथेपरिया गो० सा० विथपाल चार्या वेमथी पु० जाषू सेषू जा० सोम श्री माथी प्ररपांध (?) आ० श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० श्री वृहजळे श्री सागरचंद्र सूरिजिः ।

[1376]

संवत् १५१५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ सोमे गूर्जर ज्ञातीय दो० अमरसी जा० रूपिणि सुत

(७५)

ऊसाकेन जा० वइजीयुतेन पितुरादेशेन आत्मश्रेयसे जीवितस्वामी श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमापक्षे त्रीमपद्वीय जहारक श्री जयचंद्र सूरीणमुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ ७ ॥

[1377]

सं० १५१० वर्षे वैशाख सुदि ए सोमे श्रीमाल झातीय मउड़ा (?) गोत्रे सा० बठराज पु० सा० जाटा जार्या गउवदे पु० सा० ठाजू जार्या हर्षमदे पु० सा० रत्नपाल सीधर समदा सायराज्यः स्वपितृणां श्रेयसे श्री श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री धर्मघोषगढे श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे श्री साधुरत्न सूरिजिः ॥

[1378]

॥ संवत् १५११ वर्षे वैशाख वदि ७ शुक्रे प्राग्वाट झातीय सा० देवसीय जार्या पाट्टणदे पुत्र सा० जामवेन जा० माकू सहितेन आत्मश्रेयोर्थ श्री पद्मप्रत्त बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री साधपूर्णिमापक्षे ५ । श्रीरामचंद्र सूरि पट्टे पुज्य । श्री पुज्य चंद्र सूरीणामुपदेशेन विधिना आचष्टे ।

[1379]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख वदि ७ जौमवारे प्राग्वाट गोत्रे सा० जाटा जा० जइतो पुरबी माता जाटी पु० जहरवदास जा० डुद्धादे सहितेन लाडि निमित्ते श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं खरतरगढे प्रतिष्ठितं श्री जिनचंद्र सूरिजिः । शुभं भवतु ।

[1380]

सं० १५३१ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे श्री कोरंटगढे श्री मन्नवाय संताने उप० पोमालेचा गोत्रे सा० जगनाथ जा० जासहदे पु० सा० सांग जा० संसारदे पु० सा० मेहा नरसि सहितेन श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं प्र० श्री सांबदेव सूरिजिः ॥

[1381]

संवत् १५३३ वर्षे माघ सुदि १३ सोमवासरे प्राग्वाट झातीय सा० हेमा जा० मानू पुत्र

(१६)

सं० बकूच्या जा० माही पु० सं० वता जा० मउकूं पुत्र कूंगर आत्मश्रेयसे श्री विमलनाथ
बिंबं कारितं साधुपूर्णिमापक्षे प्रतिष्ठितं श्री जयशेखर सूरिजिः ।

[1382]

सं० १५३४ वर्षे फागुण सुदि ए बुधवारे प्रा० झा० सा० मोकल जा० मोहणदे पु०
मेहाके० जा० कुंती पु० रो० जा० लषमण आसर वीसल सहितेन आ० श्री वासुपूज्य बिंबं
का० प्र० पू० द्वि० कछोली वा० ज० श्री विजयप्रज सूरिणामुपदेशेन ।

[1383]

संवत् १५४९ वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ सोमे आसवाल ज्ञातीय सा० मूला जा० माणिकदे सं०
माणिक जा० गंगादे सु० चूनं च जा० लाठी बिंबं कारितं मूला श्रेयर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं
का० प्रतिष्ठितं । श्री संकेरगळे श्री सुमति सूरिजिः ॥

[1384]

सं० १५६३ वर्षे माह सुदि ५ गुगै उपकेश ज्ञा० चूरि गोत्रे सा० चांपा चउहथ चां०
जा० चांपले पु० कान्हा जा० चंगी पु० देवा शिवा सुकृदुम्बयुतेन चउहथ श्रियर्थं श्री
सुविधिनाथ बिंबं श्री धर्मघोषगळे ज० श्री श्रुतसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं । शुभं भवतु ॥

[1385]

सं० १५६७ वर्षे वैशाख सुदि १० बुधे गूंदेचा गोत्रे ऊकेशवंशे सा० ठाकुर जार्या टहन
पु० ऊधा सुत कचा वर्जू जा० २ जसा गुणा प्रमुख कुटुंबसहितैः श्री अंचलगळे जावसागर
सूरिणामुपदेशेन ।

[1386]

सं० १५७२ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे ऊ० झा० फूलपगर गोत्रे सा० दधीरथ पु० सा०
धर्मा जा० २ पाबू साढही पाबू पु० कांजा जा० पूरी पुत्र मोकल प्रमुख समस्त

(११)

कुटुम्बेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्र० श्री वडगछे श्री श्री चंद्रप्रज्ञ सूरिजिः ॥
॥ श्री ॥ जावर वास्तव्य ॥

[1387]

सं० १५७९ वर्षे वैशाख सु० ६ सोमे कूकर वाड़ा वा० नागर ज्ञातीय श्रे० कान्हा जा०
धनी सु० श्रे० हरपतिलदणकेन जा० लषमादे प्र० क० सुतेन नपा सीपा पदमा श्रे० श्री
श्रेयांसनाथ विंबं का० श्री वृहत्तपा प० श्री धनरत्न सूरि श्री सौजाग्यसागर सूरिजिः
प्रतिष्ठितं ॥

[1388]

संवत् १६२७ वर्षे वैशाख शुदि ३ शुके जकेशवंशे गोठ १ गोत्रे सोप श्रीवञ्च सोप जोखा
पुत्र सो० उदयकरण जार्या अठवोदे पुत्र सो० जसवीर । सो० नका सो० धबजी प्रमुख
परिवारयुतैः श्री धर्मनाथ विंबं कारितं श्री वृहत्खरतरगढे श्री जिनसिंह सूरिजिः प्रतिष्ठितं
॥ श्रीः ॥

चौबीसी पर ।

[1389]

सं० १५२१ वर्षे वैशाख सुदि १० श्री उपकेश ज्ञातीय वापणा गोत्रे सा० देहड़ पु०
देव्हा जार्या धाड़ पुत्र सा० लूला जीमा कान्हा स० जीमाकेन जा० वीराणि पुत्र श्रवणा
मारू जाजू सहितेन श्री शांतिनाथ मूलनायक प्रभृति चतुर्विंशति जिनपट्टः का० श्री
उपकेशगढे ककुदाचार्य संताने प्र० श्रीसिद्ध सूरि पट्टे श्री कक्क सूरिजिः ॥ शुभं ॥

[1390]

सं० १५४१ वर्षे आषाढ सु० ३ शनौ उप० श्रेष्ठि गोत्रे सा० रामा जा० रत्नू पु० राजा
माजा शिवा राजा जा० टहकू पु० वना सांगा मांगा गीर्झा आसा सहदेव जार्या जटी
सा० सांगाकेन जा० करमी द्वि० जा० रामति प्र० समस्तकुटुम्बसहितेन ज्ञातृ वना

(३७)

निमित्तं श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति पट्टकं का० श्री मद्रूहड़ गङ्गे रत्नपुरीय ज० श्री धर्मचंद्र
सूरि पट्टे ज० श्री कमलचंद्र सूरिजिः ॥ शाब्दमखीयपुरे ।

धातु की मूर्ति पर ।

[1391]

सं० १६७५ वर्षे वै० सु० १५ दिने इंदलपुर वास्तव्य प्रा० वाद (प्राग्वाट) ज्ञातीय
बाई वज्र का० श्री संजव विं० प्र० श्री । विजयदेव सूरिजिः ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1392]

संवत् ११७७ फागुण सुदि ए साखिगदे ब्रूण वति जा० कारिता ।

[1393]

सं० १३७६ माह वदि २ श्री बृहज्ज बा० श्री देवार्य स० ऊकेश ज्ञा० श्रे० आसचंद्र
सा० श्रे० देदारिसीहेन पितृश्रेयसे श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० श्री अमरचंद्र सूरि शिष्यैः
श्री धर्मघोष सूरिजिः ॥

[1394]

॥ सं० १४६६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातौ म० साब्दा सुत पितृ म०मूलू
मातृ मूनी सुत ठकुरसिंहेन पितृमातृश्रेयसे श्री संजवनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री
ब्रह्माणगङ्गे श्रीवीर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1395]

सं० १४६९ वर्षे माह सुदि ६ षंकेरकीयगङ्गे ऊ० सा० अजा जा० कपूरदे सु० तिहुअणा

(५५)

जा० माह्णदे पु० तेजाकेन पितृ घस्समेठी सहितेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांति विंबं का०
प्रति० श्रीसुमति सूरिजिः ॥

[1396]

सं० १४९० वर्षे माघ सु० १२ गुरुवारे आदित्यनाग गोत्रे सा० सखपण युत्र कम्मण
जा० सांवत दीर तेजाकेन श्री शांतिनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीदेव सूरिजिः ॥ ० ॥

[1397]

सं० १४८९ माघ सुदि १० शनौ श्रीमाल ज्ञातीय मं० घेता संताने मं० ठाड़ा जा०
नाऊ नाम्ना पु० कान्हा सोना सहितया ऋतु श्रेयसे श्री श्रेयांस विंबं का० प्र० श्री पूर्णिमा
पक्षे श्री विद्याशेखर सूरिणामुपदेशेन विधिना श्राद्धैः ॥

[1398]

संवत् १४९९ माह सुदि ५ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातोय वीटवल व्य० पाता सुत वयरसी
चार्या माही ... पितृमातृश्रेयोर्थं सुत मेलाकेन आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथ विंबं कारापितं
श्री नागेन्द्र गह्वे श्री गुणसागर सूरिः शिष्यैः प्रतिष्ठितं श्री श्री गुणसमुद्र सूरिजिः ॥ श्री
सांतपुरे पितृव्य देवलवणीली ।

[1399]

सं० १५०४ वर्षे फागण शु० ११ गुरौ दिने नाहर गोत्रे सा० जाहड़ जा० जोलाही
सा० राजा जा० लाबू ... पु० जाजू सहितं निजपुण्यार्थं श्री वासुपूज्य विंबं का० प्र०
श्री धर्म० गह्वे श्री विजयचंद्र सूरिजिः ।

[1400]

सं० १५०९ ज्येष्ठ सुदि २ दिने ऊकेशवंशे सा० जोणसी चार्या कपूरदे आविकया निज
ऋतु जोणतीपुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंबं कारि० प्रति० खरतरगह्वाधिराज श्री जिनराज
सूरि पद्मलङ्कार प्रति० श्री जिनचंद्र सूरि राजैः ॥

(७०)

[1401]

ॐ ॥ सं० १५११ वर्षे माघ वदि ए ढोहरिया गोत्रे सा० दातु पूरेण श्री विमलनाथ
बिंबं कारितं प्र० तपा जट्टारक श्री पूर्णचंद्र सूरि पट्टे श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

[1402]

सं० १५११ फा० शु० ए रवौ प्राग्वाट० सा० पेषा जार्या राजू सुत वीढाकेन जार्या
कमा सुत दरपाल टाहा जरकीता जरमा कगतादि कुटुम्बयुतेन श्री संजवनाथ बिंबं स्वश्रेयसे
कारितं प्रतिष्ठितं तपागह नायक जट्टारक श्री सोमसुंदर सूरि प्रांषज श्री रत्नशेषर सूरिजिः ।

[1403]

सं १५१३ वर्षे मा० व० ५ प्राग्वाट व्य० तिहुणा जा० कर्मा पुत्र हासा जगिन्या व्य०
दमा पट्टया श्रा० मनी नाम्न्या श्री वासुपूज्य बिंबं स्वश्रेयसे का० प्र० तपा श्री रत्नशेषर
सूरिजिः ॥

[1404]

संवत् १५१७ वर्षे माह सुदि १० बुधे श्री कोरंटगच्छे उपकेश झा० काला पमार शाखायां
सा० सोना जा० सहजलदे पु० सादाकेन ज्रातृ चउड़ा जादा नेमा सादा पु० रणवीर वणवीर
सहितेन स्वश्रेयसे श्री चंद्रप्रज बिंबं कारि० श्री कक्क सूरि पट्टे श्रीपाद ।

[1405]

संवत् १५१७ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरु श्री श्रीमाल ज्ञातीय बजोला जार्या देमाइ सुत
व्यव० कुरुपालेन जार्या कमलादे सुत व्यव० विद्याधर वीरपाल प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थ
श्री मुनिसुव्रत स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक जट्टारक श्री सूरसुंदर सूरिजिः ।
श्रीपत्तन वास्तव्य शुभं जवतु ॥ श्री ॥

[1406]

॥ संवत् १५१७ वर्षे माह सुदि १० दिने श्रीमालवंशे । पट्टवड गोत्रे सा० मेया जार्या

(७१)

मेलाही पु० सा० वीरमेन जार्या षीमा पु० सा० समरा सहसू श्रे० श्री शांतिनाथ विं० प्र०
श्री वृहज्ज्जे श्री रत्नाकर सूरि ५० श्री मुनिनिधान सूरि श्री मेरुप्रज सूरिजिः ॥

[1407]

सं० १५२१ वर्षे वैशाख सु० १० सोमे आसवाल ज्ञा० सा० ठाकुरसी जा० वीसभदे
सुत सा० धनाकेन जार्या सोनार्ई पुत्र सा० हांसादियुतेन सुता बाबू श्रेयसे श्री शीतलनाथ
विं० कारितं प्रति० श्री वृहत्तपापके श्री उदयवह्मज सूरिजिः ।

[1408]

संवत् १५३३ वर्षे वैशाख वदि ५ श्री संडेरगञ्जे आसवाल ज्ञा० राणु द्राथेच (?) गोत्रे
केद्रादेन जणा आढ्हू पु० गोकाला डुदेढ्हू जयनादर्पदयुतेन आत्मपुण्यार्थ श्री चंद्रप्रज
स्वामि विं० का० प्र० श्री सूरि संताने श्री शांति सूरिजिः ।

[1409]

सं० १५३३ माघ सुदि ५ श्री आदिनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री जयशेपर सूरिजिः ।

[1410]

सं० १५३६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ जौमे श्री २ मास ज्ञा० महाजन । सदा जा० सूहवदे
सुत बीका आका महा० बीका जा० कपूर सुत ताढ्हू कान्हा जनासहितेन मातृपितृश्रेयसे
श्री विमलनाथ विं० का० प्रति० श्री चैत्रगच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरि० चांद्रसर्मीया असारि
गोयं वासर (?) वा० ।

[1411]

॥ सं० १५३६ वर्षे माघ सुदि ९ सोमे प्रा० । ज्ञाति सा० सरवण जा० सहजलदे सुत
सा० सूरु पाढ्हू सा० जोगा जार्या कमी सुत डसल प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीधर्मनाथ
विं० कारितं प्रतिष्ठितं प्र० सूरिजिः ॥ ७ ॥ श्री ॥

(६६)

[1412]

सं० १५५४ वर्षे वरडउद वास्तव्य ऊकेश झातीय गांधी गोत्रे सा० सारंग जार्या जादही पुत्र सा० फेरू जार्या सूदवेदकेन जाराऊयुतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचलपद्मे श्री सिद्धान्तसागर सूरिजिः ।

[1413]

सं० १५५७ वर्षे वैशाख सु० ६ शुके ऊकेशवंशे जणसाखी गोत्रे ज० गुणराज पु० ज० सहदे पु० ज० हासा ज० राजी ... पु० ज० वसुपाल ज० लीला पु० ज० सालिग सुश्रावकेण ज० जीमी प्रमुखपरिवारयुतेन पितृश्रेयोर्य स्वपुण्यार्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री ।

[1414]

सं० १५५९ वर्षे वैशाख शु० ७ बुधे उपकेश झा० श्रे० सालिग सुत श्रे० नरवद ज० षेतू पुत्र राणाकेन पितुः पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री बृहज्जठे बोकडिआ बंटुकेन श्री श्री श्री मलयचंद्र सूरि पट्टे श्री मण्चिंद्र सूरिजिः ॥

[1415]

सं० १५६७ वर्षे माघ सु० ५ दि० श्रीमाल धांधीया गोत्रे सा० सारंग पु० सा० दोदा ज० संपूरी पु० सा० कालण सा० ऊदा सा० गाला सा० कालण पु० गोपचंद्र श्रीचंद्र इत्यादिपरिवृत्ताज्यां सा० ऊदा० सा० टालाज्यां श्री सुविधिनाथ बिंबं का० स्वपितृव्य दोदा श्री संसरी पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं श्री जिनगज सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[1416]

सं० १५७१ वर्षे वैस सुदि ५ शुक्र दिने उ० शीसोद्या गोत्रे गोत्रजा वायण सा० पद्मा ज० चांगू पु० दासा ज० करमा पु० कमा अपाई लावेता पातिः स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० श्री संदेर गणे कवि श्री ईश्वर सूरिजिः ॥ श्री ॥ श्री चित्रकूटदुर्गे ।

(७३)

धातु के यंत्र पर ।

[1417]

॥ संवत् १७५५ वर्षे आश्विन शुक्ल १५ दिने सिद्धचक्रं यंत्रमिदं । प्रतिष्ठितं वा । द्वावण्य
कमल गणिना । कारितं श्री नागोर नगर वास्तव्य लोढा गोत्रे ज्ञानचंद्रेण श्रेयोर्थं ॥ श्रीरस्तु ॥

[1418]

ॐ ॥ श्रीमन्त्रि ... गच्छे संगनद्र (?) देव सूरीणां महप्प गणिना ज०..... ।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—दादावाड़ी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1419]

॥ सं० १३०१ माघ शुक्ल ५ कुशल पु श्री शान्तिनाथ विंबं ।

[1420]

संवत् १४४३ वर्षे वै० सु० १३ श्री मूलसंघे ।

[1421]

सं० १४०२ वर्षे फा० सुदि ३ श्रीमाल ज्ञा० श्रे० सादा जा० मटक सुत श्रे० देवराज
हरपति ज्ञातृयुत श्रे० वरसिंह जार्या कपूरादे सुत पर्वतेन जार्या वरण निज पितृमातृश्रेयसे
श्री मुनिसुव्रत विंबं कारितं प्र० श्री तयागन्न नायक श्री श्री श्री सोमसुंदर सूरिजिः ।

[1422]

॥ सं० १४९६ वर्षे वैशाख सु० ५ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० माका जा० शार्या

(ॐ)

[1412]

सं० १५५४ वर्षे वरडउद वास्तव्य ऊकेश झातीय गांधी गोत्रे सा० सारंग चार्या
जादही पुत्र सा० फेरू चार्या सूहवेदकेन चाराऊयुतेन श्री आदिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं
श्री अंचलपद्वे श्री सिद्धान्तसागर सूरिनिः ।

[1413]

सं० १५५७ वर्षे वैशाख सु० ६ शुके ऊकेशवंशे जणसाळी गोत्रे ज० गुणराज पु० ज० सहदे
पु० ज० हासा ज० राजी ... पु० ज० वसुपाल जा० लीला पु० ज० साखिग सुश्रावकेण जा०
जीमी प्रमुखपरिवारयुतेन पितृश्रेयर्थं स्वपुण्यार्थं श्री सुविधिनाथ बिंब का० प्रतिष्ठितं श्री ।

[1414]

सं० १५५९ वर्षे वैशाख शु० ८ बुधे उपकेश झा० श्रे० साखिग सुत श्रे० नरवद जा०
षेतू पुत्र राणाकेन पितुः पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंब कारितं प्र० श्री वृहज्ज्जे बोकडिअ्या
बंदुकेन श्री श्री श्री मलयचंद्र सूरि पद्वे श्री मण्चिंद्र सूरिनिः ॥

[1415]

सं० १५६७ वर्षे माघ सु० ५ दि० श्रीमाल धांधीया गोत्रे सा० सारंग पु० सा० दोदा
जा० संपूरी पु० सा० काखण सा० ऊदा सा० ठाला सा० काखण पु० गोपचंद्र श्रीचंद्र
इत्यादिपरिवृत्ताज्यां सा० ऊदा० सा० टालाज्यां श्री सुविधिनाथ बिं० का० स्वपितृव्य
दोदा श्री संसरी पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरि पद्वे श्री जिनचंद्र सूरिनिः ॥

[1416]

सं० १५७१ वर्षे पोस सुदि ५ शुक्र दिने उ० शीसोद्या गोत्रे गोत्रजा वायण सा० पद्मा जा०
चांगू पु० दासा जा० करमा पु० कमा अषाई लावेता पातिः स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ बिंब
का० प्र० श्री संनेर गणे कवि श्री ईश्वर सूरिनिः ॥ श्री ॥ श्री चित्रकूटडुर्गे ।

(७३)

धातु के यंत्र पर ।

[1417]

॥ संवत् १७५५ वर्षे आश्विन शुक्ल १५ दिने सिरूचक्रं यंत्रमिदं । प्रतिष्ठितं वा । लावण्य
कमल गणिना । कारितं श्री नागोर नगर वास्तव्य लोढा गोत्रे ज्ञानचंद्रेण श्रेयर्थं ॥ श्रीरस्तु ॥

[1418]

ॐ ॥ श्रीमन्वि ... गच्छे संगंनद्र (?) देव सूरीणां महप्प गणिना ज्ञ०..... ।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर—दादावाड़ी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1419]

॥ सं० १३०१ माघ शुक्ल ५ कुशल पु श्री शान्तिनाथ विंभं ।

[1420]

संवत् १४४३ वर्षे वै० सु० १३ श्री मूलसंघे ।

[1421]

सं० १४०२ वर्षे फा० सुदि ३ श्रीमाख ज्ञा० श्रे० सादा ज्ञा० मटकू सुत श्रे० देवराज
हरपति ज्ञातृयुत श्रे० वरसिंह ज्ञार्या कपूरादे सुत पर्वतेन ज्ञार्या वरण निज पितृमातृश्रेयसे
श्री मुनिसुव्रत विंभं कारितं प्र० श्री तपागच्छ नायक श्री श्री श्री सोमसुंदर सूरिजिः ।

[1422]

॥ सं० १४९६ वर्षे वैशाख सु० ५ बुधे श्री श्रीमाख ज्ञातीय श्रे० माका ज्ञा० शार्या

(७४)

युतो सालगगदा श्री सुविधिनाथ त्रिंबं कारापितं श्री मुनिर्सिंह सूरीणामुपदेशेन प्र० श्री
शीतरत्न सूरिजिः ॥ शुभं ॥

[1423]

॥ सं० १५३६ वर्षे माह सुदि ५ अस्रवाखान्वय सूराणा गोत्रे स० नाट्टहा जा० नावलदे
ज० । यग पक्षु सदपन कारापित वासुपूज्य त्रि० धर्मघोष गह्वे श्री ... सूरि प्रतिष्ठितः ।

मुरार ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1424]

सं० १४९६ वर्षे फा० व० १ हुंबड़ ज्ञातीय ज० चाकम जा० वाट्टणदे सुत करमसी
देवसीहाज्यां निज पितृश्रेयोर्य श्री आदिनाथ त्रिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ मङ्गलं
जवतु ॥ ७ ॥

चरण पर-दादावाड़ी ।

[1425]

सं० १९२१ शा० १९०६ माघ मासे शुक्लपक्षे पष्ठ्यां- ६ पूर्वं तु मरुदेशे मेरुतेति नाम
नगरस्थोऽनूत् अधुना च मुरारि ठावण्यां वास्तव्य धाड़ीवाह गोत्रीय शंभुमह सुजान-
मह्याज्यां युगप्रधान दादा श्री जिनदत्त सूरीणां श्री जिनकुशल सूरीणां च पादन्यासौ
कारापितौ प्रतिष्ठितौ च वृ । ज । खरतरगह्वीय श्री जिनकट्याण सूरिजिः ज० माणिक्यचंद
तद्विष्य पं० हुकुमचंद्रोपदेशात् ।

(७५)

ग्वालियर (गोपाचल) दूर्ग ।

शिलाशेख । ●

[1426] †

पहसा परथर ।

- (१) उ नमः पद्मनाथाय । हर्षोत्फुल्लविलोचनैर्दिशि दिशि प्रोज्ञीयमानं जनैर्मेदिन्यां विततन्ततो हरिहरब्रह्मास्पदानि क्रमात् । श्वेतीकृत्य यदात्मना परिणतं श्री पद्मचूभृद्यशः पायादेष जगन्ति निर्म्मलवपुः श्वेतानि रुद्रश्चिरम् ॥ १ ॥ मौलिन्यस्तमहानीलशकलः पातु वो हरिः । दर्शयन्निव केशस्थ नवजीमूत कर्णिकाम् ॥ २ ॥ मुक्ताशैलश्लेन क्षितिति
- (२) लकयशो राशिना निर्म्मतोऽयन्देवः पायादुषायाः पतिरतिधवलखलकान्तिर्जगन्ति । मन्वानः सर्वथैव त्रिचुवनविदितं श्यामता पहवं यः शङ्के स्वं वर्षचिह्नं मुकुटतटमिलनीलकान्त्या विजति ॥ ३ ॥ इदं मौलिन्यस्तं न जवति महानीलशकलं न मुक्ताशैलेन स्फुरति घटितशेष
- (३) जगवान् । उषाकर्णोत्तंसीकरणसुजगं नीलनखिनं वहत्यव्याप्यस्याश्चिरविरहपाण्डूकृततनुः ॥ ४ ॥ आसीद्दीर्घैलघुकृतेन्द्रतनयो निःशेषजमीभृतां वन्यः कलपघातवंशतिलकः क्षौणीपतिर्लक्षणः । यः कोदण्धरः प्रजाहितकरश्चक्रे स्वचित्तानुगाङ्गामेकः पृथुवत्पृथूनपि इवाडुत्पाद्यपृथ्वीभृतः ॥ ५ ॥ तस्माद्भ्रजधरोपमः क्षिति
- (४) पतिः श्रीवज्रदामाजवद् द्वारोर्जितवाहुवण्णविजिते गोपाद्रिदुर्गे युवा । निर्व्याजं परिभूय वैरिनगराधीशप्रतापोदयं यद्दीरव्रतसूचकः समजवत् प्रोद्धोषणाकिंनिमः ॥ ६ ॥

● ग्वालियर किले के लेख डा: राजेन्द्रकाश मित्र के " इंडोपरियनस् " में छपे थे । यह पुस्तक अब दुष्प्राप्य होने के कारण वे भी यहाँ प्रकाशित किये गये ।

† Indo-Aryans, Vol. II pp. 370-373.

न तुलितः किल केनचिदप्यचूलागति चूमिभृतेति कुतुहलात् । तुल्यतिस्म तुला
पुरुषः स्वयं स्वमिह वर्म विशुद्धहिरण्यैः ॥ ७ ॥ ततो रिपुध्वान्तसहस्रधामा
नृपोत्तव-

(५) मङ्गलराजनामा । यज्ञेश्वरेकप्रणति प्रजावान् महेश्वराणाम्प्रणतः सहस्रैः ॥ ७ ॥
श्री कीर्तिराजो नृपतिस्ततोचूयस्य प्रयाणेषु चमूसमुत्थैः । धूसीवितानैः सममेव
चित्रं मित्रस्य वैवर्ष्यमचूद् द्विषश्च ॥ ९ ॥ किं ब्रूमोस्य कथामृतं नरपतेरेतेन
शौर्याब्धिना धत्ते मास्रवचूमिपस्य समरे सहस्रामतीतोर्जितः यस्मिन् रङ्गमुपागते
दिशि दिशि त्रासा-

(६) स्करामच्युतेर्गामीणाः स्वएहाणि कुन्दनिकरैः सञ्जादपाश्चक्रिरे ॥ १० ॥ अच्युतः
सिंहपानीयनगरे येन कारितः । कीर्तिस्तन्मज्ज इवाचाति प्रासादः पार्वतीपतेः ॥ ११ ॥
तस्मादजायत महामतिमूलदेवः पृथ्वीपतिर्जुवनपास इति प्रसिद्धः । श्री नन्ददण्ड
गदनिन्दितचक्रवर्तिचिह्नैरसंस्कृततनुर्मनुतुस्यकीर्तिः ॥ १२ ॥ यस्य ध्वस्तारि चूपासां
सर्वाभ्यासयतः

(७) प्रजोः । चुवन् त्रैलोक्यमल्लस्य निःसपत्नमचूलागत् ॥ १३ ॥ पत्नी देवव्रता तस्य
हरेर्लक्ष्मीरिवात्तवत् । तस्यां श्री देवपासोचूत्तनयस्तस्य चूपतेः । दानेन कर्णमजयत्
पार्थ कोदण्डविषया । धर्मराजश्च सत्येन स युवा विनयाश्रयः ॥ १४ ॥ सुनुस्तस्य
विशुद्धबुद्धिविजयः पुण्यैः प्रजानामचून्मान्भातेव स चक्रवर्तितिलकः श्रीपद्मपासः
प्रभुः यत्स्वाम्येपि क-

(८) रप्रवृत्तिरपरस्येतीव यश्चिन्तयन्दिग्यात्रासु मुहुः खरांशुमरुणं सान्द्रैश्चमूरेणुचिः ॥ १५
॥ कृतवान्याः स्ववशे दिशः क्रमवशात्सक्यापतिर्वह्निषानुत्खिप्ताचक्षसन्निजानविरत
— वाज्रवज्रैः । उन्मूतान् पततः प — : संप्रेक्ष्य रेणुत्करान् चूयोप्युद्भटसेतुबन्धन-
धिया प्रस्यन्ति — ॥ १६ ॥ तस्येन्दुद्युतिसुन्दरेण यशसा नाके सुराणांगणे
सौवर्ण्यत्रमशीसखंरुन-

- (६) जयादप्राप्नुवत्यः प्रियान् । नूनं शक्रपुरः सुरासुरवधूसङ्घाः श्रिये साम्प्रतं
यन्ति ये प्रथमतः सर्वा वपुः संश्रिते ॥ कैर्दृप्ता पादपां गावःकामडुघा कैश्चि-
न्तितार्थप्रदाः । पूर्णाः कस्य मनोरथा इह न कैः मुना पूरिता वीरो यानि तदस्ति
तद्गुणवतः कस्य द्रुमादीन्यपि । श्रुत्वा न पद्मनृपतिं परिरक्षितारं प्राप्तोदयोपि
यदसौ वत नम्रजावः ।
- (१०) योद्यापि तनुर्बिपिनेष्यशो ॥ ज्रमः कुलालचक्रे च लाजः पुण्यार्जनेषु च ।
काठिन्यं
कुम्भेषु क शासविमर्दिनीम् ॥ अस्मत्तो पीना साधुर्न निखिंशपरि तोपि
इ लक्ष्मणेन धनुर्न चासिं तथापि या वैरिगणं जिगाय । सद्य
- (११) पाधिप शिरोमणिं जि । लोकानुरागयशसापि प्रतापं विस्तारयां यदस्ति
.... ॥ वल्लयानीव नारीणां हिमानीव नजःश्रियः । स विमृश्य नदीपूरचत्वरे
सम्पदायुषः पूर्वधर्मे मतिं चक्रे जिघृक्षुरनयोः फलम् ॥ प्रजा त्वते
- (१२) न क्षितितिलकचूतं न जवनं कारितमदः । मिव गिरा यस्य शिखरं
समारूढसिंहो मृगमिव नृ मशितुम् ॥ सश्च वरशिखरस्पर्द्धिनो हिममण्ड
.... त्यावतीथं शशिकरधवला वैजयन्ती पतन्ती । निर्व्वीतं जाति चूतिच्छुरितनिज-
तनोर्देवदेवस्य शम्नोः स्वर्गाङ्गुलेव पिङ्गस्फुटवि-
- (१३) कटजटाजूटमध्यं विशन्ती ॥ तदेतद्ब्रह्माण्डं स इह जविता पङ्कजस्रुवः पुनर्वयं
बोहासो वयमिह वियति । तदिदमुररीकृत्य सकलं ध्रुवं संसेवन्ते हरिपदन
.... तममी ॥ कनकाचक्षः शुभ्रविद्यावन्तः स्थितः श्रीपतिर्विज्राणोद्भिजसत्तमानुदधि-
जावासो नृसिंहान्वितः । निर्म्माता स्ववृतः समस्तविबुधैर्लब्धप्रतिष्ठैरयं प्राप्तोदश्च
- (१४) धरातले सममहो कल्पं हरेः कल्पताम् । द्विजपुङ्गवेषु प्रतिष्ठितेष्वष्टषु पद्मपात्रः
युवेव देवप्रतिकूलजाया बभूव ॥ तस्य ज्ञाता नृपतिरजबत् सूर्यपात्रस्य सनुः श्री

गोपाह्वैः प्रकृतनिलयः श्री महीपालदेवः । यम्प्राप्यैव प्रथितयशसन्तावजूतां सनाथौ
सोयं त्यागो हरिरविसुताजावदुस्थोऽचिरेण । सृष्टिङ्कुर्वन्नमात्यानां विप्रा-

- (१५) णां स नृपस्थितिम् । प्रलयं विद्विषामासीद् ब्रह्मोपेन्द्रहरात्मकः यत्र धामनिधौ राङ्गि
पालयत्यवनीतलम् ॥ मुद्गहन्ति शिरसःखलु राजहंसाः सृष्टास्त्वया पुनरिमाः
समयावसन्नाः । नाथ प्रजाः सुमनसां प्रथमो सि त्वं सिद्धवीररसता-
- (१६) मरसोद्भवस्य ॥ लङ्गीपतिस्त्वमसि पङ्कजचक्रचिह्नं पाणिद्वयं वहसि जूप जुवं विजृषि ।
श्यामं वपुः प्रथयसि स्थितिहेतुरेकस्त्वं कोपि नीतिविजितो सम्पालयस्य निश-
मर्थिजनस्य कायं रामश्रिया त्वमसि नाथ मु । सङ्कर्षणस्त्वमसि विद्विषदायुधन्त्वं
त्वं कोसि सञ्चरितहालहलायुधस्य ॥ ख्यातारति रूपं तवातिश
- (१७) यविस्मयकारिदेव । त्वं मीनसिद्धपुरुषोत्तमसम्भवोसि कस्त्वं द्वितीशबरशंकर
सूदनस्य ॥ जूजृत्सुता पतिरसि द्विषतां पुराणि जेत्ता त्वमीश म् । जूर्ति
दधास्य मलचन्द्रविजृषिताङ्गः कस्त्वं सदम्बुजदिवाकर शङ्करस्य ॥ त्वं तेजसा शिखिन
मिद्धमधः करोषि शक्तिं दधासि । त्वन्तारकं रिपुबलं
- (१८) बलान्निहंसि कस्त्वं नवीनलनीलमलब्धजन्मा (?) ॥ त्वं वज्रजृत्वमसि पद्मजिदप्य-
शेषं जूमीभृतां विबुधबन्धगुरुप्रियोसि दुर्गाचरणोसि कोसि त्वं जीमसाहससहस्र-
विलोचनस्य । ख्यातं तवेश बहु पुण्यजनाधिपत्यं कान्तालकावलिजिरासतमैः सुगुप्ता ॥
त्वामामनन्ति परमेश्वरबद्धसख्यं त्वं कोसि सद्गुणनिधानधरा-
- (१९) धिपस्थ । तेजोनिधिस्त्वमसि जूमिजृतः समग्राः क्रान्ताः करैः प्रयतमुग्रतरैस्तवेश ।
प्राप्तोदयः सततमर्थिजनस्य कोसि त्वं कदपजुधरसरोरुहबान्धवस्य ॥ ध्यानन्ददोसि
जनतानयनोत्पलानामाप्यायिताखिलजनः करमार्दवेन । त्वं शश्वदीश्वरशिरस्तलदत्त-
पादस्त्वं कोसि मर्त्यजुवनेश निशाकरस्य ॥ त्वामंशमीश नि-
- (२०) गदन्ति मधुद्विषोमी श्यामाजिरामतनुरस्य मलप्रबोधः पुण्यं रतमिदं विहितं त्वयैव

(७५)

त्वं कोसि सत्यधनसत्यवती सुतस्य । न्ति सुरसिन्धुरियं समुद्रप्रान्तन्त्वयो-
न्नतिममौ गमितः स्ववंशः । पूर्वे पवित्रवनके विहिताश्च कोसि वंशस्थलब्धपरता
....जगीरथस्य ॥ एतत्त्वया कृतमताङ्कमासुधिस्त्वं व्यासा महीह

(११) .. रीश मनोजवैस्ते पुण्यावतारकरणकृतदुर्दशास्वस्त्वं कोसि हन्त रिपुलाघव राघवस्त्वम् ।
धर्मप्रसूस्त्वमसि सत्यधरस्त्वमेकस्त्वं वासुदेवचरणार्चनदत्तचित्तः । त्वं कोसि विप्र-
जनसेवितशेषजूतिः संग्रामनिष्ठुर युधिष्ठिरपार्थिवस्य ॥ त्वं चूरिकुञ्जरबलो जुवनैक-
मह्य जूषित तनुर्नृपपावनोसि । प्रच्छन्न

दूसरा पत्थर । ●

- (१) : कस्त्वं कवीन्द्रकृतमाद कादरस्य । पक्वस्त्वमीह जुवि धर्मभृतां वरिष्ठः
सखामिकाग्निगुणदर्पहरस्त्वमाजौ । त्वं सर्वराजपृतनाविजघाप्तकीर्तिस्त्वं कोसि
सुन्दर पुरन्दरनन्दनस्य । दुर्योधनारिबल्लदर्पहृतस्त्ववेश यत्नः परार्जनयशः प्रसरे
निरोद्धुम् । त्वं कोसि भूजनित कर्त्तन विकर्त्तनसम्भवस्य ।
- (२) यस्त्वमसि कर्म गचीरतायास्त्वं पासि पार्थसमभूमिभृतः प्रविष्टान् । अन्तः
स्थितस्तव हरिः सततं नरेश कस्त्वं विदीर्णरिपुजागरसागरस्य ॥ क्रमसमा-
गतसत्त्ववृत्तिस्त्वं राजकुञ्जरशिरः प्रवितीर्णपादः । दीप्तारिजास्करतिरस्कृति-
सिंहिकाजूः कस्त्वं महीपतिमृगाङ्कमृगाधिपस्य । दानं ददासि विकटो वत वंश-
शोचस्त्वं दन्तपाक्षिकरवा-
- (३) लहृतारिदर्पः क्षोणीभृतो जयसि तुष्टतया नरेन्द्र त्वं कोसि वैरिबल्लदारण वारणस्य ॥
सन्न श्रियस्त्वमसि मित्रकृतप्रमोदस्त्वं राजहंससमलंकृतपादमूखः । स्वामिन्नधः
कृतजकोसि जनाजिरामः कस्त्वं स्मितायमुखपङ्कज पङ्कजस्य ॥ सत्पत्रजूषिततनुः
सुविशुद्धकोश स्त्वं चन्द्रकीर्तिसमलंकृतकान्तमूर्तिः ख्यातं तवैव कविवर्ण
व बुद्धिक

- (४) समरजैरवकैरवस्य ॥ त्वं पश्यतां हरसि देव मनांसि सश्वन्मङ्गल्यञ्चूस्त्वमसि
निर्मलताजिरामः । कोसि प्रसीद बहु सद्गुणरत्नयोनिस्त्वंकञ्चपारिकुलञ्चूषण
ञ्चूषणस्य ॥ धात्रा परोपकरणाय विस्तृष्टकायः सहायजन्मसमलंकृततुङ्गगोत्र ।
ब्रूहि ... मवनीश्वरवन्दनीयस्त्वं कोसि सूर्यनृपनन्दन चन्दनस्य ... ॥ नत्वाशु
शुद्धदय प्रथितो-
- (५) प्रमायस्त्वं जानुना हतवृषो न जमीकृताहस्तेनास्तु नाथ हरिणोपमितिः कथं ते ॥
नित्यं सन्निहिते कृपाणतमसा प्रायोजिञ्चूयेत स त्वञ्चासाद् चुवनैकनाथ हरिणा-
स्तस्योदरे प्राविशन् । मूर्त्तिस्ते च कञ्चङ्कित सजरुतां धत्ते ... : शङ्खस्थैर्विदित
स्तथापि नृपते राजा त्व...ञ्चुतः...विमुखतां पार्थेन नीताः परे व्यसिनस्तुतिरञ्जुन-
- (६) स्यान्निहिते व्यङ्ग्यायि पूर्वं किञ्च तत्सम्यक् प्रतिजाति सम्प्रति पुनः श्रीमन्मही-
पाक्षवत् त्वामात्रोक्थ सद्दृशशो रिपुबलं निम्नन्तमेकं रणे ॥ किं ब्रूमोपि ... स्त्वं
नीतिपात्रं परं वृत्तान्तं अगतीपतेरनिष्टणात्मप्रियाणां शृणु । कीर्त्तिर्त्रान्यति दिक्षु
... किं चित्रं चुवनैकमल्ल यदि
- (७) मन्दाकिमोपयञ्चूलोकाडुद्धरता जगीरथनृपेणानायि निम्नां महीम् । आश्चर्यं
पुनरेतदीश यदि ते निम्नामहीमंरुसाडूद्धं कीर्त्ति...णीकमलञ्चूलोकं त्वया प्रापिता ।
चित्रं नात्र कस्य ... सर्वात्मना विद्विषो विशिलेः समूर्धितस्याहवे । ... मध्ये
- (८) न्नताश्चर्यकृत् ॥ अत्यंबुधिजवद्वैमत्यादित्यजवन्महः । अतिसिंहजवत्शौर्यमतः
केनोपमीयते ॥ केयूरं बलञ्चूपासञ्चुजदाके विराजते किरीटमिव ... झिधासि विजय-
श्रियः । ... चुवनगुरोस्तोत्रमकृथास्तदेष
- (९) वैताखिकेरित्यमजिष्टुतेन संपूजितामर्त्यसुरुद्विजेन । विमुक्तकलास्यस्यसंघलेन विदीर्ण-
ञ्चूताजयदक्षिणेन । तेनाजिषिकमात्रेण प्रतिजज्ञे ह्यं स्वयम् । पश्यन्नाथस्य चूसिद्धिः
कन्यायाः ... ॥ ... यशः शरीरम् ॥ स-

- (१०) सर्षिता ब्रह्मपुरी च तेन शेषान् विधायावनिदेवसुख्यान् । प्रवर्ति ... ब्रमतन्द्रितेन मृष्टान्नपानैरतिधार्मिकेण ॥ श्री पद्मनाथस्य सलोकनाथ ... नैवेद्यपाका ... विला
- (११) सिनीवा " नादिर्यथार्हतः पादकुलस्य मूर्त्तिम् । स पद्मनाथस्य पुरः समग्राम-कल्पयत्प्रेक्षणकायजूषः ॥ पापाणपद्धीं प्रविज्ज्य सम्यग् देवाय ... । सम्पाद-यामास तन्ना द्विजेभ्यः " ।
- (१२) गतो योगीश्वरांगोद्भवः ख्यातः सूरिसखरूपाः क्वितिपतेः सर्वत्र विश्वासजूः । आधारे विनयस्य शीलजवनं जूमिः श्रुतस्याकरः स्वाध्यायस्य क्व क्व वसतिः ...
- (१३) हीपाक्षे नटो विप्रास्तस्मिन् ग्रामे प्रतिष्ठिताः । तेषां नामानि स्मिन्त्यन्ते विष्णुः शासनोदितः ॥ देवलब्धिः सुधीराख्यस्ततः शोभरदीक्षितः ॥
- (१४) ... रामेश्वरो द्विजवरस्तथा दामोदरो द्विजः । अष्टादशैते विप्राश्च ... द्विजः । पादोनपदिका ... ऐकौसुगार्चकौ । द्वावर्द्धपदिनावेष विप्राणां संग्रहः कृतः । ...द्वर्द्धपदं नृपः । विधाय "कायस्य सूरये देवाय दत्तः सौवर्णो राक्ष्म इत्यैः समाचितम् । ... हरिणमणिमयं जूप—
- (१५) ... कं ददौ । रत्नैर्विचित्रं निष्कञ्च निष्क ... स जूपतिः ॥ प्रा—केयूरयुगलं रत्नैर्बहुजिराचितम् । कङ्कणानां चतुष्कञ्च महार्हमणिजूपितम् । ... द्वितीय मनि ... स्य सौवर्णं केवलं यथा । कङ्कणानां चतुष्कञ्च नीलपट्टयं तथा । ... लैः पञ्चजिर्युता । ... धारापात्रञ्च कां ।
- (१६) ... चतुष्टयम् । सुवर्णाण्णयं देवपरिवारविचूषणम् । ... परिहेमाब्जमातपत्रीकृतं विजोः ॥ निवेश्य ताम्रपट्टे च तन्मयेनैवम ... । प्रतिमा नित्यं मणि ... राजती ... प्रतिमा ... का द्वितीया ... युती । राज्ञ ... मयी चान्या ... । ताः प्रयत्नेन तिस्रोपि पूज्यते ... प्रेशमनि । तत्र ताम्रमयं देवं द्वीपार्थं मण्डिकाकृतम् ।

- (१७)क । ताम्नार्थपात्रद्वितयं तथा दत्तं महीजुजा । सधूपदहनाः सप्त घण्टाश्चा
 । दत्ताः शङ्खाश्च सप्तैव ताम्नपात्रीचतुष्टयम् । स कांस्यजाजनं प्रादा-
 न्नृपतिःचामरं दण्डं... बृहच्चतुष्टयम् ताम्नमयं तास्ता ... । दत्ताश्च दशतन्मयाः ॥
देवोपकरणद्रव्याणां संग्रहः कृतः ।
- (१८)वापीकूपतडागादि ... नानावनेषु च । दशमासं तथा विंशत्यूर्ध्वं सर्वत्र मण्डले ।
 ददौ राजानि ...यते सर्वं प्रवर्तते । अयं देवालयो नाम ...स्फटिकामल ... चारुद्वाजेन
 मीमांसान्यायसंस्कृतबुद्धिना । कवीन्द्ररामपौत्रेण गोविन्दकविसूनुना । कविता
 मणिकर्णेन सुजाषितसरस्वती । प्रशस्ति
- (१९)लङ्केश्वरवान् द्वितीयां विज्रत्सुहृतां मणिकण्ठसूरैः । पञ्चासे चाश्विने मासे
 कृष्णपक्षे नृपाङ्गया । रचिता मणिकर्णेन प्रशस्तिरियमुज्ज्वला ॥ अङ्कतोपि ११५०
 ॥ आश्विनबहुलपञ्च ।
- (२०) ... खिलां महीम् । यस्य गीर्वाणमन्त्री च मन्त्री गौरो जव । प्रशस्तिरियमुत्की-
 र्णा सद्गर्णा पद्मशिद्धिपना ।
- (२१) • • • • •

मूर्तियों के चरणचौकी पर ।

[1427] *

श्री श्रादिनाथाय नमः ॥ संवत् १४९७ वर्षे वैशाख ... ७ शुके पुनर्वसुमङ्गले
 श्रीगोपाचलदुर्गे महाराजाधिराज राजा श्रीकुंग ...संवर्त्तमानो श्रीकाञ्चीसंघे मायूरान्वयो
 पुष्करगणजहारक श्रीगणकीर्तिदेव तत्पदे यत्यः कीर्तिदेवा प्रतिष्ठाचार्य श्रीपंडितरघुतेपं

आज्ञाये अग्रोतवंशे मोङ्गलगोत्रा सा ॥ धुरात्मा तस्य पुत्रः साधु जोषा तस्य चार्या नाही ।
पुत्र प्रथम साधुहेमसी द्वितीय साधुमहाराजा तृतीय असराज चतुर्थ धनपाल पञ्चम
साधुपाटका । साधुहेमसी चार्या नोरादेवी पुत्र ज्येष्ठ पुत्र जधायि पतिकौल ॥ ज—चार्य, च
ज्येष्ठ स्त्री सुरसुती पुत्र मङ्गिदास द्वितीय चार्या साध्वीसरा पुत्र चन्द्रपाल । हेमसी पुत्र
द्वितीय साधु श्रीजोजराजा चार्या देवस्य पुत्र पूर्णपाल ॥ एतेषां मध्ये श्री ॥ त्यादिजिनसंघा-
धिपति काला सदा प्रणमति ॥

[1428]*

- (१) सिद्धि संवत् १५१० वर्षे माघसुदि ८ अष्टम्यां श्रीगोपगिरी महाराजाधिराज रा
- (२) जा श्रीडंगरेन्द्रदेवराज्यप्र ... श्रीकाञ्चीसंघे मायूरान्वये जट्टारक श्री ।
- (३) हेमकीर्त्तिदेवस्तत्पदे श्रीहेमकीर्त्तिदेवास्तत्पदे श्रीविमलकीर्त्तिदेवाः ...
- (४) डिता ... सदाम्नाये अग्रोतवंशे गर्गगोत्रेसा ... त
- (५) योः पुत्राः ये दशाय श्रीवंद चार्या मालाही तस्य प्रवसाण्षेणार रा ... जीसा ... दु
- (६) तीयसाण हरिवंदचार्या जसोधर हितये ... एसा साण सधा साण तृती
- (७) य हेमा चतुर्थ साण रतीपुत्र साण सह सापं ... मु साण धं...साण सद्धापुत्र एसेवं...ए
- (८) तेषां मध्ये साधु श्रीचंद्रपुत्र शेषा तथा हरिचंद्र देवकी चार्या ...
- (९) हीप्रमुखा नित्यं श्रीमहावीर प्रतिमा प्रतिष्ठाप्य त्रूरिचक्र्या प्रणमंति ॥
- (१०) अङ्गुष्ठमात्रां प्रतिमां जिनस्य चक्र्या प्रतिष्ठापयतो महत्या । फलं बलं राज्य
- (११) मनन्त सौख्यं जवस्य विच्छित्तिरथो विमुक्ति ॥ शुभं जवंतु सर्वेषां ॥

[1429]

- (१) श्रीमज्ञोपाचल्लगढदूर्गे ॥ महाराजाधिराज श्री मङ्गलसिंह देवराज्ये प्रवर्त्तमाने ।
संवत् १५५२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ।

* Indo Aryans. Vol, II. pp. 383—84.

- (१) ॥ सोमवासरे श्रीमूलासंधे बल्लकारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये । जप श्रीपद्म
नन्दिदेव तत् पद्मालंकार श्री ।
- (२) शुक्रचंद्र देव । तत्पट्टे ज० मणिकुंदा देव । तत्पट्टे पं मुनि ... गणि कचरदेव तदन्वये
धारह जेणीवंशे सालम जार्या व -
- (३) युक्त पु ४ तेषां मध्ये अणंद जार्या उदैसिरि । पुत्र ६ लोहंगराम मुनिसिंघ अरजुन
छभरण मद्धू नद्धू । मद्धू जार्या ।
- (४) पियौसिरि पुत्र पारसराम जार्या नव । दुती पुत्र रामसि जार्या नागसिरी । तृतीय पुत्र
सिंघ । चतुर्थ पुत्र रोपणि ॥ सां मद्धू ।
- (५) - तीर्थंकर विंबं निर्मापितं प्रणमति प्रीत्यर्थं ॥

सुहानीय ।

पाषाण की मूर्तियों के चरणचौकी पर ।

[1430] *

संवत् १०१३ माधवसुतेन महिन्द्रचन्द्रकेन कजा खोदिता ।

[1431] †

संवत् १०३४ श्रीवज्रवाम महाराजाधिराज बइसाख वदि पाचमी • • •

* Indo Aryans, Vol. II, p. 369.

† Do. p. do.

(एष)

[1432] *

६: ॥ सिद्धि । सन्तु १४९७ वर्षे वैशाख सुदि १५ दि - नमो ... मघाबे वे र ... करा
ब्रह्मचूता सर ... गत्या र ... आदि अखंड ठा ... औस्व ... क...सुत ... रिता मु ठेठ ... व ...

[1433] †

• ११६० कातिक सुदि १३ गुरू दिने रतन क्षिपितं राजन ताठ ... तधार दिवसम्मि
पंच ... चंद्राना पसावे आदेसू संवतु १५२२ वर्षे चैत सुदी १० बुधे ।

मथुरा ।

श्रीपार्श्वनाथजी का मंदिर—धीयामंडि ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1434]

॥ सं १३७५ । श्र० जूससीह चार्पा मावू पुत्री लषमिणि मातापितृ भयसे श्री
शांतिनाथ का० प्र० ब्रह्माणेत्य श्रीमदनप्रज्ञ सूरि पद्वै श्रीविजयसेन सूरिजि : ॥

[1435]

उं सं० १३०० वर्षे माघसुदि ५ उस० सुचिती गोत्रे सा० श्रीमा पुत्र सा० भूषा जोजा ..
श्रीजिनजद्र सूरि शिष्य श्रीजगत्तिलक सूरिजि : । ... श्रीपद्मानंद सूरिजि : ॥

[1436]

सं० १४६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० शुके उपकेश झा० व्य० जस्ता पु० जगपाल जा०
पूजबदे पु० सोलाकेन पितृमातृ भ० श्रीशांतिनाथ विंवं का० प्र० बृहन्नठे श्रीरामदेव
सूरिजि : ।

* Indo-Aryans, Vol. II, p. 381.

† किले पर "सास बडु" के मंदिर की मूर्त पर यह लेख है ।

(९६)

[1437]

सं० १५३३ व० वै० सु० ६ प्राग्वाट श्रे० वस्ता जा० फडू सुत श्रे० सारंगेण जा० मरगादे
पुत्र श्रे० वीकादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथ बिम्बं का० प्र० तपागळे श्री रत्नशेखर
सूरि पट्टे श्रीलक्ष्मीसागर सूरिजि : ॥ जज्ञतपुर ॥

[1438]

सं० १५१० वर्षे फागुण - - श्रीमालझार्तीय टार्की गोत्रे स० जाविनो पुत्र श्रीजागू
श्रावक श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगळे श्री जिनसागर सूरि तत्प० श्री सुंदर
सूरि पट्टे श्री हर्ष सूरिजिः ।

[1439]

सं० १५७९ वर्षे माघसुदि ६ शुक्रे बैशाष वदि ५ उसवंशे लाषाणी गांधी गोत्रे सा०
तेजपाल पुत्र सा० कुयरपाल जार्यासालिगदे पुत्र रायमल्ल श्रावकेण स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ
बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचलगळे श्रावकेण श्री गुणनिधानसूरि उपदेशात् ।

धातुकी मूर्ति पर

[1440]

सं० १६०० फाग० सु० १० हेमकीर्ति ।

धातुके यंत्र पर ।

[1441]

सं० १०५१ पोष सुदी ४ दिने । वृहस्पति वासरे श्रीसिद्धचक्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितं
सवाई जैनगर मध्ये वा० लालचंद्र गणिना कारितं वीकानेर वास्तव्य कोठारी अनोप
चंद तत्पुत्र जेठमल्लेन श्रेयोर्थं शुभं जवतु ॥

(७७)

आगरा ।

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर—रोशन मोहल्ला ।

पंचतीर्थियों पर

[1442]

॥ संवत् १३७७ वर्षे वैशाख सुदी ६ बुधे श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० अरसीह जा० पामना-
पुत्र ... वाट्हाकेन श्री पार्श्वनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[1443]

॥ संवत् १५२४ वर्षे मार्गशिर वदी ४ रवौ उपकेश ज्ञातीय खिंगा गोत्रे सा० पीघा जा०
ऊदी...पु० सा० चेडन जा० सूहवादे पु० शेषा सरूजन अरजन अमरासहितेन स्वपु०
श्रीकुन्थुनाथ बिम्बं का० प्र० श्रीउपकेशगहे ककुदाचार्यसन्ताने श्री सिद्ध सूरि पट्टे श्री कक्क
सूरिजिः ॥

[1444]

॥ सं० १५३३ वर्षे पोस सुदि १५ सोमे सिद्धपुर वास्तव्य अंसवाल ज्ञातीय सा०
नासण जा० वानू सु० बडाकेन जा० माई सुसूरा प्र० कुटुम्बयुतेन श्री सुमतिनाथ बिम्बं
कारितं प्रतिष्ठितं श्रीवृद्धतपागहे श्री ज्ञानसागर सूरि पट्टे श्री उदयसागर सूरिजिः ॥

[1445]

॥ संवत् १५३६ व० ज्येष्ठ वदि ४ सोमे श्रीश्रीमाली दोसा रगना उपरिसन प्रावरु जा०
हपारा सुत जैरवदासेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बि० का० प्रति० बृहत्तपा श्री उदयसागर-
सूरिजिः ॥

[1446]

॥ संवत् १५७२ सा० खीबा जा० का० ... सं० गांडण रणधीर र... देवाति प्रणमन्ति

(९०)

[1447]

॥ संवत् १५९९ माघ सुदी ५ बुधवासरे श्री मूलसंघे ज० श्री जिनचन्द्र तदाम्ना
जसवाल इहदा ... कुवेसल श्री हेमणे

[1448]

॥ संवत् १६१० वर्षे ज्येष्ठ वदी २ ... श्री सुपार्श्वनाथ बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री-
वृहत् खरतरगढे ज० श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥

[1449]

॥ सं० १९३१ वर्षे आगरा वास्तव्य लोढा गोत्रे प्रतापसिंहस्य ज्ञा० मूल श्रीनवपद
कारितं प्रतिष्ठितं श्री (?) विजयसूरी ... ।

धातु की चौविशी पर ।

[1450]

॥ संवत् १५७४ वर्षे वैशाख सुदी दशमी शुक्र ओसवाल ज्ञातीय राका शाखायां वल्लह
गोत्रे सं० रत्नापुत्र सं० राजा पु० सं० नाथू ज्ञा० बड्ढा पुत्र सं० चूहरु ज्ञा० हीसू पु० सं०
महाराज ज्ञा० संघ्रा पुत्र सोहिल लघुत्रातृ महपति ज्ञा० माणिकदे सु० जरहपाल ज्ञा०
मल्लूही पु० धनपाल सं० हेमराज ज्ञा० उदयरजी पु० संघागोराज त्रातृ सेन्यरत्न ज्ञा०
श्रीपासी पु० संघराज समस्तकुटुम्बसहितेन सुश्रावकेन हेमराजेन श्री धर्मनाथ बिम्बं
कारापितं श्रीउपकेश गढे ककुदाचार्यसन्ताने प्रतिष्ठितं ज० श्री सिद्ध सूरिजिः ॥ श्रीरस्तु ॥

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[1451]

ॐ सिद्धिः ॥ संवत् १६६० ज्येष्ठ सुदि १५ तिथौ गुरुवासरे अनुराधा नक्षत्रे । ओस-
वाल ज्ञातीय अरडक सोनी गोत्रे साह पूना संताने सा० कान्हड़ ज्ञा० जामनी बहु पुत्र सा०

(९५)

हीरानंदेन बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्धन सूरि संताने श्री लब्धिवर्द्धन शिष्येन ।

[1452]

श्रीमत्संवत् १६२१ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री आगरावासी उंसवाल झातीय चोरफिया गोत्रे साह पुत्र सा० हीरानंद जार्या हीरादे पुत्र सा० जेठमल श्रीमदंचलगच्छे पूज्य श्रीमद्धर्ममूर्ति सूरि तत्पट्टे

पाषाण के चौविशी के चरण पर ।

[1453]

संवत् १७६२ ज्येष्ठ शुक्ल १३ गुरुवारः श्री सिंघाड़ा बाई ने बनाया । श्री आगरा वास्तव्य व्य० संघपति श्री श्री चंद्रपालेन प्रतिष्ठा कारिता ।

शिलालेख ।

[1454]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ संवत् १६७७ वर्षे आसोज सुदी १५ श्री अर्गलपुरे जला-
बूदीन पतिसाह श्री अकबर सुत जहांगीर सुत सवाई साहिजां विजयराज्ये ... राजद्वार
शोचक सोनी ... श्री होरानंद ... श्री जहांगीरस्य गृहे ... कृतं । तत्र तस्य नंदनवनो-
द्यानसमवाटिकायां ... निज धनस्य ... जार्या सोना सुत निहालचंद जार्या मृगां स्वोष्ठंग
पुत्र चिरं सहसमह्व सना श्री गंगाजल वारि पूरपूरित निर्मल कूपः कारापितः ॥ आचं-
द्रार्क यावत्तिष्ठतु ॥

[1455]*

१। ॥ श्री सद्गुरुभ्यो नमः ॥ सत्पट्टोत्तुंगश्रृंगोदयं शिखरि शिखा ज्ञानु विंबोपमाना
जैनोपहा : स

* बड़े मंदिर के बगल में जो जड़ाई काम की नई वेदी और सभामंडप बने हैं उसके दाहिने तर्फे उपर में यह शिलालेख लगाया हुआ है । इसकी लंबाई अंदाज २ फिट और चौड़ाई १॥ फिट है और मामूली पत्थर है । शिलालेख के निचे ४ यंत्र हैं (१) २० का (२) १५ का (३) ३४ का और (४) १०० का खुदा हुआ है ।

- २। मं चञ्चरित चित तपस्तेजसा तप्यमानाः नूनं नंवा सुरैरेते जुवि यशविमला राज
राजीव हंसा ॥
- ३। श्रेयः-श्री हीरनामा विजयपदयुता सूरिवंशावतंसाः १ ञट्टारक श्री विजयेण युक्तः
श्री
- ४। धर्म सूरि जगति प्रसिद्धः तत् प्राज्यराज्ये प्रगुणी कृतो यः श्री संघमानन्द विकास-
हेतु २ श्री
- ५। हीरवंशे जुवि कीर्तिविश्रुतं यशोत्तरं यस्य समीक्ष्य मानवाः पश्यन्ति ने~~र्ष~~ सुधाकरं
वरं श्री पा
- ६। ठकश्रेणिपुरन्दरप्रभुः ३ श्रीमेघनामा जुवि पाठक प्रभु प्रसह्य पापं दहतेस्म कामदः
महादवं
- ७। बन्धिरिव स्फुरव्युतिः ज्वलत्प्रतापावलि कीर्तिमंजुलं ४ तत्पट्टे विबुधार्चितो विजय-
प्राक् श्री
- ८। मेरुनामा मुनी तद्विष्यो मणिसदृशौ शुभमति माणिक्य जानू जयौ ताज्यां शिष्य
कुशाग्रधीति कु
- ९। शलो जैनागमे यन्मति तद्भाक्यं श्रवणेन निर्मलधीयां निर्मापितोयं गृहं ५ श्री
अकब्बरावादपुरे
- १०। श्रीसंघमेरुसदृशो धर्मे निर्मापय जिनजवनं करोति बहुजक्तिः वात्सल्यं ६ दिगष्टैक
मिते
- ११। वर्षे माघशुक्ले चतुर्दशी बुधवारे च पुष्यर्क्षे स्थापितोयं जिनेश्वरान् ७ श्रेयः कट्याणं
जयं
- १२। ॥ सवैया ३१ प्रथम वसंत सिरी सीतल जू देवहु की प्रतिमा नगन गुन दस दोय
जरी है आग
- १३। रे सुजन साचे अठारसै दस आठे माह सुदी दस च्यार बुद्ध पुष धरी है देहरा
नवीन कीन्यौ संग

- १४। जिनराय चिन्थौ कुशलविजय पुन्यास तपगह धरी है देख श्रीवह विचार सम्यक्
गुन सुधार
- १५। जरम की रज टार पूजा जिन करी है १ कुंरुलिया चोमुष की प्रतिमा चतुर धरम
विमल जिन नेम
- १६। मुनिसोवृत उर आनिकै करत जवानी पेम करत जवानी पेम नेम जिन संष सुजा-
नौ विमल लष
- १७। न वाराह धरम जिन व (ज) र पिठानौ मुनिसोवृत जिन कूर्म लषन लष होत
सबै सुष प्रति
- १८। मा चारौ जान आंन सुज धरीसु चोमुष २ ॥

११	१	८
४	७	६
५	१२	३

६	७	२
१	५	०
८	३	८

१५	४	५	१०
६	६	१६	३
१२	७	२	१३
१	१४	११	८

२५	८०	क्षि	१५	५०
२०	४५	ष	३०	७५
क्षि	५	७०	स्वा	हा
७०	३५	स्वा	६०	५
५५	१०	हा	६५	४०

[1456] *

पातिसाहि श्री जहांगी (र) ।

- १। ॥ ए० ॥ श्री सिद्धेज्यो नमः ॥ स्वस्ति श्री विष्णुपुत्रो निखिल गुणयुतः पारगो वीत-
रागः । पायाहः क्षीणकर्मा सुरशिखरि समः [कटप]
- २। तीर्थप्रदाने ॥ श्री श्रेयान् धर्ममूर्तिर्जविकजनमनः पंकजे विंजानुः कल्याणां-
ज्ञाधिचंद्रः सुरनरनिकरैः सेव्यमा
- ३। नः कृपालुः ॥ १ ॥ ऋषजप्रमुखाः सर्वे गौतमाद्या मुनीश्वराः । पापकर्म विनिर्मुक्ताः
हेमं कुर्वतु सर्वदा ॥ २ ॥ कुंर ।

* यह लेख प्रफेसर बनारसीदासजी ने " जैन साहित्य संशोधक " खंड २ अंक १ पृ० २५-३४ में विस्तृत टिप्पणी के साथ प्रकाशित किया है ।

- ४। पाल स्वर्णपासो । धर्मकृत्य परायणौ । स्ववंशकुजमार्तडौ । प्रशस्तिर्लिख्यते तयोः
। ३ । श्रीमति हायने रम्ये चद्रर्षि रस
५। जूमिते । १६७१ षट् त्रिंशत्तिथौ शाके । १५३६ । विक्रमादित्यभूपतेः । ४ । राधमासे
बसतर्तौ शुक्लायां तृतीया तिथौ । युक्ते तु
६। रोहिणी तेन । निर्दोषगुरुवासरे । ५ । श्रीमदंचलगुह्याख्ये सर्वगुह्यावतंसके । सिद्धा-
न्ताख्यातमागर्गेण । राजिते विश्वविस्तृते । ६ । उग्रसे
७। नपुरे रम्ये । निरातंके रमाश्रये प्रासादमंदिराकीर्णे । सद्ज्ञातौ ह्युपकेशके । ७
लोढागोत्रे विवश्वांस्त्रिजगति सुयशा ब्रह्मवी
८। र्यादियुक्तः श्री श्रंगारख्यातनामा गुरुवचनयुतः कामदेवादि तुल्यः । जीवाजीवादि-
तत्त्वे पररुचिरमतिर्लोकवर्गेषु यावज्जीवा
९। श्रृंङ्कार्कविंबं परिकरभृतकैः सेवितस्त्वं मुदाहि । ८ । लोढा सन्तानविज्ञातो । धन-
राजो गुणान्वितः । द्वादशव्रतधारी च । शुभ ।
१०। कर्मणि तत्परः । ९ । तत्पुत्रो विसराजश्च । दयावान सुजनप्रियः । तुर्यव्रतधरः श्री मान्
चातुर्यादिगुणैर्युतः । १० । तत्पुत्रौ ह्यौ ।
११। वचूतां च सुरागावर्धिनां सदा । जेतू श्रीरंगगोत्रौ च । जिनाज्ञा पालनोच्युक्तौ
तौ जीण । सीह मध्याख्यौ । जेत्वात्मजौ बचूवतु
१२। : । धर्मविदौ तु दक्षौ च । महापूज्यौ यशो धनौ । ११ । आसीच्छ्रीरंगजो नूनं ।
जिनपदार्चने रतः । मनीषी सुमना ज्ञव्यो राजपा-
१३। ल उदारधीः । १३ । आर्या । धनदौ चर्षजदास । पेमाख्यौ विविध सौख्य धनयुक्तौ ।
आस्तां प्राज्ञौ ह्यौ च । तत्त्वज्ञौ तौ तु तत्पु
१४। त्रौ । १४ । रेषाजिधस्तयोज्येष्ठः । कटपट्टुरिव सर्वदः । राजमान्यः कुलाधारो ।
दयालुधर्मकर्मठः । १५ । रेषश्रीस्तत्प्रिया
१५। ज्ञव्या । शीलालंकारधारिणी । पतिव्रता पतौ रक्ता । सुलशा रेवती निजा । १६ ।
श्री पद्मप्रजविंबस्य नवीनस्य जिनाल ।

- १६। ये । प्रतिष्ठा कारिता येन सत्श्राद्धगुणशालिना । १७। खलौ तुर्यवृतं यस्तु । श्रुत्वा
कल्याणदेशनां । राजश्रीनिंदनः ।
- १७। श्रेष्ठ । आणंदश्रावकोपमः । १८। तत्सूनुः कुंरपासः किल विमलमतिः स्वर्णपालो
द्वितीय । श्रातुर्यौदार्यधैर्यप्रभुः ।
- १८। खगुणनिधिर्जाग्यसौजाग्यशाली । तौ द्वौ रूपाजिरामौ त्रिविधजिनवृषध्यानकृत्यैक-
निष्ठौ । त्यागैः कर्णावतारौ निज-
- १९। कुलतिलकौ वस्तुपालोपमाहौ । १९। श्रीजहांगीरचूपासमान्यौ धर्मधुरंधरौ । धनिनौ
पुण्यकर्तारौ विख्यातौ त्रा-
- २०। तरौ जुवि । २०। याच्यामुत्तं नव क्षेत्रे । वित्तबीजमनुत्तरं । तौ धन्यौ कामदौ लोके ।
लोढा गोत्रावतंसकौ । २१। अवा
- २१। प्य शासनं चारु । जहांगीरपतेर्ननुः कारयामास तुर्धर्म । कृत्यं सर्व सहोदरौ । २२ ।
शाखापौषधपूर्वावै । यकाच्यां सा
- २२। विनिर्मिता । अधित्यका त्रिकं यत्र राजते चित्तरंजकं । २३। समेतशिखरे जठये
शत्रुंजयेर्बुदाचले । अन्येष्वपि च तीर्थेषु । गि
- २३। रिनारिगिरौ तथा । २४। संघाधिपत्यमासाद्य । ताच्यां यात्रा कृता मुदा । महर्द्ध्या
सवसामग्र्या । शुद्धसम्यक्कहेतवे । २५। तुरंगा
- २४। णां शतं कांतं । पंचविंशति पूर्वकं । दत्तं तु तीर्थयात्रायां गजानां पंचविंशतिः । २६।
अन्यदपि धनं । वित्तं । प्रत्तं संख्यातिगं खद्यु
- २५। अर्जयामासतुः कीर्त्ति । मित्थं तौ वसुधातले । २७। उत्तुंगं गगनालंबि । सच्चित्रं
सध्वजं परं । नेत्रासेचनकं ताच्यां । युगं चैत्य
- २६। स्य कारितं । २८। अथ गद्यं श्रीश्रंचलगच्छे । श्रीवीरादष्टचत्वारिंशत्तमे पद्ये । श्रीपावक
गिरौ श्री सीमंधरजिनवचसा । श्रीचक्रे (श्वरीद)
- २७। त्वराः । सिद्धांतोक्तमार्गप्ररूपकाः । श्री विधिपद्मगच्छसंस्थापकाः । श्री आर्यरक्षित
सूरय । १। स्तत्तद्दे श्री जयसिंह सूरि २ श्रीधर्मघो

- ३० ष सूरि ३ श्रीमहेन्द्रसिंह सूरि ४ श्रीसिंहप्रजसूरि ५ श्रीअजितसिंह सूरि ६ श्री देवेंद्रसिंह सूरि ७ श्रीधर्मप्रज सूरि ८ श्री (सिंहतिलक सू)
- ३१। रि ए श्रीमहेन्द्रप्रजसूरि १० श्रीमेरुतुंगसूरि ११ श्रीजयकीर्ति सूरि १२ श्री जयकेशरि सूरि १३ श्री सिद्धांतसागर सूरि १४ (श्री जावसा)
- ३०। गर सूरि १५ श्री गुणनिधान सूरि १६ श्रीधम्ममूर्ति सूरय १७ स्तत्पट्टे संप्रति विराजमानाः श्रीजहारकपुरंदराः स
- ३१। णय : श्रीयुगप्रधानाः । पूज्य जहारक श्री ५ श्रीकल्याणसागरसूरय १८ स्तेषामुपदेशेन श्रीश्रेयांसजिनबिंबादीनां ...
- ३२। कुंरपालसोनपालान्यां प्रतिष्ठा कारापिता । पुनः श्लोकाः । श्री श्रेयांसजिनेशस्य बिंबं स्थापितमुत्तमं । प्रतिष्ठितं गुरु
- ३३। णामुपदेशतः । १८। चत्वारिंशत् मानानि सार्धान्युपरितत् रूपे । प्रतिष्ठितानि बिंबानि जिनानां सौख्यकारिणां । ३० ।
- ३४। तु लेजाते प्राज्य पुण्यप्रजावतः देवगुर्वोः सदाजक्तौ । शश्वतौ नंदतां चिरं । ३१। अथ तयोः परिवारः संघराजो पु
- ३५। ३२ । सूनवः स्वर्णपाल शत्रुर्जुज ... पुत्री युगलमुत्तमं । ३३ । प्रेमनस्य त्रयः पु (त्राः)
- ३६। षेतसी तथा । नेतसी विद्यमानस्तु सञ्जीवनेन सुदर्शन । ३४। धीमतः संघराजस्य । तेजस्विनो यशस्विनः । चत्वारस्तनुजन्मानः मताः । ३५ । कुंरपालस्य स
- ३७। द्वार्या पत्नीतु स ... पतिप्रिया । ३६ । तदंगजास्ति गंजीरा जादो नाम्नी स दानी महाप्राज्ञो ज्येष्ठमहो गुणाश्रयः । ३७ ।
- ३८। संघश्रीसुलषश्रीर्वा दुर्गश्रीप्रमुखैर्निजैः । वधूजनैर्युतौ जातां । रेषश्री नंदनौ सदा । ३८ । चूमंडलं सजारंगमिच्छक्युक्त संव ।

(१०५)

श्री श्रीमंदिर स्वामी जी का मंदिर—रोशन महदखा ।

षष्ठाण की मूर्ति पर ।

[1457] •

- (१) ॥ सं० १६६० ज्यैष्ठ सुदि १५ गुरौ ॥ ओसवा
- (२) ल ज्ञाति श्रृंगार । अरडक सोनी गोत्रे
- (३) सा० हीरानंद पुत्र सा निहालचंद
- (४) न श्री पार्श्वनाथ कारितः सर्परूपाकार
- (५) श्री खरतगुहे श्री जिनसिंह सूरि पट्टे श्री
- (६) जिनचन्द्र सूरिणा । श्री आगरा नगरे

धातुकी मूर्तियों पर ।

[1458]

✓ ॥ सं० १५३४ वर्षे माघ सुदी ५ श्री मूलसंधे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये श्री जिनवरदेवाः तत् शिष्य मुनिरत्नकीर्ति उपदेशात् खाफेखवालांन्वये पहाड्या गोत्रे सा० तेजा जार्या रोहिणी पुत्रौ सा० पूना पाढहा नित्यं प्रणमन्ति ॥

[1459]

॥ सं० १६४१ श्री सुपार्श्वनाथ वि० का० प्र० श्री हीरविजय सूरिभिः ॥

[1460]

॥ संवत् १६७४ वर्षे माघ वदी १ दिने गुरुवारं पुष्यनक्षत्रे साह श्रीजहांगीर विजय मानराज्ये ओसवालज्ञातीय नाहर गोत्रे । सं० हीरा तत्पुत्र स० अमरसी जा० अन्तरङ्गदे तत्पुत्र सा० साडूला जा० सोजागदे युतेन श्री मुनिसुव्रतस्वामी विम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं जहांगीर महातपाविरूद्धधारक जटारक श्री ५ श्री विजयदेवसूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

* यह लेख श्री पार्श्वनाथ स्वामी की श्वेत षष्ठाण की कायोत्सर्ग मुद्रा की मनोह मूर्ति के चरणचौका पर खुदा हुआ है ।

(१०६)

पंचतीर्थियों पर

[1461]

॥ संवत् १५०० वर्षे वै० शु० ५ उपकेशज्ञातीय सा० नानिग जा० मढ्हाड सुत सा०
लाखा जा० लाखणदे सुत सा० चाहडेन मातृ हासा सिधराज जा० चापलदेवी सुत वसुपा-
लादिकुटुम्बयुतेन पितृ श्रेयसे श्रीचन्द्रप्रत्नबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपागहनाथक श्री श्री
मुनिसुन्दर सूरिजिः ॥

[1462]

॥ संवत् १५३६ वर्षे आषाढ सुदी नवम्यां तिथौ उप० वीरोल्लिया गोत्रे सा० मूमा
जा० केव्ही पु० दशरथ नाम सा० दशरथ जा० दत्तसिरी पु० जिणदत्त श्री संत्रवनाथ
बिम्बं का० प्र० श्री पल्लीवाल्लगच्छेश ज० श्री ऊजोअण सूरिजिः ॥

[1463]

संवत् १५५९ वर्षे महा सुदी १० श्रीमालववंशे वहकटा गोत्रे सा० तेजा पुत्र सा०
जोगाकेन पुत्रादियुतेन श्रा० अमरसहितेन श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्र० श्री खरतरगढे
श्री जिनहंस सूरिजिः ॥ श्रेयसे ॥

[1464]

॥ संवत् १५७७ वर्षे ज्येष्ठ वदी० सोमे श्री अलवर वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय वृद्धशा-
खायां आयत्रिण्यगोत्रे चोरवेडिया शाखायां सं० साहणपाल जा० सहलाखदे पु० सं०
रत्नदास जा० सूरमदे श्रेयोऽर्थं श्री उकेशगह्णे कुकदाचार्यसन्ताने श्री सुमतिनाथ कारापितं
बिम्बं प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिजिः ॥

चौविशी पर ।

[1465]

॥ संवत् १५३६ ज्येष्ठ शु० ५ प्रा० ज्ञातीय सं० पूजा जा० कर्मादे पुत्र स० नरजम जा०

(१०९)

नायकदे पुत्र स० खीमाकेन जा० हरषमदे पुत्र परवत गुणराज प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्री
आदिनाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्र० लक्ष्मीसागर सूरिजिः सीरोही नगरे

के यंत्रे

[1466]

॥ सं० १६०४ वर्षे शाके १४९० प्रवर्त्तमाने आश्विनमासे वदिपक्षे १४ दिने रविवासरे
दीपास्त्रिकादिने श्री श्रीमालगोत्रीय साह श्री जयपालसुत साह सोरंगकेन सुखशांति श्री
हर्षरत्न सद्गुपदेशेन श्री पार्श्वनाथ यंत्रं कारापितं प्रतिष्ठितम् शुभं भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥ ठ ॥

[1467]

॥ संवत् १८०५ वर्षे माघशुक्ल ५ गुरौ श्री गूर्जरदेशीय पाटण वास्तव्य श्री खरतरगङ्गीय
कावनीया गोत्रे सेठ वेलजी पुत्र सेठ हेमचन्द्रेण स्वात्मार्थे श्री सिद्धचक्र नवपदगुह्यकर्म
हयार्थं कारापितं श्री आगरा नगरमध्ये श्रीतपागङ्गीय पं० कुशलविजय गणि उपदेशात्
॥ ह्रीं ॥

[1468]

॥ सं० १८०९ वर्षे आश्विन शुक्ल १० जौमे डूगरु गोत्रीय सा० कपूरचन्द्र पुत्र सिताव
सिंह गृहे तरसन्नित(?) सुखदे नाम्नी स्वात्मार्थे श्री सिद्धचक्रयंत्रं कारितं
चट्टारक श्री विजयदेव सूरीश्वरराज्ये पं० कुशलविजय गणि उपदेशात् कृतम् ॥ श्रीः ॥

[1469]

सं० १९३१ वर्षे आगरा वास्तव्य लोढा गोत्रे प्रतापसिंहस्य जार्या मूलो श्री नवपद
कारितं प्रतिष्ठितं श्री धरणेन्द्रविजय सूरिराज्ये तपा ।



(१००)

श्री सूर्यप्रजस्वामी जी का मंदिर-मोती कटरा

बिम्बतीर्थियों पर ।

[1470]

॥ संवत् १५३३ मार्ग सुदि ६ शुके अशुक्ल ज्ञातीय बड़गोत्रे सा० जीमदे जा०
रूढही पुत्र सा० जोजा जा० जेठी नाम्न्या पुत्र सा० महीपति मेघादि कुटुम्बयुतया
स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ बिम्बं का० प्र० श्रीसूरिजिः ॥

[1471]

॥ संवत् १५४६ वर्षे पौष वदी ५ सोमे राजाधिराज श्री श्री श्री नाजिनरेश्वरराज्ञी श्री
श्री श्री मरुदेवी तनया पुत्र श्री श्री श्री श्री श्री आदिनाथदेवस्य बिम्बं सुप्रतिष्ठितम् ॥

[1472]

॥ सं १५९७ वर्षे माघ सु० १३ रवौ श्री मंरुपे श्रीमाल ज्ञातीय सं जदा जा० हर्षू
सा० खीमा जा पूंजी पु० सा० जेगसी जा० माऊ पु० सा० गोढहा जा० सापा पु० मेघा
पु० कार्णी लघुत्रातृ सं० राजा जार्या सागू पु० सं० जावडेन जा० धनाई जीवादे सुहागदे
सत्तादै धनाई पुत्र सं० हीरा जा० रमाई सं० लालादिकुटुम्बयुतेन बिम्बं कारापितं निज
श्रेयसे श्री कुन्थुनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं तपागळे श्री सोमसुन्दर सूरिसन्ताने लक्ष्मी
सागर सूरिपट्टे श्री सुमतिसाधु सूरिजिः ॥

चौवीसी पर ।

[1473]

॥ सं० १५१३ वर्षे वैशाखमासे ऊकेश ज्ञातीय से० पैथड जा० प्रथमसिरी पुत्र सं०
हेमाकेन जार्या हीमादे द्वितीया लाठि पुत्र देढहा राणा पासादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोऽर्थ श्री-
कुन्थुनाथादि चतुर्विंशतिपट्टः कारितः श्री अश्वलगणेश श्री जयकेशरी सूरिजिः प्रतिष्ठितः
॥ शुभं जवतु ॥ श्रीः ॥

(१०९)

श्री गोड़ीपार्श्वनाथजी का मंदिर - मोती कटरा ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1474]

॥ सं० १५१३ वर्षे ज्येष्ठ वदी ११ सूगणा गोत्रे सा० धन्ना जा० धानी पुत्र सा० फलहूकेन
आत्मपुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ बिम्बं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मशेखर सूरि पट्टे श्री
पद्माणक सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

[1475]

॥ सं० १५२० वर्षे वैशाख शुदी १२ बुधे श्री श्रीमाली ज्ञातीय श्रे० हीरा जा० जीविणि
सु० कान्हाकेन जा० पदमार्ई सु० रत्नायुतेन ज्ञातृ हांसा मना निमित्तं श्री अरनाथ बिम्बं
कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ अहमदाबाद वास्तव्य ॥

[1476]

॥ संवत् १५३६ वर्षे कार्तिक शु० १५ गूजर श्रीमाल ज्ञातीय वहरा गोत्रे स० धन्ना जा०
धारद्वदे यु० सा० माडा पुत्र देवाराजादि श्री शान्तिनाथ बिम्बं कारितम् ॥ प्रतिष्ठितम् ॥
श्री सूरिजिः ॥

[1477]

॥ संवत् १५५४ वर्षे मा० व० २ सीहा वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० अमा जार्या
लखमादे पुत्र व्य० मादहण जा० मादहणदे सुत नरवद प्रमुखसमस्तकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्य
श्री सुविधिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं तपापक्षे श्री हेमविमल सूरिजिः ॥

[1478]

॥ उं ॥ सं० १९४० वर्षे वैशाखसुदी ५ भृगुवारे अर्गलपुरे ओसवाल वंशोद्भवे ज्ञातौ
वैद मोता गोत्रे साहू हंसराज चन्द्रपालस्य कारितं नेमनाथस्य बिम्बं प्रतिष्ठितम् ॥ कमला
गच्छे श्री सिद्ध सूरिजिः ॥ उपवेश गच्छे ॥ ॥ श्री ॥ श्रेयम् ॥

(११७)

चौबीसी पर ।

[147७]

॥ संवत् १५०५ वर्षे वैशाख सुदी ६ श्री उपकेश ज्ञातीय आदित्यनाग गोत्रे सा० ठाकुर
पु० सा० धणसीह जा० बणश्री पु० सा० साधू जा० मोहणश्री पु० श्रीवंत सोनपाल
जिखू एतैः पित्रोः श्रेयसे श्रीअजितनाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारितः । श्री उपकेशगण्डे श्री
ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितः । जहारक श्री सिद्ध सूरिः तत्पट्टाळंकारहार जहारक श्री कक्क
सूरिजिः ॥ ७ ॥

[1480]

॥ सं० १५११ वर्षे माघे शुदी ५ गुरु श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्यवहृता सुत व्यत्रा
कर्मसीह जार्या कस्मीरदे सुत सायरकेन जार्या मेशूसहितेन पितृमातृआत्मश्रेयसे श्री कुं
नाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारितः श्री पूर्णिमापट्टे जहारक श्री राजतिलक सूरीणामुपदेशे
प्रतिष्ठितम् ॥

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर — मोती कटरा ।

पञ्चतीर्थी पर ।

[1481]

॥ संवत् १४९६ वर्षे वैशाख सु० १२ गुरु ठाहखा गोत्रे सं० धेदहा पुत्र सं० दय
डीडा पुत्र सं० जादा सादा जार्या रू० डीडानिमित्तं श्री सुविधिनाथ त्रिम्बं कारितं
प्रतिष्ठितम् तपागण्डे जहा (रक) श्री पूर्णचंद सूरि पट्टे श्री हेमदंस सूरिजिः ॥

चौबीसी पर ।

[1482]

॥ ॐ ॥ सं० १५०१ वर्षे ... व० ६ बुधे लोढा गोत्रे सा० हरिचन्दसन्ताने । सा० गोगा
पु० सं० गोरा । पुत्र । सं० आसपाल तत्पुत्रेण सं० लाखाकेन । घ्रात् सं० वस्तुपाल तेजपाल

(१११)

पूनपाल । पुत्र सोनपाल पासवीर । सं । हंसवीर ध्रातृ पुत्र । कुनरपाल पर्वतादियुनेन
निजमाता मूर्णी पुण्यार्थ श्री संजवनाथ बिम्बं चतुर्विंशति देवपदे । का० प्र० तपागछे
श्री पूर्णचन्द्र सूरि पदे श्री हेमहंस सूरिजिः ॥

धातु के यन्त्र पर

[1483]

॥ ॐ ॥ स्वस्ति संवत् १४९७ वर्षे माघ सुदी ५ गुरुवासरे श्रीमत् योगिनीपुरे राज्ज
श्री काष्ठासंघे मायुरान्वये पुष्करगणे जहारक श्री श्री हेमकीर्तिदेवान्स्तराष्ट्रे प्रहारक
श्री हेमकीर्तिदेवाँस्तत् शिष्य श्री धर्मचन्द्रदेवान् श्री महेन्द्रकीर्तिदेवान् श्री जिनचन्द्र
देवान् जिनचन्द्र शिद्दिणी वार्डे सहजाई एतेन श्री कलिकुण्डयंत्रस्वकर्मकार्यार्थं कारापितं
॥ शुभं भवतु ॥

श्री केशरियानाथजी का मंदिर - मोतीकटरा ।

पञ्चतीर्थों पर ।

[1484]

संवत् १५०१ वर्षे सुदी ६ शुके उकेशवंशे घांघ गोत्रे सा० ढीतर जा० लखमार्डे पुत्र सा०
सांगा आसा० सिया हीरा तन्मध्ये सांगाकेन जा० सिंगारदे पु० राजसी रामसी...युतेन श्री
शान्तिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारि गछे श्री गुणसागर सूरि पदे श्री लक्ष्मीसागर
सूरिजिः ॥

श्री नेमनाथजी का मंदिर - हींगमंडी ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1485]

॥ संवत् १५१५ वर्षे मक्षारणावासी मुहरल गोत्रे श्रीमाल ज्ञातीय सा० धोधू जा०
देवू पु० मडमथेन जा० माह्दी-त्रातृ हरिगण जा० पूरा पुत्र० सरजन प्रमुखकुटुम्बयुतेन
स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिम्बं का० प्र० तपागछे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

(१११)

[1486]

॥ संवत् १९२१ सा० १९०६ प्र० माघ शु० ७ गुरुवारे अञ्जलगङ्गे कच्छ देश कौतारा
वास्तव्य उंसवाल सा० गांधी मोहता गोत्र श्री केशवजी नायकेन श्री सिद्धदेवे श्री
नेमिनाथ जिन विम्बं कारापितं प्र० ज० श्रीरत्नशेखर सूरिजिः ॥

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर - नमकमंडो ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1487]

॥ सं० १४०५ वर्षे फा० सु ए शुके श्री ज्ञानकीय गङ्गे उंसज गोत्रे उ० ज्ञातीय सा०
शिवा जा० कांजं पुत्र केदहा जा० कीदहणदे सन्ततिवृद्ध्यर्थं पितृमातृनिमित्तं श्री कुंथुनाथ
विम्बं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री शान्ति सूरिजिः ॥ शुभं जवतु ॥

[1488]

॥ संवत् १४२५ माघ वदि ७ सोमे श्री संडेरगङ्गे श्री उपकेशज्ञाति सा० महीपाल जा०
मदहणदे पु० वैला जा० सहजादे पु० सरवणनैक (?) ज्ञातृ कसामलस्य श्रेयसे श्री आदि
नाथ पञ्चतीर्थी कारिता । प्र० श्री ईश्वर सूरिजिः ॥

[1489]

॥ सं० १४५३ ... शु० ३ शनौ श्रीमाल माधलपुरा गोत्रे सा० केला पुत्रेण सा० तोलाकेन
नरपाल श्री पालेत्यादि पुत्रयुतेन श्री-धर्मनाथ विम्बं कारितं प्र० तपागङ्गे श्री पूर्णचन्द्र
सूरिपदे श्री हेमहंस सूरिजिः

[1490]

॥ सं० १४५७ वर्षे वै० शु० ३ शनौ उपकेश गङ्गे धेधड जा० केली प्रा० चूपणा जा०
षेमी पु० सीगकेन (?) पितृमातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ वि० का० प्र० श्री श्रीमाले
श्री रामदेव सूरिजिः ॥

(११३)

[1401]

॥ सं० १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ उत्तवाल खांटड गोत्रे सा० चाहजू जा० अहवदे पु०
पूना पितृश्रेयसे श्री संजवनाथ विम्बं का० प्र० श्री धर्मघोष गढे श्री मलयचन्द्र सूरिपदे
श्री पद्मशेखर सूरिजिः ॥

[1492]

॥ सं० १५०३ मार्ग सुदि ५ उ० झा० उठितवाल गोत्र सा० मेघा पुत्र सा० खेताकेन
जा० इर्षमदे सह पूर्वपुरषमेळानिमित्तं शान्तिनाथ विम्बं का० प्र० श्री धर्मघोषगढे श्री
महीतिलक सूरिजिः ॥

[1493]

॥ सं० १५०९ वर्षे उणश वंशे सा० पेथड़ जा० षीथाही पु० खेला सरवण साजण कै
श्री अंचलगणेश श्री जयकेशरी सूरि उपदेशेन श्री विमलनाथ विम्बं स्वश्रेयसे कारितं प्र० ॥

[1494]

॥ सं० १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ७ रवौ उपकेश सुचिन्ति गोत्रे सा० नरपति पु० सा०
साड्हा पु० फमण जा० केड्हाही पु० सुधारण जा० संसारदे युतेन पित्रोः श्रेयसे श्री आदि
नाथ विम्बं कारापितं उपकेश० ककुदाचार्य प्र० श्री कक्क सूरिजिः ॥

[1495]

॥ सं० १५२४ वर्षे मागसिर वदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातीय महं केड्हा जार्या कीड्हाण
पुत्र मुरजणकेन जा० राणी सहितेन श्री कुन्थुनाथ विम्बं का० प्रतिष्ठितं श्री ब्रह्माणीयगढे
ज० श्री उदयप्रज सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

[1496]

॥ संवत् १५५४ वर्षे माह वदि २ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय गृह्णारसंघवी सिद्धराज सुश्राव
केन जार्या ठणकू पुत्र सा० कूषा जार्या रम्मदे मुख्यकुटुम्बसहितेन श्री सुपार्श्वनाथ विम्बं
कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

(११४)

श्री बादावाडी - साहगंज ।

श्री महावीरस्वामी के वेदी पर ।

[1497]

संवत् १९७५ मिति वेशाख सुदि ३ सोमवारे दुलीचन्द के पुत्र प्यारेलाल चौरटिया की बहूने वेदी बनाई ॥

चरणों पर ।

[1498]

॥ सं० १९४४ मिति आषाढ़ सुदि १० श्री गोतमस्वामीजी प्रतिष्ठितं । पं० संवेगी श्री रणधीर विजय कारापितं ।

[1499]

श्री अर्गलपुरे साहगंजे प्रथम प्रतिष्ठा संवत् १७७९ मिति ज्येष्ठ सुदि १५ खरतरगच्छे श्री १०८ श्री जिनकुशल सूरिजी के पाडुके संवत् १९६४ मिति जेठ सुदी २ गुरुवार प्रतिष्ठा समय विद्यमान श्री तपागञ्ज उपाध्याय श्री वीरविजयजी ॥

[1500]

॥ सकल जहारक पुग्न्दर जहारक श्री १०८ श्री हीरविजय सूरिश्वरकस्य चरण प्रतिष्ठापितं तपागञ्जे ।

[1501]

॥ संवत् १९६४ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल २ दिने गुरुवारे श्री आगरा नगरे सकलसंघेन श्री लोकागञ्जे श्रीमद् आचार्य स्वामिकरणस्य पाडुका श्री तपागञ्जीय श्रीमद् वीरविजयेन प्रतिष्ठा कारिता ॥



(११५)

लखनउ ।

श्री शान्तिनाथजी का मंदिर - बांहरन टोश्र ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1502]

सं० १३०६ वर्षे वैशाख सु० १३ सा० करमण जा० ... बसिरि पु० गोसाकेन मातृपितृ
श्रेयार्थं श्री विंभं का० प्र० च धर्मप्रज्ञ सूरि ... ।

[1503]

संवत् १४०२ वर्षे फा० सु० ३ उकेस वंशीय सा० जेसिंग सुत सामल जार्या सह-
जलदे सुत सा० जसा जा० जासलदे ज्रातृ देधर जार्या श्रा० संगई स्वश्रेयार्थं श्री अजित
नाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनजद्र सूरिजिः ॥

[1504]

सं० १५१२ वर्षे वैशाख वदि ११ शुके श्रीमाछी ज्ञातीय सं० अज्जुन जा० स्वसु पु०
टोइं आम्राइं ... हदाकेन जा० लखी सहितेन निजश्रेयसे श्री अजितनाथ विंभं का०
उकेशगच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने श्री कक्क सूरिजिः प्रतिष्ठितमिति ।

[1505]

संवत् १५१७ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञाती श्रे० ठाकुरसी सुत श्रे०
घंगाकेन जार्या होमी सु० धना वना मिखा राजी युनेन श्री शीतलनाथादि पंचतीर्थी
आगमगच्छे श्री हेमरत्न सूरीणामुपदेशात् कारिता प्रतिष्ठिता च माइलि वास्तव्य ।

[1506]

सं० १५२७ वर्षे माघ वदि ७ रवौ उ० जा० मं० कूपा जा० सोषल पुत्र रूपा जार्या
रत्न सुत जिंदा जुणा मिखा आरमधेयसे श्री शान्तिनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं श्री

(११६)

जिरायपल्लीय गङ्गे जट्टारक श्री साक्षिजद्र सूरि पट्टे श्री ज० श्री उदयचंद्र सूरिजिः
प्रतिष्ठितं श्री ॥ १४ ॥

[1507]

संवत् १५९६ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे सा० जचू जार्या सवीराई । पुत्र अका श्री
विजयदाम सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

[1508]

संवत् १६१६ वर्षे वैशाख शुदि १० रवौ श्रीमात्रो ज्ञातीय सा० सता श्रेयोर्य श्री
वासुपूज्य विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री विजयदान सूरिजिः ।

[1509]

सं० १६१६ वर्षे वै० शु० १० रवौ श्रे० ककुश्रेयोर्य श्री संतवनाथ विंबं कारितं तपा
गङ्गे प्रतिष्ठितं श्री विजयदान सूरिजिः ।

[1510]

संवत् १६९० व० फागुण सुदि ९ ।

मूर्तिथों पर ।

[1511]

॥ सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ श्री महावीर जिन विंबं कारितं च उल वंशे ठाजे ड
गोत्रे । साक्षा जीवनदास पुत्रेण दुर्गाप्रसादेन कारितं जट्टारक श्री शांतिसागर
सूरिजिः प्रतिष्ठितं विजयगङ्गे ।

[1512]

॥ सं० १९२४ मा० शु० १३ सुमतिजिन विंबं का० उल वंशे वैद मुहता बालचंद्र
तज्ञार्या महतावो बीत्री प्र । विजयगङ्गे श्री शांतिसागर सूरिजिः श्रेयोर्य ।

(११७)

[1513]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ मुनिसुव्रत जिन विंश कारितं उस वंशे ठाजेड गोत्रे
साखा हरप्रसाद तत् पुत्र जीवनदास चार्या नन्ही बीबी श्रेयोर्थं ज० श्री शांतिसागर
सूरिजिः प्रतिष्ठितं विजय गछे ।

[1514]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ सुमतिनाथ जिन विंश वैद मुहता गोत्रे साखा धर्मचंद्र
पुत्र शिषरचंद्र तद् जा० सांदन बीबी श्रेयोर्थं । ज० श्री पूज्य श्री शांतिसागर सूरिजिः
प्रति० विजय गछे

[1515]

॥ सं० १९२४ मा० शु० १३ महावीर जिन । वैद धर्मचंद्रजी विजय गछे ज० शांति-
सागर सूरिजिः ।

[1516]

सं० १९२४ मा० शु० १३ श्री सुमति जिन विंश का० उस वंशे मालकस गोत्रीय धर्म
चंद्र तत् पुत्री मंगल बीबी प्र० । विजयगछे ज० । श्री शांतिसागर सूरिजिः श्रेयोर्थे
प्रतिष्ठितं हीरा बीबी ।

[1517]

सं० १९२४ मा० शु० १३ संजव जिन । मालकस गो० धर्मचंद्र तत् पुत्र हीरा बीबी
। प्र० । शांतिसागर सूरिजिः विजयगछे ।

[1518]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ श्री धर्मनाथ विंश का० उस वंशे सुचिति गोत्रे सा०
नोवतराय पु० रेवा प्रसादेन कारितं प्र० विजयगछे शांतिसागर सूरिजिः ।

(११७)

[1519]

सं १८९३ माघ सुदि १० बुधवारे राजनगरे उंसवाल झाति वृद्ध शा० सा० वी०चंद्र
रूपा श्रेयोर्थं शांतिनाथ त्रिंबं जरावी प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठितं तपागढे ।

[1520]

शाहजहां विजय राज्ये । श्री विक्रमार्क समयातीत संवत् १६७१ वर्षे शाके १५३६
प्रवर्तमाने आगरा वास्तव्य उंसवाल झातीय लोढा गोत्रे अघाणी वंशे सं० शपन्नदास
तत्पुत्र सं० श्री कुरपाल सोनगन्न संघाधिगार्यां श्री अनंतनाथ त्रिंबं प्रतिष्ठितं श्रीमदचल
गढे पूज्य श्री ५० श्री धर्ममूर्ति सूरि पदाम्बुज हंस श्री श्री कल्याणसामर सूरिणा
मुदेशेन ।

श्याम पाषाणके मूर्तियों पर

[1521]

॥ सं० १८७९ फा० सु० ए शनौ उंस वंशे लोढा गोत्रे हरपचंद्रस्य ... श्री सुगर्भ
त्रिंबं ... ।

[1522]

॥ सं० १८७९ फा० सु० ए शनौ उंस वंशे मयाचंद्रजी तत्पुत्र धनसुख ... ।

[1523]

सं० १८७९ फा० सु० ए शनौ श्रीमाल पाड़ड़ मन्नुवाल ... ।

[1524]

॥ सं १८७९ फा० सु० ए शनौ चोरडिया गोत्रे दयाचंद्र ... ।

श्वेत पाषाणके चरणों पर ।

[1525]

सं १८६३ मि० माघ सु० ५ दिने श्री अतीत चौकिसी नगजन जी की उंसवाल वंशो

(११९)

नाहटा गोत्रे राजा बल्लभगज बाबू विशेश्वरदास बाबू जैरुनाथ बाबू वैजनाथ बाबू जगन्नाथ बाबू लल्लमणदास नं चरण जगया बृहत्खरतर गळे जट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रेयोर्थं शासन देवो अस्य मंदिरस्य रक्षां कुर्वतु ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री लखनउ नगरमध्ये नबाब साहब सहादतअन्नि विजय राज्ये ।

[1526]

सं० १७६४ मि० वै० सु० ३ दिने वर्तमान चौविशी २४ जगवान जी के उंसवाल वंशे काकरिया गोत्रे खुमानराय । वखतावरसिंह । गोकुलचंद । माणकचंद । स्वरुपचंद । रतनचंद । ताराचंद । सपरिवारेण चरण वनवाया श्री बृहत्खरतर गळे जट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री लखनउ नगरे ।

[1527]

सं० १७६४ मि० वै० सु० ३ दिने अनागतचौविशी उंसवाल वंशे नाहटा गोत्रे राजा बल्लभगज तत्पुत्र बाबू जगन्नाथस्य जार्या स्वरुपनें इदं चरणं काराभितं श्रेयोर्थं श्री बृहत्खरतर गळे जट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री लखनउ नगरे ।

[1528]

सं० १७६४ मि० वै० सु० ३ दिने २० विहरमान ४ शास्वतानि जगवानजी के उंसवाल वंशे कांकरिया गोत्रे जेठमल्ल गुजरमल्ल बहादुरसिंह स्वरुपचंद सपरिवारेण चरण वनवाया श्री बृहत्खरतर गळे ज० श्री जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री लखनउ नगरे ।

सहस्रकूट पर ।

[1529]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १९७५ प्रवर्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट विंशानि प्रतिष्ठितानि बृहत्खरतर जट्टारक गळे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रजाकर जट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्ष्मणपुर वास्तव्य प्रदहायत गो० । श्री जेठमल्ल तत्पुत्र कालकादास तत्पुत्र बलदेवदासेन श्रेयोर्थमानंदपुरे

(१२०)

[1530]

॥ १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघशुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट विंशानि प्रतिष्ठितानि बृहत्स्वरतर जट्टारक गह्वे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रज्ञाकर जट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्ष्मणपुर वास्तव्य चो० । गो० । श्री हंसराज तन्त्रार्या सोना विवि तथा श्रेयोर्थमानंदपुरे ॥ सं० । प्र० । कनकविजय मुण्युपदेशात् ।

[1531]

॥ सं १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट विंशानि प्रतिष्ठितानि बृहत्स्वरतर जट्टारक गह्वे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रज्ञाकर जट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः सपरिकरैः कारितं श्री लक्ष्मणपुर वास्तव्य उ० । गो० । सा० उमेदचंद तत्पुत्र हरप्रसाद रामप्रसाद तत्पुत्र जीवनदास धनपतराय तत्पुत्र चूर्गाप्रसादेन सपरिकरैः श्रेयोर्थमानंदपुरे ।

[1532]

॥ सं० १९१० शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे सहस्रकूट विंशानि प्रतिष्ठितानि बृहत्स्वरतर जट्टारक गह्वे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्टप्रज्ञाकर जट्टारक श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः सपरिकरैः कारितं श्री लखनउ समस्त श्री संघेन श्रेयोर्थमानंदपुरे ।

[1533]

संवत् १९१३ शाके १७७७ तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां परमार्द्धत श्रीमत् शांति जिन मोक्ष कल्याणक पाडुका लक्ष्मणपुर वास्तव्य समस्त श्री संघेन कारितं प्र० च बृहत्स्वरतर गच्छीय जं । यु । प्र । श्री जिनचंद्र सूरि पङ्कजभृत् श्री जिन जयशेखर सूरिजिः ।

श्वेतगणाय के पंचमुष्टिलोच के जाव पर ।

[1534]

संवत् १९१३ शाके १७७७ तिथौ माघ शुक्ल पंचम्यां ... दीक्षा कल्याणक पाडुका ...
उस वंशे महता गोत्रे ... ।

(१३१)

श्री ऋषभदेवजी का मंदिर - बोहरनटोला ।

शिक्षालेख । ●

[1585]

॥ १० ॥ ॐ नमः सिद्धं । संवत् १९३४ माघ शुक्ल १३ गुरौ ॥ श्लोकाः ॥ विजयगङ्गाधिपो
सूरि । विहरन् सन् महीतलं ॥ शान्ति सूरिति नामेन । संप्राप्तो लक्ष्मणपुरे ॥ १ ॥ जगवान्
देशनागब्धा । जिनजक्तिप्रमुष्ठिका ॥ कादंबनीव संजाता । जठ्यानां बोधहेतवे ॥ २ ॥
तदा तस्योपदेशेन । श्री संयो जक्तिवत्तत्र ॥ कारयतिस्म जिनं चैत्यं । ऋषभस्वामिमंदिरं
॥ ३ ॥ सूरिस्तु विचरन् जूम्यां । स्वशिष्यं स्थापितं मुदा ॥ धर्मचंद्राजिधानं च । संस्थिति
धर्महंतव ॥ ४ ॥ तत्रैव धर्मं दित्सेतिस्म । शिष्यान् पाठयति सदा ॥ स्वशिष्यं गुणचंद्राहं ।
गुरुजक्तिपरायणं ॥ ५ ॥ मंदिरोपरि जूम्यां च । त्रिद्वारं जमरिकायुतं ॥ मंदिरं कारयेत्
संघः । जातः सधर्मवत्सत्रः ॥ ६ ॥ माघमासे शुक्लपक्षे । त्रयोदश्यां गुरौ दिने ॥ जट्टारक
शान्ति सूरिः । प्रतिष्ठां चक्रिरे मुदा ॥ ७ ॥ तस्मिन् जिनमंदिरे । श्री चतुर्मुख बिंबानां
चतुर्णां मध्ये । श्रीयादिजिनस्य बिंबं । उतवंशे वरड्या गोत्रे लाला ठांटेलाल पुत्रेण स्वरूप-
चंद्रेण कारितं । तथा द्वितीयं श्री वसुभूज्य जिनबिंबं । फूमषाणा गोत्री लाला सीताराम
तद्धार्या चांडिया गोत्री तथा कारितं । तृतीयं श्री शान्तिनाथ जिनबिंबं । श्री शान्तिसागर
सूरि शिष्येण । ऋषिणा धर्मचंद्रेण कारितं । चतुर्थं श्री महावीर स्वामि जिनबिंबं ।
सुविंती गोत्रे । लाला बेरातीमल्ल पुत्रेण गोविंदरायेण रूपचंद्र पुत्र सडितेन कारितं ।
श्री विजयगङ्गाधीश्वर सार्वभौम जंगमयुगप्रधान जट्टारक श्री जिनचंद्रसागर सूरि
पट्टप्रज्ञालंकार श्री पूज्य श्री शान्तिसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं । ऋषिणा चतुर्भुजनाथ ।
गोकुलचंद्रेण संयुता ॥ इयं कृति स्त्रिपिताज्यां । गुरुजक्तिपरायणौ ॥ १ ॥ श्रीरस्तुः ॥
श्रीः ॥ पद्मावती लब्धवर प्रसादात् । यो मेदपादाधिपति स्वरूपं । राणापदे संस्थित शत्रु
सिंह रोगात् प्रमुच्येत स शान्ति सूरिः ॥ २ ॥

● इस लेखके अन्तमें चार यंत्र हैं; दाहिने २० का और बाये १६ का है, उनके निचें दाहिने ६ जाने का और बायें ११ जाने का यंत्र है, इनके जोड़ मिलते नहीं हैं ।

(१२२)

१०	२	८
४	०	६
६	११	३

०	२	१०
६	६	४
३	११	५

३१	३०	३५	२२	२१	२६	६०	६६	०१	६६	५३	४०	२०	१४	१	१२०	१००	६४	८१	६०
३६	३२	२६	२०	२३	१६	०२	६६	६४	०२	००	५२	३६	२६	१३	११	११६	१०६	६३	८०
२६	३४	३३	२०	२५	२४	६५	००	६६	०३	००	८८	०५	६२	४६	३६	२३	२१	८	११६
०६	८५	८०	४०	३६	४४	४३	३	८	११५	१०२	८६	८०	०४	६१	४८	३५	३३	२०	०
८२	००	०३	४५	४१	३०	६	५	१	६	११४	१०१	६६	८६	०३	६०	४०	३४	३२	१६
०४	०६	०८	३८	४३	४२	२	०	६	१८	५	११३	१००	६८	८५	०२	५६	४६	४४	३१
१३	१२	१०	५८	५०	६२	६६	४८	५२	३०	१०	४	११२	११०	६०	८४	०१	५८	४५	४३
१८	१४	१०	६३	५६	५५	५४	५०	४६	४२	२६	१६	३	१११	१०६	६६	८३	००	५०	५५
११	१६	१५	५६	६१	६०	४०	५२	५१	५३	४१	२८	१५	२	१२१	१०८	६५	८२	६६	५६

धातु की मूर्ति पर ।

[1536]

सं० १५८३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ साधु साग्वायां जेसडिया वंशे सा० वत्सा पुत्र सा०
 लडमसी पुत्र सा० वर्धमान सा० रीडा श्री पार्श्वनाथ प्रतिष्ठा कृता श्री साधु वचनात् ।

पंचतारिणियों पर ।

[1537]

सं० १५०० वर्षे मार्गशिर वदि १ बुधे सामलिया गोत्रे सा० जोषा पु० सा० काकण

(१२३)

ज्ञातृ उत्सीह ... निः पितुः पु० श्री आदिनाथ विंभं का० प्र० बृहज्जे श्री महेंद्र सूरिनिः
॥ श्री शुनं ॥

[1538]

सं० १५११ वर्षे माघ वदि ५ उत्सवाख झाती जाइसवाख गोत्रे जोजा पुत्र धडिया
पु० मोहण पुत्र बेताकेन स्वतार्या श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ विंभं श्री धर्मघोष मणे ज० श्री
महीतिलक सूरिनिः ॥

बौधीशी पर ।

[1539]

सं० १५१० माघ शुदि ५ दिने पत्तन वासी श्रीमाली श्रे० ठाकरसी जा० धारी सुत
श्रे० गोधा साका ज्ञाणा जगिन्या श्रे० नरसिंग जार्या वैरामति नाम्न्या श्री वासुपूज्य
चतुर्विंशति पदः का० प्र० श्री सोमसुंदर सूरि पदे श्री रत्नशेखर सूरिनिः ॥ श्री श्री
तपगच्छे ॥

[1540]

सं० । १६१६ वर्षे शाके १४७२ प्रवर्त्तमाने वैशाख सुदि १० दिने रवौ अहमदाबाद
बास्तव्य उकेस वंशीय मा० आंठा० जा० अनरा तत्पुत्र सा० राकर जा० संपू तत्पुत्र सा०
मैलाख्येन जा० मेषादे पुत्र पुत्री परिवारयुतेन आस्मश्रेयोर्थं श्री अजितनाथ विंभं कारितं
तपागच्छे जट्टारक श्री आनंदविमल सूरि तत्पदे विजयदान सूरिनिः प्रतिष्ठितं ।

पाषाण के चरण पर ।

[1541]

सं० १९९४ । चूरा वंशे पद्लावत गोत्रे लाधु तन् पुत्र किसनचंद कारितं ।

(१२४)

श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर - बोहरनटोला ।

मूखनायकजी पर ।

[1542]

॥ सं० १९ ... श्री वर्द्धमान जिन बिंबं उंसवंशे बहुग गोत्रे लाखा कीर्त्तिचंद तन्नार्या
शुलीया बिंबि तयो पुत्र मोतीचंदेन कारितं बृहत् विजय गच्छे ज० श्री सार्वज्ञौम श्री
पूज्य श्री जिनचंद्रसागर सूरि पट्टप्रनाकर जं । यु । प्र । शान्तिनागर सूरिजिः ।

मूर्ति पर ।

[1543]

सं० १९ ... श्री पार्श्वजिन बिंबं उंसवंशे बड़ड़िया गोत्रे लाखा दयाचंद तत्पुत्र ठोट
मल्लेन तत्पुत्र सरुचंदेन सहितैः कारितं प्र० विजय गच्छे सूरिजिः ।

पंचतीर्थी पर ।

[1544]

सं० १५१० वर्षे माघ वदी ० रवौ सं० फाखा जा० लयी सा० हर्षा जा० वारू सा०
राजा जा० माजी सं० वसा जा० वाही सं० जोगा श्री शान्तिनाथ बिंबं तपा श्री हेमविमल
सूरि । चंकिनी ग्रामे ।

श्री पद्मप्रज्ञ स्वामीजी का मंदिर - चूडिवाली गली ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1545]

सं० । १३९९ ज० श्री जिनचंद्र सूरि शिष्यैः श्री जिनकुशल सूरिजिः श्री पार्श्वनाथ
बिंबं प्रतिष्ठितं कारितं च सा० केसव पुत्र रत्न सा० जेहडु सुभ्रावकेन पुण्यार्थं ।

(१३५)

[1546]

सं० १४९१ वर्षे माह शुदि ५ बुधदिने गादहिया गोत्रे सा० सिवराज सुत सा० सहजाकेन माता पदमाहीनिमित्तं श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं श्री उपकेस गढे प्र० श्री सिद्ध सूरिजिः ।

[1547]

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ शुक्र ११ अोसवाल ज्ञातीय अजमेरा गोत्रे सा० सुरजन जा० सहजखदे पु० सा० सहजाकेन आत्मपुण्यार्थं श्री आदिनाथ विं० का० प्रतिष्ठितं श्री धर्म-
धोष गढे ज० श्री विजयचंद्र सूरिजिः ।

[1548]

सं० १५०८ वर्षे वैशाख वदि ४ शनौ श्री संडेर गढे पद्मनेवी गोष्टीगानान्वये सा० कुरपात्र पु० धांधा जा० वारू पु० चुणाकेन जा० कोसा पुत्र स्वश्रेयसे श्री शितलनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिजिः ।

[1549]

सं० १५१० वर्षे वै० व० ५ प्रा० सा० ... जा० राजू पुत्र सा० सरमाकेन जा० चांपू पुत्रेन स्वश्रेयसे श्री सुविधि विंबं का० प्र० तथा श्री रत्नशेषर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1550]

॥ सं० १५११ वर्षे माघ सुदि ५ गुरौ श्री उकेस वंशे दोसी गोत्रे सं० डूडा पु० सा० नरचंद्र जा० सीतू तत्पुत्रेण सा० धाराकेन जार्या मणकाई पुत्र उदयसिंहयुतेन श्री आदिनाथ विंबं कारितं प्र० श्री खरतर गढे श्री जिनचंद्र सूरिजिः

[1551]

सं० १५१६ वैशाख वदि ११ शुके श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ मांडण मातृयुक्तं श्रेयोर्थं सुत सांगाकेन श्री संजवनाथ विंबं कारितं श्री ब्रह्माण गढे श्री मुनिचंद्र सूरि पढे प्रतिष्ठितं श्री वीर सूरिजिः गुंडसि वास्तव्यः ॥

(१३६)

[1552]

सं० १५१६ वर्षे वैशाख सु० ५ श्री ज्ञानकीय गङ्गे उप० किलासीया गोत्रे श्रे० रेलख
जा० मादहणदे पुत्र कर्मा जा० कर्मादे पु० घडसीसहितेन कर्मा पद्या द्वाच्यां आत्म-
पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सिद्धसेन सूरि पदे श्री धनेश्वर
सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1553]

॥ संवत् १६१७ वर्षे माघ वदि १ गुरौ मं० आना जार्या अत्रसादे पु० मं० नीवाकेन
जातु मं० कान्हाई सा० वस्था आजीवा जार्या जड्वंत तत् पुत्र मं० कर्मसी राजसी ने
तया कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथ विंभं का० प्र० श्री तपागङ्गे श्री दानविजय
सूरिजिः श्री हीरविजय सूरि प्रमुखैः परिवारपरिवृतैः ॥

[1554]

सं० १५१७ वर्षे आषाढ शुदि ३ शुके उसवास झा० सा० खेषा जा० लषमादे पु० सा०
राजलकेन जा० रत्नादे पु० सा० कोदहा जा० शादहणदे पु० सा० गांगा सकुटुंबयुतेन
स्वपुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ विंभं का० प्र० संडेरक गङ्गे श्री शांति सूरिजिः ॥

[1555]

सं० १५३६ वर्षे वै० ए चंडे ... जाईखेवा गोत्रे सा० पातस जा० वाचा पु० बीजा जा०
मदना नाथी पु० ठाजू स्वपितृ श्रे० श्री चंडप्रज विंभं कारितं प्र० श्री पलीवास गङ्गे श्री
नन्न सूरि पदे ज० उद्योतन सूरिजिः ।

[1556]

संवत् १५६४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ शुके काकरेचा गो० पूर्वं सा० गेटा पु० चुंडा पु०
बेता जा० जातु तत्पुत्र कान्हा जा० कस्मीरदे सकुटुंबेन श्रे० वि० श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ
विंभं का० प्र० श्री यशोज्ञ सूरि संताने ... ि सूरिजिः ॥ श्री ॥

(१२७)

[1557]

सं० १७७७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि पूर्णिमा तिथौ गुरुवारे मूलनाथक श्री पार्श्वनाथ जिन पंचतीर्थी जिनैः प्रतिष्ठितं श्री बृहत् परम जहारक श्री जिनसुख सूरि वराणां उपाध्याय श्री क्षेत्रराम गणित्तिः ॥ भीरस्तु ॥ कारितं चैतत् गणधर चौपडा गोत्रे शाह श्री साख चंदजी पुत्ररत्न श्री कपूरचंदजीकेन स्वपुन्यविवृष्यर्थ ॥ शुभं जवतु ॥ श्री आदि जिन विंभं ॥ श्री नेमिनाथ जिन विंभं ॥ श्री शांति जिन विंभं ॥ श्री महावीरस्वामी विंभं ॥

श्री पार्श्वनाथजी की प्रतिमा पर

[1558]

संवत् १७२५ शाके १५९१ वैशाख सुदि ५ आदित्यवारे ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर - चुडीवाली गल्ली ।

मूर्ति पर ।

[1559]

सं० १९२४ माघ शुदी ३ चंद्रप्रज विंभं कारितं । मासकोस गो० परमसुख करमचंद प्रति० । विजय गढे ज० । श्री शांतिसागर सूरिजिः ॥

पंचतीर्थियों पर ।

[1560]

॥ सं० १५२४ वर्षे मार्ग सु० दसमी जकेस चउथ गोत्रे शा । षेडा जा० । देउ सुत म । विमा । जा० धसी साषाकेन जा० अमरी पुत्र नाथू प्रमुखकुटुंबयुतेन निजपितृव्य श्रेयसे श्री आदिनाथ विंभं कारितं । प्र० । तपा श्री सद्दमीसागर सूरिजिः श्रीरस्तुः ॥

[1561]

सं० १५७७ वर्षे माघ शु० ५ बुधे प्राम० । ज्ञा० । श्रे० कइषा जा० वानू सु० मूठा रासा रागा सवरद जा० जीविणी विरु मानू सु० घावर तेजा सहिजादि कुटुंबयुतेन पितृमातृ

(१२०)

श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंबं का० प्र० । श्री णर्षचंद्र सूरिजिः ॥

वीसस्थानक यंत्र पर ।

[1562]

सं० १०६१ वर्षे आश्विन शु० १५ । गुरौ श्री सिद्धचक्रराज यंत्र प्रतिष्ठापितं श्री श्रीमाल पटणाय बहादुरसिंहजी तत्पुत्र लाला बखतावरसिंहजी श्रेयोर्थं तपागृहीय जं । यु । प्र । ज । श्री १०८ श्री श्री विजयजिनेंद्र सूरिजिः विजयराज्ये वाणारस्यां ।

श्री महावीर स्वामीजी का मंदिर - सुंधि टोला ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1563]

सं० १४३९ वर्षे पौष वदि ए ... ।

[1564]

॥ सं० १४८२ वर्षे चैत्र वदि ५ शुक्रौ श्रीमाली ज्ञातीय फोफलिया नरसिंघ जा० नामखदे सुत बाळा पितामह पितृश्रेयसे माता बईजखदे युतेन सुतेन योगकेन श्री नमिनाथ मुखय पंचतीर्थी का० पूर्णिमा पक्षे जीमपद्धी श्री पासचंद्र सूरि पक्षे श्री जयचंद्र सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ श्रीः ॥

[1565]

॥ सं० १५०१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ए रवौ श्री श्रीमालज्ञातीय श्रे० सरवण जा० वारू पु० श्रे० गोवल जा० हूसी पु० सहसाकेन स्वपितृमातृश्रेयसे श्री कुंभुनाथ विंबं कारितं पूर्णिमापक्षे श्री गुणसमुद्र सूरिणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना ॥ ८ ॥ महिसाणा स्थाने ॥ श्री ॥

(१२७)

[1566]

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० वैशाखे श्री श्रीमाला सं० सामल जा० लाखणदे सुत
देवा जा० मेघू नाम्न्या ददडा कुटुंबनहिनया अवन गह श्री जयकेशर सूरीणामुप-
देशेन स्वश्रेयार्थं श्री विमलनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं आसंधेन ॥

[1567]

सं० १५१७ वर्षे वैशाख वदि ११ शुके श्री श्रीमाला ज्ञातीय सा० जांटा जा० जासू
सुत सा० सामंत जार्या कार्सु अदाकेन ज्ञातृ वहा पाशवीर प्रभृति कुटुंबयुतेन मातृपितृ
श्रेयसे श्री आदिनाथ विंभं पूर्णिमा । श्री पुण्यरत्न सूरीणामुपदेशेन का० प्र० विधिना ।

[1568]

सं० १५२३ वर्षे मघ सुदि ६ रवौ उपकेश ज्ञातीय सा० जेमा जार्या पोईणी सुत
राजाकेन जार्या राजलदे ज्ञातृ मौर्यद जा० मारू प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयार्थं श्री श्री श्री
सुमति विंभं का० प्र० कनकरत्न सूरिजिः ।

[1569]

सं० १५२४ वै० सु० १० प्राग्वाट सा० धन्ना जा० गंनू सुत सं० वेमा जा० जीविणी
सुत सं० समधर संग्रामान्यां स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ विंभं कारितं । तपागष्टे श्री लक्ष्मी-
सागर सूरिजिः । जीर्णधारा वासनः ॥ श्रीरस्तु ॥

[1570]

सं० १५२५ वर्षे माघ वदि ६ प्राग्वाट व्य० देवसी जार्या देवहणदे पुत्र विंजाकेन
जा० वींजलदे पुत्र सांडादिकुटुंबयुतेन श्री सम्जवनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री
रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । श्री जेवग्रामे ॥

[1571]

सं० १५२७ वर्षे वैशाख वदि ६ सोमदिने । उपकेश ज्ञानौ बलही गोत्रे रांका सा०
गोयंद पु० साखिग जा० वाखहदे पु० दोदहू नाम्ना जा० खलतादे पुत्रादियुतेन पित्रोः

(१३०)

पुण्यार्थं स्वश्रेयसे च श्री नमिनाथ विंशं का० प्र० उपकेश गडीय श्री ककुदा० सं०
श्री देवगुप्त सूरिजिः ।

[1572]

सं० १५१७ वर्षे वैशाख सुदि ३ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० नरसिंग जा० संजू सुत वरुआ-
केन चार्या रही प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं
तपागणनायक श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । मूंडहटा वास्तव्यः ॥

[1573]

सं० १५५४ वर्षे पोष सुदि १५ सोमे उपकेश ज्ञातीय सं० मेहा जा० सरूपदे पु०
सं० रिणमखेन जा० रत्नादे पु० लाषा दासा जिणदास पंचायणकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे
श्री सुमतिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री अंचल गढे श्री सिद्धांतसागर सूरिजिः ॥

[1574]

सं० १५७१ वर्षे फागुण शुदि ३ शुक्रे उत्सवाख ज्ञातीय आदित्यनाग गोत्रे साह सहदे
पुत्र साह नयणाकेन कलत्रपुत्रादिपरिवारयुतेन पुण्यार्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामि विंशं
कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गढे ककुदाचार्य संताने जहारक श्री श्री सिंह सूरिजिः ॥
अस्मावल्लपुरे ॥ धीरस्तु ॥

[1575]

सं० १७०१ वर्षे मार्ग शिर कृष्णैकादश्यां रूढा वाई नाम्ना कारितं श्री नमिनाथ विंशं
प्रतिष्ठितं तपागणे श्री विजयवेश सूरि पट्टे प्रजाकर आचार्य श्री विजयसिंह सूरिजिः ।

[1576]

सं० ... ७१ वर्षे चैत्र वदि ३ बुधे उत्सवाख ज्ञातीय चोरवेडिया गोत्रे सं० सांहील तत्पुत्र
सधवा सिंघराज तस्य पुण्यार्थं सं० सिद्धपाखेन श्री शान्तिनाथ विंशं कारापितं श्री उपवाख
गढे श्री सिद्ध सूरि प्रतिष्ठितं । पूजक श्रेयसे ॥ श्रीः ॥

(१३१)

चौबीशी पर ।

[1577]

संवत् १५७१ वर्षे चैत्र वदि ७ गुरौ श्री वायङ्ग ज्ञातीय मं० मरसिंघ जा० चमकू सुत
समधर द्वितीया जा० हीरू नाम्न्या देकावडा वास्तव्यः सुत मं० धनराज नगराज संधादि
स्वकुटुंबयुतया स्वश्रेयसे श्री अजिनंदन स्वाम्यादि चतुर्विंशति पट्ट श्री आगम गष्टे श्री
अमररत्न सूरि तत्पट्टे सोमरत्न सूरि गुरुपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना ॥

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर - सुंधिटीला ।

मूलनायकजी के चरणचौकी पर ।

[1578] *

- (१) ॥ श्री विक्रम समयात् सं० १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ ॥ श्रीमत्कीराडिध
लोलक-
- (२) ह्योन्नडिंडीरपिंडप्रसरसरसशारदशशांककिरणसुयुक्तिमौक्तिकद्वारनिकरधवल्य-
- (३) शोजिः पूरितदिङ्मंडलसकलधर्मकर्मनीतिप्रवृत्तिकरणप्राप्ताशेषजुवनप्र-
- (४) सिद्धिनानाशास्त्रोत्पन्नप्रवलबुद्धिप्राग्जारजावितांतःकरणाश्वपतिगजपतिवत्रपति-
- (५) प्रणतपादारविंदद्वंदप्रथिततनुन्नवजव्यनुजादंडचंडप्रचंडकोदंडखंडितानेकका-
- (६) विन्यतमकुशितारिप्रकरतरवशीकृताखिलखंरुचूपासमौलिसंधृतनिर्देशाधिशेषधर्म-
- (७) शर्माधिकावाप्तसत्कीर्तिनिःशेषसार्वाजौमशाहूलसमस्तमनुजाधिपत्यपदवीपौ-

* दिल्ली सम्राट जहांगीर के समय ये मूर्तियां की प्रतिष्ठा हुई थी, उस समय पातिसाह को कई लोगोंने कह दिया कि
सेवइने (जैने लोगोंने) मूर्तियां बनवाई हैं और हजूरके नामको अपने बुतोंके (मूर्तियों के) पैरों के निचे लिख दिया है । फिर
क्या था । पातिसाहके क्रोधका पार न रहा । श्री संघने पातिसाह का क्रोध शांति तथा राज्यके तर्फसे सर्व प्रकार अनिष्ट दूर करनेको
ये मूर्तियों (नं० १५७८ - १५८४) के मस्तक पर पातिसाह का नाम खुदवा दिया था ऐसा प्रवाद है ।

- (७) लोमीपरिरंजमुनाशोरविजयराज्ये । उसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे आंगाणी संघत्री
 (८) रेषा तद्धार्या आ० रेषत्री तत्पुत्र श्री कुंरपालसोनपालाख्याः । तेषां प्रायुक्तमासीयुत
 (१०) प्रतिष्ठाया ॥ स्तन्नाम्ना प्रतिमा छत्र प्रतिष्ठा गतः संघेशैः स्वपितृणाम् धर्म चिंतामणि
 (११) पार्श्वनाथ विंशं प्रतिष्ठापितं । अचलगच्छश श्री धर्ममूर्ति सूरि पट्टाक्षंकार पूज्य
 (१२) श्री ५ कट्याणसागर सूरीणामुपदेशेन ॥

(मस्तकपर) पातिसाह सवाई श्री जहांगीर सुरत्राण

[1579]

- (१) संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ उसवाल ज्ञाती-
 (२) य लोढा गोत्रे आंगाणी सं० कृष्णदास तद्धार्या आ०
 (३) रेषत्री तत्पुत्रप्रवरैः श्री कुंरपाल सोनपाल सं-
 (४) घाधिपैः सुत सं० संघराज रूपचंद चतुर्जुज धन-
 (५) पालादिगुतैः श्री अचल गच्छ पूज्य श्री ५ श्री धर्ममूर्ति
 (६) सूरि पट्टे श्री कट्याणसागर सूरीणामुपदेशेन
 (७) विद्यमान श्री अजितनाथ विंशं प्रतिष्ठापितं ॥ श्रीरस्तु ॥
 (मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजय राज्ये ।

[1580]

- (१) ॥ स्वस्ति श्रीमन्नृशिविक्रमादित्य मंत्रत्सर समयानीत संवत् १६७१ वर्षे
 (२) शाके १५३३ प्रवृत्तमाने वैशाख सुदि ३ शनौ श्रीमदागरा दुर्ग वास्त्वयोपकेश
 (३) ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावंशे साह जठमल तत्पुत्र सा० राजपाल तद्धार्या आ० रा
 (४) जश्री तत्पुत्र श्री विमलाद्यादि संघकारक सं० कृष्णदास तद्धार्योजयकुमा-
 (५) रानंददायिनी रेषत्री तत्पुत्राच्यां श्री शत्रुंजय समेतगिरि संघ महम्मदस्त्रिवा-
 (६) ह प्रसन्नकीर्तिच्यां श्री कुंरपाल सोनपाल संघाधिपाच्यां ॥ सुत सं० संघराज
 रूपचंद पौत्र

(१३३)

- (७) सं० जूधरदास सूरदास सिवदास पदमश्री । प्रपौत्र साधारणादि परिवार्यु-
(८) ताज्यां श्री अंचल गङ्गे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्ति सूरि पट्टांजोजजास्वराणां पूज्य श्री ५
(९) श्री कल्याणसागर सूरिणामुपदेशेन श्री संजवनाथ बिंबं प्रतिष्ठापितं जव्यैः
पूज्यमानं चिरं नंद्यादिति श्रेयस्तुः ॥
(मस्तक पर) पातिसाह श्री ५ श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1581]

- (१) ॥ स्वस्ति श्रीमन्नृप विक्रमादित्य समयात् संवत् १६७१ वर्षे शा-
(२) के १५३६ प्रवर्तमाने श्री आगरादुर्ग वास्तव्य उपकेश झा-
(३) तीय लोढा गोत्रे ... सा० राजपाल तज्जार्यां श्री० राजश्री त-
(४) त्पुत्र संघपतिपदोपार्जनहाम सं० ऋषजदास तज्जा-
(५) र्यां श्री० रेषश्री तत्पुत्राज्यां श्री कुंरपाल सोनपाल संघाधिगज्यां श्री अंचल-
(६) गङ्गे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्ति सूरि पट्टे श्री ५ कल्याणसागर सूरिणामुपदे-
(७) शेन श्री अजिनंदन स्वामि बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ पूज्यमानं चिरं नंद्यात्
(मस्तकपर) पातिसाह अकबर जलालुद्दीन सुरत्राणात्मज पातिसाह श्री जहांगीर
विजयराज्ये

[1582]

- (१) ॥ संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ उसवाल झा-
(२) तीय लोढा गोत्रे आंगाणी वंशे सं० ऋषजदास त-
(३) ज्जार्यां श्री० रेषश्री तत्पुत्राज्यां सं० श्री कुंरपाल सं० सोन-
(४) पाल संघाधिपैः तत्पुत्र सं० संघराज सं० रूपचंद चतुरचुज
(५) धनपालादिसहितैः श्रीमदंचलगङ्गे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्ति सूरि तत्प
(६) ट्टे श्री कल्याणसागर सूरिरूपवेशेन विद्यमान श्री ऋषजानन जिन
(७) बिंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्री रस्तु ॥
(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

(१३४)

[1583]

- (१) ॥ संवत् १६७१ वर्षे वैशाख शुदि ३ शनी रोहिणी नक्षत्रे श्री आ-
- (२) गरा वास्तव्योपकेश ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावंशे सं० कृष्णदास
- (३) जार्या रेशश्री तत्पुत्र संघाधिप सं० श्री कुंरपाल सं० श्री सोनपा-
- (४) ल तत्सुत सं० संघराज सं० रूपचंद चतुर्चुज धनपालादियुतैः
- (५) श्रीमदंचल गह्वे पूज्य श्री ५ श्री धर्ममूर्ति सूरि तत्पट्टे पूज्य
- (६) श्री ५ कट्याणसागर सूरिणामुपदेशेन विहरमान श्री ईश्वर
- (७) जिन विंबं प्रतिष्ठापितं सं० श्रीकान्ह ... ।

(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1584]

- (१) ॥ श्रीमत्संवत् १६७१ वैशाख शुदि ३ शनी रोहिणी नक्षत्रे आगरा वा-
- (२) स्तव्योसवाल ज्ञाती लोढा गोत्र गावंशे सा० राजपाल जार्या राजश्री
- (३) तत्पुत्र सं० कृष्णदास जा० रेशश्री तत्सुत संघाधिप सं० कुंरपाल सं०
- (४) श्री सोनपाल तत्सुत सं० संघराज सं० रूपचंद सं० चतुर्चुज सं० धन-
- (५) पाल पौत्र जुधरदास युतैः श्री अंचल गह्वे पूज्य श्री
- (६) ५ श्री धर्म सूरि पट्टाखंकार श्री कट्याणसागर सूरिणामुपदेशेन
- (७) श्री पद्मानन जिन विंबं प्रतिष्ठापितं ॥ श्री ॥

(मस्तकपर) पातिसाह श्री जहांगीर विजयराज्ये

[1585]

- (१) ॥ ई० ॥ स्वस्ति श्री संवत् १६६० वर्षे ॥ ज्येष्ठ शुदि १५ तिथौ गुरुवासरे
- (२) अनुराधा नक्षत्रे उसवाल ज्ञातीय अगड़कठोत्री गोत्रे सा० कूना
- (३) ॥ संताने सा० कान्हड़ । जा० जामनी ... पुत्र सा० पहीराज ...
- (४) जा० इंद्राणी । जा० सोनी पुत्र सा० निहालचंद । तेन श्री चंद्रानन शास्त्रत जि
- (५) न विंबं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री खरतरगह्वे श्री जिनवर्द्धन सूरि संताने

(१३५)

(६) श्री जिनसिंह सूरि पदे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥ श्री आगरा नगरे ॥ शुभं जवतु ॥

[1586]

सं० १००० मा० शु० ५ श्री वर्द्धमान जिन बिंबं कारितं उंसवंशे चोरडिया गोत्रे हरी-
मल्ल जार्या ननी तथा । प्र । वृ । ज । खरतर ग । श्री जिनाक्षय सूरि पङ्कजप्रबोध स्वपितृ-
सम श्री जिनचंद्र सूरिजिः कारितं पूजकयोः श्रेयोर्थं । लखनउ नगरे ।

पंचतीर्थियों पर

[1587]

सं० १५१५ वर्षे माह व० ६ बुधे श्री उएस वंशे सा० जिणदास जा० मूड्ही पु० सा०
खाषा जा० खाषणदे पु० सा० काहा जा० लषमादे पुत्र सा० बाबा सुश्रावकेण पुहती पुत्र
नरपाल पितृव्य सा० पूंजा सा० सामंत सा० नासण प्रमुख समस्तकुटुंबसहितेन श्री अंचल
गड गुरु श्री जयकेशरी सूरीणां उपदेशेन मातुः श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं
श्री संघेन ॥

[1588]

सं० १५१७ व० माघ शिति १ श्योस षावली गोत्रे सा० ईसर जा० गोपालदे पु० धीरा
जा० दमहलदे पु० जावड़ासा निज त्रातृ श्रेयोर्थे श्री नेमिनाथ बिंबं का० तपापदे श्री
जयशेषर सूरि पदे प्र० कमलवज्र सूरिजिः ॥ शुभं ॥

[1589]

॥ सं० १५३५ वर्षे माघ व० ए शनौ झा० व्य० समा जा० गुरा सुत धना जा० रूपाई
नाम्ना पितृ व्य० जाणा त्रातृ धर्मा कर्मादिकुटुंबयुतया स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं का०
प्र० तपागछेश श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । कुतवपुर वास्तव्य ॥ श्रीः ॥

चौबीशी पर

[1590]

सं० १५१० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ए रवौ आजुसि वास्तव्य श्री श्रीमाळी मं० सिंधा जार्या

(१३६)

बीरू सुत अर्जुन सहिदे वरदे पुत्री आजु नाम्न्या स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति पट्ट
कारितः प्रतिष्ठितो वृद्ध तपापक्षे जट्टा० श्री ज्ञानसागर सूरिजिः ॥

[1501]

। संवत् १५५२ वर्षे फाल्गुन शुदि तृतीया ३ तिथौ बुधे ॥ श्री पटोखिया गोत्रे । सा०
पोख । तत्पुत्र बेता । तत्पुत्र रूवा । तत्पुत्र गर्ईपात्र । तत्पुत्र मोहण । तत्पुत्र एडा पुत्रौ छौ ।
चांपा पाहा । चांपा स्वनिजपुण्यार्थ । स्वयशसे च । श्री चतुर्विंशति पट्ट कारितवान्
प्रतिष्ठितः श्री राजगङ्गीय श्री पुण्यवर्द्धन सूरिजिः ॥ श्रेयसे ॥

श्री संजवनाथजी का मंदिर - फूलवासी गली ।

श्याम पाषाण के मूर्तियों पर ।

[1502]

सं० १७७७ माघ सुदि ५ सोमे श्री गौड़ी पार्श्वनाथ बिंबं का० । उस वंशे सखसेचा
गोत्रे महताव ।

[1503]

सं० १७७७ माघ सुदि ५ सोमे श्री चंद्रानन शास्वतजिन बिंबं कारितं उस वंशे
कुचेरा गोत्रे वसंतसाखस्य जार्या ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[1504]

श्री मूलसंधे वधेरवाखान्वये वांजा मेला प्रणमति ।

[1505]

सं १७७७ माघ सु० १३ बु । उ । वंशे डागा गोत्रे सेढमख तज्जार्या गिलहरी ताज्यां
श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं का० । वृ० ज । खर । ग । श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।

(१३७)

[1596]

सं० १९२१ शाके १७७६ । मा । शु । पक्षे ६ । बुधे श्री महावीरजी जिन वि० प्र० श्री शांतिसागर सूरिजिः का० सुचिंती गोत्रे रूपचंद तत्पुत्र धर्मचंद्र श्रेयार्थ ।

[1597]

सं० १९२१ शाके १७७६ । मा । शु० ६ बुधे श्री महावीर जिन विं० प्र० श्री शांति-सागर सूरिजिः का० सुचिंती गोत्रे बाबू रूचंद तद्भार्या मनि विवि श्रेयार्थ ।

[1598]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री अजित जिन विं० उंस वंशे सुचिंती गोत्रे लाला रूपचंद पुत्र धर्मचंद तद्भार्या गुलाबो विवि श्रेयार्थ ज० श्रीशांतिसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[1599]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री महावीर जिन विं० उंस वंशे सूरणा गोत्रे लाला खैरतीमल पुत्र रूपचंद तद्भार्या ठाटीविवि का० प्र० श्रीशांतिसागर सूरिजिः विजयगच्छे ।

[1600]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जिन विं० उंस वंशे चोरडिया गोत्रे ला । रजूमल तत्पुत्र इंद्रचंद्रण का० प्र० श्री शांतिसागर सूरिजिः विजय गच्छे ।

[1601]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जिन विं० उंस वंशे सुचिंती गोत्रे लाला रूपचंद पुत्र धर्मचंदेण का० प्र० श्री शांतिसागर सूरिजिः विजय गच्छे ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1602]

सं० १३१३ फा० शु० ६ प्राग्वाट ज्ञानीय श्रे० वोचा जार्या सद्गज मननथी (?) पूर्वज

(१३०)

श्रेयोर्य सुत सांगणेन श्री शांतिनाथ विंबं कारापितं ।

[1603]

॥ संवत् १५४४ वर्षे आषाढ़ वदि ७ गुरौ उपकेश ज्ञातो हुंडोयूरा गोत्रे सं० गांगा पु० पदमसी पु० पासा जा० मोहणदेव्या पु० पाट्टहा श्रीवतसहितया स्वपुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंबं का० प्र० उपकेश गढे श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[1604]

संवत् १५५२ वर्षे ज्येष्ठ शु० १३ दिने ऊ० झा० बलदउठ ग्रामवासि व्य० वेला जा० सारू पु० व्य० येसाकेन जा० कीट्टु सहितेन स्वश्रेयोर्य श्री शांतिनाथ विंबं का० प्रतिष्ठितं तपागढे श्री हेमविमल सूरिजिः ॥ श्रीस्तु ।

[1605]

संवत् १५५७ वर्षे कार्तिक वदि ५ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० मोकल जा० वरजू पु० पांचा जा० जासू पु० वहासहितेन स्वपूर्वजश्रेयोर्य शीतलनाथ विंबं का० नारेंद्र गढे जा० श्री कमलचंद्र सूरि पटे श्री हेमरत्न सूरि प्रतिष्ठितः ॥

[1606]

... श्री नागपुरीय गढे श्री हेमसमुद्र सूरि पट्टावतंसैः श्री हेमरत्न सूरिजिः ॥ शुभं ॥

लाला माणिकचंदजी और राय साहब का देरासर ।

मूर्तियों पर ।

[1607]

सं० १९२० मि० फा० कृण २ बुध सा । प्र । जा० सहताव कुंवर श्री अधिष्टायक जिन विंबं का० श्री अमृतचंद्र सूरिजिः ।

[1608]

सं० १९२४ माघ शुक्र १३ गुरौ श्री कृष्णदेव जिन विंबं कारितं ओस वंशे चोरडिया

(१३९)

गोत्रे लाला प्रतापचंद्र तत्पुत्र शिखरचंद्रेण । प्रतिष्ठितं । ज० श्री शांतिसागर सूरिजिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1609]

सं० १५२७ आषाढ सुदि १० बुधे श्री वीर वंशे ॥ सं० पोपा जा० करणं पुत्र सं० नरसिंघ सुश्रावकेण जा० लघू त्रातृ जयसिंघ राजा पुत्र सं० वरदे कान्हा पौत्र सं० पदमसो सहितेन निज श्रेयोर्थ श्री अंचलगहेश श्री जयकेशर सूरीणां उपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ विंभं कारितं प्र० संघेन पत्तन नगरे ।

[1610]

॥ संवत् १५६३ वर्षे आषाढ सुदि ७ गुरौ पत्तन वास्तव्य । मोढ ज्ञातीय श्रे० जीवा जा० हारू पुत्र श्रे० अमराकेन जा० पुहुति सुत हांसादिकुटुंबयुतेन श्री वासुपूज्य विंभं कःरितं । प्रतिष्ठितं श्री तशागडनायक । श्री निगमार्विजाविका । परमगुरु । श्री श्री श्री इंद्रनंदि सूरिजिः ॥

लाला खेमचंदजी का देरासर ।

[1611]

सं० १९०४ माघ शुक्र ए बुधे श्यो । वज्रजातीय गोत्रे ला० रोसनलाल तत्पुत्र सोत्राचंद्रेण जा० नति विवि तथा श्री पार्श्वनाथ विंभं कारितं पांचाल देशे कपिलपुर प्र० च श्रीमद् जट्टारक ... सूरिजिः ।

लाला हीरालालजी चुन्नीलालजी का देरासर ।

मूलनायकजी पर ।

[1612]

संवत् १७२५ वर्षे चैत वदि १ सुत दत्तसुख जगमज । श्री कृपतदेवजी ...

(१४०)

मूर्ति और पंचतीर्थियों पर ।

[1613]

सं० १९०५ व० वै० व० २ जयकेश झा० सा० कान्हूजी सुत वीरचंद नाम्ना श्री
विमलनाथ कारि० प्रति० तपा० श्री विजयदेव सूरिनिः । जय ।

[1614]

सं० १९१० व० जै० सु० ६ मि० प्राग्वाट लघुशाखायां श्री व्य० सं० मनजीकेन
सुगर्भ विं० कारितं । प्रतिष्ठितं तपा विजयराज सूरिनिः ।

[1615]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री सुविधिनाथ जिन विं० श्रीमाल ज्ञांडिया कन्है-
यालाल तद्गार्या जूनु श्रेयर्थे ज० श्री शांतिसागर सूरिनिः प्रति० विजय गढे ।

[1616]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री अनंतनाथ जिन विं० श्रीमाल टांक गोत्रे हुप-
मतरायजी तत्पुत्र हजारीमलेन कारितं प्र० श्री विजय गढे ज० श्री शांतिसागर सूरिनिः ।

[1617]

सं० १९२४ माघ शुक्ल १३ गुरौ श्री आदिनाथ विं० ... निहालचंदेण कारितं प्रतिष्ठितं
विजय गढे श्री शांतिसागर सूरिनिः श्रेयर्थं ।

[1618]

सं० १९२४ माघ शुदि १३ गुरौ श्री पार्श्वनाथ विं० श्रीमाल पारड़ गोत्रे पड़चंद [?]
तत्पुत्र श्री कपूरचंद्रेण कारितं । प्र० ज० श्री पूज्य शांतिसागर सूरिनिः । विजय गढे

[1619]

सं० १५२० चैत्र व० १० गुरौ श्री ओएस व० मिठडीया सो० जावड़ ज० जसपादे

(१४१)

पु० सो० गुणराज सुभ्रावकेण जा० मेघाई पु० पूनां महिपाल त्रातृ हरषा श्री राजसिंह
राज सोनपालसहितेन श्री अंचल गछे श्री जयकेशरि सूरि उ० पत्निपुण्यार्थं श्री कुंथु-
नाथ त्रिंबं कारितं । प्र० श्रीसंघेन चिरं नंदतु ।

[1620]

॥ उं सं० १५७० वर्षे आ० सुदि ५ बुधे सूरणा गोत्रे सं० शिवराज पु० सं० हेमराज
चार्या हेमसिरि पुत्र संघवी नाट्टहा जा० नारिगदे संघवी सिंहमल्ल आर्या संघवीणि चापथ्री
पुत्र पृथ्वीमल्ल प्रमुखपुत्रपौत्रसहितैः श्री वासुपूज्य त्रिंबं कारितं । पितृमातृपुन्यार्थं ।
आत्मश्रेयसे श्री धर्मघोष गछे श्री पद्मानंद सूरि पट्टे श्री नंदिवर्द्धन सूरि प्रतिष्ठितं ।

चौबीसी और पाषाण के चरणों पर ।

[1621]

॥ उं संवत् १५३० वर्षे जंठ सुदि २ मंगलवारे उपकेश झातीय सोनी गोत्री स०
तिणाय्या पुत्र सा० संसारचंद्र पुण्यार्थं श्री चतुर्विंशति कारापितं । प्र । रुद्रपट्टीय गछे
जट्टारक श्री जिनदत्त सूरि पट्टे ज० श्री देवसुंदर सूरिजिः ॥

[1622]

॥ सं० १९१४ व० ज्ये । छि । ति । चं । श्री जिनकुशल सूरि पादौ ज । श्री जिन-
महेंद्र सूरिजिः का । श्री गो । कन्हैयालालेन मुद्रार्थं ।

[1623]

सं० १९२४ मा० शु० १३ गुरौ श्री गौनमस्वामी पाडुका कारिता आ० वं० नाहर गोत्रे
लाला चंगामल पुत्र जवाहिरलालेन प्रतिष्ठितं । श्री विजय गछे श्री जिनचंद्रसागर सूरि
पट्टोदयाद्रिदिनमणि पूज्य श्री शांतिसागर सूरिजिः ॥

श्रीमंदिर स्वामीजी का मंदिर - सहादतगंज ।

[1624]

॥ संवत् १५१० वर्षे माघ सूदि ७ शुके श्री मोढ झा० सं० गोरा जा० राज सुत जोडा

(१४१)

महिराज ज्ञातृ नागानिमित्तं श्री शान्तिनाथ विंबं का० प्र० श्री विद्याधर गण्डे ज० श्री हेमप्रज्ञ सूरिजिः ॥ मांडसि वास्तव्यः ॥ १ ॥

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर - सहादतगंज ।

पंचतीर्थी पर ।

[1625]

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे झूगड़ गोत्रे सा० वीढहा जा० पूना पु० ४ सा० मेहा जा० रेडाही सा० कामी जा० झूला सा० पूला जा० मूलाही सा० उदा० जा० षीमाही सा० सधारण श्री सुविधिनाथ विंबं कारितं रडुल गण्डे श्री सूरि प्रतिष्ठितं ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर - सहादतगंज ।

मूलनायकजी पर ।

[1626]

॥ संवत् ११७७..... ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1627]

संवत् १५६७ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने श्री श्रीमालझातीय श्रेष्ठि राउल जार्या लाठी सुत जोगा जार्या रूपी जसमादे सुत करमण काढहा करमण जार्या रत्नादेसहितेन श्री शान्तिनाथ विंबं कारापितं श्री गण्डे शान्ति सूरि पडेश सर्वदेव सूरिजिः । कंधरावी वास्तव्यः ॥

[1628]

संवत् १६७० वर्षे वैशाख शित पंचम्यां तिथौ सोमे मेड़तानगर वास्तव्य समदडीया गोत्रीय । उकेश झातीय वृद्धशाषीय सा० माना जा० मनरमदे सुत रामसिंह नाम्ना ज्ञातृ रामसिंह प्रमखकुंदबयुनेन श्री शान्तिनाथ विंबं कारितं प्र० तया गण्डे श्री अकबर सुरत्राण-

(१४३)

दत्तबहुमान ज० श्री हीरविजय सूरि पट्टाखंकार श्री अकबगढत्रते (?) परिषत्प्रासवाद-
जयकार ज० श्री विजयसेन सूरिजिः ॥

श्री रुषजदेवजी का मंदिर - सहादतगंज ।

मूर्तियों पर ।

[1629]

सं० १००० मा । सु । ५ । श्री आदि जिन बिंबं कारितं उस वंशे, पह्लावत गो ।
सदानंद पुत्र गुलाबराय जार्या जूनाख्या का० प्र । वृ । ज । खरतर । ग । श्री जिनाक्षय
सूरि तत् पंडूजभृंगैः श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।

[1630]

सं० १९१९ फागुण शीत २ बुधे श्री श्री आदि जिन परिकरं कारितं पांचालदेशे कांपि-
क्षपुर प्रतिष्ठितं । श्रीमद्भट्टाक बृहत् खरतर गह्राधिराज श्री जिनअक्षय सूरि पट्टस्थित
श्री जिनचंद्र सूरि पदकजलयज्ञोन विनेय श्री जिननंदिवर्द्धन सूरिजिः उस वंशे पह्लावत
गोत्रे लालाजी श्री सहानंदजी तत्पुत्र लाला श्री सदानंदजी तत्पुत्र लाला गुलाबरायजी
सद्गार्या जूनु धिवि तेन कारितं महता प्रमोदेन ।

पंचतीर्थी पर ।

[1631]

सं० १५१० वर्षे माघ वदि २ बुधे जदेउरा झा० सा० कमलसी जा० तेजू सुत सा०
खेताकेन जा० वीरणिश्रेयोर्थ पुत्र गोविंदादियुतेन श्री संनवनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं
श्री संडेर गह्रे श्री शांति सूरिजिः ॥

श्री शांतिनाथजी का मंदिर - सहादतगंज ।

चौकी पर ।

[1632]

॥ संवत् १९२३ का मिति जेष्ठ सूदि १० म्यां श्रीमाल वंशे ठाटेसाजन कृसपाला गोत्रे

(१४४)

स्वाला विसनचंद जी तत्पुत्र काशीनाथजी तत्पुत्र देवीप्रसाद तद् त्रातृवधुः ननकु ॥
श्रेयार्थ ॥ १ ॥

पंचतीर्थियों पर

[1633]

संवत् १५२३ वर्षे माह सुदि ६ नासणुखी वासि मं० जलाकेन त्रार्या त्रावलदे सुत
मांडण जा० जेअरि प्रमुखकुटुंबयुतेन त्रातृ बलराज श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारितं
प्रतिष्ठितं तपागणेश श्री श्री लक्ष्मीसागर सूरिनिः ॥ श्रीः ॥

[1634]

सं० १५५० वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरौ श्री उंसवाल झातौ कठउतिया गोत्रे । सं०
पदमसी जा० पदमन्नदे पु० पासा जा० मोहणदे । पु० पाट्टहा श्रोवंत तत्र सा० पाट्टहाकेन
खत्रार्या इंद्रादेपुण्यार्थ श्री श्रेयांस विंवं कारितं । प्रतिष्ठितं । ककुदाचार्य संताने उपकेश
गणेश जहारक श्री देवगुप्त सूरिनिः ॥

[1635]

सं० १६०२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ गुरौ श्री अहमदावाद वास्तव्य उंसवाल झातीय वृद्ध-
शाषायां श्री शांतिदास जा० वाई रूपाई सुत सा० पनजी कारितं श्री शांतिनाथ विंवं
प्रतिष्ठितं श्री तपा गणेश ज० श्री विजयदेव सूरि वरैकि (?) महोपाध्याय श्री श्री श्री
मुनिसागर गणिनिः श्रेयोस्तु ॥

चौवासी पर ।

[1636]

सं० १६१९ वर्षे वैशाख वदि ५ श्रु० श्री मूलसंधे सरस्वती गणेश वलात्कारगणे श्री
कुंदकुंदाचार्यान्वये ज० श्री सकलकीर्ति देवास्त० ज० श्री जुवनकीर्ति देवास्त० ज० श्री
ज्ञानभूषण देवास्त० ज० श्री विजयकीर्ति देवास्त० ज० श्री शुभचंद्र देवास्तत्पट्टे

(१४५)

जटारक श्री सुमतिकीर्ति गुरुपदेशात् हुंबड़ हातीय वजीयाणा गोत्रे सा० धारा जा० राणी
सु० हादा जा० हरपमदे सुत० सा० जगा जा० जगमादे त्रा० जयवंत जा० जीवादे त्रा०
जला जा० काऊया सुत बचूआ पुतैः श्री मुनिमुवत तीर्थकरदेव नित्यं प्रणमंति ॥

श्री दादाजी का मंदिर - जौहरीवाग ।

श्वेत पाषाण के चरणों पर ।

[1637]

संवत् १९१३ शालिवाहन शाके १७७७ प्रवर्तमाने तिस्रौ माघ शुक्ल पंचम्यां ॥ ५ ॥
शुक्रवासरे जं। यु। प्र। जटारक श्री जिनकुशन्न सूरि पाण्डुकां लक्षणपुर वासनव्य श्रीसंघेन
कारितं वृद्धत् जटारक खरतर गच्छीय श्री जिननंदिवर्द्धन सूरि पट्टाहंकृत श्री जिनजय-
शेखर सूरिनिः॥ श्रेयोस्तु ॥ श्री ॥



अयोध्या ।

यह बहुत प्राचीन नगरी है । प्रथम तीर्थकर श्री रूपजदेवजी का च्यवन, जन्म,
और दीक्षा ये तीन कल्याणक यहां हुए । दूसरे तीर्थकर श्री अजितनाथजी का च्यवन,
जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक और चतुर्थ तीर्थकर श्री अजितनन्दनजी
का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक और पांचवें तीर्थकर श्री सुमति-
नाथजी का च्यवन जन्म दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक तथा चौदहवें तीर्थकर
श्री अनन्तनाथजी का च्यवन जन्म दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक इसी नगरी में
हुए, श्री महावीर स्वामी के नवमें गणधर श्री अचलचक्राता इसी अयोध्या के रहने वाले थे।
रघुकुसुतिलक श्री रामचन्द्रजी लक्ष्मणजी आदि जी इसी नगरी में पैदा हुए थे ।

(१४६)

श्री अजितनाथजी का मंदिर - मढ़वा कटड़ा ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[1638]

मूखनाथजी ।

संवत् १८७१ माघ सुदि ३ वृहत् खरतर गच्छे श्री जिनम्राज सूरि शिष्य पाठक श्री हीरधर्मगण्युपदेशेन श्रीमाल टांक जांवतराय सुवन चुल्लिब्राह्मेन सुत बहादुरमिहयुतेन श्री अजितनाथ विंबं कारितं । श्री बाराणस्यां प्रतिष्ठितं । श्री जिनहर्ष सूरिणा श्री खरतर गच्छे ।

[1639]

सं० १९५९ मि० फा० सु० ५ इदं श्री ऋषभदेवजी आदिनाथ विंबं कारितं श्री उंसवाज बंशज ताराचंद लखमीचंद प्रतिष्ठितं वृहद् जट्टारक श्री जिनचंद सूरिजिः ।

[1640]

सं० १९५९ मि० फा० सु० ५ इदं श्री महावीर विंबं कारितं सेठ सराचंद प्र० जट्टारक जिनचंद्र सूरिजिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1641]

सं० १४९५ वर्षे मार्ग० वदि ४ गुणै उपवेश झारतौ सुचिंती गोत्रे साह जिखु जार्या जय-तादे पु० सा० नान्हा जोजाकेन मातृपितृश्रेयसे श्री शान्तिनाथ विंबं कारितं श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं ज० श्री श्री श्री सर्व सूरिजिः ॥

[1642]

संवत् १५६७ वर्षे वैशाख सुदि १० उ० सुचिंती गोत्रे सा० जेसा जार्या जस्मादे पु० मीडा जार्या हर्षु आत्मपुण्यार्थ श्री आदिनाथ विंबं कारितं । को० श्री नन्ह सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

(१४७)

[1643]

सं० १५७५ वर्षे फा० व० ४ दिने प्रा० सा० आढहा जार्या आढहणदे पुत्र सा० विसा-
केन प्रा० विढहणदे पुत्रीपुत्र जयवंतप्रमुखयुतेन श्री संजवनाथ बिंब का० प्र० तपा गछे
श्री जयकट्याण सूरिनिः ।

धातु की मूर्ति पर ।

[1644]

सं० १६७६ फा० व० ५ श्री पार्श्वनाथ बिंब प्रतिष्ठितं श्री जिनमहेंद्र सूरिणा । फा०
गो० सेवाराम ।

धातु के यंत्र पर ।

[1645]

श्री । संवत् १७०७ आ० सु० ३ श्री सिद्धचक्र यंत्रं का० गांधी गुलाबचंद्रस्य जार्या
कक्षी नाम्ना प्र० श्री जिनमहेंद्र सूरिणा श्री वृहत् खरतर गछे ।

[1646]

सं० १७१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल द्वितीया तिथौ श्री सिद्धचक्र यंत्रं
प्र० ज० श्री महेंद्र सूरिनिः का० गो० नाहटा उलवाल लठमणदास तद् जार्या मुनि
बिंब तत्पुत्र हजारीमल्ल श्रेयोर्यमातंदपुरे ।

पाषाण के चरण पर ।

[1647]

॥ सं० १६७७ रा धराकार्या पाठक हीरधर्मोपदेशेन जयपुर वास्तव्य आसवाल सैठ
हुकुमचंदजेन उदयचंदेन अयोध्यायां श्री मरुदेव १ विजया २ सिद्धार्था ४ सुमंगला ५
सुयशा १४ गर्जरत्नानां परमेष्ठिनां चरणन्यासाः कारिताः प्र० श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

(१४८)

समवसरणजी के चरणों पर ।

[1648]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां बृहत् खरतर जट्टारक गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन जय-
नगर वासिना आसवाल्ल जातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन । उदयचंदेन अयोध्यायां श्री
अजित सर्वज्ञस्य पादन्यासः कारितः । प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा ॥

[1649]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां श्री जिनलाल सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन
अयोध्यायां श्री वृषजनाथानां पादन्यासः कारितः आसवाल्ल । मिरगा जाति सामंतसिंहेन
वडेर गोत्रीयेन बीकानेरस्थ पदार्थमत्तेन । प्रतिष्ठितः श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[1650]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन आसवाल्ल जातौ
सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन । उदयचंदेन जयनगरस्थेन । अवधौ सर्वज्ञानिनंदन पादाः
कारिताः । प्र । जिनहर्ष सूरिणा ।

[1651]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन जयनगर वासिना
आसवाल्ल जातौ सेठ गोत्रीय हुकुमचंदजेन । उदयचंदेन । अयोध्यायां श्री सुमति सर्वज्ञ
पादाः कारिताः प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[1652]

॥ सं० १८७७ रा धराकायां श्री बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलाल सूरि शिष्योपाध्याय
श्री हीरधर्मोपदेशेन अवधौ सर्वज्ञानंत पादन्यासः कारितः सेठ उदयचंद प्र । श्री जिन-
हर्ष सूरिणा ॥ १४ ॥

(१४९)

[1653]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां खरतर गणीय पाठक हीरधर्मोपदेशेन अयोध्यायां श्री अजिताजिनंदन सुमत्यनंतनाथानां चरणन्यासः कारितः जयनगर वासिना । ओसवाल सेठ गोत्रीय हुकुमचंद सुतेन । उदयचंदेन प्रतिष्ठितः खरतर जट्टारक गणेश श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[1654]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां खरतरगणेश श्री जिनलाज सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन । अयोध्यायां श्री नाजि १ जिनशत्रु २ संवर ४ मेघ ५ सिंहसेन १४ जानामार्हतां क्रमन्यासः कारितः जयनगरस्थेन ओसवाल सेठ हुकुमचंद सुतेन । उदयचंदेन प्रतिष्ठितः श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[1655]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां श्री जिनलाज सूरि शिष्योपाध्याय हीरधर्मोपदेशेन जयनगरस्थेन ओसवाल सेठ हुकुमचंद सुतेन । उदयचंदेन । अयोध्यायां २ । ४ । ५ । १४ । जिनादयो गणधराणां श्री सिंहसेन । वज्रनाज । चमरगणि । यशसां पादाः कारिताः । प्रतिष्ठिताः श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

दादाजी के चरण पर ।

[1656]

॥ सं० १७७७ रा धराकायां पितामहानां श्री जिनकुशल सूरीणामयोध्यायां चरणन्यासः प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर जट्टारक श्री जिनलाज सूरि शिष्योपाध्याय श्री हीरधर्मोपदेशेन कारिताः । जयनगर वासिना अधुना मिरजापुरस्थेन सेठ हुकुमचंदजेन । उदयचंदेन श्रेयोर्भ ।

यक्ष और देवियों के पाषाण की मूर्तियों पर ।

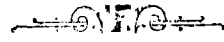
[1657]

॥ श्री गोमुख यक्ष मूर्तिः ॥ १ ॥ ॥ सं० १९३९ फादगुन कृष्ण ७ गुरौ प्रतिष्ठितं ।

(१५०)

जं । यु । प्र । वृहत्खस्तर जट्टारकेन्दु श्री जिनमुक्ति सूरि जिनामादेशात्मंडशाचार्य श्री
विवेककीर्ति गणिना कारितं । श्री संघस्य श्रेयोर्थमयोध्यायाम् ॥ शुभम् ॥ १ ॥

नोट- अैसेही लेख और (१) ॥ श्री महायक्षमूर्तिः ॥ २ ॥ (२) ॥ श्री यक्षनायक
मूर्तिः ॥ ४ ॥ (३) ॥ श्री तुंबुरुयक्षमूर्तिः ॥ ५ ॥ (४) ॥ श्री पातालयक्षमूर्तिः ॥ १४ ॥
(५) ॥ श्री अजितवला देवी ॥ २ ॥ (६) ॥ श्री कालिदेवीमूर्तिः ॥ ४ ॥ (७) ॥ श्री
अंकुशदेवी मूर्तिः ॥ १४ ये सात मूर्तियों पर हैं ।



नवराई ।

नवराई फैजाबाद से १० मैल और सोहावल स्टेशन से अंदाज २ मैल पर एक ठोठा
गांव है । यही प्राचीन तीर्थ 'रत्नपुरी' है । यहां १५ वें तीर्थकर श्री धर्मनाथस्वामी का
च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक हुवे हैं ।

पंचतीर्थियों पर

[1658]

संवत् १५१२ वर्षे माह शुदि ५ सोमे वाडिज वास्तव्य चावसार जयसिंह जा० फार्सी
पु० पोचा जा० जाती पु० लीबा सरवण लाहू उमालु पोचाकेन । श्री सुविधिनाथ त्रिं
कारापितं श्री विवदणीक गळे श्री सिद्धाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिनिः ।

[1659]

सं० १५६७ वर्षे वैशाख सु० १० दु० श्री उरकेश ज्ञानौ सं० साहिल सु० सं० हासा
जा० ठाजी नाम्न्या स्वपुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ त्रिं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उरकेश गळे
ककुदाचार्य सं० त० श्री सिद्ध सूरिनिः

(१५१)

[1660]

संवत् १६१७ वर्षे ज्येष्ठ शुद्धि ५ सोमे श्री पत्तने उसवाख झातीय सा० अमरसी
सुत आणंद । जा० वीरु सुत काहाना सारंगधर बिंबं श्री पद्मप्रजनाथ । प्रतिष्ठितं ।
तथा मछे श्री विजयदान सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1661]

॥ संवत् १६४४ वर्षे फागुण शुद्धि २ दिने उसवाख झातीय बंज गोत्रीय साह कटारू
चार्या दुलादे सुत सा० तारू चार्या जीवादे सुत सा० टटना प्री (?) संघनाम चिंतामणि
श्री श्रेयांसनाथ बिंबं तपागछाधिराज श्री हीरविजय सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

पाषाण के चरणों पर ।

[1662]

संवत् १८७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथानां पादाः कारिताः वरहीया
बूझचंदज वेणीप्रसाद प्र । बृहत् खरतरगणेश श्री जिनलान्न सूरि शिष्य पाठक हीर-
धर्मोपदेशेन । ओसवात्रेन । काशीस्थेन प्रतिष्ठिताः श्री जिनहर्ष सूरिणा ।

[1663]

संवत् १८७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मार्हतापादाः कारिताः बृहत् खरतर
गणेश श्री जिनलान्न सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन वरहीया बूझचंदज वेणीप्रसादेन
प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा बृहत् खरतरगणेशेन ।

[1664]

सं । १८७७ रा धराकायां बृहत् खरतर गणेश श्री जिनलान्न सूरि शिष्य पाठक हीर-
धर्मोपदेशेन काशीस्थ वरहीया बूझचंदज । वेणीप्रसादेन श्री धर्मपरमेष्ठिनां पादाः
कारिताः श्री रत्नपुरे प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर गणेश ।

[1665]

सं । १९७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्म सर्वज्ञानां पादाः कारिताः ओसवात्रे

(१५२)

वरुढीया ब्रूखचंदज वेणीप्रसादेन श्री काशीस्थेन वृहत् खरतर गणनाथ श्री जिनल्लाज
सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा खरतर गणेश ।

[1666]*

सं० १७७७ रा धराकायां श्री रत्नपुरे श्री धर्मनाथायः गणधर श्रीमद् अरिष्टारुथानां
पादाः कारिताः ओसवाल वंशे बरुढीया ब्रूखचंदज वेणीप्रसादेन वृहत् खरतर गणेश श्री
जिनल्लाज सूरि शिष्य पाठक हीरधर्मोपदेशेन । प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा । वृहत् खरतर
गणेशेन ।

[1667]

सं० १९१० वर्षे शाके १७७५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ । श्री गौतम स्वामी जी
पादन्यासौ । प्र । ज । श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः । का । गा० श्री अगममल्ल पुत्र ठोटण-
ल्लाखेन आणंदपुरे ॥ श्री ॥

[1668]

सं० १९१० वर्षे शाके १७१५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ सोमवासरे श्री जिनकुशल
सूरीणां पादन्यासौ प्रतिष्ठितः ज । श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः का । गां । श्री वेणीप्रसा-
दांगज ठोटणल्लाखेण आणन्दपुरे ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[1669]

सं । १६६७ का ... अजिनंदन ... । जं । बु । प्र । जटारक श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।

[1670]

सं । १६७५ वैशाख सुदि १३ शुके श्री वृहत् खरतर संघेन कारितं श्री अजितनाथ
चिंत्नं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिजिः युगप्रधान श्री जिनसिंह सूरि शिष्यैः ।

* किन्तु यक्ष और कंदर्पा देवी मूर्तियों पर भी ऐसे ही लेख हैं ।

(१५३)

[1671]

॥ सं० १८७३ शाके १९५८ प्र० माघ सुदि १० बुध वासरे श्री पादलित्त नयरे श्री अजिनंदन विंबं कारितं श्री बृहत् खरतर गढे ज० जं० यु० श्रीमहेंद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[1672]

सं० १८७३ माघ सुदि १० बुध वासरे श्री सुमतिनाथ विंबं कारितं बृहत्खरतर गढे प्रतिष्ठितं जं० यु० प्र० ज० श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः ।

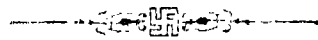
[1673]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १९९५ प्रवर्त्तमाने माघ शुक्ल २ तिथौ श्री पार्श्वनाथ विंबं प्रतिष्ठितं ज० श्री जिनमहेंद्र सूरिजिः कारितं वमा (?) गोत्रीय श्री हुकुमचंद तत्पुत्र अजरमह्व तद्गार्या बुध तथा श्रेयोर्थमाणंदपुरे ।

धातु की मूर्ति पर ।

[1674]

सं० १९२० सि० फा० कृष्ण २ बुधे डूगड़ प्रतापसिंह गार्या महताव कुंवर का० विहर-मान अजित जिन २० विंबं श्री अमृतचंद्र सूरि राज्ये वा० ज्ञानशंकर गणिना ।



फैजाबाद ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर । महद्वारा - पालखीखाना ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1675]

उं सं० १४६१ वर्षे जेठ सुदि १० शुके प्रा० श्रेष्ठि शापा जा० देवल पु० जेसा द्रातृद्वय पीचनाच्यां स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रज विंबं का० प्रति० पिप्पल गढे श्री वीरप्रज सूरिजिः ॥

(१५४)

[1676]

सं० १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ श्रीमाल ज्ञातीय श्री एलहर गोत्रे शा० दया-
संताने सा० पूनात्मज म० मिच्चाकेन त्रात् डोडाप्रभृतिपरिवारयुतेन श्री वासुपूज्य विंबं
कारितं श्री बृहद् गच्छे श्री मुनीश्वर सूरि पट्टे प्र० रत्नप्रज्ञ सूरिभिः ।

धातु की मूर्ति पर ।

[1677]

सं० १६६४ वर्षे राय पालक० मु० पा० प्र० तप ।

पट्ट पर ।

[1678]

सं १६७२ चाद्र सुदि ११ श्री चंद्रप्रज्ञ जिन विंबं ॥ वीरदास प्रणमति । ठः ठः ॥

पापाण के चरणों पर ।

[1679]

सं० १८७९ फादगुण शुदि ४ वार शनि अयोध्या नगरे बंगलावसति वास्तव्य उस वंशे
नखत गोत्रीय जोरामल तत्पुत्र बषतावरसिंघ तत्पुत्र कनईयालालादिसहितेन श्री जिन-
कुशल सूरि पाडुका कारितं । प्रतिष्ठितं बृहत् जटारक खरतर गठीय श्री जिनचंद्र सूरिभिः
कारक पूजकानां श्रूयसि वृद्धितगं श्रूयात् ॥

[1680]

सं० १८७९ मि । फा । सु० ४ श्री जिनकुशल पादौ । प्र । श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।



(१५५)

चंद्रावती ।

यह तीर्थ बनारस से ७ कोस पर गंगा के किनारे अवस्थित है । आठवें तीर्थकर चंद्रप्रज्ञस्वामी का इसी चंद्रावती नगरी में व्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये ४ कल्याणक हुए हैं ।

पाषाण के चरण पर ।

[1681]

श्री वाराणसी नगरीस्थित समस्त श्री संघेन श्री चंद्रावत्यां नगर्यां श्री चंद्रप्रज्ञ सुनाम ८ म जगनाथानां चरण न्यासः समस्त सर्व सूरिभिः प्रतिष्ठितं । संवत् १०६० मिति आषाढ मासे शुक्ल पक्षे ११ वार शुक्रवार शुभं ।

पाषाण की यक्ष मूर्ति पर ।

[1682] *

संवत् १९१३ फाट्गुण शुक्ल सप्तम्यां विजय यक्ष मूर्ति प्रतिष्ठितं । जटारक । युगप्रधान श्री जिनमहेंद्र सूरिभिः कारिता च काशीस्थ श्री श्वेताम्बर श्री संघेन ।

[1683]

सं० । १००० माघ शुदि ५ सोमे श्री जिनकुशल सूरि चरण कमलं कारितं श्री-माखान्वये फोफलिया गोत्रीय वपतमह्य पुत्र दिक्षुसुखरायेण प्र । वृ । ज । खरतर ग । श्रीजिन-चंद्र सूरिभिः श्री जिनाह्वय सूरि पदस्थैः ।

शिलाखेख ।

[1684]

श्री दादाजी महाराज के मंदिरजी का जीरणउद्धार । छद्मीचंद राखेचा की छड़की ठांटी बिबि की तरफ से बनाया । चादो सुदि ४ शुक्रवार सम्बत् १९५२ ।

* ज्वाला देवी की मूर्ति पर भी इसी प्रकार का लेख है ।

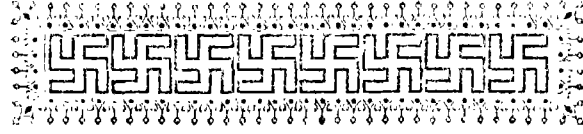
(१५६)

[1685]

श्री संवत् १८९१ शाके १७५७ माघ शुक्ल १५ चौमवार पूष्यनक्षत्रे आयुष्यमाण योगे
चोरडिया गोत्रोत्पन्न लाला मन्नुलालजी बुधसिंहेन निर्मिता विश्रामस्थान ।

[1686]

॥ सं। १८९४ वर्षे शा १७५९ माघ शुक्ल ४ चतुर्थ्यां चंद्रवासरे श्रीमालान्वये फोफलिया
गोत्रे सा । श्री पुसवपतरायजी तत्सुता दिलसुखराय चाजिधानौ श्री चंद्रप्रज
कट्याणकचूम्यां चंद्रावती पूर्वा धर्मशाला कारापिता संघार्थ ।



श्री सम्मेटशिखर तीर्थ ।

मधुवन - जैन श्वेताम्बर मन्दिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1687]

सं० १२१० आषाढ़ सुदि ९ सोमे श्री पंडेरक गढौ प्रतिमा कारिता वसु ।

[1688]

संवत् १२३५ वैशाख सुदि ३ बुधे तंगकीय सोहि सुन पीत आवकेण स्वश्रेयोर्य श्री
पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता । श्री पूर्णनद्र सूरिणा ।

[1689]

संवत् १२४२ वैशाख सुदि ४ श्री वापदीय गढे श्री जीवदेव सूरि पितृश्रेयोर्य सूरि
श्रेयोर्य श्री० टाणाकेन कारितं ।

(१५७)

[1691]

संवत् १४९६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० बुधे श्री श्रीमाल झातीय श्रे० कर्मसी जार्या मटकू सुत गुणीश्राकेन स्वकुलश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री बृहत्तपापदे श्री ज्ञानकलश सूरि पदे श्री विजय तिलक सूरिजिः ।

[1692]

सं० १५५३ वर्षे वैशाख वदि ११ शुके उकेश वंशे सा० पनरबद जार्या मानू पुत्र साह वदा सुश्रावकेण जार्या धनाई पुत्र कुंरपाल सोनपाल प्रमुखसहितेन श्री वासुपूज्य बिंबं स्वश्रेयोर्थं कारितं । प्रतिष्ठितं श्री बृहत् खरतर गहनायक श्री जिनसमुद्र सूरिजि ।

[1693]

संवत् १५७० वर्षे माह वदि १३ बुध दिने सुराणा गोत्रे । सं० केसव पुत्र सं० समरथ जार्या सं० सोमलदे पु० सं० पृथीमह्व महाराज कर्मसी धर्मसी युनेन श्री अजितनाथ बिंबं कारितं मातृपितृपुण्यार्थं आत्मश्रेयसे प्रतिष्ठितम् । श्री धर्मघोष गह्वे जट्टारक श्री श्री नंदिषर्द्धन सूरिजिः ॥

चौबीसी पर ।

[1694]

सं० १२२७ वैशाख शु० ३ गुरौ नंदाणि ग्रामेन्या श्राविकया आत्मीय पुत्र लूणदे श्रेयोर्थं चतुर्विंशति पदः कारिताः । श्री मोढ गह्वे बप्पजट्टि संताने जिनजट्टाचार्यैः प्रतिष्ठितः ।

[1695]

सं० १५०७ प्रा० सा० पाट्टहणसी जा० जोटू सुत सा० राजाकेन जा० मंदोअरि सुत सीहा कमुआदिकुटुम्बयुतेन श्री कुंथुनाथ सपरिकर चतुर्विंशति पदः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजि ॥ ७ ॥ श्री ॥

(१५७)

जलमंदिर ।

पंचतीर्थ पर ।

[1696]

सं० १५११ पोष वदि ६ गु० मंत्रीअर गोत्रे श्री हुंबड़ ज्ञाति गारुडिया जा० पूजू सु०
समेत जा० सहनल दे सु० समधर सोमा श्रेयोर्थ जा० पाढ्हण नाढ्हा एतैः श्री आदिनाथ
विंशं कारितं वृद्धतपा ज० श्री रत्नसिंह सूरजिः प्रति० ॥



श्री पावापुरी तीर्थ ।

मंदिर प्रशस्ति ।

शिलालेख ।

[1697]

- (१) ॥ ए ॥ स्वस्तिं श्री संवति १६९७ वैशाख सुदि ५ सोमवासरे । पातिसाह श्री
साहिजांह सकलनूर
- (२) मंमलाधीश्वर विजयिराज्ये ॥ श्री चतुर्विंशतितमजिनाधिराज श्री वीरवर्द्धमान
स्वामी
- (३) निर्वाण कल्याणिक पवित्रित पावापुरी परिसरे श्री वीरजिनचैत्यनिवेशः । श्री
- (४) ऋषन जिनराज प्रथम पुत्र चक्रवर्ती श्री जरत महाराज सकलमंत्रिमंडलश्रेष्ठ
मंत्रि श्रीदलसन्तानीय म-

(१५९)

- (५) हतिश्याण ज्ञातिशृङ्गार चोपड़ा गोत्रीय संघनायक संघवी तुलसीदास चार्या निहा-
लो पुत्र सं० संग्राम ।
- (६) लघुचक्रातु गोवर्द्धन तेजपाल जोजराज । रोहदीय गोत्रीय सं० परमाणंद सपरिवार
महधा गोत्रीय विशेष धर्म ।
- (७) कर्मोद्यम विधायक ठ० डुलीचंद काडड़ा गोत्रीय सं० मदनस्वामीदास मनोहर
कुशला सुंदरदास रोहदिया ।
- (८) मथुरादास नागायणदासः गिरिधर सन्तादास प्रसादी । वार्त्तिदिया गो० गूजरमल्ल
बूदड़मल्ल मोहनदास ।
- (९) माणिकचन्द बूदमल्ल जेठमल्ल ठ० जगन नूरीचन्द । नान्हारा गो० ठ० कट्याणमल्ल
मल्लूकचन्द मजा-
- (१०) चन्द । संघेला गोत्रीय ठ० सिञ्जू कीर्त्तिपाल बाबूराय केसवराय सूरतिसिंघ ।
काडड़ा गो० दयाश्र-
- (११) दास जोवालदास कृपालदास मीर मुरारीदास किलू । काणा गोत्रीय ठ० राजपाल
रामचन्द ॥
- (१२) महधा गो० कीर्त्तिसिंघ रो० ठबोचन्द । जाजीयाण गो० सं० नथमल्ल नंदलाख
नान्हड़ा गोत्रीय ।
- (१३) ठ० सुन्दरदास नागरमल्ल कमलदास ॥ रो० सुन्दर सूरति मूरति सबल कृती प्रताप
पाहड़िया ।
- (१४) गो० हेमराज चूपति । काणा गो० मोहन सुखमल्ल ठ० गढ़मल्ल जा० हरदास पुर-
सोत्तम । मीणवा-
- (१५) ण गो० बिहारीदास बिंडु । मह० मेदनी जगवान गरीबदास साहरेणपुरीय जीवण
वजागरा गो० ।
- (१६) मल्लूकचन्द जूऊ गो० सचल बन्दी संती । चो० गो० नरसिंघ हीरा घरमू उत्तम
वर्द्धमान प्रमुख श्री ।

- (१७) बिहार वास्तव्य महतीयाण श्री संघेन कारितः तत् प्रतिष्ठा च श्री बृहत् खरतर
गङ्गाधीश्वर युगप्रधान श्री ।
- (१८) जिनसिंह सूरि पट्टप्रज्ञाकर युगप्रधान श्री जिनराज सूरि विजयमान गुरुराजानामा-
देशेन कृत ।
- (१९) पूर्वदेश विहारे युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य श्री समयराजोपाध्याय शिष्य
वा० अजयसुन्दर ग-
- (२०) णि विनेय श्री कमललाजोपाध्यायैः शिष्य पं० लब्धकीर्त्ति गणि पं० राजहंस गणि
देवविजय ग-
- (२१) णि थिरकुमार चरणकुमार मेघकुमार जीवराज सांकर जसवन्त महाजज्ञादि शिष्य
सन्ततिः सपरिवार्यैः । श्रीः ।



क्षत्रियकुण्ड । *

पंचतीर्थी पर ।

[1698]

संवत् १५५३ वर्षे माह सुदि ५ दिने । वरडेवा गोत्रे सा० कोहा जा० सोनी पु० साह
सीहा सहजा सीहा जा० हीरुप्रेयसे श्री अशुनाय विं० कारितं प्र० श्री कोरंट गच्छे श्री
नन्न सूरिभिः ॥



* 'लछवाड़' ग्रामसे १ कोस दक्षिण में छोटे पहाड़ पर यह स्थान है । श्वेताम्बर सप्रदाय वाले २४ वें तीर्थंकर श्री महावीर
स्वामी के ज्यवन, जन्म और दीक्षा ये ३ कल्याणक इसी स्थान में माने हैं । वहां के लोग इसको 'जलम थान' कहकर पुकारते हैं ।
पहाड़ के तलहटी में २ छोटे मन्दिर हैं । उन में श्री वीर प्रभु की श्याम वर्ण के पाषाण की मूर्तियां हैं । पहाड़ पर मन्दिर में भी श्याम
पाषाण की मूर्ति है और मन्दिर के पाल ही एक प्राचीन कुण्ड का विद्ध वर्तमान है ।

(१६१)

लछवाड़ ।

धातु की मूर्ति पर ।

[1699]

॥ सं० १९१० मि० फादगुन कृ० १ बुधे मारू गो० केंसरीचंद जार्या किसन बिबि
त्रीर जिन बिंब का । जं । यु । ज । श्री जिनहंस सूरि राज्ये उ । सं । ग । च । प्रति० ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1700]

सं० १५१३ । वै० सुदि ५ गुरौ श्री हुंवाड़ ज्ञानीय फडो शिवराज सुन महीया श्रेयसे
त्रातृ हीयकेन त्रातृज कुमूया युनेन श्री शांतिनाथ बिंब कारितं प्रति० वृहत्तया पक्षे
श्री श्री रत्नसिंह सूरिजिः ॥

[1701]

सं० १९१० फा० कृ० १ बुधे प्रतापसिंह छूगड़ गोत्रे जार्या महताब कुंवर श्री सुमति
जिन पंचतीर्थी का० ज० । सदावाज गणिना श्री जिनहंस सूरि राज्ये ।

यंत्र पर ।

[1702]

सं० १९३३ ज्येष्ठ शुक्ल ११ शनिवासरे श्री नवपद यंत्र कारितं श्योस वंशे छूगड़ गोत्रे
श्री प्रतापसिंह तत्पुत्र रायबहापुर धनपत्सिंहेन कारितं प्रतिष्ठितं विजयगढे ज० श्री शांति-
सागर सूरिजिः ।

[1703]

सं० १९३३ का ज्येष्ठ शुक्ल ११ द्वादश्यां शनिवासरे नवपद यंत्र.....का० मकसूदा-
वाद वास्तव्य उंस वंशे छूगड़ गोत्रे बाबू प्रताप सिंह तत्पुत्र राय बहापुर लठमीपनसिंह
रायबहापुर धनपतसिंह ने कारितं विजय गढे श्री शांतिसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

(१६२)

चन्दनचौक ।

मन्दिर का शिला लेख ।

[1704]

- | | |
|--------------------------------------|---------------------------------------|
| १ । उं ॥ संवत् १३४४ वर्षे आ- | २ । पाद सुदि पूर्णिमायां देव श्री ने. |
| ३ । मिनाथ चैत्ये श्री कल्याण | ४ । यस्य पूजार्थं श्रेण सिरधर । त- |
| ५ । त्पुत्र श्रेण गांगदेवेन वीस.... | ६ । ल प्रीय द्रमाणं एशेण श्री नेमि |
| ७ । नाथ देवस्य जांडागारे निक्षि. | ७ । सं वृद्ध फल जोगेन सम्प्रति द्र. |
| ८ ।३३ प्रदत्तं पूजार्थं आचंद्र- | १०। काखं यावत् शुनं चवतु श्री ॥ |

मूर्ति के चरण चौकी पर ।

[1705]

- १ । गुणदेव जार्या-जशतसिरि साब्दू-
- २ । पुत्र दशरा पूना लूणावी ... कम.
- ३ । रेवता हरपति कर्मद राणा क-
- ४ । मट पुत्र खीमसीह तथा धीर-
- ५ । देव सुत अरसीह तत्पुत्र वस्तु.
- ६ । पाल तेजःपाल प्रभृति सकल.
- ७ । कुटुंब सामस्त्येन श्रेण गांग-
- ८ । देवेन कारितानि ।

(१६३)

रत्नपुर - मारवाड़ ।

जैन मंदिर ।

शिक्षा लेख ।

[1706]

- १ । सं० १३४३ वर्षे माह सुदि १० शनौ रत्नपुर-
- २ । रे श्री पार्श्वनाथ चैत्ये श्री उसिवाल ज्ञातीय व्यवसीं-
- ३ । ह गह सुतयासी पुत्रादि सरोराज हासकया व्यव महि-
- ४ । लण चार्यया महणदेव्या स्वात्म श्रेयसे कारितं श्री आ-
- ५ । दिनाथ विंबस्य नेचक निमित्तं श्री पार्श्वनाथ देव चांडा-
- ६ । गारे द्दिस वीसल प्रिय ड्रम्म २० तथा सं० १३४६ माह सुदि
- ७ । १५ पूर्णिमायां कल्याणिक पंचकनिमित्तं द्दिसं ड्र १० उ
- ८ । चयं ड्र ३० अमीषां ड्रम्माणां व्याजे शतं मासं प्रति ड्र २०
- ९ । विशति ड्रम्मा पुम्त्राणां व्याजेन नवकं करणीयं दश ड्रम्मा-
- १० । णां व्याजेन कल्याणिकानि करणीयानि शुभं चवतु ।

मूर्तियों पर ।

[1707]

- १ । देव श्री शान्तिनाथ
- २ । दीसावाल न्याती सुरमा-
- ३ । णपुर वास्त (व्य) साधु रतन
- ४ । सुत सा० हापु जलगे

[1708]

- १ । ॐ ॥ सं० ॥ १३३० फागुण सुदि १० गुरौ । अद्येह रत्नपुर श्री बंडेर गह्वे श्री
- २ ।महं मदन पुत्रमहं डूंगरसीहेन
- ३ ।श्रे

४ । योर्थ श्री जिनैन्द्रस्य त्रिवं--कारितं ॥ प्र०

५ । श्री यशोजद्र सूरि संताने श्री सुमति सूरिजिः ॥ शुभं जवतु ॥

गांधाणी (मारवाड़) ।

प्राचीन जैन मंदिर ।

धातु की मूर्ति पर

[1709]*

- (१) उं ॥ नवसु शतेष्वहानां । सप्ततं (त्रिं) शदधिकेष्वतीनेषु । श्रीवृद्धांगत्रीच्यां ।
ज्येष्ठार्याच्यां
- (२) परमजक्तया ॥ नाजेय जिनस्यैषा ॥ प्रतिमा ऽषाढाह्णमास निष्पन्ना श्रीम-
- (३) सौरण कखिता । मोक्षार्थ कारिता ताच्यां ॥ ज्येष्ठार्यपदं प्राप्तौ । छावपि
- (४) जिनधर्मवृद्धसौ ख्यातौ । उद्योतन सूरस्तौ । शिष्यौ श्रीवृद्धवृद्धदेवौ ॥
- (५) सं० ए३७ अषाढाह्णं ॥

* गांध 'गांधाणी' जोधपुर से उत्तर दिशा में ६ कोस पर है । वहां तालाब पर एक प्राचीन जैन मन्दिर में यह सर्वधातु की श्री आदिनाथजी की मूर्ति है और उसके पृष्ठ पर यह लेख खुदा हुआ है । जोधपुर विवाता पण्डित रामकर्णजी की कृपा से मुझे यह लेख का छापा और अक्षरान्तर प्राप्त हुआ है । उन्होंने इस लेख पर निम्न लिखित नोट्स लिखे हैं ।

पंक्ति— १ । “ ज्येष्ठार्य ” यह पदवी वाचक शब्द ज्ञात होता है, जो पंक्ति ३ में के “ज्येष्ठार्य पदं प्राप्तौ” इस वाक्य से स्पष्ट है ।

” — २ । “ आषाढाह्णं ” पद से आषाढ सुदि १ और वैदि १५ का भी ज्ञान हो सकता है; परन्तु यहां प्रतिपदा का सम्भव अधिक है, क्योंकि शुभ कार्य में अमावसा वर्जित है ।

” — ४ । “ उद्योतन सूरः ” —पट्टावली में इनके स्वर्गवास का संवत् ६६४ मिलता है परन्तु उन के पट्टाधिकारी होनेका संवत् देखने में नहीं आया । लेख से जाना जाता है कि उद्योतन सूरि संवत् ६३७ में आचार्य पद पा चुके थे । इनके समय पर्यन्त गच्छ भेद नहीं था इसी लिये लेखमें गच्छ का उल्लेख नहीं है । ऐतिहासिक दृष्टिसे यह लेख बड़े महत्त्व का है ।

(१६५)

सूरपुरा - नागौर ।

माताजी के मंदिर के स्तम्भ पर ।

शिला लेख ।

[1710]

- | | |
|--------------------------------|--------------------------------|
| (१) संवत् १११५ पोस व- | (२) दि १ श्री नेमिनाथचैत्ये |
| (३) पुत्र्या धाहरु जा- | (४) र्यया देवधरमात्रा सू |
| (५) हृडाजिधानया आत्म श्रे- | (६) योर्थ स्तंजद्वयं दत्तं ॥ |

[1711]

- | | |
|--------------------------------|--------------------------------|
| (१) संवत् ११३६ पोस व- | (२) दि १ श्री नेमिनाथचैत्ये |
| (३) पुत्र्या धाहरु जा- | (४) र्यया देवधरमात्रा सू- |
| (५) हृडाजिधानया आत्म श्रे- | (६) योर्थ स्तंजद्वयं दत्तं ॥ |
| (७) मूढये द्र १० ॥ सर्व शु- | (७) द्दं ॥ |



उसतरां - नागौर ।

शिला लेख ।

[1712]

- (१) संवत् १६४४ वर्षे फागुण वदि १५ उषकेश ज्ञातीय बाहणा गोत्रे ।
(२)
(३) संतवनाथ तयापह् श्री श्री हीरविजय सूरि ।

(१६६)

नगर - मारवाड ।

मूर्तियों के चरणचाकी पर ।

दाहिने तर्फ ।

[1713]*

- १। ॥ ॐ ॥ संवत् ११९१ वर्षे आषाढ सुदि ७ रवौ श्री नारदमुनि विनिवेशोते श्री नगर-
वरमहास्थाने सं० ए०
- २। ०१ वर्षे अतिवर्षाकालवशादतिपुराणतया च आकस्मिक श्री जयादित्य देवीय
महाप्रसाद विनष्टायां ।
- ३। श्रीराजुन्नदेवी मूर्त्ते पश्चात् श्रीमत् पत्तन वास्तव्य प्राग्वाट उ० चण्डपात्मज उ० श्रीचंड-
प्रसादांगज उ० श्री सो- ।
- ४। मतनुज उ० श्री आसाराजनन्दनेन उ० श्री कुमारदेवीकुक्षिसंचूतेन महामात्य श्री
वस्तुपालेन स्वचार्या म-
- ५। हं श्री स पुण्यार्थमिहैव श्री जयानित्य देवपत्न्या श्री राजसुदेव्या मूर्त्तिरियं कारिता
॥ शुभमस्तु ॥

बायें तर्फ ।

[1714]

- १। ॥ ॐ ॥ संवत् ११९१ वर्षे आषाढ सुदि ७ रवौ श्री नारद मुनि विनिवेशोते श्री नगर-
वर महास्थाने सं० ए० ०१ वर्षे अ-
- २। अतिवर्षाकालवशादतिपुराणं तथा च आकस्मिक श्री जयादित्य देवीय महाप्रसाद
पत्तन विनष्टायां श्री रत्नादेवी मूर्त्ते
- ३। पश्चात् श्री मत् पत्तन वास्तव्य प्राग्वाट उ० श्री चण्डपात्मज उ० श्री चण्डप्रसादाङ्गज
उ० श्री सोमतनुज उ० श्री आसाराजनन्द-

* श्री भीड़मंजन महादेव के मंदिर में सूर्य के मूर्ति के दोनों तर्फ ली मूर्तियों के चरणचाकी पर यह लेख है ।

(१६७)

- ४ । नेन उ० श्री कुमारदेवीकुक्षिसम्भूतेन महामात्य श्री वस्तुपाक्षेन स्वन्नार्या मय्याः उ०
कन्हड पुत्र्याः उ० संपू कुक्षिजवा
५ । याः महं श्री लज्जिता देव्या पुण्यार्थमिहैव श्री जयादित्य देवपत्न्या श्री रत्ना देवी
मूर्तिरियं कारिता ॥ शुभमस्तु ॥ उ ॥

नगर - खेडगढ़ ।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर । *

[1715]

- १ । उ० सं० १६६६ वर्षे । जाडपदे शुक्रवके । श्री द्वितीया दिने । शुक्रवारे । वीरमपुर वरे
। श्री शान्तिनाथ प्रासाद
२ । जूमि यह । श्री खरतर गह्वे । युगप्रधान श्री जिनवन्द्र सूरि विजयराज्ये । आचार्य
श्री जिनसिंह सूरि यौवराज्ये । श्री
३ । राउल श्री तेजसिजी विजयराज्ये । कारितं श्री संघेन ॥ लिखितं वा० श्री गुणरत्न
गणिना विनेयेन रत्नविशालगणिना
४ । सूत्रधार । चांपा पुत्र । रत्ना । पुत्र । जोधा दामा । पुत्र मन्ना । घन्ना । वर योगेन
कृतं । जार्या सोमा किल पाणा । वल्ली । मेघ । श्री रस्तु ।

घाणेराव मारवाड़ ।

महावीर स्वामीका मन्दिर । †

[1716]

सं० १११३ जाडपद सुदि ४ मङ्गल दिने श्री दण्डनायक तैजल देव राज्ये श्रीवंश

* यह लेख मन्दिर के भूमिग्रह का है ।

† यह मन्दिर "घाणेराव" से १॥ कोस पहाड़ पर है ।

ह्यातीय राउत महणसिंह जक्तिवसहउ वाटमध्यात् । श्री महावीर देव विंवं प्रति डाम ४
पालसुणे दत्ताः यस्य जूमि तदा फलं ॥ सेण रायपाल सुन रावत्रिकु महाजन कुरुपाल
विना णिय सारिवहिं ॥

—*३(५)*—

अभार ।

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

प्रशस्ति ।

[1717]

- १ । उ नमः श्री पार्श्वनाथाय । ५ श्री ह ... पे गणेशाय ...
- २ । श्री मेह मुनीन्द्र गुरुज्यो नमः ॥ स्वस्ति श्री पार्श्वनाथांघ्रं तुष्टि
- ३ । हेतु स्मृतौ सता । यौ विश्वत्रय विख्यातौ तावन्निष्टप्रदौ मम ॥ १ ॥
- ४ । श्री मछिक्रमतः संवत् । मुनिवाजीरसेन्दुके । १६९९ । वर्षे वैशाख मा
- ५ । सेंडुवृद्धिपक्षेऽर्कचूदिने ॥ २ ॥ अक्षयायां तृतीयायां रोहिणीस्थे ... वां
- ६ । जवे एवं सर्व शुभेयस्ते । जीर्णः प्रसाद उद्भूतः ॥ ३ ॥ श्री मत्पार्श्वजिनेन्द्रस्य कल्या
- ७ । ण फलहेतवे । श्रीमत्यात्मज पुण्यां च धुर्यायां तीर्थ संसदि ॥ ४ ॥ श्री श्री-
- ८ । मालीकुत्रांजेधि । चान्द्रेण सितकीर्तिना । दोसी श्री श्री जीवराजः सुते-
- ९ । न गुणशालिना ॥ ५ ॥ सद्धर्मचारिणा हर्षाद्गुन्नतपुरवासिना । श्रीम-
- १० । त्कुञ्जरजी नाम्ना सद्भव्यस्य व्ययेन च ॥ ६ ॥ साहाय्यद्वीरसंघस्य
- ११ । गुरुदेव प्रसादतः । जाता कार्यस्य संसद्धिः । पुण्यैः किं किं न सि-
- १२ । ऋति ॥ ७ ॥ श्रीमत्तपागणाधीश श्री हीरविजय प्रजोः । पष्टे श्री विजय
- १३ । : सेन । सूरि परमजाग्यवान् ॥ ८ ॥ तत्पष्टेऽतविगजति । सुगुणै श्री
- १४ । विजयदेव सूरिन्द्रे । निष्ठांन्यायं पुण्यः । प्रासादवरश्चिरंजीयात् ॥ ९ ॥ तस्य द

(१६९)

१५ । द्विप दिग्जागे । सद्गंरचनान्विते । स्तूये श्री कृषनस्वामी पाण्डुकेऽत्र महाद्रू-
१६ । ते ॥ १० ॥ पूजनीयाः शुजाः श्लाघ्याः । गुरूणां तत्र पाण्डुकाः कारिता मदनाख्येन । दो-
१७ । सीना चालयान्विता ॥ ११ ॥ धर्मशास्त्रा विशाला च शास्त्रारकेन निर्मिता । साहाय्या-
१८ । छरसंघस्य दोसीसंज्ञस्य तुष्टयेः ॥ १२ ॥ पण्डितगणमौखीमणेः । तार्किकसिद्धान्त-
१९ । शब्दशास्त्रार्थः । श्रीमत्कट्याणकुशलं । सुगुरेश्वरणप्रसादेन ॥ १३ ॥ तद्विषयस्य सुगु-
२० । ऊर्विष्टुषः सुयतेर्दयाकुशलनाम्नः । महतोद्यमेन कृत्यं । सिद्धं श्री जगधतः कृ-
२१ । पया ॥ १४ ॥ रम्यो जीर्णोद्धारो । श्रीपार्श्वनाथान्वितोऽर्थ्यमानश्च । आचंद्रार्कं राजतु जी-
२२ । याज्जनसुखकरो नित्यं ॥ १५ ॥ संवत् १६७७ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्री अजपु-
२३ । रे महार्तीर्थे जीर्णोद्धारो जातः श्रीमत्तथागच्छेश जट्टारक प्रभु ज० श्री ५
२४ । श्री विजयदेव सूरि विजयराज्ये । पं० श्री मेहमुनोन्द्र गणि शिष्य पं० श्री
२५ । कट्याणकुशल गणि पं० । श्री दयाकुशल गणि शिष्येन । प्र-
२६ । शस्त्रारिषं खिखिता गणि जत्तिकुशलेन ॥ श्री रस्तु ॥ श्रीः ॥

पाषाण की मूर्तियों पर । ❀

[1718]

१ । सं० १३४३ वर्षे माघ वदि २ शनौ श्रीमालीय हरिपालेन
२ । सूरिनिः ।

[1719]

१ । सं० १३४३ वर्षे वै० सुदि २ बुधे दीशावाल ज्ञानीय महं० लापण सुत धी-
२ । रमन सुत । वावल श्रेयोर्थ श्री पार्श्वन य कारितं प्रतिष्ठितं श्री महेन्द्र सूरिनिः ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1720]

सं० १५०० वर्षे वैशाख सुदि १५ शनौ श्री पदेशेन हुंबड़ ज्ञानीय ठ० अर्जुन

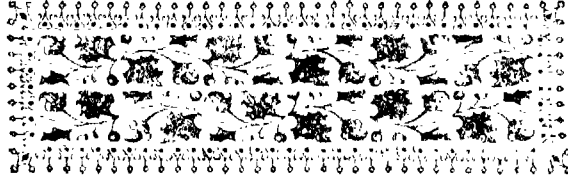
* ये मूर्तियां खण्डित है, लेख चरणचौकी पर है ।

(१७०)

मारुतयो युत धीधा जुष्टा सुत नेमिनाथ प्रणमति ।

[1721]

सं० १५१९ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्री श्रीमाल झ्वातीय मं० वाढा चार्या गोमती तथा
ष्यात्मश्रेयसे श्री पद्मप्रज स्वाम्यादि पञ्चनीर्घी श्री आगम गढे श्री हेमरत्न सूरीणामुप-
देशेन कारिता प्रतिष्ठिता च विधिना ।



पिंडवाड़ा-सीरोही ।

श्री महावीरजीका मन्दिर ।

शिला लेख

[1722]

- (१) नीरागगन्धादिजावेन सर्वज्ञानविनायकं । ज्ञात्वा जगवतां जापं जिनानमिव पावनं ॥
(२) ड्रोण्येयक यशोदेव देव । रिदं जैनं कारितं युग्ममुत्तमं ॥
(३) जयशतपरम्परार्जित गुरुकर्मराजो कारापितां परदर्शनाय शुद्धं सज्ज्ञानचरण-
स्त्राजाय ॥

संवत् ८(१?)४४ ।

उं साहात्पिता महन व विश्वरूपविनायिना । शिद्धिपना गोपगार्गेन कृतमेतज्जिन-
छयम् ॥



(१७१)

खीमत-पालणपुर ।

जैन मंदिर ।

मूर्तिकी चरणचौकी पर ।

[1723]

- १ । ॐ० ॥ सं० १२१५ वैशाख वदि ४ शुक्रे खीमत स्थाने प्राग्वाट वं-
- २ । शीय श्रे० आसदेव नार्यया दमति श्राविकया स्वपुत्र जसचन्द्र देवय
- ३ । तत् पुत्र पूना अजयडवड् प्रति समस्तमानुषसमेतया आ-
- ४ । त्मश्रेयसे श्री महावीर जिनयुगलं कारितं सूरिभिः प्रति(ष्ठितं) ।



श्री तारंगा तीर्थ ।

श्रीअजितनाथ स्वामीजी का मंदिर ।

सहस्रकूट के चरण पर ।

[1724]

श्री शाश्वता परमेश्वर ४ श्री चौबीस तीर्थंकर २४ श्री बीस विहरमाण २० श्री गणघरना १४५२ सर्वमखिने संख्या पनरसो जोड़ावि ठई सहि । सं० १८७३ वर्षे माघ सुदि ७ शुक्रे श्री तारंगाजी दुर्गे । श्री श्री विजयजिनेन्द्र सूरि प्रतिष्ठितं तपा गछे । सा० करमचन्द मोतीचन्द सुत पनाचन्द करापितं । बीसनगर वास्तव्य ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1725]

सं० १५०६ वर्षे माघ सुदि १० शनौ ठकेस वंशे साहु गोत्रे सा० तुंषा जा० जूपादे

(१७१)

पु० सा० सातलक्षकेन जा० संसारदे पुत्र सा० हेमादियुतेन श्री कुंयु विंबं का० प्र० खरतर गङ्गे श्री जिनसागर सूरिजिः ।

[1726]

सं० १५१० वर्षे ज्यैष्ठ शुदि ६ बुधे श्री कौरंट गङ्गे । उभकेश मङ्गाड्ड वा० सा० श्रवण जा० राजं पु० साह्या जा० सांपू पु० जाऊण सहितेन स्वमातृपितृश्रेयोर्थं श्री चंद्रप्रज विंबं कारितं । प्रति० श्री सांबदेव सूरिजिः

[1727]

सं० १५२४ वर्षे वै० । सु० ३ विद्यापुर वासि श्री श्रीमालि झा० म० लषमीधर जा० जासू पु० म० जूगकेन जा० डीरू छि० जसमादे प्रमु० पुत्रादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री विंबंदनीय गङ्गे श्री कक्क सूरिजिः ।

[1728]

सं० १५३२ वर्षे भार्गशिर सुदि ५ दिने श्री श्रीमाल झातीय श्रे० अर्जन जा० हवकू पु० सहिजाकेन जा० मांनू सु० जूठा जावा स्वस्वपुर्वनिमित्तं कुटुंब० श्री सुमाति नाथ विंबं का० प्र० पूणिमापक्षे जहा० श्री गुणतिलक सूरि प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[1729]

॥ सं० १५७० वर्षे माघ वदि १ श्री श्रीमाल झातीय श्रे० चुंडा जा० चांपसदे सुत वीसा धरणा वीसा जा० माणिकदे पितृमातृश्रेयसे श्री शीतलनाथ विंबं कारितं विष्णु गङ्गे ज० श्री गुणप्रज सूरि पं० श्री तिलकप्रज सूरि प्रतिष्ठितं ॥ साचुरा ॥ ६ ॥

[1730]

सं० १५८० वर्षे वैशाख सुदि १२ शुके प्राग्वाट झातीय महं धना सुत महं जीवा जार्या जसमादे सुत गोगा जार्या रूपाई श्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ विंबं कारितं प्र० श्री तपा गङ्गे हेमविमल सूरिजिः पेथापुर ।

(१७३)

चौविंशती पर ।

[1731]

सं० १४०९ वर्षे आषाढ शुक्ल ५ दिने प्रग्वाट ज्ञातीय मंत्रि वाहङ्ग सुत सिंघा जा० पूजल सुत ठरुआकेन जा० कपूरीयुतेन निजश्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ मूखनायक चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री तपागछाधिप श्री सोमसुन्दर सूरिजिः ।

[1732]

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि राणा संताने श्रे० रत्ना जा० धरणू सुत पूर्णसिंहन जार्या देमाई सहितेन तथा ज्रातृ हरिदास स्वपुत्र पासवीर युतेन श्री अजितनाथ विंशं चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्र० श्री साधुपूर्णिमापके ज० श्री रामचन्द्र सूरि पट्टे शिष्य पूज्य श्री श्री पूर्णचन्द्र सूरीणामुपदेशेन विधिना नारु श्रावकैः ॥

[1733]

सं० १५०० वर्षे वैशाख वदि ११ दिने उपकेश झा० डागतिक गोत्रे । सा० धिना जा० वारू पुत्र संघवी पासवीरेण जा० संपुग्दे सहितेन स्वश्रेयसे श्री संजवादि तीर्थकृच्चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री कोण्टगछे श्रीनन्नाचार्यसंताने श्री कक्कसूरि पट्टे श्री सावदेव सूरिजिः ॥ श्रीः ॥

नन्दीश्वरछीप की देहरी पर ।

[1734]

सं० १००० महा सुदि ५ शुक्ले श्री विजयजिनेन्द्र सूरिजी नन्दीश्वरछीप विंशप्रवेश प्रतिष्ठित श्रीमत्तपागछे श्री गाम वड़नगर दोग पालचन्द जयचन्द स्थापित ।



(१७४)

सिहोर-काठियावाड़ ।

श्री सुर्यश्वनाथजी का मंदिर ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1735]

सं० १४०० वर्षे वैशाख सुदि १२ शुके प्राग्वाट झा० मं० रत्ना जा० रजाई पु० सं०
सहस्रकिरण ज्ञार्या धरण सुत तजदे कुटुंबयुतेन श्री कुंभुनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं
श्री हेमविमल सूरिजिः । बलासर वास्तव्य ॥

[1736]

सं० १५१६ वर्षे चैत्र वदि १ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय व० तयरा जा० वावू सुन
नाणा वड़ीय गोवल जा० हांसू सु० वीरा जा० बांजवदे सुत लालु काण्डु वानर एते
जिनपितृमातृ श्रेयोर्थ श्री श्रेयांसनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं मधुकर गळे ज० ।

[1737]

सं० १५३६ वर्षे पोष वदि गुरु श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० टोश्या जा० लखा सुत
पर्वत ज्ञातृ कमि श्रेयोर्थ जीवितस्वामी श्री नमिनाथ विंभं कारितं श्री आगमगळे श्री
श्री सिंघदत्त सूरिजिः प्रतिष्ठितं विधिना कारितानि ।

पालिताना ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर — माधोलालजी की धर्मशाखा ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[1738]

संवत् १५९५ वर्षे माह शुदि १२ शुके आणंदविमल सूरि वा० चन्दा जा० माहवजी
श्रीवज्रदेव (?) ॥

(१७५)

[1739]

संवत् १६०० [पौ] स वदि ५ सोम० श्रीमाखज्ञातीय सा० हेमा श्रेयसे शा० नाथुजी-
केन धर्मनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[1740]

संवत् १६२६ वर्षे फादुण सुदि ७ सोम उ०सा० झा० व्य० श्री सुमतिनाथ विंबं श्री
हीरविजय सूरिः ॥

[1741]

संवत् १६७० वर्षे माघ सुदि २ दिने ठ। इन्द्राणीता (?) श्री श्री आदि विंबं का० प्र०
तरागढे श्री विजयसेन सूरिजिः ॥

[1742]

संवत् १६८७ वै० शु० ५ शु० स ॥

[1743]

संवत् १७०२ वर्षे मार्गशिर सुदि ६ शु०के श्री अंबलगह्याधिराज पूज्य जट्टारक श्री
कल्याणसागर सूरीश्वराणामुपदेशेन श्री दीव वंदिर वास्तव्य प्राग्वाट क्वातीय नाग गोत्रे मंत्रि
विमल सन्ताने मं० कमलसी पुत्र मं० जीवा पुत्र मं० प्रेमजी सं० प्रागजी मं० आणंदजी
पुत्र केशवजी प्रमुखपरिवारयुतेन स्वपितृ मं० जीवा श्रेयोऽर्थ श्री आदिनाथ विंबं कारितं
प्रतिष्ठितं चतुर्विध श्रीसंघेन ।

[1744]

संवत् १७१२ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने शा० मनजी जार्या बाई मनरंगदेकेन मुनि-
सुवत विंबं का० प्र० श्री विजयसेन सूरि ।

[1745]

सं० १७५८ वर्षे वै० शु० १ सो[म] शा० खिमचंद जार्या विश्व श्री अनन्त विंबं प्र०
ज० श्री विजयरुद्धि सूरि ।

(१९६)

[1746]

संवत् १७४०... ॥ फाट्गुण सुदि २... वासरे उदिने श्री पार्श्वनाथ विंशं प्र० बार्हं स्त्रीमी
जरावती ॥

[1747]

दो० बाघा श्री जीराउलाउ श्री पार्श्वनाथ ।

[1748]

बा० हीराई श्री शान्तिनाथ .. श्री हीरविजयसूरि प्र० ॥

[1749]

संवत् १७०३ वर्षे माघ विदि ५ शुक्ले श्री चन्द्रप्रज विंशं कारापितं श्रीमान्नि वंशं
शा० अनोपचन्द तस्य जार्या बार्हं नाथो अंचल गष्ठे ॥

श्री सिद्धचक्र यन्त्र पर ।

[1750]

संवत् १७५४ ना वर्षे माघ विदि ५ चन्द्रे श्री तपागठे बार्हं दूली तस्यां पुत्री बार्हं
जवळ श्री सिद्धचक्र करारपितं पं० पत्राविज्ञैः (?) प्रतिष्ठितं श्री राजनगर मध्ये ।

चौबीसी पर ।

[1751]

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख विदि ९ रवौ श्री सीरुंज वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० बाला
जा० मानूं सुत श्रेष्ठ समधोःण जा० जासी जा० धर्मादि सुता बाली प्रमुखकृदुम्बयुतेन
स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री तपागठे श्री रत्नशेखर
सूरि पट्टे गठनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिनिः ।

पञ्चतीर्थियों पर ।

[1752]

सं० १४३७ (?)... प्राग्वाट ज्ञातीय शा० बाला जार्या दानू सुत शा० बीगिरेण

(१७७)

श्री पार्श्वनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री देवचन्द्र सूरिजिः ।

[1753]

सं० १५०३ वर्षे आषाढ सुदि १० शुक्ले श्री प्रग्वाट ज्ञातीय श्रे० पीन्वा जार्या लाखणदे
तयोः पुत्रैः श्रे० वीरम धीटा चीगाख्यैः मातृपितृश्रेयोऽर्थ्य श्री मुनिसुव्रतस्वामी विंशं कारितं
प्र० तपागच्छे वृद्धशाखायां श्री जिनरत्नसूरिजिः । श्री सहूआला वास्तव्य ।

[1754]

सं० १५२२ वर्षे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० अस्माल जा० पञ्च पुत्र धना जा० चमकू पुत्र
माधवेन जा० वाड्हो घ्रातृ देवराज जा० समकी देफलावियुतेन श्री सुमति विंशं कारितं
प्र० तपागच्छे श्री सोमसुंदर सूरि श्री मुनिसुंदर सूरि श्री जयचन्द्र सूरिशिष्य श्री श्री
रत्नशेखर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1755]

सं० १५२७ वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे उकेश वंशे कुंकड गोत्रे शा० गुजर पु० शा० देव-
राज पु० आसा पु० शा० समधरेण स्वमातृ चाई पुष्यार्थ श्री कृन्धुनाथ विंशं कारितं प्रति०
श्री खरतरगच्छे श्री विवेकरत्न सूरिजिः ।

[1756]

सं० १५२८ वर्षे वैशाख सुदि १३ सखारि वासि प्रा० सा० जावड़ जा० वारु सुत हर-
दासेन जा० गोमती अतृ देवा जा० धर्मिणियुतेन श्रेयोऽर्थ्य श्री सुमति विंशं का० प्र० तथा
श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[1757]

सं० १५२९ वर्षे माघ सुदि १५ गुरु श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्यव० गद्गगा जार्या वाड्हो
आत्मश्रेयोऽर्थ्य जीवतस्वामी श्री अजितनाथ मुख्य पंचतीर्थी विंशं कारितं श्री पूर्णिमा
पट्टे श्री मुनितिलक सूरि पट्टे श्री राजतिलक सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ जाबू वास्तव्य ।

(१५७)

[1758]

सं० १५२१ वर्षे वैशाख सुदि ६ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय दो० गोपाल जा० सखी सु० पोमाकेन जा० कमकू श्रेयोऽर्थ श्रीसुमतिनाथ विंबं कारितं श्री पूर्णिमापक्षे ज० श्री सागर-
तिलक सूरि पट्टे ज० श्री गुणतिलक सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

[1759]

सं० १५३१ वर्षे माघ वदि ७ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय शा० राजा जा० राजवदे सु०
स० शाह गिकूया जार्या राजाई तथा सु० पासा जीवायुतया स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ
विंबं श्री आगम गष्टे श्री जयानन्द सूरि पट्टे श्री देवरत्न सूरि गुरुउपदेशेन कारितं
प्रतिष्ठापितं च ॥ शुभं जवतु ॥ श्री स्तम्भतीर्थ ॥ १४ ॥

[1760]

सं० १५४० वर्षे वैशाख सुदि ३ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय म० देवसी जा० देवहणदे
पुत्र सहिजाकेन जा० धनी पुत्र गंगदास सचू हांसा ज्ञातृ कीपा प्रमुखकूटुम्बयुतेन पितृ-
निमित्तं स्वश्रेयसे च श्री कुन्थुनाथ विंबं श्री पूर्णिमापक्षे श्री सौजाग्यरत्न सूरिणामुपदेशेन
का० प्र० विधिना श्री लीवार्सी ग्रामे ॥

[1761]

सं० १५५२ वर्षे माघ वदि १२ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय प० सधा जा० अमकू सु० प०
मूलाकेन जा० हांसी सु० हर्षा लषा सहितेन स्वश्रेयोऽर्थ श्री सम्भवनाथ विंबं कारितं
प्रतिष्ठितं श्री बृहत्तपापक्षे ज० श्री उदयसागर सूरिजिः ॥ श्री पत्तने ॥

[1762]

सं० १६३७ वर्षे माघ वदि ९ शनौ श्री दीव वास्तवश श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघुशाखा-
मण्डन श्रे० काषा जा० कामलदे सुत कक्की जार्या हर्षादे सुत सचवीर जार्या सहिजलदे
सुत हीरजी जार्या हीरादे श्री आदिनाथ विंबं कारितं तपागष्टे श्री हीरविजयसूरिजिः
प्रतिष्ठितं ॥ ७ ॥

(१७९)

[1763]

सं० १६५१ वर्षे मार्गशीर्षे वदि ४ गुरौ दो० वेधराजकेन निजश्रेयसे श्री शान्तिनाथ
त्रिंशं कारितं प्रतिष्ठितं च तपापक्षे श्री हीरविजयसूरिश्वरैः चार्या मोक्षादे सुत धनजी
प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्री दीवचन्द्र वास्तव्येन ॥ श्री रस्तु ॥

[1764]

सं० १६५६ वर्षे फाट्गुण वदि २ गुरौ दीवचन्द्र वास्तव्य श्रोतवाह झातीय बाई
मनाईक्या निजश्रेयसे श्री समन्तनाथ त्रिंशं कारितं प्रतिष्ठितं च तपागङ्गाधिगज परम-
गुरु श्री ६ विजयसेन सूरिभिः परिकरसहितैः ।



शत्रुंजय तीर्थ ।

दिगम्बर मन्दिर ।

श्री शान्तिनाथजी की मूर्ति पर ।

[1765] *

सं० १६७६ वर्षे वैशाख सुदि ५ बुधे शाके १५५१ वर्त्तमाने श्री मूलसंधे सरस्वतीगङ्गे
वसन्तकारकगणे श्री कुंदकुंदान्वये चट्टारक श्री सकलकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे ज० श्री चुवन-
कीर्त्ति देवास्तत् पट्टे ज० श्री ज्ञानचूषण देवास्तत्पट्टे ज० श्री विजयकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे ज०
श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे ज० श्री सुमतिकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे ज० श्री गुणकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे
ज० श्री वादिचूषण देवास्तत्पट्टे ज० श्री रामकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे ज० श्री पद्मनन्दि गुरुपदे-
शात् पादशाह श्री साहजांड विजयराज्ये श्री गुर्जरदेशे श्री अहमदाबाद वास्तव्य हुंघड़
झातीय बृहन्नाखीय वाग्बर देश स्थातरीय नगर नौतनचन्द्रप्रसादोद्धारणधारजाज (?) सं०
जोजा ज्ञा० सं० खक्रु सं० संवस्ता ज्ञा० सं० रनादे तयोः सुत ब्रह्मचर्यव्रतप्रतिपालनेन

* यह लेख " जैन मित्र " माघ वदी २ वीर सं० २४४७ के अङ्क से मिला है ।

पवित्रीकृतनिजांग सप्तद्वेत्रारोपितस्वकीयवित्त सं० छटकणा जा० सं० छलतादे तयोः
सुत जितकुषकमसत्रिकाशनैकसूर्यावतारः दत्तगुणैः नृपतिभ्रयांससप्तः श्री जिनविंशं
प्रतिष्ठातीर्थयात्रादिधर्मकर्मकरणोत्सुकवित्त संघपति श्री रत्नसो जा० सि० रुपादे
द्वि० जा० सं० मोहणदे तृतीय जा० सं० नवरंबदे द्वितीय सुत संघवी श्री रामजी जा०
सं० केशरदे तयोः सुत संघवी कूंगरसी जा० सं० जाऊसदे द्वितीय सुत संघवी शुद्धमती
जा० सं० मसतादे एतेषां महासिद्धक्षेत्र श्री सेत्रुंजय रत्नगिरौ श्री जिनप्रासाद श्री
शंतिनाथ विंशं कारयित्वा नित्यं प्रणमति । शुभं जवतु ।



चोरवाड़-जुनागढ ।

जैन मन्दिर ।

शिक्षा सेख ।

[1766]

- १ । सुरमाण्डलविशाख नगर श्री चोरवाटके रुचिरचिंतामणि पार्श्वनाथ विज्ञोश्च पद-
रजस्य तद् सुत व.
- २ । सी । सायर तनयो । आंवाख्यस्तत्र चादिमो गुणवान् । द्वितीयो मनाद्विधानो जिन-
धर्म रतः कृपामासः ॥ २ ॥ आं
- ३ । बाख्यस्य तनुजः सुत्रिवेकः समरसिंह इत्याहः । वेवगुरुजक्तिपरमः तद् सुतु केव-
पासाख्यः ॥ ३ ॥ श्री
- ४ । सं० १५२७ वर्षे वैशाख सुदि तृतीया गुरौ । श्री मंगलपुर वास्तव्यः । श्री उसकाख
द्वितीय सोनी साय-
- ५ । रजनदे सुत सोनी आंवा जार्या बार्इ सहित सुत सोनी समरसी जार्या मनार्इ अपर
जार्या सखबार्इ

(१७२)

रोका बीमा स्वचार्या पितृमातृश्रेयोर्य श्री कुंथुनाथ विंभं का० प्र० श्री आगम गङ्गे श्री
आनन्दप्रज्ञ सूरिजिः आबरणि वास्तव्य ।

[1870]

सं० १५३६ वर्षे आषाढ सुदि ६ श्री अ्योसवाल झाती सा० पाळा चार्या वरुषू सुत
गोविन्द ज्ञा० गंगादे नाम्ना आत्मश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंभं कारितं प्र० बृहत्तपा पद्दे ज०
जिनरत्न सूरिजिः

[1771]

सं० १५५५ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ घनौघ वास्तव्य श्री उंसवाल झा० सा० गोगन
ज्ञा० गुरदे सुत हांसाकेन ज्ञा० कस्तुराई सहितेन स्वश्रेयसे श्री अजितनाथ विंभं का० श्री
बृहत्तपा गङ्गे ज० श्री धर्मरत्न सूरिजिः ।

[1772]

सं० १५५५ वर्षे वै० सु० ३ शनौ श्री श्रीमाल झा० मनोरद ज्ञा० मांकी सु० वाहराज
ज्ञा० जीविनी सु० देवदासेन ज्ञा० दगा सु० पासा करन धर्मदास सूरदास युनेन श्री
त्रिमलनाथ विंभं कारितं श्री अंनलगङ्गे श्री सिद्धांतसागर सूरि गुरुपदेशात् ।

[1773]

सं० १५५७ वर्षे पोष वदि ६ रत्रौ घनौघ वासी श्री श्रीमाल झा० सा० माईया ज्ञा०
जीवी सुत कानाकेन स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ विंभं का० प्र० श्री बृहत्तपा पद्दे श्री लक्ष्मी-
सागर सूरिजिः । श्रेयो जवतु पूजकस्य ।

[1774]

सं० १५५३ वर्षे वै० सु० ११ शुक्ले श्री श्रीवंशे मं० माईया सुत मं० मूखा ज्ञा० रमा
सुश्राविकया सुत मं० घना मेघा रामा सहितया निजश्रेयार्थ श्री सुमतिनाथ विंभं का०
प्र० धर्मवह्मज सूरिजिः श्री जांबू ग्रामे ।

(१७३)

चौविंशो पर ।

[1775]

सं० १५१२ वर्षे फा० शु० शनौ श्री श्रीमाला ज्ञातीय मं० कहा चार्या राजुस्र सुत सिंह-
राज मं० विरुपाकेन पितृमातृत्रातृश्रेयोर्य श्री कुंथुनाथ चतुर्विंशति जिनपट्टः का० श्री
ज० गुणसुंदर सूरिजिः ।

[1776]

सं० १५२४ वर्षे आ० सुदि १० शुके श्री श्रीवंशे मं० सांगन जा० सोहागदे पुत्र मं०
वीरधवल जा० गुरी पु० खेतसी जन्मनाम्ना जूठाकेन मं० चार्या जयतल्लदे त्रातृ काला
चडघा चारपुत्र चोजा देवसी धीरा प्रमुखसमस्तकुटुम्बसहितेन तत्पितृश्रेयोर्य श्री अंचल-
गहेश्वर श्री जयकेसरी सूरिणामुपदेशेन श्री नमिनाथ चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्री श्री-
संघेन श्री मिहुंझड़ा ग्रामे ।



शीयालबेट-काठियावाड़ ।

जैन मंदिर ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[1777]

- १ । उं संवत् १२७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ रवौ अद्येह
- २ । टिंवानके मिहरराज श्री रणसिंह प्रतिपत्तौ समस्तसंघेन श्री महावी-
- ३ । र बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चन्द्रगुह्य श्री शान्तिप्रज्ञ सूरि शिष्यैः श्री हरिप्रज्ञ
सूरिजिः ॥

(१७४)

[1778]*

ए० ॥ सं० १३०० वर्षे वैशाख वदि ११ बुधे श्री सहजिगपुर वास्तव्य पल्ली० ज्ञातीय
ठ० देदा जार्या करूदेवी कुक्षिसंचूत परी० महीपात्र महीचन्द्र तत् सुत रतनपाल विजय-
पालैर्निजपूर्वज ठ० शंकर जार्या लक्ष्मी कुक्षिसंचूतस्य संघपति मू० धगदेवस्य निजपरि-
वार सहितस्य योग्यं देवकुक्षिकात्तहिनं श्री मङ्गिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चन्द्र-
गङ्गीय श्री हरिप्रन्न सूरिशिष्यैः श्री यशोन्नद सूरितिः ॥ ७ ॥ मंगलमस्तु ॥ ७ ॥

[1779]*

सं० १३१५ फाट्गुण वदि ७ शनौ अनुगधा नक्षत्रे अद्येह श्री मधुमत्यां श्री महावीर
देवचैत्ये प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठ आमदेव सुत श्री सयात्र सुत गंधि चिब्राकेन आत्मनः
श्रयर्थं श्री पार्श्वनाथ देव विंवं कारितं चन्द्रगङ्गे श्री यशोन्नद सूरितिः प्रतिष्ठितं ।

[1780]*

सं० १३२० माघ सुदि गुरौ प्राग्वाट ज्ञात प्र व्य० वीरदत्त सुत व्य० जासा
जार्या माठिकया स्वश्रेयर्थं रांकागङ्गीय श्री महीचन्द्र सूरितिः महावीर चैत्ये श्री रूपनदेव
विंवं कारितं ।

* वहां के गोखमण्डी में भोयरे के पास पढ़े हुए मूर्तियों पर ये लेख हैं ।



जामनगर-काठियावाड़ ।

श्री शांतिनाथजी का मन्दिर—वर्द्धमान सेठवाला ।

शिला लेख

[1781]

(शिरोनाग) जाम श्री लक्ष्मणराज्ये ॥

- १ । ॥ ए०० ॥ श्री मत्तार्श्वजिनः प्रमोदकरणः कव्याणकंदांबुदो । वि.
- २ । श्रव्याधिहरः सुगसुग्नरैः संस्तूयमानक्रमः ॥ सपर्णाको जविनां म.
- ३ । नोरथतरुव्यूहे वसंतोपमः । कारुण्यावसथः कलाधरमुखो नी-
- ४ । लत्रविः पातु वः ॥ १ ॥ श्रीङ्गां करोत्यविरतं । कमलाविज्ञास । स्थानं
- ५ । विचार्य कमनीयमनंतशोचं । श्री उज्जयंतनिकटे विकटाधिना-
- ६ । थे । हाह्वारदेश अवनि प्रमदाललामे ॥ २ ॥ उत्तुंगतोरणमनोहर-
- ७ । वीतराग । प्रासादपंक्तिरचनारुचिरीकृतोर्वी । नंद्यान्नवीनग-
- ८ । री क्लितिसुन्दरीणां वद्धः(ः)स्थले ललति साहि लक्ष्मनिकेव ॥ ३ ॥ सौराष्ट्रना-
- ९ । थः प्रणतिं विधत्ते । कडाधिपो यस्य जयाद्धिनेति । अर्द्धासनं यद्धति मालवशो
- १० । जीव्याद्यशोऽजितस्त्रकुजावतंसः ॥ ४ ॥ श्रीवीरपट्टक्रमसंगतोऽभूत् जाम्या-
- ११ । धिकः श्रीविजयेंडुसूरिः । श्रीमंधरैः प्रस्तुतसाधुमार्गश्चक्रेश्वरोदत्तवरप्रसा-
- १२ । दः ॥ ५ ॥ सम्यक्त्वमार्गो हि यशोधनाहो । दृढीकृतो यत् सपरिष्ठदोऽपि ।
- १३ । संस्थापित श्रीविधिपद्मगत्रः । संघैश्चतुर्धा परिसेव्यमानः ॥ ६ ॥ पट्टे तदीये ज-
- १४ । यसिंहसूरिः । श्री धर्मघोषोऽय महेन्द्रसिंहः । सिंहप्रजश्चाजितसिंहसूरि ।
- १५ । देवेंद्रसिंहः कविचक्रवर्ती ॥ ७ ॥ धर्मप्रजः सिंहविशेषकाहः । श्री मा-

* जामनगर का सेठ वर्द्धमान शाहका बनाया हुआ प्रसिद्ध मन्दिर का यह लेख वहां के पण्डित हीरालालजी हंस-
राजजी ने अपने “ जैनधर्म नो प्राचीन इतिहास ” नामक पुस्तक के २ य भाग के पृष्ठ १७७-१७९ में अक्षरान्तर छपाया
था, आचार्य महाराज मुनि जिनविजयजी ने अपने “ प्राचीन जैन लेख संग्रह ” के २ य भागमें पृष्ठ २६६ से २६८ में
प्रकाशित किया है, परन्तु मूल शिलालेख की प्रत्येक पंक्तियां दोनोंमें स्पष्ट नहीं हैं इस कारण यहां पुनः प्रकाशित किया गया ।

- १६ । नू महेंद्रप्रजसूरिरार्थः ॥ श्रीमेरुतुंगोऽमितशक्तिमांश्च । कीर्त्यद्भुतः श्री ज-
१७ । यकीर्ति सूरिः ॥ ७ ॥ वादिद्विपौषे जयकेसरीशः । सिद्धांतसिंधुर्धुवि जा-
१८ । वसिंधुः । सूरेश्वरश्रीगुणशेवधिश्च । श्री धर्ममूर्तिर्मधुदीपमूर्तिः ॥ ९ ॥
१९ । यस्यांघ्रिपंकज निरंतरसुप्रसन्नात् । सम्यक्फलं तिसमनोरथवृहमाळाः ॥ श्री-
२० । धर्ममूर्तिपदपद्ममनोज्ञहंसः । कल्याणसागरगुरुर्ज्ञयताऋरिज्यां ॥ १० ॥
२१ । पंचाणुवतपालकः स करुणः कल्पद्रुमाजः सतां । गंतीरादिगुणोज्वलः शु-
२२ । जवतां श्रीजैनधर्मे मतिः । छे काव्ये समतादरः हितितले श्री उंसवंशे विजुः
२३ । श्रीमद्व्याखणगोत्रजो वरतरोऽचूत् साहि सींहाजिधः ॥ ११ ॥ तदीय पुत्रो हरपालना-
२४ । मा देवाच्चनंदोऽथ स पर्वतोऽचूत् । बहुस्ततः श्रीअमरात्तु सिंहो । जाग्याधिकः कोटि-
२५ । कलाप्रवीणः ॥ १२ ॥ श्रीमतोऽमरसिंहस्य । पुत्रामुक्ताफलोपमाः । वर्द्धमानचांपसिंह
२६ । पद्मसिंहा अमीत्रयः ॥ १३ ॥ साहि श्री वर्द्धमानस्य । नंदनाश्वंदनोपमाः । वीराहो
२७ । विजपालाख्यो जामो हि जगकूस्तथा ॥ १४ ॥ मंत्रीश पद्मसिंहस्य । पुत्रारत्नोपमा
स्त्रयः ।
२८ । श्रीश्रीपालकुंरपाल । रणमद्व्या वरा इमे ॥ १५ ॥ श्रीश्रीपालांगजो जीया । नारायणो
मनो-
२९ । हरः । तदंगजः कामरूमः कृष्णदासो महोदयः ॥ १६ ॥ साहि श्रीकुंरपालस्य । वर्त्तते
ऽन्व-
३० । यदीपकौ । सुशीलस्थावराख्यश्च । वाघजिज्ञाग्यसुन्दरः ॥ १७ ॥ स्वपरिकरयुताज्यामं-
मात्य-
३१ । शिरोरत्नाज्यां साहि श्रीवर्द्धमानपद्मसिंहाज्यां हृद्धारवेशे नव्यनगरे जाम श्रीशत्रु-
शब्दार्तमज
३२ । श्री जसवन्तजी विजयिराज्ये श्री अंचलगणेश श्री कल्याणसागर सूरेश्वराणामुप-
देशेनात्र श्री शां-
३३ । तिनाथप्रासादादिपुण्यकृत्यं श्रीशांतिनाथप्रभृत्येकाधिकपंचशत्प्रतिमाप्रतिष्ठायुगं कारा-

३४ । पितं चाद्या सं० १६७६ वैशाख शुक्ल ३ बुधवासरे द्वितीया सं० १६७७ वैशाख शुक्ल ५ शुक्रवासरे

३५ । सं० १६७७ मार्गशीर्ष शुक्ल ३ गुरुवासरे उपाध्याय श्रीविनयसागरगणैः शिष्य सौजाग्यसागरैः

(अधो जाग)

३६ । रत्नेखीयं प्रशस्तिः ॥ मनमोहनसागरप्रासाद

(वाम जाग)

३७ । मंत्रीश्वर श्रीवर्द्धमान पद्मसिंहाज्यां सप्तलक्षरूप्यमुद्रिकाव्ययीकृतानवक्षेत्रेषु साहि श्रीचांपसिंहस्य पुत्रैः श्रीअमियाजिधः । तदंगजौ शुद्धमती । रामजीमाबुजावपि १७ ॥

श्री आदीश्वरजी का मन्दिर ।

[1782]

- | | |
|-------------------------------------------|----------------------------------------|
| १ । उं श्री गौतमस्वामीनि खब्धि ॥ ज- | २ । द्वारक चक्रवर्ति जट्टारक श्री |
| ३ । हीरविजय सूरेश्वर चरण पादु | ४ । काज्यो नमः ॥ सं० १६३३ वर्षे परम |
| ५ । गुरु श्रीमत्तपागढाधिराज सकल- | ६ । जट्टारकपुरंदर जट्टारक श्री हीरवि- |
| ७ । जय सूरिराज्ये तथा जाम श्री शत्रुशत्रु | ७ । राज्ये प। श्रीरविसागर गणि विशिष्यो |
| ८ । पदेशेन नवीननगर सकल संघ मु- | १० । खसंधेन स्वश्रेयसे नवीनशिख- |
| ११ । रं बध्वा प्रासादः कारितः ॥ ततो अक- | ११ । वर सुरत्राण प्रेषित मुग्गलैरुप- |
| १३ । डवकरणान्तरं जट्टारक श्री श्री | १४ । हीरविजय सूरि पटोदयाद्रिदिन- |
| १५ । कर जट्टारक श्री ५ श्री विजय से- | १६ । न सूरिराज्ये ॥ सं० १६५१ वर्षे |
| १७ । श्री श्रीमाखी ज्ञातीय । जणसाखी | १७ । आणन्द जणसाखी अबजीच्यां |
| १८ । जणसाखी आणन्द सुत जीवरा- | १८ । ज मेघराज प्रमुखसकलकुटुं- |
| १९ । वयुतान्यामेक त्रिंशत् सहस्र | १९ । ३१००० रूप्य मुद्राव्ययेन पुनर- |
| २० । पि तथैव कारितं । सांप्रतं विज- | २० । यमान आचार्य श्री श्री श्री ३ श्री |

- २५ । विजयदेव सूरीश्वर प्रसादात् । २६ । चिरं तिष्ठतु । शिवमस्तु सकल सं-
२७ । घस्य ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ आदिनाथ २८ । आवां कृतः । प्रासादनामविजयचूषणः
प्रासादः



तालाजा-काठियावाड ।

पाषाण के चरणचौकी पर ।

[1783]*

उं सं० १३०२ वैशाख सु० ३ धवलकक्का वास्तव्य उ० पदमसीह सुत उ० जाला उ०
मदन जयता तेन ॥ उ० मदन जार्या उ० लष्मा देवी श्रेयोर्थ सुत उ० पाटङ्गेन श्री महा-
वीर बिंभं पट्टकं च प्रतिष्ठितं आचार्य श्री माणिक्य सूरिजिः ।

[1784]

- १ । सं० १२१९ वर्षे दण्ड श्री धांध प्रभृति पञ्चकुलन श्री मुनिसुवतस्वामी देवा
- २ । णि पा विशेषपूजाप्रत्ययमण्डपिकायां प्रतिवर्षा हो
- ३ । इ (१) ४ चतुर्विंशतिद्रुमाः । इ० खवमादेश । बहुजिर्वसु
- ४ । [धा चुक्ता] राजनिः सगरादिजिः । यस्य यस्य यदा जूमि तस्य तस्य
- ५ । तदा फलं ॥ १ ॥ तथा समस्तप्रमदाकुलाय अ पूर्णिमादि
- ६ । (रके) ४ चत्वारि द्रुमाश्च ॥ पञ्चकुलसमहे देवद....
- ७ । इ ४ पीजारु—इ ३४ रक्षपटा
- ८ । —मठाय



* यह लेख तालाजा से पूर्व में हजुरापीर की कदर से मिली हुई मूर्तिरहित पाषाण की चरण चौकी पर है और भावनगर वारटुब लाइब्रेरी के म्युजियम में सुरक्षित है ।

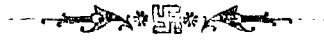
(१७७)

माङ्गरोल-काठियावाड ।

पाषाण की मूर्ति पर ।

[1785] *

- १ । उं ॥ सं० ११५३ वर्षे आषाढ सुदि ४ शनौ ठ० चाविगठ महं वछराजे(न आ)त्म-
श्रेयोर्य श्री मुनिसुव्रतस्वामि प्रतिमा
- २ । कारिना प्रतिष्ठिता च श्री देवचन्द्र सूरि शिष्यैः श्री जिनचन्द्र सूरिभिः ॥



वेरावल-काठियावाड ।

शिला लेख ।

[1786] †

- १ । इन्द्रिवन्नाति नित्यमद्यापि वारिधौ ॥ श्रे(?) प्रपा(सा) दचीष्ट संसिद्धयै
मुग्धं चन्द्रप्रज्ञं
- २ । ह्य पाटकाख्यं पत्तनं तद्विराजते ॥ ३ ॥ मन्ये वेधा विधायैतद्विधिस्तुः
पुनरीह दे
- ३ । रेन्द्रैन्नत्रयमंत्रैर्यत्रलक्ष्मीः स्थिरीकृता ॥ ५ ॥ तन्निःशेषमहीपालमौलीः
घृष्टांछि
- ४ । सौ नृपः । तेनोत्खातासुन्मूक्षो मूलराजः स उच्यते ॥ ७ ॥ एकैकाधिकेजूपात्रा
सम
- ५ । सत्रजखुराहतं । अतुष्ठलत्युयं पर्वत्रममजीजनत् ॥ ९ ॥ पौरुषेण प्रज्ञापेन
पुण्येन ...

* यह लेख रावली मसजीद के पास खुदाई में निकली हुई मूर्ति के चरणचीकी पर है ।

† यह लेख वहां के फौजदारी उतारे में रखा हुआ है ।

- ६ । र न्यूनविक्रमः । श्री जीमन्नूपतिस्तेषां राज्यं प्राज्यं करोत्ययं ॥ ११ ॥
जावाहराण्यनघ्राणि यो वसङ्गम(वन्नजम)
- ७ । झंदि संघे गणेश्वराः । षट्शुभुः कुंदकुंदाख्या साहात्कृतजगत्रयाः ॥ १३ ॥ येषा-
माकाशगामित्वं त्य ।
- ८ । शत(पं)चकमुज्वलं । रमयित्वाथ जन्मांतियेऽन्यन्नियमपुर्वकं ॥ १४ ॥ कालेऽ-
स्मिन् चारते क्षेत्रे जाता
- ९ । रीणा तत्व वर्त्मनि तेषां चारित्रिणो बंशे चूरयः सूरयोऽजवन् ॥ १७ ॥ सद्दृष्टेषाद्य-
पि निद्वेषाः सकलापंकः
- १० । प्रजा यस्या रुरोह तत् । श्रीकीर्त्ति प्राप्य सत्कीर्त्ति सूरिं चूरिगुणं ततः ॥ १९ ॥ यदीयं
देशनावारिं सम्यग् वि(प्रो)
- ११ । कश्चित्रकूटाच्च चाखसः श्रीमन्नेमिजिनाधिशः तीर्थयात्रानिमित्ततः ॥ २१ ॥
अणहिल्लपुरं रम्यमाजगा
- १२ । नीडाय ददौ नृपः । विरुदं मण्डलाचार्यः सङ्घत्रं ससुखासनं ॥ २३ ॥ श्रीमुखवसंति-
कारुयं जिनचवनं तत्र
- १३ । संह्यैव यतीश्वरः । उच्यतेऽजितचन्दोयस्ततो चूत् स गणीश्वरः ॥ २४ ॥ चारु
कीर्त्तियशः कीर्त्तिश्च
- १४ । युक्तो को रत्नत्रयवानपि । यथावद्विदितात्मां साचूत् क्षेमकीर्त्तिस्ततो गणि
॥ २७ ॥ उदेतिस्म लसद्ज्योति
- १५ । क्षेपिकासिते हेमसूरिणा वस्तू प्रायरणं येन वशे लेयिनं ॥ २९ ॥
पू
- १६ । कीर्त्तिर्यत्कीर्त्तिर्लक्षको व । त्रिचुवनस वासुकिं नूपुरशशितिलक-
निषव्या ॥ ३१ ॥ ते
- १७ । ति ॥ ३२ ॥ सञ्जुहुतसमुष्ठन्नश्चीर्णजीर्णजिनालयः । यः कृता रत्ननिर्वाहेसमुत्साह
शिरोमणि

- १८ । शयैरवगणयते ॥ ३४ ॥ वादिनो यत्पद छन्दनखचन्द्रेषु बिंबिताः । कुर्वते विगत
श्रीकाः कलक
- १९ । दं तीर्थभूतमनादिकं ॥ ३६ ॥ सातायाः स्थापना यत्र सामेशः पद्मपातकृत् । प्रनो-
स्त्रैलोक्य
- २० । तदुद्धृततेन जातोद्धारमनेकशः ॥ ३७ ॥ चैत्यमिदं ध्वजमिषतो निजजुजमुद्धृत्य सक
- २१ । षतो मंडलगणि ललितकीर्तिं सुकीर्तिः । चतुरधिकविंशति जसध्वजपटपट्टहंसूक ॥
- २२ । मेतदीय सजोष्टिकानामपि गल्लकानां ॥ ४१ ॥ यस्य स्तानपयोनुल्लिसमखिलं जुष्टं
दवी
- २३ । चन्द्रप्रज्ञः स प्रजुस्तीरे पश्चिमसागरस्य जयताद्विग्यससां शासनं ॥ ४२ ॥ जिन
पतिगृह
- २४ । चाणवर्णिवर्यो व्रतविनयसमेतैः शिष्यवर्गेरुपेनैः ॥ ४३ ॥ श्रीमद्विक्रम चूपस्य
वर्षाणां द्वादशे
- २५ । क कीर्तिं लघुबंधुः । चक्रे प्रशस्तिः मनघो गणि प्रवरकीर्तिरिमां ॥ ४५ ॥
सं० १२

जैन मंदिर ।

शिला लेख ।

[1787]

- १ । ॥ ६ ॥ १७० ॥ संवत् १७९६ वर्षे शाके १७४१ प्रवर्त-
२ । माने माघ मासे शुक्लपक्षे अष्टमी तिथौ शनिवा-
३ । सरे श्री देवका पाटण नगरे श्री चन्द्रप्रज्ञ जि-
४ । न जीर्णोद्धार समस्त संघेन कारापितं नद्वार-
५ । क श्री श्री विजयजिणेन्द्र सूरि उपदेशात् श्री
६ । मांगलोर वास्तव्य शा० नानजी जयकरण
७ । सुत मकनर्जा ॥ ७ ॥ सुन्दरजीकेन जीर्णोद्धार-

(१९१)

- ८ । र प्रतिष्ठा कारापितं जट्टारकं श्री श्री विजय-
ए । जिणेन्द्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री मत्तपागळे
१० । जब लग मेरु अडग है तब लग शशि ओ-
११ । र सूर । जिहां लग ए पटक सदा रहजो स्थि-
१२ । र जरपूर १ वि । वजीर ज्योति लोकविजयेन ।



गाणेश्वर-गुजरात ।

जैन मन्दिर ।

शिखा लेख ।

[1788]

- १ । ॥ ए० ॥ स्वस्ति सं० ११११ वर्षे वैशाख सुदि १४ गुरौ श्रीमदणहिलपुर वास्तव्य
प्राग्वाट ठ० श्री चण्डपात्मज ठ० (चं)
२ । डप्रसादांगज ठ० श्री सोमतनुज ठ० श्री आशाराज तनुजन्म ठ० श्री कुमारदेवी-
कुक्षिसमुद्भूत ठ० लूणि(ग)
३ । महं० श्रीमालदेवयोरनुजमहं० श्री तेजःपालाग्रज महामात्य श्री वस्तुपालात्मज महं०
श्री जयतसिंह (स्तम्भ)
४ । तीर्थमुद्राव्यापारं सं ३९ वर्ष पूर्व व्यावृण्वति महामात्य श्री वस्तुपाल महं० श्री
तेजःपालाच्यां समस्तमहातीर्थेषु
५ । तथा अन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽग्निवधर्मस्थानानि जीर्णोद्धारश्च कारिताः
तथा सचिवेश्वर श्री वस्तु-
६ । पात्रेन आत्मनः पुण्यार्थमिह गाणउलि ग्रामे प्रपा श्रीगाणेश्वरदेवमण्डपः पुरतस्तोरणं
(अपर)तः प्रतोलीद्वारालं(क)

- ७ । त प्राकारश्च कारितः ॥ ७ ॥ गांजीर्ये जलधिर्विर्वितरणे पूषा प्रतापे स्मरः सौन्दर्ये
पुरुषव्रते रघुपति वाचस्पतिर्वा
- ८ । ये । लोकेऽस्मिन्नुपमानतामुपगताः सर्वे पुनः सम्प्रति प्राप्तास्तेऽप्युपमेयतां तदधिके श्री
वस्तुपाले सति ॥ १ ॥ विद(धति)
- ९ । त्रिदग्धमतयस्तुल्यौ कौटिह्यवस्तुपालौ ये । ते कुर्वते न कस्मात्कूपाकूपारयोः समतां
॥ २ ॥ वदनं वस्तुपाल(स्य)
- १० । कमलं को न मन्यते । यत् सूर्यालोकने स्मरं जवति प्रतिवासरं ॥ ३ ॥ श्री वस्तुपाल
सम्प्रति परं महति कर्म(कुर्व)
- ११ । ता जवता । निर्वृतिरर्थिजने च प्रत्यर्थिजने च संघटिता ॥ ४ ॥ तस्मै स्वस्ति चिरं
चुलुभ्यतिस्रकामाल्याय
- १२ । क्रान्तक्रतुकर्मनिर्मलमतिः सौवस्तिकः शंसति । राधे येन विना विना च शिक्विना
ि य ना ि
- १३ । द्वासित मम्मटाः स्वसदनं गङ्गति सन्तः सदा ॥ ५ ॥ महामाल्य श्री वस्तुपालस्य
प्र(शस्तिरियं)



प्रभास पाटण - गुजरात ।

बावनजिनालय मन्दिर ।

मूर्तियों पर ।

[1780]

- १ । उ० हीरा देवि पितृ० वीरदेव मातृ सक्तं संघ० पेथरु संघ० कूशुरा संघ० पदमेख
महं० वि(कम)सी वयजलदेवि महं० आद्वहणसीह महं० महणसीह व्यव० सायण
सो० महिपाल मातृ सक्त

- १ । उ० रत्न उ० लूणी ॥ उ० ॥ भीमसीह श्रे० डोकर उ० धडलसीह उ० धांध श्रे०
आमुल नागल श्रे० नागसूर राजल सा० वस्तुगल धांधलदेवि उ० बरदेव उ० महतू
३ । फो० रिणसीह उ० महणा बड़हरा अरसीह राजपाल श्रे० रतना जा० रामसीह मातृ
लक्ष्मी कर्मसी दो० लूणा उ० पाता श्रीयादेवी सूहव उ० पतसीह उ० सिरि
४ । उ० सीहा ॥ मातृ० वालिणि उ० वयरसीह फो० धरणिग धाधलदेवि राजल ॥ बापई
बा० तेजी उ० तिहुणपाल उ० लाठि फो० मूणा सुपल प छा० सोवल कामलदेवि
उ० लषमीधर ।

चरणचौकी पर ।

[1790] *

- १ । ॥ ए० ॥ सं० १६९९ वर्षे फाट्गुन सित छादशी सोमवासे श्री छीप बन्दिर वास्तव्य
वृद्धशाखीय उकेश ज्ञातीय सा० सुदुणसी जार्या संपूराई सुत सा० सिवराज नाम्ना
श्री कुंकुमरोल पार्श्व बिंबं सपरिकरं कारितं प्रतिष्ठितं च स्वप्रतिष्ठायां । प्रति-
२ । ष्टितं च तपागछाधिराज जटारक श्री १ए श्री हीरविजय सूरीश्वर पट्टालंकार जट
श्री १ए श्री विजयसेन सूरीश्वरपट्टप्रजाकर जटारक प्रभु श्री १ए श्री विजयदेव
सूरिजिः । स्वपट्टप्रतिष्ठिताचार्य श्री ५ श्री विजयसिंह सूरिजिः साथा(?)स्वशिष्योपा-
ध्याय श्री ५ श्री लावण्यगणिप्रमुखपरिकरितैः ॥ शुभं जवतु ॥ श्री ॥

[1791] †

- १ । सं० १३३० वैशाख सुदि(२) शनौ पल्लीवाल ज्ञातीय उ० आसाढ़ उ० आसापद्माच्य
जा० जाट्ट श्रेयोर्थ
२ । श्री मल्लिनाथ बिंबं उ० आसपालेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री पूर्णजट सूरिजिः ।

[1792] †

- १ । ॥ उं सं० १३४० ज्येष्ठ वदि १० शुक्रे पल्लीवाल जा० वीरपाल जा० पूर्णसिंह जा० व

* यह लेख जमीन से निकली हुई मूर्ति के चरणचौकी पर है।

† मल्लिनाथ महादेव के मन्दिर के पास पड़ी हुई खण्डित मूर्तियों पर ये लेख हैं।

- २ । जलदेवि पु० कुमरिसिंह केसिसिंह जा० ठ०.....आत्मश्रेयोर्थ ॥ श्री पार्श्वनाथ विंबं का-
३ । रितं प्रतिष्ठितं श्री कोरंटीकीय सूरिभिः शुभं ॥



खंभात-गुजरात ।

श्री आर्दीश्वर जगवान का मन्दिर ।

शिखा लेख

[1793]

- १ । ॥ ए० ॥ ॐ नमः श्री सर्वज्ञाय ॥ धीराः सत्वमुशंति यच्चिबुवने (यन्नेति) नेति श्रुत
साहित्योपनिषद्भि
२ । षण्णमनसो यत् प्रतिज्ञं मन्वते सार्वज्ञं च यदा मनंति मुनयस्तत्किंचिदत्यद्भुतं ज्योति-
र्योतितवि-
३ । ष्टपं वितनुतां जुक्तिं च मुक्तिं च वः ॥ १ ॥ श्री मद्गुर्जरचक्रवर्तिनगरप्राप्त प्रतिष्ठो
ऽजनि प्राग्वाटाह्वयर-
४ । म्य वंशविलसन्मुक्तामणिश्रृङ्गपः ॥ यः संप्राप्य समुद्रतां किल दधौ राजप्रसादोल्लसद्दि-
वकूञ्जकष-
५ । कीर्त्तिशुभ्रसहरीः श्रीमंतमंतर्जिनं ॥ २ ॥ अजनिरजनिजानिज्योतिरुद्योतकीर्त्तिस्त्रिज-
गति तनुज-
६ । न्मातस्य चण्डप्रसादः ॥ नखमणिसख(शार्ड)सुन्दरः पाणिपद्मः कमकृत न कृताभं
यस्य कदपद्रुकदपः
७ । ॥ ३ ॥ पत्नी तस्या जायतात्पायताक्षी मूर्त्तेन्द्र श्रीः पुण्यपात्रं जयश्रीः ॥ जज्ञेताज्याम
प्रिमः सूरसंज्ञः पुत्रः श्री

- ८ । मान् सोमनामा द्वितीयः ॥ ४ ॥ निर्माप्यादि जिनेन्द्रबिंबमसमं शेषत्रयोविंशति श्री
जैनप्रतिमा विराजि-
- ९ । तमसावर्ज्यचितुं वेशमनि ॥ पूज्यः श्री हरिजद्रसूरिसुगुणोः । पार्श्वात् प्रतिष्ठाप्य च
स्वस्यात्मीय कुलस्य चाक्ष-
- १० । यमयं श्रेयो निधानं व्यधात् ॥ ५ ॥ असावत् सावाशाराजं तनुजसमं सोमसचिवः
प्रियायां सीतायां शुचि च
- ११ । रितनत्यामजनयत् ॥ यशोजिर्यस्यैजिर्जगतिविशदे क्षीरजलधौ निवासैकप्रीतिं मुदस-
जजर्दि-
- १२ । दुःदुःप्रतिपदं ॥ ६ ॥ श्री रैवते निर्मितसत्यपात्रः केनोपमानस्त्वह सोऽश्वराजः
॥ कलंकशंका मुपमान-
- १३ । मेव पुष्पात्सहो यस्य यशः शशांके ॥ ७ ॥ अनुजोऽस्यापि सुमनुजस्त्रिचुवनपालस्तथा
स्वसाकेली
- १४ । आशा राजस्याजनि जाया च कुमारदेवीति ॥ ८ ॥ तस्याऽनूत्तनयो जयो प्रथमकः
श्री मल्लदेवोऽपरश्रं
- १५ । चञ्चमरीचिमण्डलमहाः श्री वस्तुपालस्ततः । तेजःपालइति प्रसिद्धमहिमा विश्वेऽत्र
तुर्यः स्फुरञ्चा-
- १६ । तुर्यः समजायतायतमतिः पुत्रोऽश्वराजादसौ ॥ ९ ॥ श्री मल्लदेव गौत्रौ क्षीयू सुत
पुण्यसिंह तनुज-
- १७ । न्मा ॥ आदृष्टदेव्या जातः पृथ्वीसिंहाख्ययाऽस्ति विख्यातः ॥ १० ॥ श्री वस्तुपाल
सचिवस्य गेहिनी देहिनीव गृ-
- १८ । हलक्ष्मीः ॥ विशदतरचित्तवृत्तिः श्री छलितादेवी संज्ञास्ति ॥ ११ ॥ शीतांशुप्रतिवीर
पीवर यशा विश्वेऽत्र
- १९ । पुत्रस्तयो विख्यातः प्रसरद्गुणो विजयते श्री जैत्रसिंहः कृती ॥ लक्ष्मीर्यत्करपंकज
प्रणयिनी हीनाश्रयोत्थेन

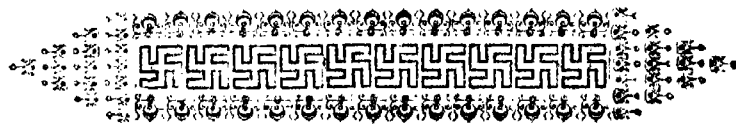
- २० । सा प्रायश्चित्तमिवाचरत्यहरहः स्नानेन दानंजसा ॥ १२ ॥ अनुपमदेव्यां पत्न्यां श्री
तेजःराज्ञ मचिवतिलकस्या ।
- २१ । लावण्यसिंह नामा धाम्नांधामायमात्मजो जज्ञे ॥ १३ ॥ नाचूवन्कति नाम संति
कतिनो नो वा जविष्यन्ति के किं-
- २२ । तु कापि न कापि संवपुरुषः श्री वस्तुपालोपमः ॥ पुण्येषु प्रहरन्नहर्निशामहो सर्वा-
जिसागेद्भुगे येनायं वि-
- २३ । जितः कलिर्विदधता तीर्थेशयात्रोत्सवं ॥ १४ ॥ लक्ष्मीधर्माङ्गयागेन स्थेयसीतेन न-
न्वता ॥ पौषधाम्नयमालायं(लेग्यं)
- २४ । निर्मर्ममेन विनिर्ममे ॥ १५ ॥ श्री नागेन्द्रमूनीन्द्रगच्छतरणिर्जज्ञे महेन्द्रप्रजोः पद्मे
पूर्वमपूर्ववाञ्छयनि-
- २५ । धिः श्री शांति सूरिर्गुरुः ॥ आनन्दामरचन्दसूरियुगलं । तस्मादचूत्तपदे पूज्य श्री
हरिजद्र सूरि गुर्वोऽचूवन् जु-
- २६ । वो चूपणं ॥ १६ ॥ तत्पदे विजयसेन सूरयस्ते जयन्ति जुवनैकचूपणं ये तपोज्वलन
चूविचूतिजिस्तेजयन्ति
- २७ । निजकीर्त्तिदर्पणं ॥ १७ ॥ स्वकुलगुरुर्गणिरेषः पौषधशालामिमाममात्येन्द्रः ॥ पित्रोः
पवित्रहृदयः पुण्यार्थं
- २८ । कदपयामास ॥ १८ ॥ वाग्देवतावदनवारिज (मित्र) सामद्वैराज्यदानकलितोरुयशः
पताकां चक्रे गुरोर्विज-
- २९ । यसेन मुनीश्वरस्य शिष्यः प्रशस्तिमुदयप्रज सूरिरेनां ॥ १९ ॥ सं० १२०१ वर्षे महं
श्री वस्तुपालेन कारित पौषध-
- ३० । शालाख्य धर्मस्थानेऽस्मिन् श्रेष्ठि० रावदेव सुत श्रे० मयधर । जा० सोत्ताउ जा०
धारा । व्यव० वेलाउ विक्रम श्रे० पूना
- ३१ । सुत बीजावेड़ी उदयपाल । उ आसपाल । जा० आदृण उ गुणपाल ऐतैर्गोष्ठिकत्वमं-
गीकृतं ॥ एजिर्गोष्ठिकैरस्य धर्मस्थानस्य

३२ ।स्तम्भतीर्थे - कायस्थवंशेनाह उद्वंकितः सिधा लिख मिहच
७० सु० सूत्रधार कुमरसिंहेनोत्कीर्णा ॥

शिला लेख-जोंपरे के द्वार पर ।

[1794]

- १ । ॥ ए० ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री विक्रम नृपात् संवत् १६६१ वर्षे वैशाख सुदि ७
सोम श्री
- २ । स्तंभतीर्थनगर वास्तव्य ॥ जकेश झातीय ॥ आबूहरा गोत्रविभूषण ॥ सौवर्णिक ॥
कलासु-
- ३ । त ॥ सौवर्णिक ॥ वाघा चार्या रजाई ॥ पुत्र ॥ सौवर्णिक वठिआ ॥ चार्या सुहासिणि
॥ पुत्र । सौव-
- ४ । णिक ॥ तेजपाल चार्या ॥ तेजबदे नाम्न्या ॥ निजपति सौवर्णिक तेजपाल प्रदत्ताह-
- ५ । या ॥ प्रभूतद्रव्यव्ययेन सुभूमिगृहश्रीजिनप्रासादः कारितः ॥ कारितं च तत्र मूल-
- ६ । नायकतया स्थापनकृते श्रीविजयचिंतामणि पार्श्वनाथ चिंभं प्रतिष्ठितं च श्रीमत्त-
- ७ । पागडाधिराज जटारक श्री आणंदविमल सूरि पढाखंकार ॥ जटारक श्री विजयदा-
- ८ । न सूरि तत्पट्टप्रभावक सुविहितसाधुजनधेय सुगृहितनामधेय ॥ पात ॥
- ९ । साह श्री अकबरप्रदत्तजगदुर्ध्वविरुद्धारक जटारक श्री हीरविजय सूरि
- १० । तत्पट्टोदयशैलसहस्रपाद ॥ पातसाह । श्री अकबरसत्तासमहविजितवा-
- ११ । दिवृंदसमुद्भूतयशः कर्णपूरसुग्रीकृतादिग्वभूवदनारविंद जटारक श्री विजय-
- १२ । सेन सूरिजिः ॥ क्रीडायातसुपर्वराशिरुचिरो यावत् सुवर्णाचलो ॥ मेदिन्यां प्र-
- १३ । ह्मण्णं च वियति ब्रह्मंडुख्यंलशन् ॥ तावत्यत्रगतःपृसेवितपद श्री पार्श्वना-
- १४ । यप्रज्ञो ॥ मूर्ति श्री कलितोऽयमत्र जयतु श्रीमज्जिनेन्द्रालयः ॥ १ ॥ ७ः ॥ : ॥



पोसिना-भरुअछ ।

शिला लेख

[1795] *

- १ । प्राग्वाटवंशे श्रे० ठहड यन श्री जिन- २ । जद्र सूरि सछुपदेशेन पादपरा ग्रामे उं-
३ । दिखसहिका चैत्यं श्रीमहवीर प्रनिमा ४ । युतं कारितं । तत्पुत्रौ ब्रह्मदेव शरणदे-
५ । वौ । ब्रह्मदेवेन सं० १३७५ अत्रैव श्रीने- ६ । मि मंदिर रंगमंडपे दाढ़ाधरः कारितः
७ । श्रीस्वपनसूरि सछुपदेशेन तदनुज श्रे० ८ । शरणदेव चार्या सूहवदेवि तत्पुत्राः श्रे०
९ । वीरचंद्र पासड । आंवड रावण । यैः श्री पर-
१० । मानन्द सूरीणामुपदेशेन सप्तविंशततीर्थ का-
११ । रितं ॥ सं० १३१० वर्षे । वीरचंद्र चार्या सुषमिणि
१२ । पुत्र पूना चार्या साहग पुत्र लूणा जांऊण आं-
१३ । बड़ पुत्र बीजा खता । रावण चार्या हीरू पुत्र बो-
१४ । डा चार्या कामल पुत्र कडुआ ॥ छि० जयता चार्या मूं-
१५ । ठा पुत्र देवपाल । कुमरपाल । तृ० अगिसिंह जा०
१६ । गउरदेवि प्रभृतिकुटुम्बसमान्वतैः श्री परमा-
१७ । नन्द सूरिणामुपदेशेन सं० १३३८ श्री वासुपूज्य
१८ । देव कुलिका । सं० १३४५ श्री संमैतशिषर-
१९ । तीर्थ मुख्यप्रतिष्ठा महातीर्थयात्रां विधाप्या-
२० । रमजन्म एवं पुण्यपरंपरया सफली कृतः
२१ । तदद्यापि पोसिना ग्रामे श्री संघेन पूज्यमान-
२२ । मस्ति ॥ शुभमस्तु श्री श्रमणसंघप्रसादतः ॥



* भरुअछ से ६ मैल दूर पर 'पोसिना' ग्राम में जैन मन्दिर के भैरवजी की मूर्ति के निचे पत्थर पर यह लेख है ।

उना-काठियावाड़ ।

जैन मन्दिर-शाहवाला वाग ।

शिला लेख ।

[1796] *

- १ । उं स्वस्ति श्री सं० १६५२ वर्षे कार्तिक वदि ५ बुधे
- २ । येषां जगद्गुरुणां संवेगवैराग्यमौजाग्यादिगुणगण-
- ३ । श्रवणात् चमत्कृतैर्महाराजाधिगज पातिसाहि श्री अकब्बराजि-
- ४ । धानैः गूर्जरदेशात् दिह्लोमएन्ने सबहुमानमाकार्य धर्मोपदेशा-
- ५ । कर्णनपूर्वकं पुस्तककोशसमर्पणं कावराजिधानमहासरोमल्यव-
- ६ । धनिवारणं प्रतिवर्षं पाणमासिकामारिप्रवर्त्तनं सर्वदा श्री शत्रुंजयतीर्थे मुं-
- ७ । डकाजिधानकरनिवर्त्तनं जीजयाजिधानकरकर्त्तनं निजसकलदेशे दा-
- ८ । णमृतं स्वमोचनं सदैव बूंद(?)ग्रहणनिवारणं सत्यादिधर्मकृत्यानि सकल-
- ९ । लोकप्रतीतानि कृतानि प्रवर्त्तं तेषां श्री शत्रुंजये सकलदेशसंघयुतकृत-
- १० । यात्राणां जाड्रपदशुक्लैकादशीदिने जातनिर्वाणं शरीरसंस्कारस्थानासन्न-
- ११ । कलितसहकाराणां श्री हीरविजय सूरीश्वराणां प्रतिदिनं दिव्यनाथनाद-
- १२ । श्रवण दीपदर्शनादिकैर्जाग्रत्स्वजावाः स्तूरसहिताः पाडुकाः कारिताः पं०
- १३ । मेघेन जार्या लारुकी प्रमुखकुटुम्बयुतेन प्रतिष्ठिताश्च तपागढाधिराजैः ज-
- १४ । द्वारक श्री विजयसेन सूरिजिः उ० श्री विमलहर्षगणि उ० श्री कल्याण-
- १५ । विजय गणि उ० श्री सोमविजय गणिजिः प्रणतान्नव्यजनैः पूज्यमानाश्चि-
- १६ । रं नंदंतु ॥ लिखिता प्रशस्तिः पद्मानन्दगणिना । श्री उन्नतनगरे शुभं जवतु ॥



* 'उना' का प्राचीन नाम 'उन्नत नगर' था । यह शिलालेख मन्दिर के ७ देहरी में पश्चिम तर्फ से पहली देहरी का है ।

- (१) ॥ ए० ॥ स्वस्ति श्री प्रणयाश्रयः शिवमयः श्री वर्द्धमानाह्वयस्तीर्थेशश्चरमो वचूव
चुव-
- (२) ने सौत्राग्यज्ञाग्यैकचूः । नंदीश प्रथमोपि पंचमगतिः ख्यातः सुधर्माग्रणी । जज्ञे
पंचमपंचमः शभव.
- (३) तां निग्रथं १ गोत्रेग्रणी ॥ १ ॥ श्री कौटिक २ वनवासिक ३ चष्ट्र ४ बृहज्ज ५ सत्तपा
६ क्रमतः । तदा
- (४) गह्वानां संज्ञाजातास्तपगञ्जस्तथाऽचूत् ॥ २ ॥ प्राणचूदितिपालज्ञान्न विलसत्कोटीर-
हीरस्फुरज्यो-
- (५) तिर्जालजलात्तिषेकविधिना (जा)नाबुपंकेरुहः ॥ चि(द्रु)पावखिहीरहीरविजयाह्वानः
प्रधान प्र-
- (६) जुः श्रामण्येकनिकेतनतनुभृताम् कल्याणकल्पद्रुमः ॥ ३ ॥ तदादेशवाक्यैः सुधा-
सारसारै । मुदा
- (७) कव्वरः पातिसाहिः प्रबुद्धः । स्वदेशेऽखिले जीवहिंसा न्यवारीदमुंचत्करं चापिशत्रुं-
जयाद्देः ॥ ४ ॥
- (८) तन्मध्येदपिशौलमौत्रिमहिमावर्षेसहस्रत्वपि । जातः श्रीविजयादिसेनसुगुरुः प्रज्ञान-
वालारुणः ।
- (९) येन श्रीमदकव्वरद्विपतिः घर्षद्यनेकद्विजान् ॥ निर्जित्यैव जयश्रिया सह महां-
श्चक्रे धिवाहो
- (१०) नवः ॥ ५ ॥ (त)स्पष्टे (सा)रगजमूर्द्धनि देवराज (सू)र्बिर्बचूव जगवान् वि(जया-
दिदे)वः । य(स्या)त्रसत्यवचना-
- (११) दनखे तपोर्कः साक्षद्वजौ क्रमतद्रुस्तपसां वि(ना)शी ॥ ६ ॥ सम्यग् निशम्य च
यदीय यशःप्रशस्तिमा-
- (१२) ह्वतद्रुणगणस्यदिद्वद्वयैव । सूमेर्महातपद्विप्रथितं विरुदं श्रीपातिसाहिरकरोत्स-
सल्लेमसाहि

- (१३) ॥ ७ ॥ यस्याद्याप्युपदेशपेशस्रसद्रोणंजगत्सिंहजीः संबुद्धः सरसोर्थिसारविसरे
मारीन्यावारीत्ततः ॥
- (१४) [सं]व्यूढां गुणरागरंगल्लितैः कीर्त्तिस्त्रिलोकोन्नमश्रांतां स्थानविधानतोऽनुरंमते
किंकिरपिंडिध्वलात् ॥
- (१५) ॥ ७ ॥ श्री विद्यापुर पाति[साहि]मुचितैर्वाचाप्रपंचैर्यकः । स्वर्जोऽज्यप्रतिमः प्रवोध्य
सूरजीरारंजतो मोचयन्
- (१६) तद्वत् श्रीमनुजादिमर्दनपतेः श्री पातिसाहेश्वरः । स्थानेऽस्थापयेदग्निपातनपरो
धर्मं सपङ्कगतः ॥
- (१७) ॥ ए ॥ एवं विह्वयनगरानवनीतमस्मिन् राजन्य । श्रीमज्जिन-
- (१८) कृतो चय मूर्त्तिति मूर्त्तिः सकलरात्रौध्वजरूपमूच्चैः ॥ १० ॥ पूज श्री
मालि कुलोपु-
- (१९) रा जरण यो ... नामतिनामा । ... र्मनाः ॥ ११ ॥ तस्यांगजोगजङ्घो पवि-
- (२०) श्रीमालि विमलकुलांबुज माली । विश्वातिशायियशसाजिनपूर्णचन्द्रः श्री
राजवं-
- (२१) ... तिस... रि . त् प्रतापं ॥ १२ ॥ अथ तेनमंशे किमहाप्र... पूर्वस्वद्रव्यस्यसफ-
लीकरणाय श्री विजया-
- (२२) दि सूरीश्वराः श्री गूर्जरदेशात्सौराष्ट्रके पादानांसस्याः कारिताः श्री सिद्धाद्रियस्या-
पिप्रज्ञाणामहामहसां
- (२३) कारिता ॥ ततश्च सं० १७१३ वर्षे आषाढ शुद्धैकादशी त्रिथौ । जटारक श्री
विजयदेवसूरी-
- (२४) श्वराणा स्व मुषापाडुकास्तूपोयं श्रीवासणात्मजेन वाई पातली जन्मना
श्रीरायचन्द
- (२५) नाम्ना कारितः प्रतिष्ठापितश्च सं० १७१३ वर्षे माघमास सितपञ्चमी त्रिथौ महा
महोत्सवेन ।

- (१६) सूरैः श्री विजयादिदेवसुगुरोः पट्टाब्जसूर्याश्रयः सूरि श्री विजयप्रजाव्यदधत श्रेष्ठा प्रतिष्ठा
- (१७) मिमां श्रीमद्वाचकरान् विनीतविजयैः शात्याह्वयैः पाठकैर्युक्ताश्चारुयशोचराः प्रतिम-
- (१८) या वाचस्पतेः सन्निराः ॥ १३ ॥ तथा साधु श्री नेमिदासेन तथा साधु वाघजीकेन त्रिनोप्रमेन का
- (१९) रितः । कृतश्चायं हरजीनाम्ना शिद्विपना । मुहूर्त्तदातातु अत्र उन्नतपुरवास्तव्य जट्ट-
गुसांई
- (२०) पुत्र जट्ट रणढोड़ नामा ॥ श्रीछोपबंदरवास्तव्यसंघजातिव्याजे जीयतां श्रीदेव-
विहारजा
- (२१) गः स्तूपरूपः ॥ श्रीमत् श्रीविजयादिदेवगणभृत्पट्टोदयोष्कृतेः । सूरैः श्री विजय-
प्रजस्य क-
- (२२) रुणादृष्ट्या प्रकृष्टोदयः ॥ विद्मद्रूपमणीकृपादिविजयां तेवासिमेणाह्वयो । खेस्यदेव-
विहार
- (२३) विदिते स्तूपप्रशस्ति श्रिये ॥ १४ ॥ इति प्रशस्ति संपूर्ण ॥ श्रीरस्तु ॥ ७ः ॥ ७ः ॥



बम्बई ।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर—बाळकेश्वर ।

पञ्चतीर्थी पर ।

[1708]

सं० १४७७ वर्षे श्री श्रीमाल झा० पं० राणा जा० रूपादे सुत आसाकेन स्वमातृश्रेयसे
आगमगच्छे श्री जयानन्दसूरीनामुपदेशेन श्री पार्श्वनाथ पञ्चतीर्थी कारितं श्री सूरिभिः ।
शुभं भवतु ॥

(१०४)

चौविंशं पर ।

[1799]

सं० १७६४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ गुरौ स्तम्भतीर्थ बंदिर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्ध-
शाषीय वे । मेघराज ज्ञा० वैजकुञ्जार सुत सूसगलेन स्वद्रव्येण श्री शांतिनाथ चौविंशी
पट्ट कारापितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे ज० श्री विजयप्रज्ञ सूरि पट्टे सविज्ञादीय ज० श्री ज्ञान-
विमलसूरिभिः ।

घरदेरासर - गामदेवी, वाचागांधी रोड ।

चौविंशी पर ।

[1800]

संवत् १८३५ वर्षे माघ सुदि १३ बुधे मोढ ज्ञातीय ठकुर वरसिंह जार्या चांपू सुत
ठकुर मूलू जार्या कीवाई सुत ठकुर मधुरेण जार्या संपूरी प्रमुखकृटुम्बयुतेन स्वध्रेयोर्य
श्री अजिनन्दननाथादि चतुर्विंशतिपट्टः श्री आगमगच्छे श्री जयचन्द्रसूरिपट्टे श्री देवरत्न
गुरूपदेशेनकारितः प्रतिष्ठापितश्च ॥ श्री स्तम्भतीर्थवास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥



सिरपुर-सागर (सी. पी.) ।

शिक्षा लेख ।

[1801]

१ । ॐ ॥ स्वस्ति श्री सं० १३३४ वर्षे वेशाख सुदि १ बुधदिने श्रीवृद्धगच्छे सा० प्रह्लादन
पुत्र सा० रत्नसिंह कारितः श्री शांतिनाथ चैत्ये सा० समधा पुत्र महेश जार्या
सोहिणी पुत्री कुम-

२ । रत्न श्राविकया पितामह सा० पूना श्रेयसे देवकुलिका कारिता ॥



(१०५)

श्री सम्मैत शिखर ।

टोंक पर के चरणों पर ।

[1802]

॥ श्री कृष्णानन जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1803]

॥ श्री चंद्रानन जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1804]

॥ श्री वारिषेण जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1805]

॥ श्री वर्द्धमान जिन चरण प्रतिष्ठितं श्री जैन श्वेताम्बर संघेन ॥

[1806]

- (१) संवत् १९३१ माघे । शु । १० । चंद्र श्री चंद्रप्र
- (२) शु जिनन्द्रस्य चरण पादुका । मस्रधार पूर्णिमा ।
- (३) श्री मर्द्धजयगढे । ज । श्री जिन शानि सागर सू ।
- (४) गिज्जः । प्रतिष्ठितं । स्थारितं । श्रयसेस्तु ।
- (५) श्री संघेन कारावता ।

[1807]

- (१) संवत् १८४९ सिनि माघ मासे शुक्र पक्षे पंचमी तिथौ ।
- (२) बुधवारे श्री पार्श्वनाथ जिनस्य चरण न्यासः श्री संघाप्रहेण ।
- (३) श्री वृहत् खरतर गढीय । जंगम । युग प्रधा
- (४) न जट्टारक । श्री जिनचंद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितः श्रीरस्तु ॥

(१०६)

[1808]

- (१) संवत् १९४३ का मि । पोष शुक्ल त्रयोदश्यां वर सोमवारे श्री चतुर्विंशति जिन साधु संख्या पादुकाः श्री पार्श्व जिन गणधर पादुका
(२) खरतर गच्छे महो श्री दानसागरजी गणिः तत् शिष्य पं । दिन वह्मन मुनिना प्रतिष्ठितं गुज्जर देशान्तर्गत मांडल वास्तव्य.....
(३) श्री सोनाग्यवर लक्ष्मीचंदेन श्री समेत शिखरि प
(४) रि स्थापितं ॥

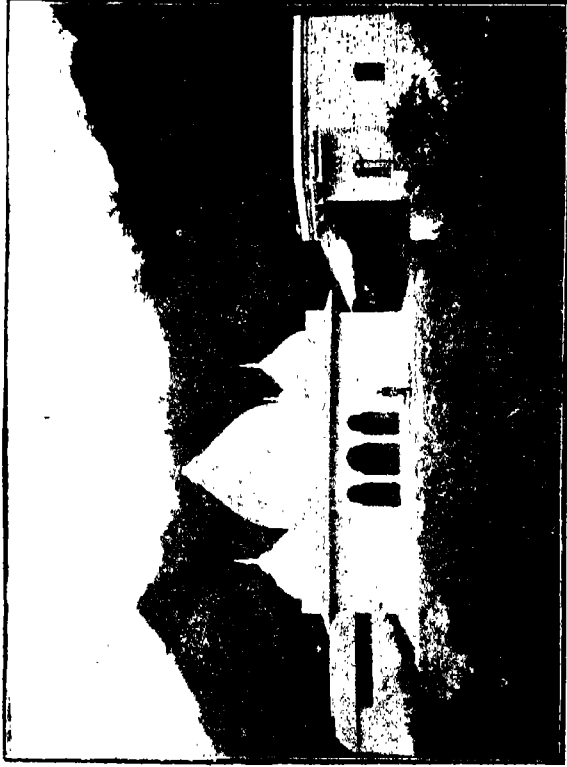
१। श्री कृष्ण १०००० साधुसुं अष्टापद उपर २। श्री अजित १००० साधु सुं
३। श्री संजव १००० साधुसुं ४। श्री अतिनंदन १००० साधुसुं ५। श्री सुमति १००० साधुसुं ६। श्री पद्मप्रत्न ३०० साधुसुं ७। श्री सुगर्भनाथ ५०० साधुसुं ८। श्री चंद्रप्रत्न १००० साधुसुं ९। श्री सुविधि १००० साधुसुं १०। श्री शीतल १००० साधुसुं ११। श्री श्रेयांस १००० साधुसुं १२। वासुपूज्य ६०० साधु चंपापुर १३। श्री विमल ६००० साधुसुं १४। श्री अनंत ७००० साधुसुं १५। श्री धर्म १०० साधुसुं १६। श्री शांति ९०० साधुसुं १७। श्री कुंथु १००० साधुसुं १८। श्री अरि १००० साधुसुं १९। श्री मल्लि ५०० साधुसुं २०। श्री मुनिसुवत १००० साधु २१। श्री नमि १००० साधुसुं २२। श्री नेमि ५३६ साधुसुं गिरनार २३। श्री पार्श्व ३३ साधुसुं २४। श्री महावीर एकाकी पावापुरी ॥

[1809]

॥ सं । १९४९ माघ शुक्रवारे श्री समेत शेष्यस्य पर्वतोपरि जल्य जीवस्य दर्शनार्थं श्रीमत् आदिनाथस्य चरण पादुका स्थापिता राय धनपतिसिंह बाहादुरेण का० प्र० श्री विजयराज सूरि तपागच्छे ॥

[1810]

(१) सं । १९२५ फा० कृष्ण ५ बुधवासरे श्री चंपापुरे तीर्थे श्री वासपूज्य जी



TIRTHA SAMMET SIKHAR— Jalmandira.

(१०७)

- (१) पंच कल्याणक चरण न्याम मकसुदावाद् वास्तव्य डुगड माः प्रतापसिंह
(२) जार्जा महताव कुमर ज्येष्ठ सु लक्ष्मीपनस्य कनिष्ठ ज्ञान धनपत सिंह
(४) कारापितं प्रतिष्ठितं नः श्री जिनहंम सूरतिः बृहत्स्वरत गच्छ ॥

[1811]

- (१) ॥ संवत् १९३४ माघ वदि ५ बुधवार श्री नेमनाथ जिन तीन कल्याणक रेवत ..
(२) जवती तस्य चरण न्यामः ममन शिवरे स्थापिता मकसूदावाद् अर्जीमगंज
(३) वास्तव्य डुगड प्रतापसिंह जार्जा महताव कुमर सुन लक्ष्मीपन कनिष्ठ ज्ञाना
(४) धनपत सिंह कारापितं प्रतिष्ठितं श्री पूज्यजी न. श्री जिनहंम सूरीतः स्वरतर गच्छे
(५) बृहत् स्वरतर गच्छ ॥

[1812]

- (१) ॥ सं १९२४ श्री फाटगुण वदि ५ श्री वार वर्धमानजी का चरण पाडुका मकसुदा
(२) वाद वाली राय धनपत सिंह डुगडने स्थापित किया था सो उसका उत्री विजर्षी
(३) उपद्रव सु गिरगड उसपर सं १९६५ के फाटगुण सुदी ६ को कछ मांडवी वासी
(४) साः जगजीवन बालजी ने जीरण उधार कराइ ।

जल मंदिर ।

पाषाण की मूर्तियोंपर ।

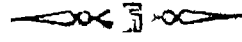
[1813]

- (१) ॥ संवत् १८२२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ श्री मगसुदावाद् वास्तव्य साजसुखा
गोत्रीय आसवंस ज्ञानी
(४) य बृद्धशाखायाम् ॥ लालचंद मुत सुगालचंदेन श्री मद्गुरुणा उपदेशात् आत्म सं
श्रेयार्थं च श्री समेत शैल
(३) श्री जैन विहारे श्री सहस्र फणा पार्श्वं जिन विंशं कारापितं प्रतिष्ठितं च सुविहि-
तामणोजिः सकल सूरिवरैः ॥ मंगलं ॥

(१०५)

[1814]

- (१) ॥ सं १८१२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुणै श्री मगसुदाचाद वास्तव्य साउंजुखा गोत्रीय
आसवंस झातीय
- (२) बृद्धशाखायां सा सुगाक्षचंद जार्यया केसरकया आत्म संश्रयोर्थ श्री समेत गिरो
श्री जैन विहार श्री सं-
- (३) जवनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च सुविहिताग्रणीजिः । सकल सूरजिः ॥ इति
मंगलं ॥



मधुवन ।

जगतसेठजी का मंदिर ।

मूर्तियों पर ।

[1815]

॥ सं १८१२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुणै सा सुगाक्षचंदेन श्रीपार्श्व विंबं कारापितं । प्र।
सकल सूरजिः ।

[1816]

- (१) संवत् १८१२ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुणै मग झातीय बृद्ध शाखायां सा
रूपचंदजी सुन लखमीचंदजी
- (२) सुत लालचंदजी माता मद कपूरचंदजी देत स्वश्रेयोर्थ श्री सम्मते गिरो
श्रीजन वि
- (३) हार श्री पार्श्व जिन विंबं कारापितं

[1817]

॥ संवत् १८१२ वैशाख सुदि १३ गुणै श्री खरतर गह आचार्यीय सा जीमजी सुन
सा निहालचंदेन पं . . . कारापितं ॥

(१०९)

[1818]

॥ सं० १८१७ शके १६९३ । प्रवर्त्तमाने वैशाख सुदि द्वादशी तिथौ । शृगुवारे
श्रीसवाल ज्ञाती वृद्धशाखायां ॥ आदि गोत्रे । सा० ऋषभदास तद्गार्या गुलाबकुशर सहितेन
श्रेयार्थ । कायोत्सर्ग मुद्रास्थित सहस्रफणालंकृत श्री पार्श्वनाथ विं वं कारितं ॥

[1819]

॥ सं० १८१२ [?] वैशाख सु० १३ गुरौ श्री गह्विड्डा गोत्रीय साह कस्तुरचंद ॥

धरणेन्द्र पद्मावती की मूर्ति पर ।

[1820]

॥ सं० १८१५ माहा सुदि ३ सा । सुगात्रचंदेन श्री धरणेन्द्र पद्मावत्या कारापिता प्र०
तपागच्छे ॥

प्रतापसिंहजी का मंदिर ।

शिलालेख ।

[1821]

- (१) ॥ सं० १८१९ मिति माघ शुक्ल १० दशम्यां तिथौ श्री गो-
- (२) डी पार्श्वनाथस्य द्विजूमि युक्त वैल्यं । श्री बाबूचर वास्त-
- (३) व्य दुगरु गोत्रीय । श्री प्रतापसिंघेन कारित । प्रतिष्ठि-
- (४) तं च श्री खरतर गडेशाःजं । यु । ज । श्री जिन हर्ष सूरी-
- (५) णामुपदेशात् । उ । श्री हमाकड्याण गणीनां शिष्येणेति

पाषाण की मूर्तियोंपर ।

[1822]

- (१) ॥ सं० १८१८ माघ सुदि ५ सोमे श्री गवडी पार्श्वनाथ जिन विं-

(३१०)

- (१) बं कारितं श्योसवंशे दुगड गो । प्रतापसिंहेन । प्र । वृ । ज । खरतर ग-
(३) छाभिराज श्री जिनचंद्र सूरि स्थितैः ।

[1823]

॥ श्री गोडी पार्श्व जिन बिंबं ॥ (उँ) ॥ संवत् १८३३ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ११ । चंडे
जीर्णोद्धाररूपा । विजय गह्वे । जट्टारक श्री पूज्य श्री जिन शांतिसागर सूरिजिः
प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

पाषाण के चरणों पर ।

[1824]

- (१) संवत् १८८८ मिति माघ शुक्ल १० दशम्यां तिथौ श्री गोडी पार्श्वनाथ चैत्ये विंशति
जिनेश्वराणां चरण न्यासाः श्री बालूवर नगर वास्व
(२) व्य दुगड गौत्रीय साह श्री प्रताप सिंहेन कारिताः प्रतिष्ठिताश्च । श्री मछूहरखरतर
गह्वेशाः जंग-
(३) म युग प्रधान जट्टारकाः श्री जिन हर्ष सूरिश्वराणामुपदेशात् उपाध्याय पद शो-
जिता । श्री कृमाकल्याण गणीनां शि-
(४) ष्य प्राज्ञ ज्ञानानंदेन पं । ध्यानंदविमल पं । सुमति शेखर सहितेनेति । श्रेयार्थं ।
सम्यक्त वृद्ध्यर्थं च ॥
॥ श्री अजितनाथजी १ ॥ श्री संजवनाथजी ३ ॥ श्री अजिनंदन नाथ जी ४ ॥
श्री सुमति नाथ जी ५ ॥ श्री पद्मव्रत जी ६ ॥ श्री सुरार्धनाथ जी ७ ॥ श्री
चंद्रप्रज्जजी ८ ॥ श्री सुविधिनाथ जी ९ ॥ श्री शीतल नाथ जी १० ॥ श्री श्रेयांस
नाथ जी ११ ॥ श्री विमल नाथ जी १३ ॥ श्री अनंत नाथ जी १४ ॥ श्री धर्म
नाथ जी १५ ॥ श्री शांति नाथ जी १६ ॥ श्री कुंथुनाथ जी १७ ॥ श्री अरनाथ
जी १८ ॥ श्री मङ्गिनाथ जी १९ ॥ श्री मुनिसुव्रत नाथ जी २० ॥ श्री नमिनाथ
जी २१ ॥ श्री पार्श्वनाथ जी २३ ॥

(१११)

पाषाण के चरणों पर ।

[1825]

- (१) ॥ संबत् १९३१ ॥ माघे ॥ शुक्ला ए । चंद्रे । गोतम स्वामी ॥
(२) चरण पादुका कारापिता ॥
(३) मुनि गोकल चंद्रेण
(४) जट्टारक श्री जिन शांति सागर सूरिजिः । प्रतिष्ठितं ॥ श्री विजय गच्छे ॥

[1826]

- (१) ॥ संबत् १९३३ मिति माघ शुक्ल ११ अजिनंदन जिन पादुकामिदं मक्
(२) सूदावाद वास्तव्य अशवंशाय लुंपक गणोमानाक् दुगड गोत्रीय बाबु
(३) प्रनापसिंहस्य जार्या महताव कुमारिकस्थ बृरु पुत्र राय बहादुर
(४) लवमीपत सिंघस्य लघु ज्ञातृ रा । धनवन सिंघेन करापितं प्रतिष्ठितं सर्व सूरिणा ॥

कानपुरवालों का मंदिर ।

शिलालेख ।

[1827]

॥ सं १९४३ का वर्षे शाके १००८ प्रवर्तमाने माघ मासे कृष्ण पक्षे एकादश्यां बुधे
श्रेष्ठी श्री सिखरूप मल तादात्मज जंडारी श्री रघुनाथ प्रसाद तज्जार्या श्री बदामो बीबी
तया कारितं श्री पार्श्वजिन मंदिरं महोत्सवेन स्थापना कारापिता श्री शिखर गिरि मधु-
वने बृहद्भिजयगच्छे सार्वभौम जट्टारक श्री जं. यु. प्र. श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर
सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रेयसे । (इसके बाई ओर एक पंक्ति में) श्री मत्तपागह्याधिराज जट्टारक
श्री १०८ श्री विजयराज सूरि राज्ये शुभं जवतु ।

मूर्तियों पर ।

[1828]

॥ सं १०५४ वर्षे माघ वदि ५ चंद्रे श्री मत्खरतर पीपड्या गठे श्री जिनदेव

(१११)

सुरेश्वर राज्ये ओसवंस वृद्ध शाखायां सा पानाचंद श्री पार्श्वजिन विंबं घेन प्रति

[1829]

॥ सं. १९०५ शाके १९६७ वदि ५ भृगौ सीपोर वास्तव्य सा. र (त) न चंद तद्भार्या जीजा बाइ तत्पुत्री बेन नवल स्वश्रेयोर्थ श्री चंद्रप्रज विंबं ॥ कारापितं तपागळे जहारक श्री शांतिसागर सुरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

छाखा कालीकादासजी का मंदिर ।

मूर्तियों पर ।

[1830]

॥ १९१० वर्षे शाके १९७५ माघ शुक्ल २ तिथौ श्री गुपार्श्वनाथ जिन विंबं प्रतिष्ठितं खरतर गळे श्री जिनहर्ष सूरीणां पट्ट प्रजावक

[1831]

॥ सं. १९१० वर्षे शाके १९७५ माघ शुक्ल द्वितीयायां श्री वासुपूज्य जि विंबं प्रतिष्ठितं ज । श्री जिन महेन्द्र सुरिजिः कारितं च श्री

[1832]

॥ सं० १९१० वर्षे शाके १९७५ माघ शुक्ल २ तिथौ श्री धर्मनाथ विंबं प्रतिष्ठितं खरतर गळे श्री जिन हर्ष सूरीणां पट्ट प्रजावक

पाषाण की पंचतीर्थी पर ।

[1833]

॥ सं० १९३१ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे १२ बुधे श्री पंचतीर्थीय जिन विंबं वेद्युयुतो गोत्रे छाखा कालीकादास तद्भार्या चत्री बीबी तथा कारितं मलधार पूर्णिमा श्री मद्भिजय गळे ज । श्री पूज्य श्री शांति सागर सुरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

(११३)

चंद्रप्रभुजी का मंदिर

मूर्तियों पर ।

[1834]

॥ सं. १८०८ माघ सुदि ५ सोमे श्री चंद्रप्रभु जिन विंबं कारितं आसवंसे नवलखा
गोत्रे मोटामल्ल पुत्र यश रूपेण प्र । बृहत् खरतर ग । श्री जिनाहे सूरि चरणकज चंचरीक
श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

पाश्वनाथ जी का मंदिर ।

मूर्तियों पर ।

[1835]

॥ सं. १६९३ मिति फालगुण शुक्ल १३

[1836]

॥ सं. १८९९ वै । शु । १५ श्री पार्श्व विंबं प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा गोखवडा महता
बोजानी मूलचंदेन धर्मचंदेन कारितं कास्यां बृहत् खरतर गणे

[1837]

॥ सं. १८९९ वै । शु । १५ श्री चंद्रप्रभु विंबं प्र । श्री जिन हर्ष सूरिणा कारितं....

[1838]

॥ सं. १८९९ । वै । शु । १५ श्री चंद्रप्रभु विंबं प्र । श्री जिनहर्ष सूरिणा कारितं माल-
कस चेतसुखज कुंदन लालेन श्री

पट्ट पर ।

[1839]

॥ सं. १८०५ मि । फालगुण सुदि १३ रवौ शिखर गिरौ श्री सिद्धचक्रमिदं प्रतिष्ठितं

(११४)

ज । श्री जिनहर्ष सूरिजिः श्री बृहत् खरतर गष्ठे कारितं दु० पुरणचंदेन सचार्यया स-
पुत्रेण श्रेयर्थं ।

[1840]

॥ संवत् १९५४ वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्थी चंद्रवासरे अमृत सिद्धि योगे राजनगर
निवासि वायचाणा शा . . . जेचंदेन श्री तपागञ्ज सूरेश्वर विजयसिंह सूरिणा

सुज स्वामीजी का मंदिर ।

चरणों पर ।

[1841]

(१) सं. १८९५ मि । मार्गशीर्ष ए तिथौ रविवासरे

(२) श्रीमच्छ्री जिनदत्त सूरिणां चरणपंकजानि

(३) वृ । ख । जं । यु । प्र । ज । जिनहर्ष । सू । प्रतिष्ठितानि ॥

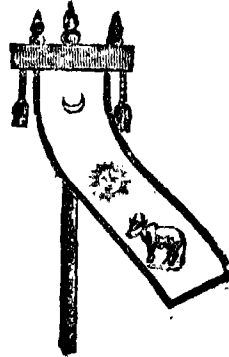
[1842]

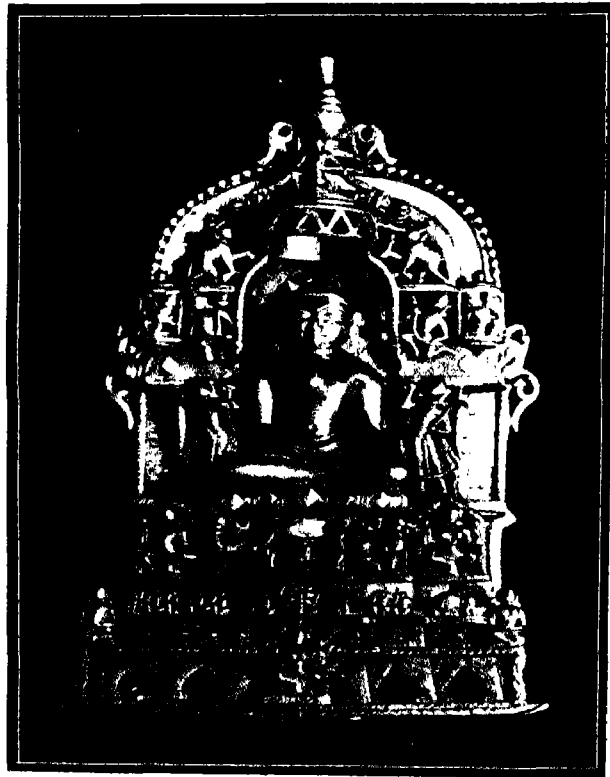
(१) ॥ सं. १८९५ । मिति मार्गशीर्ष शुक्ल ए तिथौ रविवासरे

(२) श्री सङ्गुणां पादो बृहत् खरतर ग

(३) छे । जं । यु । प्र । ज । श्री जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

(४) ॥ दादाजी श्री जिनकुशल सूरिः





METAL IMAGE OF SHRI SUMATINATH.
Jain Swetambara Temple—Tirtha Rajgriha.
Dated V. S. 1512 (A.D. 1455)

(११५)

श्री राजगृह ।

गांव मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[1843]

संवत् १५१२ वर्षे वैशाख सुदि १३ उकेश सा० जादा जार्या जरमादे पुत्र सा० नायक
जार्या नायक दे फदेकू पुत्र सा० अदाकेन जा० सोनाई त्रात् सा० जोगादि कुटुंबयुतेन श्री
सुमति नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिनिः ॥ वढली वास्तव्यः ॥ श्री ॥

धातु की मूर्ति पर ।

[1844]

सं० १९२० । म । का । कृष्ण २ बुधे दुगड प्रतापसिंह जार्या महताव कंवर श्री संती
नाथ जिन बिंबं का० ॥

सफण मूर्ति पर ।

[1845]

संवत् १६२० आषाड वदि ३ । मित्रवाल वंशी षी (वी) सेरवार गोत्रीय सं० गनपति
पु० स० तारात पुत्र हेमराज पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं खरतर गळे जिनजड
सूरिनिः ॥ शुभमस्तु ॥

श्याम पाषाण की मूर्ति पर ।

[1846]

(१) ॥ संवत् १५०४ वर्षे फागण सुदि ९ महतीयाण वंशे उ० देवसी पुत्र सं० जेजू
बहनी लखाई जार्या बेणी । श्री शांति

(१६)

(१) नाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनलागर सूरीणां निदेशेन वा० शुजशील
गणित्तः

चरण पर ।

[1847]

॥ ॐ नमः ॥ संवत् १८१९ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे ६ तिथौ श्री चंद्रप्रज्ज जिनवर
चरणकमले शुजे स्थापिते ॥ हुगली वास्तव्य श्रीसवंशे गांधी गोत्रे बुधकिदास तत्पुत्र
साह माणिक चंदेन पत्रीकुंडे कुंडघाटे जीर्णोद्धार करापितं ॥ १ ॥

वैजार गिरि ।

चौथे मंदिर में ।

चरणों पर ।

[1848]

- (१) संवत् १९३० वर्षे शाके १८०३ प्रवर्तमाने मासोत्तममासे
- (२) शुजे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादशी गुरुवासरे . . . श्री व्यवहार
- (३) गिरि शिखरे श्री जिनचैत्यालये मूलनायक श्री
- (४) महावीर जिन चरणन्यासः प्रतिष्ठितं श्री तपागढे बृहवि
- (५) जय थापीतं (६) साह बाहादरसंह प्रताप-
- (६) सिंह तत् पुत्र राय लढमीपत धनपतसिंग
- (७) बाहाद (८) जिरणोद्धार करापितं श्री रस्तु
- (८) ॥ प्रथम प्रतिष्ठा संवत् १८७४ शा० १७३९ मासो
- (९) त्तमासे शुजे ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे पं-
- (१०) चम्यां तिथौ सोमवासरे श्री जिनचन्द्र
- (११) सूरिजी महाराज का० श्री ।

(११७)

[1849]

- (१) संवत् १९३७ वर्षे शाके १७०३ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे
- (२) शुक्ले ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां तिथौ गुरुवासरे व्य-
- (३) वहार गिरिशिखरे श्री आद देव चरण न्या-
- (४) सः प्रतिष्ठितं बृहविज [य] गणी राय लठमिपत
- (५) सिंह धनपतसिंह जीरणोद्धार-
- (६) र करापितं श्रीरस्तु

[1850]

- (१) संवत् १९३७ वर्षे शाके १७०३ प्रवर्त्तमाने
- (२) मासोत्तममासे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे
- (३) द्वादश्यां गुरुवासरे श्रीव्यवहारगिरि शिखरे
- (४) श्री शांतिजिन चरणप्रतिष्ठा । प्रथम
- (५) श्री जिनहर्ष सूरिजिः बृह विजय प्रतिष्ठा
- (६) राय लठमिपत धनपत बा-
- (७) हादर जिरणोद्धार करापितं श्री
- (८) रस्तु

[1851]

- (१) संवत् १९३७ वर्षे शाके १७०३ प्रवर्त्तमाने
- (२) मासोत्तममासे ज्येष्ठमासे
- (३) शुक्लपक्षे द्वादश्यां गुरुवासरे
- (४) श्री व्यवहार गिरिशिखरे श्री नेमिजिन
- (५) चरणन्यास प्रतिष्ठ (१) बृह विजयगणि राय लठमिपति
- (६) धनपत संग जिरणोद्धार करापितं श्रीरस्तु ।

(११०)

[1852]

- (१) संवत् १९३० वर्षे शाके १००३ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे
- (२) ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वादशम्यां तिथौ गुरुवासरे
- (३) श्री व्यवहार गिरिशिखरे
- (४) श्री पार्श्वनाथ चरणयनसः प्रतिष्ठितं वृद्धविज-
- (५) य गणि राय छठमिपत सिंह धन-
- (६) पत संग जिरणोद्धार करापीतं

ठठे मंदिर में ।

चरण पर

[1853]

- (१) संवत् १९३० वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे
- (२) द्वादशम्यां तिथि गुरुवासरे आदिनाथ जिन चरण-
- (३) न्यास प्रतिष्ठितं वृद्धविजय गणि प्रथ-
- (४) म जीरणोद्धार ब्रह्माकिचंद तत् पुत्र माणिक
- (५) चंद जिरणोद्धार करापीतं दुति-
- (६) य जिरणोद्धार राय छठमिपति सं-
- (७) घ धनपतसंघ करापितं । श्रीरस्तु

० । व्यवहारगिरी

बड़ी मूर्ति पर

[1854]

॥ संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने मइतियाण.....श्री पार्श्वनाथ बिंबं
श्री खरतर गढे.....श्री जिनसागरसूरीणां निदेशेन श्री शुभशील गुणिजिः ॥

(११ए)

खंडहर ।

पाषाण की मूर्तियों पर

[1855]

॥ श्राँ संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ए दिने महतीयाण वंशे जाटड गोत्रे सं० देवराज पुत्र सं० षीमराज पुत्र सं० जिणदासेन श्री महावीर विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गह्वे श्रीजिनचंद्रसूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाचनाचार्य शुजशील गणित्तः ॥

[1856]

- (१) संवत् १५०४ फागुण सुदि ए दिने महतीयाण वंशे वार्त्तिदिया (?) गोत्रे ठ० हरिपा
(२) लेन चार्या लाडो पु० ठ० हरिसि । श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं । श्री
(३) खरतर गह्वे श्री जिनसागर सूरीणां निदेशेन वाच
(४) नाचार्य शुजशील गणित्तः ॥

सोन जंडार ।

[1857]*

निर्बाणल्लाजाय तपस्वियोग्ये, शुजे गूहेऽर्हत् प्रतिमा प्रतिष्ठे ।
आचार्यरत्नं मुनि वैरदेवः, विमुक्तये ऽकारयदीर्घतेजः ॥

मणियार मठ ।

चरण पर

[1858]†

सं. १८३७ वर्षे मासे माह सुदी ५ तद्दिने श्रीओसवाल वंशे विराणी गोत्रे केशोदास तस्य मोतुल्लाखकस्य चार्या बीबी सताबो राजगृहे नागस्य शालिजद्रजीकस्य चरण स्थापितः ।

* देखो—आर्किओलजिकल सर्वे रिपोर्टस्—१९०५-०६ पृ० ६८

† " — " — " — " — पृ० १०३

(२२०)

[242]

‘खुस्यालचंद्रस्य पत्नी’ के स्थान में ‘खुस्यालचंद्रस्य पीपाका गोत्रस्य पत्नी’ होना चाहिये । यह लेख विपुल गिरि के मंदिर में है ।

[244]

‘सा श्री हकु—’ के स्थान में ‘सा । श्री हकुपतराय—’ होना चाहिये ।

[256]

‘देवराज सं० पीमराज’ के स्थानमें ‘देवराज पुत्र सं० पीमराज’ होना चाहिये ।

संशोधित पाठ ।

[257]

॥ ओं सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ खरतर गणेश श्री जिनचंद्रसूरि विजयगजः
तदादेशे श्री कमलसंगमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिनचंद्र सूरि पांडुरे प्र० का० श्रीमाल
वं० जीपू पुत्र उ० ठीतमल श्रावकेण श्री वैज्जार गिरो मुनि मेरुणा खि० ॥

यह चरण गांव के मंदिरमें है ।

[258]

॥ सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ श्री जिनचंद्र सूरीणामादेशेन श्री कमलसंगमोपाध्यायैः
धनाशालिचंद्रमूर्ति ॥ प्र० का० उ० ठीतमल श्रावकेण ।

[268]

“पत्नी महाकुमा—तस्या” के स्थान में “पत्नी महाकुमार्या तस्या” होना चाहिये ।



(१११)

पटना ।

शहर मंदिर ।

संशोधित पाठ ।

[323]

॥ संवत् १५४७ वर्षे वैशाख शुदि ३ मुन्नसंघे जट्टारक जी श्री जिनचन्द्र देवा साह जीव
राज पापडिवाह नित्य प्रणमति सर मंजासा श्री राजा सिवसिंघ जी रावल ।

[324]

संवत् १५४७ वर्षे वैशाख सुदि ३ मुन्नसंघे जट्टारक श्री जिनचंद्र देवा साह जिवराज
पापडिवाह सहर मंजासा श्री राजा सिवसंघजी रावल ।

दिगंबरि मंदिर—घीया तमोझी गली, सिटी ।

श्वेत पाषाण की मूर्ति पर ।

[1859]

॥ सं० १४९९ वर्षे फाट्गुण वदि २ श्री संडेर गळे उ० साह कंढहा जार्या कस्तुरी पुत्र
श्री देपाल जा० देवल दे पुत्र मोकड सहितेन श्री शीतल बिंब का० प्र० श्री शांति सुरिजिः ॥

पटना—म्युजियम ।

संशोधित पाठ ।

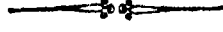
[555]

सम्बत् । १०९४ । वर्षे शाके १९३९ । प्रवर्तमाने । शुभ ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे पंचम्या
तिथौ । सोमदिने श्री व्यवहार गिरि शिखरे श्री ॥ शांति जिन चरणान्प्रतिष्ठितं ज । श्री
जनहर्ष सुरिजिः ।

(१११)

[734]

॥ सं. १ १९११ व. सा. १९९५...शुचिः । शु. १० ति । श्री शान्ति जिन पादन्यासो प्र ।
खरतर गद्य चत्वारक श्री महेन्द्र सूरिजिः का । से । श्री उदेचंद चार्या माहा कुमार्य ध्रे० ॥



बनारस ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[1860] *

- (१) श्रौं संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ गुरौ (२) श्रीमाल वंशे [ढोर] गोत्रे व०
(३) सं० उदरव अजीतमल्ल चार्याया (४) पुत्र.....
(५) श्री सुमति नाथ बिंबं का० (६) प्रति० श्री जिनचंद्र सूरि...
(७) श्री जिनतिलक सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[1861] *

- (१) श्रौं स्वस्ति संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ पुण्यनक्षत्रे गुरौ श्रीमालवंशे ढोर
गोत्रे सोवनपाल चार्या.....
(२)आदिनाथ.....
(३) खरतर ग० श्री जिनदर्षसूरि संताने श्री जिनतिलक सूरि प्रतिष्ठितं

[1862] *

- (१) [नर] पाल चार्या । महुरी पुत्र ठ० चरतपाल....
(२) सं० उदरव अजितमल्ल....

श्याम पाषाण की ठोटी मूर्ति पर ।

[1863] *

सं० १३९१ वैशाख वदि.....

(११३)

काले पाषाण की टूटी परकर के बांये तर्फ

[1864] *

(१)ज्येष्ठ सुदि १३ शुक्र वासरे । व० के....

(२) । विंबं कारितं ।

[1865] *

(१) ॥ आँ ॥ सं० १५०३ वर्षे माघ वदि ६ दिने श्रीमास वंशे नांदी गोत्रे सं० नरपाल
चार्या महु-

(२) री कारितं श्रीमहावीर विंबं । श्री खरतर गड्डे प्रतिष्ठितं श्रीजिनतागर सूरिजिः ॥

सूत्रनायकजी पर ।

[1866]

सं० १९१८ शाके १९०३ मित्ती आषाढ कृष्ण २ श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जिन विंबं प्रति-
ष्ठिता कृता वृहत् खरतर जटारक गणेश जङ्गम यु० प्रधान जटारक श्री जिनमुक्ति सूरिजिः
कारिता च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज दीपचन्द्रेन स्वश्रेयार्थं सोम वासरे ॥

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[1867]

सं० १९१८ शाके १९०३ मित्ती आषाढ कृष्ण २ सोमे श्रीवर्धमान जिन विंबं प्रतिष्ठा
कृता वृहत् खरतर जटारक गणेश जं० यु० प्रधान श्री जिनमुक्ति सूरिजिः कारित च नाहटा
गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्र पौत्र मनोरथचन्द्र श्रेयार्थमिति ।

[1868]

सं० १९१८ शाके १९०३ मित्ती आषाढ कृष्ण २ सोमे श्री ऋषज देव जिन विंबं प्रतिष्ठा

* ये मूर्तियां हाल में जौनपुर से डेढ़ कोस पर गोमती के किनारे खेत से मिली हैं । बाबू शिवचंद्र जी जौहरी ने लाकर
अपने बनारस के मंदिर में रखी हैं ।

(११४)

कृता बृहत् खरतर जटारक गणेश जं० यु० प्रधान श्री जिनमुक्ति सूरिजिः कारिता च नाहटा
गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज फूलचन्द्र श्रेयोर्धमिति ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[1869]

सं० १८९७ फा० सु० ५ श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्र० श्री जिनमहेन्द्रसूरिणा कारिता नाहटा
लक्ष्मीचन्द्र तत् जार्या लक्ष्मी बीबी विधत्ते ।

[1870]

सं० १८९७ फा० सु० ५ श्री सुपार्श्व बिंबं प्र० श्री जिनमहेन्द्र सूरिना का० बा० लक्ष्मी-
चन्द्र पुत्री नानकी नाम्ना बुद्धोत्तम श्री कुशलचन्द्र गण्युपदेशतो बृहत् खरतर गठे ।

[1871]

सं० १०२० फा० सु० २ बुधे प्रतापसिंहजी जार्या महताब कुंवर कारितं श्री चन्द्रप्रज
श्री सागरचन्द्र गणि प्रतिष्ठितं ।

सिद्धचक्र पर ।

[1872]

सं० १९१८ आषाढ कृष्ण २ सोमे श्री सिद्धचक्र प्रतिष्ठितं ज० यु० प्र० ज० श्री जिन
मुक्ति सूरिजिः कारितं च नाहटा गोत्रीय लक्ष्मीचन्द्रात्मज दीपचन्देन स्वहितार्थं ।



(११५)

देहली ।

छासा हजारीमसजो का घरदेरासर ।

देवी की मूर्ति पर ।

[1873] *

- (१) संवत् १११५ श्री (२) पचासरीय (!) गङ्गे
(३) श्रीमल्लवादि संताने (४) चेल्लकेन विरोध्या कारिता ॥

चीरेखाने का मंदिर ।

धातु की मूर्तियों पर ।

[1874]

सं० ११९९..... ।

[1875]

सं० ११३४ आष्वलू वदि २ सनौ जातु लीवूदेव श्रेयोर्थ नागदेवेन प्रतिमा कारिता
प्रतिष्ठिता मल्लवादि श्री पूर्णचंद्र सूरिनिः ।

[1876]

सं० १४६१ वर्षे माघ सुदि १० नाहर वंशे सा० बेता पु० सा० तोला जार्या तिहुणश्री
पु० हेमा धर्म्मार्ज्यां पितृव्य श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धर्म्मघोष गङ्गे
श्री मल्लयचंद्र सूरिनिः ॥ गिर.... ग ।

[1877]

संवत् १७०३ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३..... ।

[1878]

सं० १७७५.... वदि ७ श्री ऋषजानन..... ।

* यह लेख १३ वीं विद्यदेवी की धातु की मूर्ति के पृष्ठ पर खुदा हुआ है । देवी की मूर्ति सुल्तासन में बेंठो हुई लगे-
बाहन कार हाथधाली प्राचीन है ।

(११६)

बीबीशी पर ।

[1879]

संवत् १५५३ वर्षे वैशाख सु० ३ बुधे श्री हुंबड ज्ञातीय सा० देवा जा० रामति सु० जेई-
आकेन जा० माणिकदे सु० डाहीयानाय पु० स्वश्रेयसे श्री मुनिसुत्रत स्वामि विं० कारितं
प्र० श्री वृहत्तपा पद्मे ज० श्री उदयसागर सूरिनिः ॥ गिर...ग ।



जोधपुर

राजवैद्य ज० श्री उदयचंद्रजी का देरासर ।

पंचतीर्थी पर ।

[1880]

संवत् १५१६ बै० सु० ५ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० मोषसी टमकू पु० जाणा हरखु पु० पुंजा
रणसा० पाहु प० जिनदत्त युतेन श्री संजव विं० कारितं प्र० श्री तपा रत्नशेखर सूरिनिः ।



जसोल (मारवाड़) ।

पीछे पाषाण की मूर्ति पर ।

[1881]

॥ सं० १५३३ वर्षे ज्येष्ठ सु० १०..... श्री महावीर विं०.....स्वरतर श्री जिनचंद्र
सूरिनिः ।

(११७)

पंचतीर्थियों पर ।

[1882]

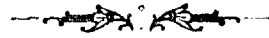
संवत् १४७६ वैशाख वदि २ श्री उकेशवंशे ठाजहड़ गोत्रे सा० पेता पु० आसधर पु०
करमा जा० कूरमादे पु० जारमखेन जा० जरमादे पु० सहणा सादा यु० श्री आदिनाथ विंवं
कारितं आत्मश्रेयसे प्रति० श्री पल्लोवाल गढे श्री यशोदेव सूरि (जितः) ।

[1883]

॥ संवत् १५१७ वर्षे माघ वदि ५ दिने श्री उकेश गढे श्री ककुदाचार्य संताने श्री जय-
केश ज्ञातौ विंवट गोत्रे सं० दादू पु० सं० श्रीवत्स पु० सुखलित जा० ललतादे पु० साहण-
केन जा० संसार दे युतेन पितरौ श्रेयसे श्री अजितनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री कक
सूरिजितः ॥

[1884]

सं० १५१९ माघ सु० शुके प्रा० व्य० मीचत जा० नासल दे पुत्र सूचाकेन जा० चांमू
माढही पु० मेरा तोलादि युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंयुनाथ विंवं कारितं प्र० तथा श्री लक्ष्मी-
सागर सूरिजितः ॥



नाकोडा ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

पीले पाषाण के चरण पर ।

[1885]

संवत् १५२५ वर्षे वैशाख वदि ५ दिने श्री वीरमपुरे श्री खरतर गढे श्री कीर्तिरत्न सूरिणां
स्वर्गः ॥ तत्पाण्डुके संखवालेचा गोत्रे सा । काजल पुत्र सा० त्रिलोकसिंह पेतसिंह जिणदास
गजडीदास कुसखाकेन करापितं । सं० १६३१ वर्षे मगसर सुदि २ दिने प्रतिष्ठितं ॥

(३३७)

पंचतीर्थियों पर ।

[1886]

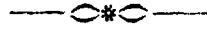
सं० १४०५ वैशाख सुदि ३ ऊएस झातीय ठाजहड़ गोत्रे सा० गणधर जार्या बखनू पुत्र मोहण जयताकेन पित्रो श्रेयसे श्री आदिनाथः कारितं प्रति० श्री अन्नयदेव सूरिजिः ।

[1887]

सं० १५१३ वर्षे माघ मासे ऊकेश वंशे सा० बढहा जा० सूडही पुत्र सा० बाहड़ जा० गजरी सुत डूंगर रणधीर सुरजनैः रणधीर श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री यशोदेव सूरिजिः ॥ ठाजहड़ गोत्रे ॥

[1888]

आँ संवत् १५३६ वर्षे श्री कीर्तिरत्न सूरि गुरुज्यो नमः सा० जेठा पुत्र रोहिनी प्रणमति ॥



बाड़मेर—मारवाड ।

पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

[1889]

सं० १६६५ वर्षे ऊकेश वंशे सा० ठाकुरसी कु० प्र० क प्रमुख श्री संघेन उ० श्री विद्यासागर गणि शिष्येण श्री विद्याशील गणि शिष्य वा० श्री विवेकमेरु गणि शिष्य पं० श्री मुनिशील गणि नित्यं प्रणमति । श्री अंचल गढे ।

—***—

उदयपुर ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—सेठों की बाड़ी में ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1890]

॥ सं० १५०६ वर्षे मा० वदि ५ दिने श्री संडर गढे उप० झा० सा० आसा पु० सात जा० पेठी पु० बितमा जा० धारू पु० जाषर जा० लाडी पु० पामा स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री यशोव्रद्ध सूरि संताने गढेशैः श्री शांति सूरिजिः ॥

(११९)

[1891]

॥ संवत् १६२७ वर्षे वैशाख सुदि ११ बुधे नारदपुरी वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय सा० टीला सुत सा० चूनाख्येन चार्या वाई पानु सुत लाधा हीता प्रभृति कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागुहाधिराज जहारक श्री हीरविजय सूरिजिश्चिरं नन्दतात् ॥

श्री कृष्णदेवजी का मंदिर—हाथीपोल ।

पंचतीर्थी पर ।

[1892]

॥ सं० १३४२ ज्येष्ठ शु० ए गुरौ मेपुत्रौवाल(?) ज्ञातीय व्यव० पुनाकेन चार्या .. श्रेयसे श्री पद्मप्रज्ञ बिंबं का० प्र० श्री सुमति सूरिजिः ॥

श्री कृष्णदेवजी का मंदिर—कसैरी गली ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1893]

॥ सं० १५०१ वर्षे आषाढ सुदि ५ उपकेश ज्ञातीय....श्री आदिनाथ बिंबं का०....

[1894]

॥ सं० १५३३ वर्षे वैशाख सु० ५ शुक्रे श्रीमाल ज्ञा० व्य० मेला जा० ऊवकू सुत मुधा-केनपितृमातृजातु श्रेयार्थ आत्मश्रेयसे श्री सुमति नाथ बिंबं का० प्र० श्री नागेंद्र गह्वे श्री गुणदेव सूरिजिः ॥ बडेचा सषवाराही ग्रामे वास्तव्य ॥

[1895]

॥ संवत् १५५९ वर्षे आषाढ सुदि ७ दिने डूगड़ गोत्रे चार्या सिग्ग्या पुत्र करमसी चार्या फुल्ला धरमाई पुत्र भीमपाल नरपाल नरपति मानु श्रेयसे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री वृहज्जे ज० श्री श्री वसुज सूरिजिः ॥

(१३०)

[1896]

॥ सं० १५७१ वर्षे चैत्र वदि ३ बुधे ऊकशे वंशे वर्डताला मोत्रे सा० तोला जा० डोडो पु० सा० आसाकेन जा० राना दे पु० जीवा द्वितीय जा० अचला दे पुत्र गोडहा पदमादि परिवार युतेन स्वपुण्यार्थं श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतर गह्वे श्री जिनहर्ष सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥ पं० कुशल....सुप.... ।

श्री गौतमस्वामी की धातु की मूर्ति पर ।

[1897]

॥ सं० १६१९ व० का० सु० ३ गुरुवारे...सरताण...श्री गौतमस्वामि बिंबं का०... ।

धातु के यंत्र पर ।

[1898]

॥ सं० १९११ वर्षे मित्ती आसोज सुदि १५ शुके मेदपाट देशे उदयपुर अ्योशवंशे वृद्धि-शाखायां गोत्र बोल्यां साहाजी श्री एकलिंग दासजी तत्पुत्र साहाजी श्री जगवान दासजी तत्पुत्र कुंवरजी श्री.....श्री सिद्धचक्र यंत्र कारापितं जट्टारक श्री आनन्द सागर सूरि कारापितं बृहत्तपा गह्वे ।

श्री कृषजदेवजी का मंदिर - सेठों की हवेली के पास ।

मूलनायकजी पर ।

[1899]

(१) ॥ अँ ॥ स्वस्ति श्री कृद्धिवृद्धि जयौ । मंगलाञ्जुदय श्री ॥ अथ संवहरेस्मिन् श्री मन्नुपति विक्रमावर्क समयातित संवत् १६९९ वर्षे श्री शालिवाहन राज्यात् शाके १५६४

(२) ॥ प्रवर्त्तमाने उत्तरगोले माघ मासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री रामगड दूर्गे महाराजाधिराज महाराव श्री हर्षासिंघ जी त्रिजयराज्ये ऊपकेश वंशे वृद्धि शाखा

(१३१)

- (३) या घांघ गोत्रे साह श्री माहृण तत्रार्या सरूप दे तत्पुत्र संघवि श्री कान्हजि तस्य वृद्धि जार्या दीपां लघु जार्या सूषम दे पुत्र चिरंजिवी पुन्यपात्र सहितेन श्री प्रासाद विं
- (४) वं ॥ श्री ऋषभदेव विंवं स्थापितं प्रतिष्ठितं मलधार गढे जट्टारिक श्री महिमा सागर सूरी तत्पट्टे श्री कल्याणसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं धर्माचार्य विजामति श्रीं उदय सागर सूरिः । शुभं ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1900]

॥ श्री ॥ सं० १४९९ वर्षे फा० सुदि २ दिने त्र्योसवाल झातीय सा० जाऊण पु० सा० जुदा सुश्रावक जार्या रतनु तत्सुतेन सा० सोमाकेन पुत्र देवदत्त जगमाळादि सहितेन श्री कुंथुनाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं खरतर गढे श्री जिनजट्ट सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1901]

॥ सं० १४९९ माह सुदि ६ सोमे उ० झा० गूंदोवा गोत्रे सा० खाषा जा० खाषण दे पु० मेहाकेन जा० मयणल दे पु० पित्रगल रणपाळादि सह जाई पेटा जा० पेटल दे निमित्तं सुमतिनाथ का० प्र० चैत्र गढे श्री मुनितिलक सूरि गुणाकर सूरिजिः ॥

[1902]

॥ संवत् १५२९ वर्षे वै० व० ४ शुके प्रा० झातीय प० चांपसी जा० पोमादे सु० सांगा- केन जा० दर्ई सुत करण त्रा० सहसादि कुटुंबयुतेन स्वमातृपितृश्रेयसे कुंथुनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तथा श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । जाडुखि ग्राम वास्तव्यः ॥

चौवोशी पर ।

[1903]

॥ सं० १५११ व० खाषा० व० ८ श० उपकेश झातौ आदित्यनाग गोत्रे धाधू शा० सा०

(१३२)

जाषा जा० जांब श्री पु० सुवर्णपाख जार्या सोमश्री पुत्र सा० लाषा केन जा० अधकू पु०
सदरष सूरचंद्र हरिचंद्र युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंबं कारितं उपकेश ग० ककुदाचार्य
संताने प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिजि ॥ श्रीः ॥

प्रतिमा पर ।

[1904]

॥ सं० १९१९ रा मिगसर सु० १० उसवाल कागा गोत्रे सा० लिषमीदास जी जार्या
अनरुप दे पुत्र नाथजी अनरुप दे जी पंच पर.....प्रतिष्ठितं ।



करेडा - मेवाड ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[1905] *

- (१) ओ देव धर्मोयं सुमति गुरोः मध्यम शास्त्रस्य
(२) वसति का० देवसूरि संवतु
(३) जिः

[1906]

सं० १६०४ व० ज्येष्ठ व०... बा कहानी (?) श्री कुंथुनाथ व जि... दान... सरपत्र
खत सोनी सीदकरण

[1907]

॥ संवत् १६१९ वैशाख सुदि ६ श्री आदिनाथ.....श्री विजयदान सूरि प्र० वा०
..... पु० ना० सुंदर..... ।

* संवत् के अंकों का स्थान टूट गया है, परन्तु लेख के अन्य अक्षरों से स्पष्ट है कि प्रतिमा बहुत प्राचीन है ।

(१३३)

[1908]

॥ सं० १६११ व० वैशाख सुदि ११ वो श्री शीतलनाथ विंभं गुरु श्री विजय सूरिजि ॥

[1909]

॥ सं० १६४६ अस० सुदि ६ वाजसा श्री धर्म.....

[1910]

॥ संवत् १७१० वर्षे ज्येष्ठ सित ६ गुरौ श्री सुविधि विंभं श्रेयोर्थ का० प्र० ज० श्री विजयराज सूरिजिः आ० कनका ज० श्री विजय सेन सूरिजिः ॥

पंचतीर्थी पर ।

[1911]

॥ सं० १५०९ वर्षे माघ सुदि ५ शुके प्राग्वाट वंशे सं० कर्मट जा० माजू पु० उधरणेन चार्या सोद्दिणि पुत्र आदहा वोसा नीसा सहितेन श्री अंचल गहेश श्री जयकेसरि सूरि उपदेशेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य स्वामी विंभं कारितं प्र० श्रीसंघेन ॥

[1912]

॥ सं० १५१६ वीरम ग्रामे श्रे० वीठा सोनस पुत्र श्रे० जुडसिकेन जा० संपूटी पुत्र धन्ना वाघा चार्या जाऊ प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री नमिनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागह नायक श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

[1913]

॥ संवत् १५१९ वर्षे फागुण सुदि २ शुके श्री श्री (?) वंशे रसोइया गोत्रे श्रे० गुहा चार्या रंगाई पुत्र श्रे० देधर सुभावकेष जा० कुंवरि चातृ सीधा युतेन श्री अंचलगहेश्वर श्री जयकेसरि सूरिषामुपदेशेन स्वश्रेयोर्थ श्री शांति नाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥

(१३४)

[1914]

॥ संवत् १५४१ वर्षे वैशाख मासे नागर झाती श्रेण केट्टहा जाण मानूं सुत चांगा
माझ्याकेन सुत हरखा चांगा बाला सहितेन आत्मश्रेयोर्थ श्री संजवनाथ बिंब काण प्र०
बृद्ध तपापक्षे ज० श्री जिनरत्न सूरिजिः ॥

[1915]

॥ संवत् १५७९ वर्षे माघ सुदि ७ गुरौ उपकेश झाण साण हापा पुण बिजा जाण बड्-
जल दे पुण ठाकुर रीडा ठाकुर जाण अठवा दे पुत्र कुंरपाल युतेन आत्मश्रेण पित्रोः पुण श्री
श्रीतलनाथ बिंब काण प्र० श्री० वृ० वो० श्री मलयहंस सूरिजिः ॥ कईउलि वास्तव्य ॥

रंगमंडप के बांये तर्फे आखे के नीचे का शिलाखेख ।

[1916]

(१) ॥ श्री ॥ संवत् १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ११ शुक्रे श्री आंचल गढे । प्राग्वाट झातीय
महं साजण महं तेजा सा जांऊणेन निज मातृ

(२) कपूर देवी श्रेयोर्थ रवनक (?) श्री शांतिनाथ बिंब कारापितं ॥ संताने महं
मंडलिक महं माळा महं देवसीह महं प्रमत्तसीह

सनामंरुप में दरवाजे के दाहिने स्तंभ पर ।

[1917]

॥ श्री ॥ संवत् १४६६ वर्षे चैत्र सुदि १३ सुविहित शिरोरत्न शेखर श्री रत्नशेखर सुरि
पटांबुधि पूर्णचंद्र श्री पूर्णचंद्रसूरि गुरुक्रम कमलहंसाः श्री हेम हंससूरयः सपरिकरा करः . . .

सनामंरुप के ३ मऊले के स्तंभ पर ।

[1918]

श्री जिनसागर सूरि उदयशील गणि आझासागर गणि हेमसुंदर गणि मेरुप्रज
मुनि श्री

(१३५)

बावन जिनायसमें पंचतीर्थीयों पर ।

[1019]

॥ सं० ११४९.....सप्तमिणी श्रेयोर्थ पुत्र उधरणेन जात्रि आसधर श्रेयोर्थ श्री पार्श्व-
नाथ बिंबं कारितं ॥

[1020]

श्री संवत् ११६१ ज्येष्ठ सुदि १० शनौ बायट ज्ञातीय स्वसुर नायक आसस्र श्रेयोर्थ
.....श्री श्रेयांस बिंबं कारितं । श्री नागेन्द्र गढे श्री वर्द्धमान सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

[1021]

संवत् १३११ वर्षे फागुण सु० जा० घाटी पु० ऊदा जा० रुपिणि सुत आसपाक्षेण
माता पिता पूर्वज श्रेयोर्थ चतुर्विंशति पट्टः कारितः श्री चैत्रगङ्गीय श्री आमदेव सूरिजिः
श्री शांतिनाथ

[1022]

सं० १३५५ श्री ब्रह्माण गढे श्रीमाल ज्ञातीय रिज पूर्वज श्रेयसे सुत मालाकेन श्री आदि
नाथ बिंबं प्र० श्री विमल सूरिजिः ।

[1023]

सं० १३५६ श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री कक्क सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

[1024]

सं० १३७१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० धीना जार्या देवलं पुत्र चक्रूजा केन
मातृ पितृ श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्री पूर्णिमा गढे श्री सोमतिषक सूरि उपदेशेन बिंबं
का० प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥

[1025]

सं० १३७३ वैशाख वदि ११ श्रे० सिरकुंथार जा० सींगार देव्या प्र० सा लू

श्री महावीर कारितं ।

(३३६)

[1926]

संवत् १३९१ मा० सु० १५ खरतर गङ्गीय श्री जिन कुशल सूरि शिष्यैः श्री जिन पद्म
सूरिजिः श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा प्रतिष्ठिता कारिता च भव० बाहि सुतेन रत्नासिंहेन पुत्र
आस्थादि परिश्रुतेन स्वपितृ सर्व पितृव्य पुन्यार्थ ।

[1927]

सं० १४०० व० सु० ५ प्रा० रोस्तरा पदम । साहूक साकल्य श्रे० देवसींहेन का० प्रति०
सिद्धान्तिक श्री माणचन्द्र सूरि ।

[1928]

सं० १४११ व० ज्येष्ठ सु० ११ बुधे.....मंडलिक जा० माहूण दे सुत धाणा श्रेयोर्ष
व्य० षानाकेन श्री संजवनाथ बिंबं का०...तपा गच्छे श्री रत्नशेखर सूरिणामुपदेशेन

[1929]

सं० १४३९ माहू वदि ७ श्रीमाळ झा० व्यव० राणासीहू जा० ललती पुत्र वयरा केन
श्री सुमतिनाथ बिंबं का० श्री विजयसेन सूरि पदे.....

[1930]

सं० १४७१ वर्षे माघ सुदि श्री मुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० कठोलीवाल गंठ
श्री संघतिष्ठक सूरि.....

[1931]

सं० १४०२ वर्षे साहूखेचा गोत्रे सा हांपा जा० गयणल दे पुत्र सा० श्रींजा
जा० वीरणी पुत्र परह्येन पितृ मातृ श्रेयसे श्री श्रेयांस बिंबं का० प्र० श्री पल्लीकीय गंठ
श्री यशोदेव सूरिजिः ।

[1932]

श्री सं० १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे श्रीमाळ वंशे वद्दगटा गोत्रे सा० ऊदा पुत्र सा०
जगकेन आसा जूसा सहसादि पुत्रयुतेन पुन्यार्थ श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री
खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरिजिः ।

(१३९)

[1933]

सं० १४९३ व० वै० सु० ५ श्री संकर गढे पीपलउडेवा गोत्रे श्रे० जा० सा० कान्हा
जा० वीमणि पु० रतनाकेन पित्रौ निमित्तं श्री शांतिनाथ विं० का० श्री जशोत्तम सूरि
संताने श्री शालि ।

[1934]

सं० १५०३ व० ज्ये० सु० ११ शु० श्री उप० ग० ककुदाचार्य सं० विपड गो० सा० जीऊण
पु० रामा जा० जीवदही पु० जिलाकेन पत्नीपुत्रस्वश्रे० श्री श्रेयांस विं० का० ।

[1935]

सं० १५०८ मा० व० १३ उकेश सं० मारंग सुत संजा जा० हेमा दाणा डुंगर नापा सं०
रावा जा० पोडू सुत साहस जहाण जा० छद्म्या श्री संजव विं० का० प्र० श्री उदयनंदि
सूरिनिः ।

[1936]

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे उपकेश झा० कस्याट गोत्रे । सा० धाना जा०
ससमादे पुत्र सा चडसीडाकेन पितर बालू निमित्तं श्री सुमतिनाथ विं० का० प्र० उपकेश०
कुल श्रावक ।

[1937]

सं० १५१७ वर्षे चैत्र वदि १ शुके श्रीश्रीमाख झा० सु० बडूआस पुत्र पौत्र
सहितेन श्री अजितनाथ मु० जिवितस्वामि प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे श्री राजतिलक सूरिणा-
मुपदेशेन ।

[1938]

सं० १५२५ वर्षे मार्ग सु० ९ धागर वासि प्राग्वाट सा० बाघा जा० गाऊ पुत्र सा०
मालाकेन जा० आडू पुत्र पर्वत जा० नाई प्रमुख कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ विं०
का० प्र० तथा श्री सोमसुंदर सूरि शिष्य श्री उष्णीसागर सूरिनिः ।

(१३८)

[1939]

सं० १५३ । व० वैशाख सुदि ३ शनौ श्री संडेर गष्टे उ० टप गोत्रे देहहा जा०
दह्दहण दे गोरा जा० मह्दहा दे पु० आह्दहा जा० करध्या जा० आनूण दे पु० तोला श्रे० पूर्वज
पुन्यार्थं वासुपूज्य विंबं का० . . . ।

[1940]

॥ संवत् १५३२ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे उकेश वंशे जाजा गोत्रे सा० धर्मा जा० धर्मा
दे पुत्र सा० काजा सुश्रावकेण जा० जोजा प्रमुख परिवार सहितेन श्री श्रेयांस विंबं का०
प्र० खरतर गष्टे श्री जिनजद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[1941]

संवत् १५३८ वर्षे ज्येष्ठ सु माला जा० माला दे सुत केह्दहा जा० सिवा सुत
पोचकेन स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रज विंबं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुंदर शिष्य श्री जयचंद्र
सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[1942]

संवत् १६३७ वर्षे वैशाख सुदि १३ रवौ श्री स्तम्भतोर्य वास्तव्य श्री नागर ज्ञातीय
सा० पना जार्या कीलादे सुत सा० होसा जार्या वा । हांसलदे नाम्ना श्री आदिनाथ पंच-
तीर्थी करापितं । श्रीमत्तपा गष्टे जट्टारक प्रजु श्री हीर विजय सूरिजिः प्रतिष्ठितं । शुभं
भवतु ॥

[1943]

॥ संवत् १६८५ वर्षे वैशाख सुदि ७ गुरुवासरे वास्तव्य उकेश ज्ञातीय द०
साह यांहसा जा० प्रजा सुता जोध्या सुत हेमा कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री मुनि
तपा गष्टे ज० श्री हीरविजय सूरि ज० श्री विजयदेव सूरिश्वर ।

[1944]

संवत् १८८७ माघ सु० ५ गुरुदिने आचार्य श्री होमकीर्तीः तत्पट्टे श्री हेमकीर्ति देवाः

(३३९)

अग्रोतकान्वये साधु जात्रा जाण हीनाही तयोः पुत्राः साधु कौळा चूळा कौळा जार्या सुनुना
तयो पुत्र कीळ्हा जार्या बंदो पुत्र दासू वस्तुपाळ नित्यं प्रणमति ॥

चौवोशी पर ।

[1945]

- (१) ॐ संवत् ११४३ मार्ग सु० ७ सोमे श्री सांबदेवा धंमके (?) . . . जासळ धावक
पुत्रि
(२) कया श्रीमत्प्रसिंकया श्रेयोर्धं चतुर्विंशति पट्टकः कारितः ॥
(३) (बिंबं) शं० वि० चालू । का० प्र० तपा गळे ॥

चौवीसी पर ।

[1946]

॥ सं० १५६५ वै० शु० ७ शनौ श्री नटीपद्म वास्तव्य श्रीश्रीमाळ ज्ञातीय सा० कान्हा
जार्या फुतिंगदे सुता सा० मेघा जा० बारधाई सुत रूपा बीमादि सकुटुंब युतया सा० राजा
जार्या बीमाई सुता राकू नाम्न्या श्री अनंतनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गळे श्री सोम
सुंदरसूरि संताने श्री हेमविमल सूरिजिः ॥

झींकार यंत्र पर ।

[1947]

॥ संवत् १६७९ वर्षे पोस मासे १० दिने श्री वृहत् खरतर गळे श्री जिनराज सूरि
विजय राज्ये चंदा पूम्यां ओसवाल ज्ञातीय नाहटा गोत्रे सा० सहसराज पुत्र सा० सिंघ-
राज तत्पुत्राः सा० श्री चंड संवत् १ सा० सधारण सा० श्री हंस सा० करसण हासा सधा-
रण जार्या सहयदे सुत तत्पुत्रा सहसकरण सुमति सहोदर शुजकर प्रतिष्ठितं श्रीमत्
श्री परानयन सुहगुरुणा ॥ हितं कारापितं ॥

(१४०)

बावन जिनालय की देहरियों के पाट पर ।

[1948]

- (१) संवत् १०३९ (व) षे श्री संमेरक गढे श्री यशोजद्र सूरि संताने श्री स्यामा (?)
चार्या.....
- (२) प्र० ज० श्री यशोजद्र सूरिजिः श्री पार्श्वनाथ विंबं प्रतिष्ठितं ॥ न ॥ पूर्व-
चंद्रेण कारितं.....

[1949]

- (१) ॐ संवत् १३०३ वर्षे चैत्र वदि ४ सोमदिने श्री चित्र गढे श्री जडेश्वर संताने
राटजरीय वंशे
- (२) श्रे० जीम अर्जुन करवट श्रे० बूना पुत्र श्रे० घयजा धांधल पासरु ऊदादिजिः
कुटुंब समेतैः.....
- (३) थ प्रतिमा कारिता । प्रति० श्री जिनेश्वर सूरि शिष्यैः श्री जिनदेव सूरिजिः ॥

[1950]

- (१) ॐ संवत् १३१७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री कोरंटक गढे श्री नन्नाचार्य संताने...
- (२) सा० जीमा पुत्र जिसदेव रतन अरयमदन कुंता महणराव मातृ खाठी श्रेयोर्य
विंबं (कारि)
- (३) (ता) । प्रतिष्ठितं । श्री सर्वदेव सूरिजिः ॥

[1951]

- (१) ॥ (संवत् १३१७) ज्येष्ठ वदि ११ बुधे श्री संमेरक गढे प्रतिबद्ध चैत्यालये श्री यशो
जद्र सूरि संताने श्रे० साठ देव पुत्र मह सामंत मह आसपाखेन पु० धांधल सा०...
- (२) (श्रे) योर्य श्री संजवनाथ विंबं देवकुलिका सहितं कारितं प्रतिष्ठितं श्री
शांति सूरि शिष्यैः ईश्वर सूरिजिः ॥ ठ ॥ ठ ॥ ठ ॥

(१४१)

[1952]

- (१) ॥ ॐ ॥ संवत् १३३९ वर्षे फागुण सुदि ८ शनौ नां देवान्वये साधु पञ्चमदेव सुत संघपति साधु श्री पासदेव जार्या षेढी पुत्राश्चत्वारः सा० देहड सा० काजल रज्ज
(२) ढाहड पौत्र जिणदेव दिवधर प्रभृतिजिः देवकुलिका सहितं श्री सुमति नाथ बिंबं का० प्र० वार्दीड श्री धर्मघोष सूरि गछे श्री मुनिचंद्र सूरि शिष्यैः श्री गुणचंद्र सूरिजिः ॥ ७ ॥

[1953]

- (१) ॥ ॐ नमः ॥ संवत् १३३९ फागुण सुदि ८ शनौ श्री राज गछे साधु नेमा सुत धार सत तनुज साधु नाहड तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकड जार्या नान्ही पुत्र पाहडा ॥
(२) जा० धर्मसिरि देपाल जार्या देवश्री तथा सा० नरपति पत्नी ललतू छि० पत्नी नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाल जार्या हीरा देवी छि० हरिसिणि पुत्र महीपाल ॥
(३) देव तृ० हिमश्री सा० कुमारसिह तथा सा० तेजा जार्या लीलू पुत्र धरणिग पून सीह एतस्मिन्ननुक्रमे पितृ सा० नरपति श्रेयसे सा० हरिपालेन श्री पंके ॥
(४) र गछे प्रतिवद्ध श्री पार्श्वनाथ चैत्य देवकुलिका सहितं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० वार्दीड श्री धर्मघोष सूरि पट्टक्रमे श्री ध्यानंद सूरि शिष्यैः श्री अमरप्रज सूरिजिः ॥

[1954]

- (१) ॥ ॐ ॥ सं० १३३९ वर्षे फा० सुदि ८ शनौ श्री राज गछे सा० नेमा सुत सा० धार सत सुत सा० ढाहड तत्पुत्रास्त्रयो यथा सा० काकड जार्या नान्ही पुत्र पाहडा जा० ॥
(२) धर्मसिरि देपाल जार्या देवश्री पुत्र तथा सा० नरपति जार्या ललतू छि० नायक देवी पुत्राः सा० सहदेव सा० हरिपाल पत्नी हीरादेवी छि० हरिसिणि पुत्र महीपा-
(३) ल देव तृ० हेमश्री कुमारसीह तथा सा० तेजा जार्या लीलू पुत्र धरणिग पूनसीह

(१४१)

- पुत्रादि धर्म कुटुंब समुदये पितृ सा० काकड श्रेयसे सा० पाट्टाकेन श्री
(४) षंडेर गढे श्री पार्श्वनाथ चैत्ये देवकुलिका श्री आदिनाथश्च कारितं प्र० वादींद्र
श्री धर्मघोष सूरि पट्टक्रमे श्री आनंद सूरि शिष्य अमलप्रज सूरिजिः ॥

[1955]

- (१) ॥ संवत् १३९१ वर्षे पौष सुदि ७ रवौ श्री चित्रकूट स्थाने महाराजाधिराज पृथ्वी-
चंद्र
(२) श्री मालदेव पुत्र श्री वणवीर सत्कं सिलहदार महमद देव सुहड सींह चउंररा
सत्कं पुत्र
(३) दिवं गतं तस्य सत्कं गोमह कागपितं : ॥

[1956]

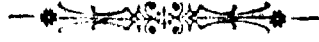
- (१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति ॥ संवत् १४९१ वर्षे ॥ माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचम्यां तिथौ बुध-
वारे श्रीमाल ज्ञातीय मउठिया गोत्रे सा० ठाडरु सा० धाना जा० इह्हा पुत्र सं०
हेमराज सं० थिरराज सं० लांबू सं० ठाडपाल कु
(२) . . . दे पुत्र सा० हेमराज पुत्र समुद्रपात्र चार्वा श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं
कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनप्रज सूरि अन्वये । श्री जिनसर्व
सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[1957]

- (१) ॥ ॐ ॥ सं० १४९६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ बुधवारे श्री जकेश वंशे नाहट शाखायां ।
सा० माजण पुत्र सा० व
(२) णवीर पुत्र सा० जोमा । वीसन्न रणपात्र प्रमुख पौत्रादि परिवार सहितेन श्री
करहेटक स्थाने श्री पार्श्व
(३) नाथ जुषने श्री विमलनाथ देवस्य देवकुलिका कारापिता ॥ प्रतिष्ठिता श्री खरतर
गढे श्री जिनवर्द्धन सु-

(१४३)

- (४) रीणामनुक्रमे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टकमल्लमार्तंडमंडलिः श्री मज्जिनसागर सूरिजिः
॥ शिवमस्तु ॥
- (५) वरसंग देवराज पुन्यार्थः ॥



नागदा - मेवाड़ ।

श्री शांतिनाथ जी का मंदिर ।

मूखनायक की श्वेत पषाण की विशाल मूर्ति की चरण चौकी पर ।

[1958]*

- (१) संवत् १४९४ वर्षे माघ सुदि ११ गुरुवारे श्री
- (२) मेदपाट देशे श्री देवकुल पाटक पुरवरे नरेश्वर श्री मोकल पुत्र
- (३) श्री कुंजकर्ण चूपति विजयराज्ये श्री उंसवंसे श्री नवलक्ष शाष मंडन सा० लक्ष्मी
- (४) धर सुत सा० छाधू तत्पुत्र साधु श्री रामदेव तन्नार्या प्रथमा मेला दे द्वितीया
माहृण दे । मेला दे कुक्षि संजृत
- (५) सा० श्री सहृणपाल । माहृण दे कुक्षिसरोजहंसोपम श्री जिनधर्मकर्पूरवातसय
धीनुक सा० सारंग तदंगना हीमा दे लखमा दे
- (६) प्रमुख परिवार सहितेन सा० सारंगेन निजजुजापार्जिते लक्ष्मी सफली करणार्थ
निरुपममद्भुतं श्रीमहत् श्री शांति जिनवर बिंबं सपरिकरं कारितं
- (७) प्रतिष्ठितं श्री वर्द्धमानस्वाम्यन्त्रये श्री मत्वरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री
जिनवर्द्धन सूरि त (स्त) त्पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि त (स्त) त्पट्टपूर्वावलचृलिका स-

* यह लेख " भावनगर इत्तकिसख " पृ० ११३-१३-में और " देवकुलपाटक " पृ० १६ नं० १८ में प्रकाशित हुआ है ।

(१४५)

पुंडरिकजी के मूर्ति पर ।

[1962]

संवत् १६०९ वर्षे आषाढ बहुल ४ शनौ देलवाड़ा वास्तव्य शवर गोत्रे ऊकेश ज्ञातीय वृद्धशाखीय सा० मानाकेन ज्ञा० हीरा रामा पुत्र काया रांगा फया युतेन स्वश्रेयसे श्री पुंडरीक मूर्तिः कारापितं प्रतिष्ठितं संकर गह्वे ज० श्री मानाजी केसजी प्र० ॥

आचार्यों के मूर्ति पर ।

[1963]

.
. . . जिनरतन सूरिगुरु मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता . . .
.

[1964]

संवत् १४०६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ दिने नवलक्ष शाखीय सा० रामदेव चार्यया श्री मेला-देव्या श्री जिनवर्द्धन सूरि मूर्तिः कारिता प्र० श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।

[1965]

संवत् १४०६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ सा० रामदेव चार्या मेला देव्या श्री डोणाचार्य गुरुमूर्तिः कारिता प्र० श्री खरतर गह्वे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।

श्वेत पाषाण की कायोत्सर्ग मूर्तियों पर ।

[1966] *

(१) ॥ ए० ॥ संवत् १४९३ वर्षे वैशाख वदि ५ यवन प्रासाद गौष्टिक प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० जांजा जा०

* यह लेख धोरीवाच नामक स्थान में मिट्टी से निकली हुई विशाल मूर्ति के चरण चौकी पर है

(१४६)

- (१) छात्रि पुत्र देवा जार्या देवल दे पुत्र ९ व्यव कुंभाक्ष सिरिपति नर दे
धीणा पंडित लषमसी आ-
- (३) त्मश्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ जिनयुगल कारापितः प्रतिष्ठितः कबोलीवाल गङ्गे पूर्णिमा
पक्षे द्वितीय शाखा-
- (४) यां जहारक श्री जडेश्वर सूरि संताने तस्यान्वये ज० श्री रत्नप्रत्त सूरि तत्पट्टे
जहारक श्री सवाण-
- (५) द सूरिणा शिष्य लषमसीदेन आत्मश्रेयोर्थ कारापितः प्रतिष्ठितः ज० श्री सर्वा-
णद सूरि-
- (६) णामुपदेशेन ॥ मंगलाच्युदयं ॥

[1967]

- (१) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रमादित्य संवत् १५०० वर्षे वैशाख शुदि ३ श्रीमाल-
ज्ञातौ मांथलपुरा गोत्रे सा०
- (२) देहड़ संताने सा० काला तत्पुत्र सा० मेला केला मेला पुत्र सा० सोमा स० सा-
यरकेन पुत्र हुंफण पुत्र
- (३) तोला सोमा पुत्र महिपति हुंगर जापर सायर पुत्र बाठा पासा हुंफण पुत्र वस्त-
पाल त
- (४) ल रत्नपाल कुमरपाल तोला पुत्र नरपाल नरपति प्रभृति पुत्र पौत्रादि संहितेण

पट्टों पर ।

[1968]

सं० १४९४ वर्षे फाट्गुन वदि ५ प्राग्वाट सा० देपाल पुत्र सा० सुहडसी जार्या सुहडा दे
पुत्र पीठउलिआ सा० करणा जार्या चनू पुत्र सा० धांधा हेमा धर्मा कर्मा हीरा काला
त्रातू सा० हीसाकेन जार्या खाखू पुत्र आमदत्तादि कुटुंबयुतेन श्री छाससति जिनपट्टिका
कारिता प्रतिष्ठिता श्री तपागहनायक श्री सोमसुंदर सूरजिः ॥ श्रीः ॥

(१४७)

[1969]

सं० १५०३ वर्षे आषाढ शु० ७ प्राग्वाट सा० देपाख पु० सा० सुहडसी जा० सुहडा दे
सुत पीठउलिथ्या सा० करणा जार्या वनू पुत्र सा० धांधा हेमा धर्मा कर्मा हीरा होसा काखा
सा० धर्माकेन जा० धर्माणि सुन महसा साक्षिग सहजा सोना साजणादि कुटुंबयुतेन एद
जिनपाट्टिका कारिता ॥ प्रतिष्ठिता श्री तपागन्नाधिराज श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री जय
चंद्र सूरिजिः ॥

[1970]

सं० १५०६ फा० शुदि ए श० सा० सोमा जा० रूडी सुत सा० समधरेण त्रातृ फाफा
सीधर तिहुणा गोविंदादि कुटुंबयुतेन तीर्थ श्री शत्रुंजयागरिनारावतार पट्टिका का० प्र०
श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

भोंयरे में ।

मूलनायकजी पर ।

[1971]

१४९४ जकेश सा० वाष्ठा राणी पुत्र वीसख खीमाई पुत्र धीरा पत्नी सा० राजा रत्ना
दे पुत्री मादहण देव का० आदि बिंबं प्र० तपा श्री सोमसुंदर सूरिजिः ॥

पट्ट पर ।

[1972]

सं० १४७५ वै० शु० ३ जकेश वंश सा० वाष्ठा जार्या राणा दे पुत्र सा० वीसख पट्ट्या
सा० रामदेव जार्या मेला दे पुत्रा सं० खीमाई नाम्न्या पुत्र सा० धीरा च्यांपा हांसादि
युतया श्री नन्दोश्वर पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः तपागन्ने श्री देवसुंदर सूरि शिष्य श्री सोम
सुंदर सूरिजिः स्थापितः तपा श्री युगादि देवप्रासादे ॥ सूत्रधार नरवद कृतः ॥

(१४७)

[1973]

सं० १५०३ वर्षे आषाढ शु० ९ प्राग्वाट सा० आका जा० जसल दे चांपू पुत्र सा० देव्हा जूठा सोना षीमायेः चतुर्विंशति जिन विंबं पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सोमसुंदर सूरि शिष्यैः श्री जयचंद्र सूरिजिः ॥

देहरी में ।

मूलनायकजी पर ।

[1974]

सं० १४९५ ज्येष्ठ सुदि १४ बुधे श्री विमलनाथ विंबं कारितं जानसिरि श्राविकया । प्र । श्री जिनसागर सूरिजिः । श्रीमाल ज्ञातीय जांभिया गोत्रे ।

पट्टों पर ।

[1975]

सं० १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १४ बुधे श्री ऊकेश वंशे नवल्लक्षा शाषायां सा० राम जार्या नारिंग दे पुण्यार्थं श्री श्री सिद्धिशिलाकायां श्री जिनवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनसागर सूरिजिः ।

[1976]

(१) ॥ संवत् १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ ॥ ऊकेशवंशशृंगारो जुवन पाल इत्यज्ञत् । जुवनं षालयत् यः स्वुं नामनिन्ये (?) यथार्थतः ॥ १ ॥ तदन्वये ततो जात . . . तक

(२) त्यः पृथु प्रतापी ननु रोष तापी । जिनांघ्रिरक्तो गुरुपादलक्षो । गुणानुरागी हृदय विरागी ॥ ४ ॥ युगलकं ॥ तस्यांगना . . . ग कुरंगनेत्रा सीतेव

(३) धार सहितेन सा० सहणा सुभ्रावकेण जिनमातृ पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य विंबं चतुर्विंशति पट्टक विंशति विहरमानादि

(१४९)

[1977]

- (१) संवत् १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे नवलक्ष्ण गोत्रे सा० रामदेव चार्या मेला
(२) दे पुत्र सहणपाल चार्या नारिगं देव्या श्री जिन मूर्ति विंबानि प्र-
(३) तिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनचंद्र सूरि पेढ श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

दरवाजों पर ।

[1978]

- (१) संवत् १४९९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवासरे
(२)

[1979]

- (१) श्री ॥ सं० १४८३ नागपुरे ऊकेश वंशे सा० हीरा जा० धर्मिणि पुत्र्या सरस्वती
पत्तनवासि सा० हीरा सुत सा० संग्राम सिंह चार्यया सम्यक्त्वदेशविरत्यादि गुण
(२) युक्तया श्री० देऊ नाम्न्या न्यायोग(र्जि)तं निजवित्त व्ययेन तपापहे श्रीआदिदे-
वप्रासादे श्रीपार्श्वनाथ देवकुलिका कारिता प्र० गढनाथक श्रीसोमसुंदर सूरिजिः ।

[1980]

- (१) सं० १४८४ वर्षे श्री अणहिल्लपुरवासि श्री श्रीमालझाति सा० समरसी पुत्रेण सा०
सोमाकेन संग्रति थहमदावादपुरवासी सत्तार्या
(२) सुत मो० वाघादि कुटुंबयुतेन श्री तरापह श्री आदिनाथ प्रासादे श्री अजित
देवकुलिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री तपापहे श्री सोमसुंदर सूरिजिः ॥

[1981]

- (१) ॥ ॐ ॥ संवत् १४८६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शुके नवलक्ष्ण गोत्रे
(२) सा० रामदेव चार्या मेला दे श्राविकया निजपुण्यार्थ
(३) श्री आदिनाथ प्रासाद् कारितं ॥ प्रतिष्ठितं

(१५०)

(४) श्री खरतर गछे श्री जिनवर्द्धन सूरि षडे श्री जिनचंद्र सूरिनिः ॥

[1982]

(१) ॥ संवत् १४८६ वर्षे कार्तिक सुदि ११ सोमे ॥ ऊकेश झातीय सा० ठाहड़ जार्या
सुषुव दे पु० राना साना सछषाके(न) निज मातृपितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ प्रासा-
दे श्री सुमतिनाथ देव प्रतिमा

(२) कारिता ॥ ऊकेश गछे श्री सिद्धाचार्य संतामे प्रतिष्ठितं । श्री देवगुप्त सूरिनिः ॥
ठ ॥ श्री ॥ मङ्गधारीयकैः ॥

[1983]

(१) सं० १४८८ फा० सु० ८ श्रीमास झा० सा०

(२) देवकुलिका कारिता प्रतिष्ठिता तपागछनायक श्री सोमसुंदर सूरि श्री मुनि
सूरिनिः ॥ श्री अष्टाहिसपुरपन्नम वास्तव्य

[1984]

(१) ॥ ॐ ॥ संवत् १४९१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधवारि ऊकेश वंशे श्री नवलखा गोत्रे
श्री रामदेव जार्या श्राविका मेला दे पुत्र साधु श्री सहणपाल जार्या नारिंग दे
श्राविका पुत्र सा० रणमद्ध सा० रणधीर रणन्नम सा० कर्मसी पौत्रादि सहितया
निज पुण्यार्थं जिनानां

(२)
श्री जिनराज सूरि षडे श्री जिनवर्द्धन सूरि तत्पडे श्री जिनचंद्र सूरि तत्पट्टपूर्वा-
चल श्रीयुत श्री जिनसागर सूरिनिः ॥ शुभं चवतु ॥ ठ ॥ ठ ॥ ठ ॥ ठ ॥ ठ ॥

मये मंदिर में ।

मूलनायकजी पर ।

[1985]

॥ सं० १४९१ वर्षे वैशाख सुदि १ श्री पार्श्वनाथ विंब ॥ सा० ससुदय वहस्थ ॥

(१५१)

कायोत्सर्ग मूर्तियों पर

[1986]

- (१) ॥ ॐ ॥ सं० १४६४ वर्षे आषा० शु० १३ दिने गूर्जर झातीय ज-
(२) णसासी साषण सुत मं० जयतल सुत मं० सादा जार्या सुमल
(३) दे सुत मं० वरसिंह चातृ मं० जेसाकेन जार्या शृंगार दे पुत्र
(४) हरिषंड प्रमुख सकल कुटुंबसहितेन स्वश्रेयसे प्रजु
(५) श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री सूरिजिः ॥

[1987]

॥ ॐ ॥ संवत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ गुरुवारे श्रीमाल झातीय मंत्रि ण प्रा
सुत नंदिगेस । सुत पुत्र सा० आसा सुभ्रावकेण श्री पार्श्वनाथ त्रिंश स्वपुण्यार्थे कारितं
श्री खरतर गढे श्री जिनवर्द्धन सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

आचार्यों के मूर्तियों पर ।

[1988]

॥ ॐ ॥ सं० १३७१ वैशाख वदि ५ श्रीपत्तने श्री शांतिनाथ विधि चैत्ये श्री जिनचंद्र
सूरि शिष्यैः श्री जिनकुशल सूरिजिः श्री जिनप्रबोध सूरि मूर्तिः प्रतिष्ठिता ॥ कारिता च
सा० कुंमरपाल रत्नैः सा० महणसिंह सा० देपाल सा० जगसिंह सा० मेहा सुभ्रावकैः सप-
रिवारैः स्वश्रेयार्थं ॥ ७ ॥

[1989]

संवत् १४९१ वर्षे माह सुदि ५ बुधे नवलक्ष गोत्रे सा० सहणपालेण स्वपुण्यार्थे श्री
जनवर्द्धन सूरि पद्मे श्री जिनचंद्र सूरिणां मूर्तिः प्र० श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

(१५१)

ऋषभदेवजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1990]

सं० १५१० पौष वदि १० घांघ गोत्रे सा० सारंग जा० सुहानिणि सु० सा० कालू सा०
चाहड़ नामाज्यां पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० श्री मलधारि गह्वे श्री विद्यासागर
सूरि पट्टे श्री गुणसुंदर सूरिजिः ॥

[1991]

॥ संवत् १५१५ वर्षे माह वदि ए शुक्ले श्री संडेर गह्वे ऊ० काश्यप गोत्रे सा० वेता पु०
षीमा जा० षीमसिरि पु० चुडा जा० जरमी पु० पूजा नयमा वीढा रंगा सहितेन श्री नेमि-
नाथ विं० कारितं प्रति० श्री ईश्वर सूरिजिः ॥

[1992]

॥ सं० १५१२ वर्षे वैशाख सुदि पंचमी सोमे । उ० झा० काठड़ गोत्रे । दो० ऊदा जार्या
ऊमा दे पु० दो० रूपा दो० देपा अमर नाथा । रंगा देवा जार्या दाडिम दे पु । पहिराज
सादहा रायमल्ल युतेन सुपुण्यार्थं श्री शांतिनाथ विंवं कारितं श्री संडेर गह्वे श्री शांति
सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

मूलनायकजी पर ।

[1993]

ॐ ॥ स्वस्ति सं० १४६९ वर्षे माघ ६ रवौ श्रीमास वंशे नावर गोत्रे उ० ऊहड़
संताने श्री पुत्र मंत्रि करम श्रेयोर्थं लघु ज्ञातृ उ० देपाक्षेन ज्ञातृव्य उ० जोजराज
उ० नयणासिंह जार्या मादह दे सहितेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर
गह्वे श्री जिनचंद्र सूरिजिः देवकुलपाटके ।

(१५३)

श्याम पाषाण की पाटुका पर ।

[1994]

संवत् १४९१ वर्षे माघ वदि ५ दिने बुधे उकेश वंशे नवलखा गोत्रे साधु श्री रामदेव
चार्या मला दे तत्पुत्र साधु श्री सहस्रपासेन चार्या नारिंग दे पुत्र रणमह्लादि सहितेन
देवकुलपाटके पूर्वाचलगिरा श्री शत्रुञ्जयावतारे मोरनाग कुटिका सहिता प्रति० श्री खरतर
गढे श्री जिनवर्द्धन सूरि पढे श्री जिनचंद्र सूरि तत्पढे श्री जिनसागर सूरिजिः ।

पढ पर ।

[1995]

॥ ॐ ॥ संवत् १४९३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ गुरुवारे सा० आंबा पुत्र सा० बीराकेन स्वमातृ
आंबा श्राविका स्वपुण्यार्थ ॥ श्री चतुर्विंशति जिन पढकः कारितः श्री खरतर गढे प्रति-
ष्ठितं श्री जिनवर्द्धन सूरिजिः ॥

आचार्यों के मूर्तियों पर ।

[1996]

संवत् १४६९ वर्षे माघ शुदि ६ दिने उकेश वंशे सा० सोषा संताने सा० सुहडा पुत्रेण
सा० नान्हाकेन पुत्र बीरमादि परिवारयुतेन श्री जिनराज सूरि मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता
श्री खरतर गढे श्री जिनवर्द्धन सूरिजिः ।

[1997]

सं० १४६९ वर्षे सा० रामदेव चार्यया मला दे श्राविकया स्वभ्रातृस्नेहलया श्री जिन-
देव सूरि शिष्याणां श्री मेरुनंदनोपाध्यायानां मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्री जिनवर्द्धन
सूरिजिः ॥

(१५४)

श्री पार्श्वनाथजी की बसी ।

पंचतीर्थों पर ।

[1998]

॥ सं० १२०१ वर्षे आषाढ सुदि १० रवौ श्री देवाजिदित गछे श्री शील सूरि संताने
आमण पुत्रेण कनुदेवेन त्रातृ सुंजदेव श्रेयोर्थ आत्मभेयोर्थ च प्रतिमा कारिता ।

तपागछ का उपासरा ।

पंचतीर्थियों पर ।

[1999]

सं० १२७३ । गोसा त्रातृ जेजा जार्या हेमा - . . . श्रेयोर्थ प्रतिमा कारिता ॥

[2000]

सं० १४०४ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ उपकेश वंशे नोसतिकि (?) शाखायां साकू-
बास जा० मादहण दे साषाकेन त्रातृ पुंजा जा० मेला दे पितृ श्रे० शांतिनाथ बिंब
कारितं प्र० श्री जयप्रज सूरिजिः ।

[2001]

ॐ सं० १४९४ वैशाख वदि ७ बुधे बिंब कारितं श्री ।

[2002]

॥ ॐ सं० १५२० वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ शुके ऊ० गूगलिया गोत्रे सा० सूरु जा० सुहृदा दे
पु० धणपाल जा० साठस दे हा निमित्तं श्री शीतलनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं
श्री संडेर गछे श्री यशोजद्र सूरि संताने प्रतिष्ठितं श्री शालिजद्र सूरिजिः ॥

धातु की मूर्ति पर ।

[2003]

सं० १००२ आषाढ सुदि १० श्री कृष्णनाथ बिंब का० हरषा खोत ।

(३५५)

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[2004]

सं० १४९१ वर्षे माह सुदि ५ बुधे खरतर गछे नाग मुनिचंद्र शिष्य जठराज . . .
मणि पार्श्वनाथ विंबं ।

[2005]

सं० १३९९ वर्षे माह सु० १३ श्री प्र . . . लू जा० . . . कुंथुनाथ ।

शिलालेख

[2006]

- (१) ॥ ॥ श्रेयः श्रेणिविशुद्धसिद्धलहरीविस्तारहर्षप्रदः श्री मत्साधुमराजकेलिरणिजिः
- (२) प्रस्तूयमानक्रमः । पुण्यागण्यवरोण्यकीर्तिकमल्लव्यालोल्ललीलाधरः सोयं मानससत्सरो
- (३) वरसमः पार्श्वप्रभुः पातु वः ॥ १ ॥ गंजीरध्वनिसुंदरः क्षितिधरश्रेणिरासेबितः
सारस्तोत्रप-
- (४) वित्रनिर्जरसरिद्धिष्णुसज्जीवनः । चंचज्ज्ञानवितानजासुरमणिप्रस्तारमुक्तालयः
सोयं
- (५) नीरधिव . . . जाति नियतं श्री धर्मचिंतामणिः ॥ २ ॥ रंगजांगतरंगनिर्मलयशः कर्पूर
पूरोद्धुरा-
- (६) मोदकोदसुवासितत्रिजुवनः कृत्तप्रमादोदयः । ज्ञास्वन्मेचककज्जलद्युतिजरः शेषाहि
- (७) राजांकितः श्री वामेयजिनेश्वरो विजयते श्री धर्मचिंतामणिः ॥ ३ ॥ इष्टार्थसंघादन-
कल्पवृक्षः
- (८) प्रत्यूहपांशुप्रशमे पयोदः । श्री धर्मचिंतामणिपार्श्वनाथः समग्रसंघस्य ददातु जडं ॥
४ ॥ संवत्

(१५६)

- (९) १४९१ वर्षे कार्तिक सुदि २ सोमे राणा श्री कुंजकर्णविजयराज्ये उपकेश ज्ञातीय साह सह-
- (१०) षा साह सारंगेन मांडवी उत्परे छागू कीधु । सेखहथि साजणि कीधु अंके टंका चऊद १४ जको
- (११) मांनवी खेस्यइ सु देस्यई । चिहु जणे बइसी ए रीति कीधी । श्री धर्मचिंतामणि पूजानिमिति । सा०
- (१२) रणमख महं मूंगर से० हाखा साह साडा साह चांप बइसी विहु रीति कीधी एह बोख
- (१३) खोपवा को न खइइं । टंका ५ देउखवाडानी मांडवी ऊपरि टंका ४ देउखवाडाना मापा उप
- (१४) रि । टंका २ देउखवाडाना मण हंड वटा उपरि । टंका २ देउखवाडाना षारी वटां ऊपरी ।
- (१५) टंकाउ १ देउखवाडाना पटसूत्रीय ऊपरी ॥ एवं कारई टंका १४ श्री धर्मचिंतामणि पूजा
- (१६) निमिति सा० सारंगि समस्त संघि छागु कीधउ ॥ शुभं जवतु ॥ मंगलाच्युदयं ॥ श्रीः ॥
- (१७) ए ग्रासु जिको खोपइ तहेगहिं राणा श्री हमीर राणा श्री घेता राणा श्री खाषा रा० मोकख
- (१८) राणा श्रीकुंजकर्णनी आणठइ; श्रीसंघनी आण । श्रीजोराउखा श्रीशत्रुंजघतणा सम ॥

देवी मूर्ति पर ।

[2007] *

॥ सं० १४७६ वर्षे मार्ग शु० १० दिने मोढ ज्ञातीय सा० वउहत्थ जार्या साजणि सुत सं० मानाकेन अंबिक्य मूर्तिः कारिता प्रतीष्ठिता श्री रिजिः ॥

* महात्मा श्रीलालजी नाणावाल के यहां मूर्ति है ।

(१५७)

खंडहर उपासरा ।

शिलालेख

[2008]

सूर्य



चंद्र



(१)

परमात्मने नमः

- (२) ॥ ॐ ॥ प्रणम्य श्री सूर्यदेवाय सर्वसुखंकर प्रजो । सर्वलब्धिनिधानस्य तं
(३) सत्यं प्रणमाम्यहं ॥ १ ॥ मेदपाटे गिरो देसे गिरजागिरस्थानयो तां नगरो उ-
(४) त्तमा ह्येया देवको प्रमपट्टणौ ३ तत्र राज्ञा श्रेयो ह्येयाः राघवो राज्य मा-
(५) नयोः षट्दर्शनसदामान्यः श्वेतांबरा अजिभ्रियो ३ श्रीमदंचल ग-
(६) ह्येस्था श्री उदयसागर सूरिणा । तस्य आज्ञा कारेण चारित्र रत्न-
(७) गुर प्रचौ ४ शिष्य लक्ष्मीरत्नस्य साधुमुद्रा सदा सुखी । राजधर्म स-
(८) नेहादि जिनमंदिर करापितं ५ कोटिवर्षचिरंजीवो बहुपुत्र-
(९) मजवाजिना अचक्षं मेरुऊर्णोयं राज्यं पालति राघवः ६ जे
(१०) अन्य राजा स्वर्ध्वः लोपतो परदत्तयो नरकं ते नरा जाति ज-
(११) स्य धर्मस्य अवृथा ७ सं० १७९७ वर्षे माघ सुदि ५ तिथौ गुरु
(१२) श्री चतुराजी शिष्य कुशलरतन लक्ष्मीरतन उपासरो करा
(१३) यौ श्री पुण्यार्थे । श्री राज श्री राघव देवजी वारके देलवाडा
(१४) नगरे श्रीसंघ समस्तां साध अर्थे पं लिखमीरतन चेला हेमरा-
(१५) ज ऊगासरो करायो बीजो को रहे जणीहे नाय
(१६) मान्यारो पाप है जनी आंचदया टाकन रहेवा पावे नहीं

(१५८)

दरवाजे की ढतरी पर कः लेख ।

[2009]

श्री गणेश . . . रतन चेला हेम . . . कारापितं ॥ साह अषा साह नाराण साह ठाकुरसी
साह हेमा साह हमीर साह बुना साह सिवा साह हर . . . साह फवेल साह मेघा साह
जोषा साह विरधा कटान्या चतुरा जीथा सगता . . . समसथ ध्रावका . . . लषाणा श्री राघ-
वदेवजी बारको मंदिर कारा . . . लक्ष्मीरतन सं० १८०५ माघ सुदि १३ शुक्रे प्रतिष्ठा करावो
. . . लक्ष्मीरतन ॥



कलकत्ता ।

श्री आदिनाथजी का देगसर - कुनारसिंह हाव ।

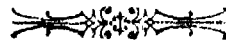
पंचतीर्थियों पर ।

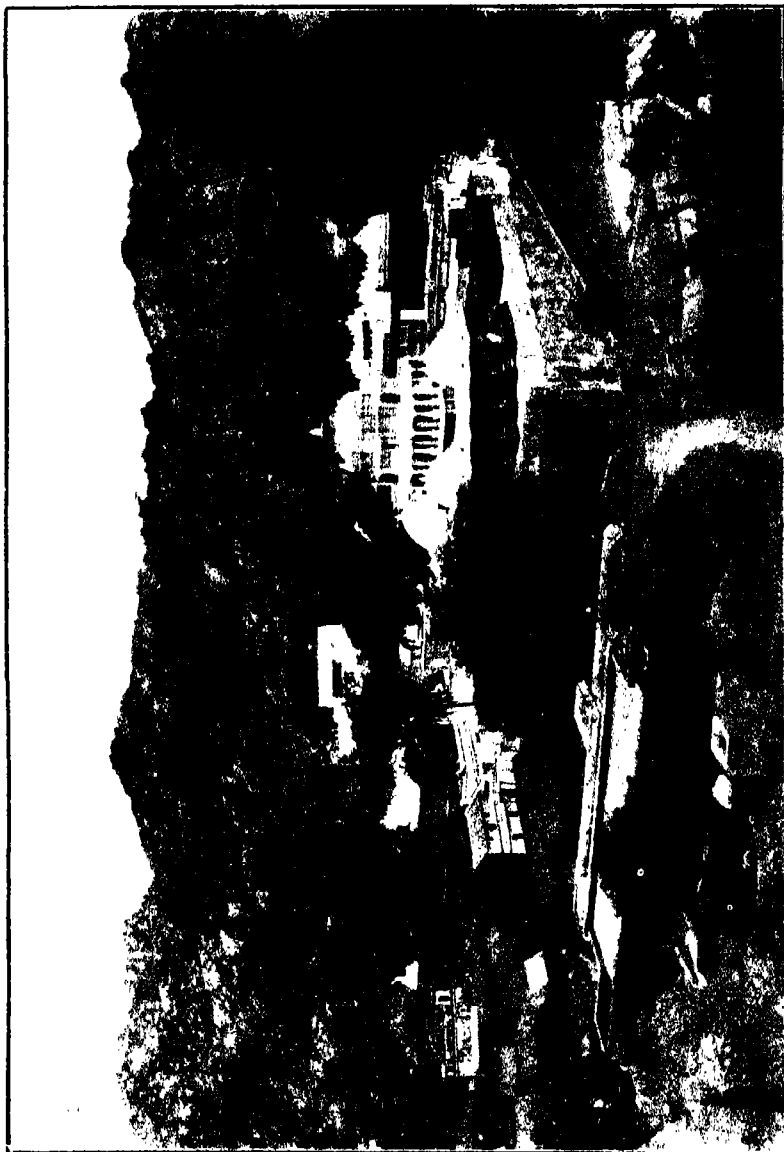
[2010]

सं० १४६८ वर्षे मागसिर वदि ११ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय संघ गोवल जार्या मादहण
दे तयोः सुतः महमाश्याकेन श्री सुमतिनाथ स्वामी बिंबं कारापितं श्री जिनहंस गणि
श्रेयोर्य प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः उग्रईज वास्तव्यः ।

[2011]

संवत् १५१९ वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे श्री श्री (माल) वंशे ॥ सं० कर्मा जार्या जासू
पुत्र सं० षीमा जार्या चमकू आविकया पुत्री कर्माई पुण्यार्थ श्री अंचल गछे श्री जयकेसरि
सूरिणामुपदेशेन चंद्रप्रज स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ श्री पत्तन नगरे ॥





TIRTHA ABU — Dilwara Temples

(१५६)

आबू-रोड ।

श्री आदिनाथ जी का मंदिर—धर्मशाखा ।

पंचतीर्थों पर ।

[2012]

सं० १५०६ वै० व० ११ शुक्रे श्री कोरंट गढे श्री नन्नाचार्य संताने । उवएस वंशे ।
शंखवालेचा गोत्रे श्रे० लक्ष्मसी जा० सांसल दे पु० रामा जा० राम दे पु० तेजा नाम्ना
स्वमातापित्रोः श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिं० का० प्र० श्री सांबदेव सूरिजिः ।

चौबीशी पर ।

[2013]

॥ सं० १५१० वर्षे माघ सुदि १३ गुनौ श्री उदयसागरगुरूपदेशेन श्रीमाल झतीय श्रे०
मेघा जा० माणिकदे सुत श्रे० नार्श्याकेन जा० बाट्टहा सु० गहिगा राघव ठाईया तथा
द्वि० जा० नामल दे प्रमुख कुंटुबयुतेन श्री संजवनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारिताः प्र० श्री
बृहत्तपा गढे ज्ञानसागर सूरिजिः ।



आबू-तीर्थ ।

श्री आदिनाथजी का मंजिर—देसवाड़ा ।

पाषाणकी कायोस्सर्ग मूर्ति पर ।

[2014]

(१) संवत् १४०६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे ५ पंचम्यां तिथौ गु-

(१६०)

- (१) रुदिने श्री कोरंट गढे श्री नल्लाचार्य संताने महं कउंरा
(३) जार्या महं कुरदे पुत्र महं मदन नर पूर्णसिंह जा० पूर्णसि-
(४) रि सुत महं डुहा मं० धांधल मूल मं० जसपाल गेदा रुदा प्रभृति स-
(५) मस्त कुंडुबं श्रेयसे श्री युगादि देव प्रसादे महं धांधुकेन श्री जिन-
(६) युगल्लह्यं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नल्ल सूरि पढे श्री कक्क सूरिजिः ।

धातु की मूर्ति पर ।

[2015]

सं० १५११ वर्षे वैशाख सुदि १० रवौ सं० रत्ना सं० पल्लाच्यां श्रीशातिनाथ विंबं का० ।

पंचतीर्थी पर ।

[2016]

सं० १४७१ वर्षे माघ सुदि १३ बुधे प्रा० व्य० लषमण जा० रूड्री पु० चीलाकेन रि त्रौ
आत्मश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रति० ब्रह्माणीय गढे ज० श्री उदयाणंद सूरिजिः ।

चौवीशी पर ।

[2017]

सं० १४७५ प्राग्वाट व्य० मूंगर जार्या उम दे पुत्र व्य० माट्टहाकेन जा० माट्टहण दे पुत्र
कीजा चीनादि युतेन श्री सुपार्श्व चतुर्विंशतिका पट्टः कारिताः प्रतिष्ठितस्तथा गढे श्री
सोमसुंदर सूरिजिः ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर—अचलगढ़ ।

पाषाण की मूर्तियों पर ।

[2018]

ॐ सं० १३०२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ए शुके ।



TIRTHA ABU.
Carving work on ceiling in Dilwara Temples.

(२६१)

[2019]

सा० धन्ना श्रावकेण श्री आदिनाथ विंबं कारितं ।

[2020]

पं० मांजू श्राविकया श्री सुमतिनाथ कारितं ।

[2021]

श्री खरतर गढे श्री पार्श्वदेवद्वितीयचूमौ पार्श्वनाथ सा० माळा जा० मांजू श्राविका कारितः ।

देवी की मूर्ति पर ।

[2022]

सं० १५१५ वर्षे आषाढ वदि १ शुक्ले श्रीः उकेश वंशे दरडा गोत्रे सा० आसा जा० सोखु पुत्रेण सं० मंडलिकेन जा० हीराई सु० साजण छि० जा० रोहिणि प्र० त्रा० सा० पाट्टहादि परिवार संयुतेन श्री चतुर्मुख प्रासादे श्री अंबिका मूर्ति का० श्री जिनचंद्र सूरिजिः ।

श्री रुषजदेव जी का मंदिर - अचलगढ़ ।

पाषाण की कायोत्सर्ग मूर्ति पर ।

[2023]

सं० १३०२ वर्षे अमरचंद्र सूरि जयदेव सूरिजिः ।

पंचतीर्थी पर ।

[2024]

सं० १५२० वर्षे आ० सु० २ प्राग्वाट झातीय व्य० सा जा० रूपणि सुत सोमा दे जा० वीकमादि कुटुंबयुतेन श्री मुनिसुवतनाथ विंबं कारितं प्र० श्री तपागडनाथ श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

(२६२)

धातु की मूर्तियों पर ।

[2025]

सं० १५१५ फा० सु० ७ शनि रोहिण्यां श्री अर्बुदगिरौ देवड़ा श्री रावधर सायर मृगर-
सिंह विजय राज्ये सा० ता जीमचैत्ये गूर्जर श्रीमाख राजमान्य मं० मंडन जार्या जोखी पुत्र
मं० शूद्र पु० मं० गदाज्यां जार्या हासी पद्माई मं० नदा जा० आसू पुत्र श्रीरंग वाघादि
कुटुंबयुताज्यां १०० मन प्रमाण सपरिकर प्रथमजिन बिंबं कारितं तपागढनायक श्री सोम-
सुंदर सूरि पट्टे श्री मुनिसुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे प्रजाकर
श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्री सुधानंदन सूरि श्री सोमजय सूरि महोपाध्याय
श्री जिनसोमगणि प्रमुख । विज्ञानं सूत्रधार देवाकस्य श्री रस्तु । कृतं मेवाड़ ज्ञातीय सूत्र-
धार मिहीपा जा० नागल सुत सूत्रधार देवा जार्या करमी सुत सू० हला गदा हांपा नाखा
हाना कलाः सहित व्यापायताः ।

[2026]

संवत् १५१६ वर्षे वैशाख वदि ४ शुके मृगरपुर नगरे राजल श्री सोमदास वि० रा०
तत्प्रधान प्रजावक पुरंदर सा० साजा प्रमुख श्री संघोपक्रमेन
श्री आदिनाथ बिंबं प्र० तपागढनायक श्री सोमसुंदर सूरि पट्टे मुनिसुंदर सूरि श्री जयचंद्र
सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरि तत्पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरि श्री सोमजय सूरि महोपाध्याय
जिनहंसगणि प्रमुख सुदरादि शिष्यै परिवार परिवृतः

[2027]

संवत् १५६६ वर्षे फाद्युन सुदि १० सोमे श्री अचलमठ महादूर्गे महाराजाधिराज
श्री जगमाखविजयराज्ये सं० साक्षिग सुत सं० सहसा कारित श्री चतुर्मुखविहारे जड-
प्रासादे श्री सुपार्श्व बिंबं श्री संघेन कारित प्र० तपागढ श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री
कमलकलस सूरि शिष्य श्री जयकल्याण सूरिजिः ज० श्री चरणसुंदर सूरि प्रमुख परि-
वार परिवृतैः श्रीरस्तु श्री संघस्य सूत्रधार हरदास ॥



TIRTHA PAWAPURI--JALAMANDIR.

(Front View)

(२६३)

[2028]

संवत् १५६६ वर्षे फाट्गुन सुदि १० सोमे श्री अचछगढ़ महादूर्गे महाराजाधिराज श्री जगमालविजयराज्ये सं० साक्षिग सुत सं० सहसा कारित श्री चतुर्मुखविहारे जड-प्रासादे श्री आदिनाथ बिंबं श्री संघेन कारित प्र० तपागह श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री कमलकलस सूरि शिष्य श्री जयकल्याण सूरिजिः ज० श्री चरणसुंदर सूरि प्रमुख परिवार परिवृतैः श्री रस्तु श्री संघस्य । सूत्रधार हरदास ॥



श्री पावापुरी तीर्थ ।

जल मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2029]

सं(व)त् १२६० ज्येष्ठ सुदि २ रेनुमा(?) पु० चोराकेनात्मश्रेयोर्थ श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री अजयदेव सूरिजिः

मूलवेदी के दाहिने तर्फ का लेख ।

[2030]

- (१) सं० १९९९ मिः आसिन सुदि २
- (२) श्री मंदिरजी के बीच के फेरी में वः नी
- (३) चे के फेरी में पत्थर बैठाया नानकचं-
- (४) द जीवनदास जैन श्वेताम्बरी के तर
- (५) फ से साः कलकत्ता शुभं

(१६४)

सोने के चरण पर ।

[2031]

सं० १९३३ डूगड़ धनपतसिंह कारापितं सर्व सूरि प्रतिष्ठित (श्री)संघस्य श्रेयसे जवतु ।

दादाजी के चरण पर ।

[2032]

१९५७ साल मिति अघन वदि १२ सोमवार निहालचंद इंद्रचंद डूगड़ तस्य परिवार प्रतिष्ठा कारापितं मुर्शिदाबाद ॥ श्री जिन कु(श)ल सूरि महाराज का चरण ॥ शुभं जवतु ॥

समोसरन ।

मंदिर का शिखाखेख ।

[2033]

- (१) श्री शुभ संवत् १९५३ मिति कातिक वदी
- (२) त्रयोदशी मंगलवार श्री महावीर स्वामी जी के समोस
- (३) रनजी में मंदिर कराया श्री संघ ने श्वेताम्बरी आमनाये
- (४) वः मनिजर गोविन्द चंद सचेती विहारवाले के
- (४) हस्ते बना । इदं प्रतिष्ठितं गंगारीखी जति

महताव विवि का मंदिर ।

शिखाखेख ।

[2034]

- (१) संवत् १९३३ का मिति माघ शुक्ल १० तिथी
- (२) चंद्रवारे श्री मन्महावीर स्वामी मंदिर श्री वंगदे-

(१६५)

- (३) शे । मकसुदावादाजीमगंज कासिनी छुधेड़िया
(४) गोत्रे श्री नेमिचंद्र तस्य चार्या महताब कुमारि-
(५) णा कारापितं च श्री हर्षचंद्रजी तत् पुत्र बुधसीह
(६) विसनचंद्रेण प्रतिष्ठा कारापिता । श्री बृहद्ब्रह्मोपक
(७) गौर्जराधिपति श्री अजयराज सूरि तत्पट्टासंक
(८) त् श्री अजयराज सूरिणा प्रतिष्ठितं श्री शुभं जूयात् ।
(९) ॥ श्लोकः ॥ जवाण्यगोपालकं त्रैशलेयं । जषांबोधि-
(१०) संस्तारणे यानतुल्यं ॥ मुक्तिस्त्रिनाथं मयायं जिनेंद्रं
(११) प्रसंस्तौमि श्री वर्धमानं विभुं च ॥ १ ॥

गांव मंदिर ।

दाक्षिण तर्फ के दिवार पर का लेख ।

[2035]

- (१) श्री गांव मंदिर जि मे दक्ष (२) ण पश्चिम उत्तर दाखान
(३) तथा चारो कोठे मे पत्थल (४) जैन श्वेताम्बर जंडार के तर
(५) फ से मैनेजर गोविंदचंद्र सुचं (६) ति विहारवालो ने बैठाया सुच
(७) सं० १९६४ आसिन बदि ५

सजा मंरुप के दाहिने तर्फ के थाले का लेख ।

[2036]

- (१) श्रीमद्विर जीनेंद्र प्रणम्य श्री पावापुपी नगरी मधे आ श्री जिन
(२) वीं व स्थानापन करोती श्वेतांबर आगनाय धारक शा० रूपचंद्र

(१६६)

- (३) रंगीलदास देवचंद सा पाटन वाला हाल मुकाम येवसा तथा मुंबई
(४) वालाये आगो खजार तथा सजा मंरुपमां जमती सहीत आरस कराव्यो
(५) संवत् १९६० सं० सेवक उत्तमचंद वालचंद मंत्री नगरवाला ।

सजा मंडप के बांये तर्फ के आले का लेख ।

[2037]

- (१) श्रीमद विर जिनेंद्र प्रणम्य श्री पावापुरी नगरी मधे आ श्री जि
(२) न बीब स्थापन्नं शा० रूपचंद रंगीलदास सा पाटन वा
(३) ला हाल मुकाम येवसा तथा मुंबई स्वैतांबर आमना धारक वा
(४) ला अे कराव्या ठे संवत् १९६०
(५) मीस्त्री जाईचंद जगजीवन सखाट पाळीताणा वाला ।



हैदराबाद - दक्षिण । *

श्री पार्श्वनाथ जी का मंदिर - वेगम बजार ।

मूलनायक जी पर ।

[2038]

सं० १५५७ वर्षे ॥ महा सुदि ५ सोमे श्री पार्श्वजिन बिंबं कारितं

पाषाण की मूर्ति पर ।

[2039]

संवत् १५४० वैशाख सुदि ३ श्री संघे जहारक जी श्री जिन तपापति वाक जी प्रति०

* यहां के लेख स्वर्गीय पं० बालचंद्रजी यति से प्राप्त हुवे थे ।

(१६७)

श्री राजा जशसिंघ राजे ।

[2040]

संवत् १५४० वर्षे वैशाख सुदि १ श्री चंद्रप्रभु विंभं कारापितं ।

धातु की प्रतिमाओं पर ।

[2041]

संवत् १६६० फागुण सुदि १३ साह मनोरथ सदापगामे प्र० ।

[2042]

संवत् १७०० वर्षे मार्ग० सुदि २ शुक्रे राजनगर बास्तव्य ओसवंस झा० सा० वर्द्धमान
तत्पुत्र सा० रायासिंघ केन स्वश्रेयोर्थ श्री पद्मावती विंभं कारितं प्रतिष्ठितं तपा पं० श्री किर्ति-
रत्नगणित्तिः ॥

[2043]

सं० १७०७ व० फा० सु० ० सोमे श्रीमाली झा० सा० कुंठरजा जा० रत्नवाई नाम्न्या
उ० श्री त्रिवेकेहर्षजी श्री शांतिनाथ विं० का० प्र० श्री तपा० ज० श्री विजयदेव सूरिजिः ॥

पंचतीर्थियों पर ।

[2044]

सं० १५१२ माघ वदि . . . सोमे नागर झातीय श्रे० कर्मसी जा० फहू सुत जोगी
नाम्ना जा० जटि सुत खजयादि कुटुंबयुतेन श्री धर्मनाथ विंभं का० प्र० बृहत्तपा श्री रत्न-
सिंह सूरिजि ॥

[2045]

सं० १५३० वर्षे वैशाख वदि १२ बुधे वडाजला गोत्रे ओस वंशे सा० पेटा जा० मादही
सुत सा० धर्मा जा० महू पुत्र नापा बाला हीरादि कुटुंबयुतेन आत्म श्रे० श्री शीतलनाथ
विंभं का० प्र० श्री संडेर गछे श्री यशचंद्र सूरिजिः ॥ श्री ॥

(३६८)

[2046]

संवत् १५६२ वर्षे माघ सुदि १५ दिने ऊकेश वंश घोरवाड गोत्रे सा० वाचा जा०
वाहिण दे पुत्र सा० रंगाकेन जा० रत्ना दे पुत्र सा० माहा षेता वेता प्रमुख परिवारयुतेन
श्री सुमतिनाथ विंबं का० प्र० श्री खरतरगळे श्री जिनहंस सूरिजिः ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर - कारवान साहुकारी ।

धातु की प्रतिमाओं पर ।

[2047]

संवत् १३२२ वर्षे बैशाख सुदि ११ गुणै श्री श्रीमाल झातीय जा० जयतेन निजमा-
तामह ठ० सोढ जा० ठ० श्रियादेवी श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्र० श्री पृथीचंद्र
सूरि शिष्यैः श्री जयचंद्र सूरिजिः ॥

[2048]

संवत् १४५० वर्षे फा० सुदि १ जौमे प्राग्वाट झातीय श्रे० धरणि सुत सिंघा श्रेयोर्य तद्
त्रातृ श्रे० कान्हदेन श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागणीय जटारक श्री देव-
सुंदर सूरिजिः ॥

[2049]

संवत् १४०१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ प्राग्वाट झातीय श्रे० सामत जा० सामल दे
सु० धर्माकेन त्रातृ हीरा सिवा सहदे सहितेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री अजिनदंन विंबं का०
प्र० मडाहड गळे श्री उदयप्रज सूरिजिः ॥

[2050]

सं० १६९९ व० फा० सु० ० सोमे थो० झा० सा० शिव सा० जा० सुजारादि पुत्र सा०
रामाकेन जा० रतनबाई प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री सुविधिनाथ विंबं कारितं प्र० तपा गळे
विवेकहर्षगणिजिः ॥

(२६९)

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—रेसोडेन्सी बजार ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2051]

संवत् १४९४ मा० सु० ११ आस वंशे काटहणसीह साइण सुत कोवापाकेन श्री अंचलग
श्री जयकोर्ति सूरिणामु० श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिचिः ॥ श्रीः ॥

[2052]

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ उकेश झातौ श्रेष्ठी गोत्रे म० कमज्रा म० सिंघा
जा० लखमा दे पु० साजण युतेन स्वश्रेयसे श्री पद्मप्रज बिंबं कारितं श्री ककुदाचार्य संताने
प्रतिष्ठितं श्री देवयुत सूरिचिः ॥

[2053]

संवत् १५३७ वर्षे महावदि १३ शुक्रवारे सूरणा गोत्रे सा० नाथू पुत्र थिरा चार्या
मुहडादे पुत्र सा० धेना चार्या हिमा दे पुण्यार्थ श्री विमलनाथ बिंबं कारितं श्री धर्मघोष
गह्वे प्रतिष्ठितं जटारक श्री मानदेव सूरिचिः ॥

[2054]

सं० १५४१ माघ सुदि १२ प्राग्वाट झा० श्रे० जांटा जा० सूखेसिरि सु० जिणदासेन
जा० लखी सुत हरदास सूरदासादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थ श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रति-
ष्ठितं तपा गह्वे श्री ३ लक्ष्मीसागर सूरिचिः ॥ सोर । षोयाणा वासी ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर—चार कबान ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2055]

सं० ११९० फा० सु० ४ श्रा० वाकूकदा स्वश्रेयसे श्री महावीर प्रतिमा कारिता ।

(१९०)

[2056]

सं० १४०१ व० मार्ग० सु० ५ बा० चतुर नाम्ना श्री संखेश्वरपार्श्व बिंबं का० प्र० तपा
श्री विजयहर्ष सूरिजिः ॥

[2057]

सं० १६६७ वर्षे फागुण सुदि ७ सोमे श्रीमास ज्ञातोय सा० सूरज कुटुंबयुतेन श्री शांति०
बिं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गह्वे जटारक श्री विजयदेव सूरिजिः ॥

[2058]

सं० १६९० व० फा० सु० ५ गुरौ दौलतीबाद उ० झा० सा० श्रीमंत जा० पमांवाई नाम
श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपा गह्वे ।

[2059]

सं० १६९७ फा० सु० ५ वृ० उकेश बा० धीरा नाम्नी श्री शांति बिं० का० प्र० श्री
तपा गह्वे विजयदेव सूरिजिः ॥

[2060]

सं० १९०१ (?) व० मा० र्ग० सु० ६ वृ० प्रा० बा० कानृ नाम्ना श्री पार्श्व-
नाथ बिं० का० प्र० तपा श्री विजयदेव सूरिजिः ॥

दादाजी के चरणों पर ।

[2061]

॥ संवत् १९६१ का वर्षे मिति माघ सुदि ५ गुरुवासरे श्री जं० युग प्रधान जगद्
चूडामणि दादा साहिव १००० श्री जिनदत्त सूरि गुरुराज चरणपाडुका श्री चारकवाण
का श्रीसंघेन कारापितं । पं० चारित्रसुखेन प्रतिष्ठापितम् श्रीसंघस्य कल्याण खेम कुशलम्
समुपस्थिता ॥ हैदरावाद ॥

(१७१)

[2062]

॥ सं० १९६१ वर्षे मि । माघ सु । ५ दिने । जं । युग प्र० १००८ दादा साहेब श्री जिन-
कुशल सूरि पाडुका । च्यारकबाण ।

[2063]

श्री जिनकुशल सूरि चरणकमल पाडुकेज्यो नमः ॥ शुभ संवत् १९६४ वैशाख धवल
१० गुरुवासरे प्रतिष्ठितम् ॥



मद्रास । *

चंद्रप्रज्ञस्वामी का मंदिर - शूला बजार ।

मूल मंदिर का लेख ।

[2064]

- (१) ॥ संवत् १९५२ रा शाके १८१७ मासोत्तममासे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे तिथि दशम्यां
रविवारे शूलाम्रामस्थः मातृ गोत्रे सा० । कालू-
- (२) राम रतनचंद्र खरतरगणोपासकेन कारापित जिनज्ञवने चंद्रप्रभु बिंबं स्थापितं खर-
तर गच्छे 'क्षेमकीर्ति' शाखायां विद्वद्भामचंद्रगणि
- (३) तद्विष्य पं प्र । उदयचंद्रगणिः तच्चरणांतेवासी उपाध्याय नेमिचंद्रेण प्रतिष्ठितं
जिनज्ञवनं स्थापितं बिंबं च पं० । श्यामलाक्ष साकम्

मूलनायक जी पर ।

[2065]

॥ संवत् १९६० वैशाख सुदि ६ . . . कारितं श्री संघेन ।

* यहाँ के लेख स्वर्गीय पं० बालचंद्रजी यति से मिले थे ।

(२७२)

मूर्तियों पर ।

[2066]

॥ सं० १९२१ माह सुदि ७ गुरु । श्री चंद्रजिन बिंबं कारितं । श्री बृहत्खरतरगङ्गीय
ज० श्री जिनहंस सूरिजिः प्रति ।

[2067]

॥ सं० १९२१ माह ॥ सु० । ७ । गु । श्री सुमतिजिन बिंबं कारितं । श्री बृहत्खरतरगङ्गीय
ज० श्री जिनहंस सूरिजिः प्रति ।

धातु की पंचतीर्थों पर ।

[2068]

॥ सं० १५०५ वर्षे पोस सुदि १५ आ० विणवट गोत्र पा० स्तदा जा० मूदल दे पु ।
सहसा जा० सुहड़ दे पितृमातृ पु० श्री चंद्रप्रज्ञो बिंबं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गङ्गे पूर्णचंद्र
सूरि पदे श्री महेंद्र सूरिजिः ॥ श्री ॥

ताम्रपट्ट पर ।

[2069]

॥ संवत् १९७० रा शाके १७३५ रा ज्येष्ठ मासे कृष्ण षष्ठी तिथौ त्रयोदश्यायां चंद्र-
वासरे ॥ जटारक श्री जिनफत्तेन्द्र सूरि प्रतिष्ठितं श्री मद्रास शूलामध्ये ॥

चंद्रप्रज्ञस्वामी का मंदिर—साहूकार पेठ ।

शिखालेख ।

[2070]

(१) ॐ

(२) ॥ नमः श्री वीतरागाय ॥

(३) ॥ श्लोकः ॥ आसीत्सूरिपदप्रतिष्ठितरणेः श्री हेमसूरिप्रभुस्तत्पीठे प्रतिवादिबृन्द-

(१७३)

- (४) जयदो विद्याकलानां निधिः ॥ श्री सूरेश्वरमूर्द्धन्दितापदः श्री सिद्धसूरिगुरुर्ध-
(५) मर्जादयत्तारकत्येतिनिपुणो वर्वर्त्ति सर्वोपरि ॥ १ ॥ प्रासादस्य कृतास्य तेन
(६) विदुषा माघस्य शुक्ले बुधौ त्रयोदश्यां श्रुतिसप्तनन्दकुमिते श्री विक्रमाब्देऽधुना ।
(७) सौजन्यात्तमृतसागरेण जगतां धर्मोपकाराय वै श्रीमज्जैनधुरंधरेण कृतिना नूतं
(८) प्रतिष्ठानघाः ॥ १ ॥ श्री विक्रम संवत् १९७२ माघ शुक्ल १३ बुधवारके दि-
(९) न श्री मदरास पत्तन शाहूकार पेठमें श्री चन्द्रप्रजस्वामी विम्ब प्रतिष्ठा श्री-
(१०) मज्जैनाचार्य बृहत्खरतरगण्डोय जं । यु । जट्टार्के श्री जिनसिद्ध सूरिजी ।
(११) महाराज के करकमलों से समस्त संघ सहित जैरुंबकसजी सुखलालजी ।
(१२) समदक्रिया ने बड़े महोत्सव से कराई । हरषचंद्र रूपचंद्रजी ने विम्ब स्थाप-
(१३) न किया वादरमलजी ने कलश चढ़ाया और हंसराजजी सागरमलजी
(१४) ने ध्वजा आरोपण करी यह मंगल कार्य श्री संघको सर्वदा श्रेयकारी हो ॥
(१५) ॥ हस्ताकराणि कर्त किशोरचन्द्रजी तस्मिन् मनसाचन्द्रस्य ॥

श्री दादाजी के बंगले में ।

[2071]

ॐ नमः दत्तसूरिजी ॐ नमः कुशलसूरिजी

मिति माह सुदि ५ संवत् १९३६ का ।

जैन मंदिर—साहूकार पेठ ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2072]

संवत् १४९७ वर्षे माघ सुदि ५ बुधौ श्रीमाल ज्ञातीय नान्दी गोत्रे सा० प्रवृद्धा पुत्र
शा० प्रेताक्षेण पुत्र हरेराज सहित तत् पिता पुण्यार्थ श्री अजितनाथ विंभं कारितं प्रति-
ष्ठितं श्री खरतर गण्डे श्री जिनसागर सूरिजिः ॥

(१५४)

[2073]

संवत् १५१७ वर्षे पौष वदि ५ गुरू श्री श्रीमाल झातीय महं वित्रा जा० जासी सुत सोजा जा० हीरू आत्मश्रेयोऽर्थ जीवितस्वामी श्री श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पिप्पल गङ्गे त्रितविया श्री धर्मसागर सूरिजिः । जीबुटग्रामे ।

[2074]

संवत् १५१८ वर्षे माघ शुक्ल १३ पाळण पुर ऊकेश झातीय सा० पर्वत जा० जीविणी पुत्र शा० गेहाकेन जा० वीरू पुत्र वस्त्रा जावड प्रमुख कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे पार्श्वबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्नशेखर सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

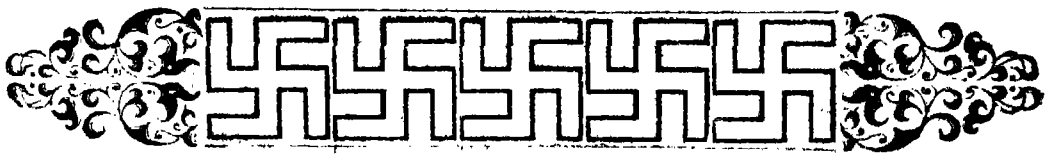
चौवीसी पर ।

[2075]

संवत् १४०७ वर्षे माघ . . . दि . . . बाद्दा झातीय श्रे० खीमा जा० लहिकू सुत याथा जा० हीसु पुत्र हापा गोपा जीरादि कुटुंबयुतेन श्रेयोर्थ श्री श्रेयांसनाथ चतुर्विंशति पट्टकारितः प्रतिष्ठितं तपागहाधिराज ज० श्री सोमसुंदर सूरिजिः ॥ श्रीशुभं जवतु ॥

[2076]

संवत् १५२१ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल प्राग्वाट झातीय सं अर्जुन जा० टबकु सुत सं० वस्ता जा० रामी सुत सं० चान्दा जा० जीविणि सुत लींवा आका प्रमुख कुटुंबयुतेन ७२ चतुर्विंशतिपट्टान् कारयितश्च श्रेयसे श्री पद्मप्रजः चतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः । श्री तपा पट्टे श्री सोमसुंदर सूरि संताने श्री रत्नशेखर सूरि तत् पट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥



(१७५)

रायपुर-सी० पी० । *

जैन मंदिर-सदर बजार ।

शिलालेख ।

[2077]

- (१) ॥ श्री मदिष्टदेवेज्यो नमः ॥ श्रीमच्छ्रीवीरविक्रमादित्य राज्यात् नक्षवर्ण-
- (२) निधिच्छब्द (१९५०) शाके इंद्रिचंद्रसिद्धि नक्षत्रेश प्रमिते मासोत्तममासे छि-
- (३) तीय आषाढ मासे शुक्लपक्षे अष्टम्यां त्रिथौ चार्गववासरे स्वाति नक्ष-
- (४) त्रे साध्ययोगे बुधमार्गे एवं पंचांग शुद्धावत्र समये कर्कार्क गते रवौ शेष-
- (५) षु पूजनिरिहित वेलायां श्री मद्राजपुरवरे माळु गोत्रे साह तनसुखदा
- (६) स(दास) तत्पुत्र साह आसकरणेनासौ श्री मञ्जुप्रज जिन्प्रजो प्रासा
- (७) द कारितं स्वश्रेयोर्थं श्री बृहत्खरत्तर जटारक गच्छाधिपै जटारक श्री
- (८) जिनचंद्र सूरिस्वर प्रतिष्ठितश्चेति पं० सिवलाल मुनिरुपदेशात् ।

ताम्रपत्र पर ।

[2078]

- (१) श्री जिनायनमः ॥ श्रीमत् वीर सं० १४११ विक्र-
- (२) म सं० । १९५१ शाके १८१६ प्रवर्तमाने मासोत्तम मा-
- (३) से आषाढ शुक्लपक्षे तृतिया त्रिथौ गुरुवारं पु-
- (४) ष्यनक्षत्रे मिथुनार्कगते रवौ शेष शुभ निरिहि-
- (५) त वेलायां श्री रतं(राज)वरे माळु गोत्रे साह धन-
- (६) रूपजी तत्पुत्र साह फूलचंद्रजी कस्या चार्या

* स्वर्गीय पं० बालचंद्रजी यति से प्राप्त ।

(१९९)

[2082]

सं० १४९१ फागुण सुदि १२ गुरौ कोरंटवाल गढे उपकेश ज्ञातीय संखवालेचा गोत्रे
नपसी पु० जाणाकेन श्रेयसे श्री धर्मनाथ विंब कारितं प्रतिष्ठितं सांबदेव सूरिजिः ॥

[2083]

सं० १४९३ वर्षे माघ सुदि १३ उपकेश ज्ञातीय म० मांडण जा० सिरियांदे पु० काजा-
कंन जार्या जखी सहितेन आत्मश्रेयसे श्री नमिनाथ विंब कारितं प्रतिष्ठितं जट्टारक श्री
धनप्रन्न सूरिजिः ॥

[2084]

संवत् १५१३ वर्षे फागुण वदि ११ नागेंद्र गढे उपकेश ज्ञातीय कोठारी . . . जा० खड्गी
पु० मेघा जा० हीरु पु० नेरा कुंगर तोड्हा युतेन श्री आत्मपुण्यार्थे श्री वासुपूज्य विंब
कारितं प्रतिष्ठितं विनयप्रन्न सूरिजिः ॥

[2085]

सं० १५१७ वर्षे वैशाख वदि ८ शुक्रे श्री श्रीमास श्रेष्ठी जामा जा० साही पु० गोड्हा
जा० आसि पु० पहिराज कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंब कारितं पूर्णिमापक्षे पुण्य-
रत्न सूरीणां प्रतिष्ठितं बाराही ग्रामे ॥

[2086]

सं० १५१८ वर्षे माघ वदि २ प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० कोहाकेन जार्या कामल दे पु०
नाड्हा हीदा युतेन धर्मनाथ विंब कारितं कडोलीवाल गढे पूर्णिमापक्षे गुणसागर सूरिजिः ॥

[2087]

सं० १५७६ आसाढ सुदि ९ श्वौ उपकेशज्ञातीय नाग गोत्रे साहू जोजा जा० जावल
दे पु० मांडण आड्हा जेसा सहितेन मांडण जा० माणक दे पु० रंगा युतेन आत्मपुण्यार्थे
संजडनाथ विंब कारितं प्रतिष्ठितं नाणांवाल गढे जट्टारक श्री ।

(११७)

भारज - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2088]

सं० १५२४ वर्षे वैशाख सुदि २ शनौ श्रीमाल क्वातीय पितृ धरकण जा० धरणा सुत
काबु जा० कुंथि करमी सुत सहिता युतेन श्री नमिनाथ विंबं कारितं बृह्मणिया गछे प्रति-
ष्ठितं श्री प्रमल सूरिजिः वटपड वस्तव्य ॥

—>***<—

गुडा - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2089]

सं० १५३४ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ उसवाल बृहद् सज्जने ठाकुर गोत्रे साह० बोमादे
पु० जावड़ जावड़ गीदा सा० माणाकेन जा० मणिक दे पु० मेघराज हांसादि कुटुंबयुतेन
स्वश्रेयोर्थ श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारापितं । नाणावाल गछे श्री धनेश्वर सूरिजिः
प्रतिष्ठितं तथा श्री सोमसुंदर सूरिजिः सं ॥



तिवरी - सिरोही ।

जैन मंदिर ।

काउसग्ग प्रतिमा पर ।

[2090]

सं० १३३४ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ प्रा० झा० श्रे० जवा जादा जा० रूपका दे पु० . . .
श्री नयगल कारितं प्रतिष्ठितं चित्रगणीय श्री देवचड सूरि संतानीय रा० पं० सोमचंड्रेण ॥

(१९९)

पाडीव - सिरौही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2091]

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्रीमाखी ज्ञातीय राजस जा० बाला पु० देवा जा०
सखयता सुत तेजा श्रो विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं आगम गछे अमरत्न सूरि गुरू-
पदेशेन करापितं प्र० विधिना पत्तन वास्तव्य ॥



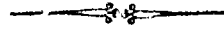
मडिया - सिरौही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2092]

सं० १४९० वर्षे माघ सुदि २ गुरौ बाफणा गोत्रे साह बुंजा सुत देपाल जा० मेला दे
पु० जोगराज जा० जसमादे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं उपकेश गछे श्री ककुदा-
चार्याजिधान प्र० देवगुप्त सूरिजि ॥



निंबज - सिरौही ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2093]

सं० १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्री जावहेड़ा गछे श्री कालिकाचार्य संताने उप-
केश ज्ञातीय खांटेड़ गोत्रे साह बाला जा० . . . पु० सामंत जा० हांसल दे पु० जोपास

(१००)

उदा जोपाक्ष जा० नतु दे पु० नादहा सीवा उदा जा० उमा दे पु० रतना समरथ कुटुंबेन
सह स्वश्रेयसे श्री शान्तिनाथ विंबं कारितं श्री विजयसिंह सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं वीर सूरिजिः ॥

छुड़वाल-सिरोही ।

जैन मंदिर ।

पाषाण की प्रतिमा पर ।

[2094]

सं० १६४४ वर्षे फागण वदि १३ बुधे हाखीवामा वास्तव्य श्री संघेन कारितं श्री शान्ति-
नाथ विंबं प्रतिष्ठितं तपागछाधिराज श्री हीरविजय सूरिजिः ॥



डीसा ।

श्री आदीश्वरजी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2095]

सं० १५२४ वर्षे का० व० २ शुके श्री जावडार गछे श्रीमाल झातीय म० धिरणल जा०
ब्रह्मादेवि पु० मना जा० मादहण दे पु० सिंघा मेघा मेहा साणा जुग सहितेन जावि-
तस्वामी श्री पद्मप्रभु प्रमुख चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० कालिकाचार्य संताने श्री जावदेव
सूरिजिः श्री वनरिया ग्रामे ॥

[2096]

सं० १५६३ वर्षे माघ सुदि १५ गुरौ उमकेश झातीय गा० कनुज सो० करणा जा०
अरघु पु० विसाल पितृव्य नयणा निमित्त श्री विमलनाथ विंबं कारितं प्र० जिनमाल गछे
श्री कर्मातिक सूरिजिः ॥

(१०१)

[2097]

सं० १६६३ वर्षे वैशाख वदि ११ दिने श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० टाहापान जा० चीवु
निमित्तं सुत लिंबा राणा जाजण सहितेन आरमश्रेयोर्थं श्री श्री आदिनाथ बिंबं कारितं
प्रतिष्ठितं ब्रह्माण गढे ज० जाजीम सूरिजिः स्थिराङ्ग वास्तव्यः ॥

श्री महावीर स्वामी का मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2098]

सं० १३१० वर्षे फागण सुदि १ शुके ब्रह्माण गढे श्री जऊक सूरि गुरो श्रीमाल ज्ञातीय
पिणनालक वास्तव्य आजा सुत देवधर श्रेयोर्थे आसधर सुत जाव्हणेन पितृव्य श्रेयोर्थे
श्री महावीर बिंबं कारितं प्र० श्री वचरसेणोपाध्याय शशि ॥

[2099]

सं० १३४४ वर्षे जे० व० ४ शुके आसवाल ज्ञा० श्रे० बीरमस्थ सुत बीजडेन निजमातु
वयज देवि श्रेयोर्थे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रि० मल्लधारि श्री स्तनदेव सूरिजिः ॥

[2100]

सं० १४७६ वर्षे चैत्र वदि १ शनौ उपकेश ज्ञा० बडासिथा गोत्रे सा० जेता जा० अइती-
श्री सुत जीमा जा० सनपतथास श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० मल्लधारि गढे
श्री विद्यासागर सूरिजिः ॥

[2101]

सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ए जौमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय सिंघा जा० मेळा दे पितृमातृ
श्रेयसे सुत लषमणेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० ब्रह्माण गढे श्री वीर सूरिजिः ॥

(१७१)

[2102]

सं० १४८४ वर्षे वैशाख सुदि १० रवौ श्री कोरटकीय गढे श्री नन्नाचार्य संताने उपकेश
ज्ञातीय मं० मलयसिंह जा० माखण देवि स० म० मद्नेन पु० लुणा सहितेन जा० हेमा
श्रेयर्थ श्री संजवनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं कक्क सूरिजिः ॥

[2103]

सं० १५१० वर्षे वैशष वदि ५ शुक्रे श्री श्रीमाख ज्ञातीय सदा जा० सहजू पु० धीर-
केम जा० काखी सहितेन पितृमातृ श्रेयर्थ श्री शान्तिनाथ विंभं कारितं प्र० श्री नागेंद्र गछे
श्री गुणसमुद्र सूरिजिः प्र० सर्व सूरिजिः ॥

[2104]

सं० १५११ वर्षे कार्तिक वदि ५ गुरौ पाट्टाउत गोत्रे सा० शिवाराज जा० कर्मणि
तत्पुत्र मेघा जार्या युतेन पु० साखिग मातृ श्रेयर्थ श्री आदिनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं
मखधारि गछे श्री गुणसुंदर सूरिजिः ॥

[2105]

सं० १५३७ वर्षे वैशाख सुद ३ उपकेश गछे श्री ककुदाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय
वाफणा गोत्रे सा० . . . वरु जा० जसमा दे पु० सोहडा दे पु० वस्ता आत्मश्रेयर्थ श्री
अजितनाथ विंभं कारितं प्र० श्री देवगुप्त सूरिजिः ॥

[2106]

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ वायका ज्ञातीय व० साह नारिं सुत व० राजा-
केन जा० रई पु० रीडा मेघा रोडा जा० इंद्र प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्यादि
पंचतीर्थी आगम गछे श्री अमररत्न सूरिजिः गुरूपदेशेन कारितं प्र० विधिना पत्तन
वास्तव्यः ॥



(१७३)

गुडली-मेवाड़ ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थियों पर ।

[2107]

सं० १५४२ वर्षे वैशाख वदि ४ उपकेश झातीय सा० करमा जा० साहु पुत्र पीदा जा० सखमा दे पु० गोदा उजल जा० बडी पु० जेसा मेघा केमा हरमा सहितेन जिदरु निमित्त श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं वृहज्ज्जे जहारक श्री धनप्रज सूरिजिः ॥

[2108]

सं० १५५९ वर्षे वैशाख सुदि १५ शनौ उपकेश झातीय मानींग जा० नंदि पु० देपाकेन पितृयुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ब्रह्माण गळे द्रुमतिलक सूरि पढे श्री उदयाणंद सूरिजिः ॥



खारची-मारवाड़ ।

जैन मंदिर ।

पंचतीर्थी पर ।

[2109]

सं० १५३९ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पंमेर गळे श्री शांति सूरिजिः हाविल ग्रामे ॥



(१७४)

खंडप-मारवाड ।

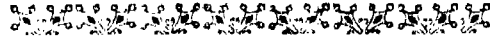
धातु की प्रतिमा पर ।

[2110]

सं० १५२७ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीसवास झातीय साह हंसा पु० उधरण देदा वेला
जा० बाहनु मोदरेवा गोत्रे साह लाधु जा० नामस दे पुत्रिका नानुं आत्मपुण्यार्थे श्री चंद्र
प्रभु विंबं कारितं श्री नाणकीय गढे धनेश्वर सूरिचिः ॥

[2111]

सं० १५२८ वर्षे . . . उपकेश झातीय ठाजेड़ गोत्रे पना जा० सुहवि दे पु० नरसिंग
त्रिचणा सहितेन श्री मुनिसुवत विंबं कारितं प्रतिष्ठितं पद्मीवाल गढे श्री यशोदेव सूरि
पढे श्रीश्री नम्र सूरिचिः ॥



मांकलेश्वर-मारवाड ।

जैन मंदिर ।

धातु की प्रतिमा पर ।

[1187]

सं० १५३० वर्षे फागुण सुदी १० श्री ज्ञानकीय गढे उ० उसत्र गोत्रे सं० जांका जा०
पदमिनी पु० साहा पीथा स्थाप प्रतिष्ठितं श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्र० सिद्धसेन सूरि
पढे श्री धनेश्वर सूरिचिः ॥





आचार्यों के गच्छ और संवत् की सूची ।



संवत्	नाम	खेत्वांक	संवत्	नाम	खेत्वांक
अंचल गच्छ ।			१६७१	कल्याणसागर सूरि	१४५६, १५२०, १५७८—१५८४
१४६६	मेरुंग सूरि	१३५६	१६७६	" "	१७८१
१४८३	जयकीर्ति सूरि	१०७१	१६७८	" "	१७८१
१४६०	" "	१२४२	१७०२	" "	१७४३
१४६४	" "	२०५१	१६६७	उपाध्याय विनयसागर	१७८१
१५०५	जयकेसरो सूरि	१५६६	१६६७	सोभाग्यसागर	१७८१
१५०६	" "	१४६३, १६११	१७६८	पं० लक्ष्मी रतन	२००८
१५१३	" "	१४७३	१८०५	" "	२००६
१५१५	" "	१५८७	१७६८	पं० हेमराज	२००८
१५२३	" "	१०१६	१८०५	" "	२००६
१५२४	" "	११२६, १२७३, १७७६	१६२१	रत्नशेखर सूरि	१४८६
१५२७	" "	१३१६, १६०६, २०११	आगम गच्छ ।		
१५२८	" "	१६१६	१४८८	जयानंद सूरि	१७६८
१५२६	" "	१६१३	१५०६	हेमराज सूरि	१००४
१५३०	" "	१२८४	१५१७	" "	१५०५
१५४५	सिद्धान्तसागर सूरि	११६६	१५१६	" "	१७२१
१५५४	" "	१४१२, १५७३	१५१७	आनन्दप्रभ सूरि	१७६६
१५५५	" "	१७७२	१५२५	देवरत्न सूरि	१८००
१५७६	गुणनिधान सूरि	१४३६	१५३१	" "	१७५६
१६२१	धर्ममूर्ति सूरि	१४५२	१५३२	अमररत्न सूरि	१३२३
१६६५	मुनिशोल गणि	१८८६	१५३६	" "	२०६१

संवत्	नाम	खेखांक	संवत्	नाम	खेखांक
१५४७	अमररत्न सूरि ...	२१०६	१५२०	" "	११२८ १२७१
१५३६	सिंघदत्त सूरि ...	१७३७	१५२१	" "	१३८६
१५६६	सोमरत्न सूरि ...	१२१६	१५२४	" "	१२७४ १४४३
१५७१	" "	१५७७	१५२८	देवगुप्त सूरि ...	१५७१
उपकेश गण ।					
१३२५	कक सूरि ...	१६२३	१५३४	" "	२०५२
१३२५	" "	१०३८	१५३५	" "	१२६५
१३८०	" "	१३५८	१५३७	" "	२१०५
१३८५	" "	१०४३	१५४४	" "	१६०३
१४५७	रामदेव सूरि ...	१४६०	१५४६	" "	१२६३
१४६८	देवगुप्त सूरि ...	१०६२	१५५८	" "	१६३४
१४७०	" "	२०६२	१५५६	" "	११०१, ११८६
१४८४	" "	१०७२	१५६६	सिद्ध सूरि ...	१३००
१४८६	" " (मल्लधारोयक)	१६८२	१५६७	" "	१६५६
१४८२	सिद्ध सूरि ...	१०७०	१५७१	" "	१५७४
१४६१	" "	१५४६	१५७२	" "	१५७६
१४६३	सिद्ध सूरि ...	११८२	१५७४	" "	१४५०
१४६५	सच सूरि ...	१६४१	१५८८	" "	१४६४
१५०३	ककुदाचार्य (कक सूरि)	१६३४	१५६२	" "	१३०५
१५०५	कक सूरि ...	११४८, १४७६	१५६६	" "	१३४७
१५०६	" "	११४६	१५२७(?) सिद्ध सूरि	१३२२
१५०७	" "	१०८३, १२५०	१७८१	कर्पूरप्रियगणि ...	१०२४
१५०८	" "	१३३२	१६४०	सिद्धसूरि (कमलागच्छ)	१४७८
१५०६	" "	१२५६	कठोलीवाल गण ।		
१५१२	" "	११५३, १२६१, १२६३, १३७३, १५०४	१४७१	संघतिलक सूरि ...	१६३०
१५१७	" "	१८८३	१४६३	सर्वाणंद सूरि (पूर्णमापक्ष)	१६६६
			१४६३	लक्ष्मसोह (" ")	१६६६

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१५१८	गुणसागर सूत्रि (पूर्णिमापक्ष)	२०८६	१३६१	जिनपद्म सूत्रि	१६२६
१५३०	विद्यासागर सूत्रि	१३६१	१४८२	जिनभद्र सूत्रि	१५०३
१५३४	विजयप्रभ सूत्रि	१३८२	१४६३	" "	१२४४
			१४६६	" "	१६००
			१५०३	" "	१३२५
			१५०७	" "	११५१, १४००
			१५०६	" "	१२५५, १३३३
			१५११	" "	१५५०
			१५१७	" "	१०१०
			१४६१	भव्यराज गणि	२००४
			१५०६	जिनतिलक सूत्रि	१२५७
			१५११	" "	१८६०-६१
			१५२८	" "	११५८
			१५१५	जिनचंद्र सूत्रि	२०२२
			१५१६	" "	१३३५
			१५१६	" "	१२७०
			१५२६	" "	१३७६
			१५२६	" "	१०६५
			१५३१	" "	१२०६
			१५३२	" "	१६४०
			१५३३	" "	१८८१
			१५३४	" "	१२८७, १२८६, १३१७
			१५३६	" "	१०५६, १३४१
			१५१७	विवेकरत्न सूत्रि	१७५५
			१५२५	कीर्तिरत्न सूत्रि	१८८५
			१५२८	जिनप्रभ सूत्रि	११५८
			१५५३	जिनसमुद्र सूत्रि	१६६२

कोरंट गद्य ।

खरतर गद्य ।

१२६३	कक सूत्रि	२०८०
१३१७	सर्वदेव सूत्रि	१६५०
१३४०	... सूत्रि	१७६२
१४०६	कक सूत्रि	२०१४
१४३७	सांवदेव सूत्रि	१०५७
१४८४	कक सूत्रि	२१०२
१४६१	सांवदेव सूत्रि	२०८२
१४६६	" "	१३३०
१५०६	" "	११८३
१५०८	" "	१७३३
१५०६	" "	२०१२
१५१७	श्री पाद्...	१४०४
१५१८	सांवदेव सूत्रि	१७२६
१५३२	" "	१३८०
१५५३	नक्ष सूत्रि	१६६८
१५६७	नक्ष सूत्रि	१६४२

.....	वर्द्ध मान सूत्रि	१११०
१३८१	जिन कुशल सूत्रि	१६८८
१३८७	" "	१३५०
१३६६	" "	१५४५

संवत्	नाम	खेखाक	संवत्	नाम	खेखांक
१५५५	जिनसमुद्र सूत्रि	... १२२४	१८५२	लालचंद्र गणि	... १२०५, १२१३
१५५६	जिनहंस सूत्रि	... १२६८, १४६३	१८५४	जिनदेव सूत्रि	... १८२८
१५६२	" "	... २०४६	१८६३	जिनहर्ष सूत्रि	... १५२५
१६०६	जिनमाणिक्य सूत्रि	... १३५१	१८६४	" "	... १५२६-२८
१६२८	जिनभद्र सूत्रि	... १४४८, १८४५	१८७१	" "	... १६३८
१६५३	जिनचंद्र सूत्रि	... ११६६	१८७३	" "	... १०१६
१६२७(?)	जिनसिंह सूत्रि	... १३८८	१८७५	" "	... १८७१ ४२
१६६६	" "	... १७१५	१८७७	" "	... १०२७, १६४७ ५६, १६६२-६६, १८३६-३८
"	गुणरत्न गणि	... "	१८८५	" "	... १८३६
"	रत्नविशाल गणि	... "	१८८६	" "	... १८२१, १८२४
१६६८	जिनचंद्र सूत्रि	... १४५७	१८३८	" "	... १८५०
१६६८	" "	... १५८५	१८७७	उ० रत्नसुन्दर गणि	... १०२७
१६६८	लब्धिवर्द्धन	... १४५१	१८७७	हारधर्म (पाठक)	... १६४७-५६, १६६२-६६
१६७५	जिनराज सूत्रि	... १६७०	१८६३	जिन महेंद्र सूत्रि	... १६७१-७२
१६८६	" "	... १६४७	१८६६	" "	... १६४३
१६६८	" "	... १६६७	१८६७	" "	... १८७०
१६८६	परानयन (?)	... १६४७	१६०६	" "	... १६४५
१६६८	समथराज उपाध्याय	... १६६७	१६१०	" "	... १५२६-३२, १६४६, १६६७-६८, १६७३, १८३०-३२
"	अभयसुन्दर गणि (वाचनाचार्य)	... "	"	" "	... १६८२
"	कमललाभ उपाध्याय	... "	१६१३	" "	... १६२२
"	लब्धकीर्ति गणि	... "	१६१४	" "	... १०१७, १०२०-२१
"	पं० राजहंस गणि	... "	१८६३	जिन सौभाग्य सूत्रि	... १३५२
"	पं० देवविजय गणि	... "	१६०५	" "	... १०१७
१६६०	जिनकीर्ति सूत्रि	... ११०७	१८६३	आनन्द बल्लभ गणि	... १०२०-२१
"	जिनसिंह सूत्रि	... "	१६३६	" "	... १०२०-२१
१७२७	म० राम विनय गणि	... १००६	१८६७	कुशलचंद्र गणि	... १८७०
१८४६	जिनचंद्र सूत्रि	... १८०७	१६१८	जिन मुक्ति सूत्रि	... १८६६-६८, १८७२

संवत्	नाम	खेखांक	संवत्	नाम	खेखांक
१६२०	जिनहंस सूरि	१६६६, १७०१	१४६४	" "	१६५८
१६२१	" "	२०६६-६७	१४६५	" "	१६७५, १६७४, १६७५
१६२५	" "	१८१०	१४६६	" "	१६५७
१६३२	" "	१०१८	१४६७	" "	२०७२
१६३४	" "	१८११	१५०१	" "	१२४८
१६२०	सद्दालाभ गणि	१७०१	१५०३	" "	१८६५
१६३२	कनकनिधान मुनि	१०१८	१५०७	" "	११५१
१६३६	विवेककीर्ति गणि	१६५७	१५०६	" "	१३७२, १७२५
१६४२	हितवल्लभ मुनि	१८०८	१५१०	" "	१२३२
१६५०	जिनचंद्र सूरि	२०७७	१५०४	शुभशील गणि	१८५६, १८५४-५६
१६५१	" "	२०७८	१५२३	जिनहर्ष सूरि	११५७
१६५६	" "	१६३६-४०	१५२८	" "	१४३८
१६५२	उ० नैमिचंद्र	२०६४	१५६७	जिनचंद्र सूरि	१४१५
१६७०	जिन फत्तेन्द्र सूरि	२०६६	१५७२	" "	१८६६
१६७२	जिन सिद्ध सूरि	२०७०	१६६८	लब्धिवर्द्धन	१४५१
१६७६	होराचंद्र यति	१००८			

खरतर गद्य ।

जिनवर्द्धन सूरि शाखा ।

१४६६	जिनवर्द्धन सूरि	१६६६, १६६७
१४७३	" "	१२३८, १६६५
१४७५	" "	१६८७
१४६६	जिनचंद्र सूरि	११३६, १६६३
१४७६	" "	१२०६
१४८६	" "	१६६४-६५, १६८१
१४६१	जिनसागर सूरि	१०७५, १३६६, १६१८, १६३२, १६७७, १६८४, १६६४

रंगविजय शाखा ।

१६२३ (?)	जिनरंग सूरि	१००५
१८५६	जिनचंद्र सूरि	११७६, १२२७
१८७४	" "	१८४८
१८७७	" "	१००७, १२२६, १५६५
१८७६	" "	१६७६-८०
१८८८	" "	१५८६, १६२६, १६८३, १८२२, १८३४
१६०२	जिन नंदिवर्द्धन सूरि	१२२८
१६१७	" "	१६३०
१६१३	जिन जयशेखर सूरि	१५३३, १६३७
१६२१	जिन कल्याण सूरि	१४२५

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
चंद्र गद्य ।			उद्दिष्टेरा गद्य ।		
१०७२	सोलगल सूरि	३८६	१६१२	धम्ममूर्ति सूरि	११६४
१२३५	पूर्णभद्र सूरि	१६८८	"	भावसागर सूरि	"
११५८	देवभद्र सूरि	१०३४	जापडाण गद्य ।		
१२७२	हरिप्रम सूरि	१७७७	१५३४	कमलचंद्र सूरि	१२८८
१३००	यशोभद्र सूरि	१९७८	जीरापद्धीय गद्य ।		
१३१५	" "	१७७९	१४०६	रामचंद्र सूरि	१०४९
चाणांचाल गद्य ।			१५२७	उदयचंद्र सूरि	१५०६
१५२९	वज्रेश्वर सूरि	११५९	तप गद्य ।		
चित्रवाद्य (चैत्र) गद्य ।			१४०१	विजयहर्ष सूरि	२०५६
१३०३	जिनदेव सूरि	१६४९	१४२२	रत्नशेखर सूरि	१६२८
१३२१	आमदेव सूरि	१६२१	१४३६(?)	देवचंद्र सूरि	१७५२
१३३४	पं० सोमचंद्र	२०६०	१४५३	हेमहंस सूरि	१४८९
१३४०	अजितदेव सूरि	११३४	१४६६	" "	१६१७
१३५२	गुणचंद्र सूरि	१०४१	१४७५	" "	१२४०
१४९९	मुनितिलक सूरि	१६०१	१४९०	" "	१३२९
१५०१	" "	११४५	१४९६	" "	१४८१
१४९९	गुणाकर सूरि	१६०१	१४९८	" "	१३६७
१५१३	" "	१२६४	१५०१	" "	१४८२
१५१५	रामदेव सूरि	१०६०	१५०४	" "	११४७
१५२७	चाण्चंद्र सूरि	१०६४	१५१०	" "	११५२
१५३१	नारचंद्र सूरि	१०६६	१५११	" "	१४०१
१५३४	लक्ष्मोसागर सूरि	११६३	१५१३	" "	१०८९, १२६६, १३७४
१५३६	" "	१४१०	१४५८	देवसुंदर सूरि	२०४८

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१४८२	सोमसुंदर सूरि	१४२१	१५१३	" "	११८४, १४०३
१४८४	" "	१६८०	१५१६	" "	१८८०, १६१२
१४८५	" "	१६७२, २०१७	१५१७	" "	१०३०, ११८५
१४८७	" "	२०७५	१५३८	" "	१६४२
१४८८	" "	१६८३	१५०३	जिनरत्न सूरि	१७५३
१४८९	" "	१०२९, १०६७, १७३१	१५३६	" "	१७७०
१४९१	" "	१०७४, ११८१	१५४१	" "	१६१४
१४९२	" "	१०७६	१५०३	जयचंद्र सूरि	१६६६, १६७३
१४९४	" "	१६६८, १६७१	१५०५	" "	१३७०
१४८८	मुनिसुंदर सूरि	१६८३	१५०८	उद्यनंदि सूरि	१६३५
१५००	" "	१४६१	१५१०	रत्नसागर सूरि	१२५८
१५०१	" "	११२६	१५१७	कमलवज्र सूरि	१५८८
१४८९	रत्नसिंह सूरि	११४०	"	लक्ष्मीसागर सूरि	१०६१
१५१०	" "	१०८६	१५१८	" "	१७५६
१५११	" "	१६६६	१५१९	" "	१२६८, १८८४, २०७४
१५१२	" "	२०४४	१५२०	" "	२०२३
१५१३	" "	१७००	१५२१	" "	१२७२, १३१४, २०७६
१४९६	विजयनिलक सूरि	१६६१	१५२२	" "	१११७
१५०२	रत्नशेखर सूरि	११४६	१५२३	" "	१०६२, १४३७, १६३३, १७५१
१५०४	" "	१२४९	१५२४	" "	१२०८, १५६०, १५६६
१५०६	" "	१११२, १६७०	१५२५	" "	१४८५, १५७०, १६३८
१५०७	" "	१६६५	१५२७	" "	१२७६
१५०८	" "	१०८४	१५२९	" "	१५७२, १६०२, २०८६
१५०९	" "	१०८५	१५३०	" "	११६०-६१, १२८२-८३
१५१०	" "	१५३९, १५४९	१५३४	" "	११६४, १२६१, १३१६
१५११	" "	१४०२	१५३५	" "	१५८६
१५१२	" "	१२६०, १२६२, १७५४	१५३६	" "	१४६५

(७)

संवत्	नाम	खेखांक	संवत्	नाम	खेखांक
१५४१	रुक्मीसागर सूरि	२०५४	१५४८	म० वाकजी	२०३६
१५४२	" "	११००	१५५२	जिनसुंदर सूरि	१२६४
१५५०	" "	१००३	१५५५	धर्मरत्न सूरि	१००१
१५१८	हेमविमल सूरि	१५४४	१५६३	द्रष्टादी सूरि	१६१०
१५५२	" "	१३४४, १६०४	१५७६	" "	१३५४
१५५४	" "	१४०७	१५६६	वरणसुंदर सूरि	११०३, २०२०-२८
१५५७	" "	१०२६	१५६६	नन्दकल्याण सूरि	११०३
१५६०	" "	१३२०	१५६६	जयकल्याण सूरि	२०२०-२८
१५६१	" "	१३४५	१५७५	" "	१६४३
१५६५	" "	१६४६	१५७६	सौभाग्यसागर सूरि	१३८०
१५६६	" "	११०२, ११००	१५६५	भाणंद विमल सूरि	१०३८
१५८०	" "	१०३०, १०३५	१५६६	विजयदान सूरि	११०४, १५०७
१५१८	सुरसुंदर सूरि	१४०५	१६०१	" "	११०६
१५२१	उदयवल्गुभ सूरि	१४००	१६१६	" "	१५०८, १५०६, १५४०
१५२२	सोमदेव सूरि	१११०	१६१७	" "	१५५३, १६६०
१५२५	सोमजय सूरि	२०२५	१६१६	" "	१६०७
"	सुधानंदन सूरि	"	१६२२	" "	१६०८
"	म० जिनसोम गणि	"	१५६७	सुमतिसाधु सूरि	१४०२
"	ज्ञानसागर सूरि	१०६३	१६१५	तेजरत्न सूरि	१३००
१५२८	" "	१५६०, २०१३	१६१७	हीरविजय सूरि	१५५३
१५२६	सर्वेश्वरसुंदर	१७६६	१६२४	" "	११६५, १२२५
१५३३	उदयसागर सूरि	१४४४	१६२६	" "	१०४०
१५३६	" "	१४४५	१६२७	" "	१३४८
१५५२	" "	१०६१	१६२८	" "	१२१४, १८६१
१५५३	" "	१८७६	१६३३	" "	१०८२
१५३४	पुण्यवर्धन सूरि	१२६०	१६३७	" "	१०६२, १६४२
१५३७	हेमरत्न सूरि	१३५३	१६३८	" "	१२१५

(ए)

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१६४१	हीरविजय सूरि	१४५६	१७०५	" "	१६१३
१६४२	" "	१००२	१७०७	" "	२०४३
१६४४	" "	१६६१, १७१२, २०६४	१६५२	सोमविजय गणि	१७६६
१६५१	" "	१७६३	१६६७	" "	११०५
१६८५	" "	१६४३	१६५२	विमलहर्ष गणि	१७६६
" "	" "	१७४८	"	कल्याणविजय गणि	"
" "	" "	१५००	"	पद्मानंद गणि	"
१६३३	रविसागर गणि	१७८२	१६७७	विवेक हर्ष गणि	२०५०
"	शत्रुशाल	"	"	कल्याण कुशाल	१७१७
"	विजयसेन सूरि	"	"	दयानंद कुशाल	"
१६४३	" "	१३०८	"	भक्ति कुशाल	"
१६५२	" "	१७६६	१६८२	म० मुनि सागर गणि	१६३५
१६५६	" "	१७६४	१६८६	विजय सिंह सूरि	११०६
१६६१	" "	१७६४	१६६३	" "	१०२८
१६६७	" "	११०५	१६६६	" "	१३१०-११, १७६०
१६७०	" "	१६२८, १७४१	१७०१	" "	१५७५
१६५१	विजयदेव सूरि	१७८२	१७०३	" "	११६७
१६६७	" "	२०५७	१६६३	मतिचंद्र गणि	१०२८
१६७४	" "	१४६०	१६६४	उ० लावण्यविजय गणि	११०८
१६७७	" "	१७१७	१६६६	" "	१७६०
१६८५	" "	१३६१, १६४३	१७००	पं० कीर्तिरत्न गणि	२०४२
१६८६	" "	११०६	१७०६	विजयानंद सूरि	१०१४
१६८७	" "	११७३	"	विजयराज सूरि	"
१६९४	" "	११०८	१७१०	" "	१६१४, १६१०
१६९७	" "	२०५६	"	विजयसेन सूरि	१६१०
१६९६	" "	१७६०	१७१२	" "	१७४४
१७०१	" "	२०६०	१७१३	विजयप्रभ सूरि	१७६७

संवत्	नाम	संख्यांक	संवत्	नाम	संख्यांक
१७४४	विजयप्रभ सूरि	११७७	१४३८	पद्मशेखर सूरि	१२३५
"	मुक्तिचंद्र गणि	"	१४७४	" "	१२३६
१७६४	ज्ञानविमल सूरि	१७६६	१४८५	" "	१४६१
१८०५	पं० कुशलविजय गणि	१४६७	१४९५	सर्वाणंद सूरि	१०६०
१८०६	" " "	१४६८	१४६१	मलयचंद्र सूरि	१८७६
१८१८	" " "	१४५५	१४६५	" "	१२२०
१८०८	विजयधर्म सूरि	१११६	१४७३	पद्मसिंह सूरि	१०६४
१८४८	विजयजिनेंद्र सूरि	१२०४	१४८६	महीतिलक सूरि	११८०
१८७३	" "	१७२४	१५०१	" "	११४३
१८७६	" "	१७८७	१५०३	" "	१४६२
१८८०	" "	१७३४	१५११	" "	१५३८
१८४८	पं० पुण्यविजय गणि	१२०४	१४६५	विजयचंद्र सूरि	१०७७
१६०५	शांतिसागर सूरि	१८२६	१४६८	" "	१२४७
१६१२	आनन्दसागर सूरि	१८६८	१५०१	" "	१०७६
१६३१	धरणेन्द्रविजय सूरि	१४६६	१५०३	" "	१५४७
१६३८	वृद्धविजय गणि	१८४८-५३	१५०४	" "	१३६६
१६४३	विजयराम सूरि	१८२७	१५०१	विजयप्रभ सूरि	११४४
१६४६	" "	१८०६	१५०५	महेन्द्र सूरि	२०६८
१६५४	पं० पद्म विजै (?)	१७५०	१५०७	— —	१३६०
"	विजयसिंह सूरि	१८४०	१५०७	पद्माणंद सूरि	१२५१
१६६४	उ० वीर विजय	१४६६, १५०१	१५२६	" "	१३२६
	कृष्णार्षि गण्ड—(तपगण्ड शाखा)।		१५३५	" "	१०६८
१५२५	कमलचंद्र सूरि	१२७५	१५१३	साधुरत्न सूरि	१०८८
	देवाज्ञिदित गण्ड ।		१५२०	" "	१३७७
१२०१	कनुदेव	१६६८	१५१३	पद्माणक सूरि	१४७४
	धर्मघोष गण्ड ।		१५२२	साधु — —	१०१३
१३३६	गुणचंद्र सूरि	१६५२	१५३४	लक्ष्मीसागर सूरि	१३१८
			१५६३	" "	१२६६
			१५३७	मानदेव सूरि	२०५३

संवत्	नाम	खेलांक	संवत्	नाम	खेलांक
१५६३	ध्रुतसागर सूरि	१३८४	
१५६६	नविषर्जन सूरि	११६१	
१५७०	" "	१६२०, १६६३	
१५७६	" "	१३०३	
१५७७	" "	१३२१	
नमदास गछ ।					
१५३६	देवगुप्त सूरि	१३४०	
नागपुरीय गछ ।					
--	हेमरत्न सूरि	१६०६	
नागेन्द्र गछ ।					
११६१	विजयतुंग सूरि	१७६७	
१२६२	यद्वमान सूरि	१६२०	
१२८१	उदयप्रभ सूरि	१७६३	
१४०५	रतनागर सूरि	१०४८	
१४२२	रत्नप्रभ सूरि	१०५३	
१४३७	" "	११३६	
१४४६	उदयदेव सूरि	११२४	
१४५०	देवगुप्त सूरि	१०५८	
१४७४	सिंहदत्त सूरि	१०६५	
१४८४	पद्मानंद सूरि	१०७३	
१४६६	गुणसमुद्र सूरि	१३६८	
१५२०	" "	२१०३	
१५३३	गुणदेव सूरि	१८६४	
१५५८	हेमरत्न सूरि	१६०५	
१५७०	हेमसिंध सूरि	१२१३	
१५७२	---	१३०१	
१७१५	रत्नाकर सूरि	१३१२	
नाणकीय(ज्ञानकीय, नाणावाल) गछ ।					
१२४३	---	२०७६
१३४१	महेन्द्र सूरि	२०-१
१३४६	" "	१७१६
१४०५	शांति सूरि	१४८७
१४६३	---	११११
१५०१	शांति सूरि	११४३
१५६४	" "	१५५६
१५६६	" "	१३०८
१५७६	" "	२०८७
१५१६	धनेश्वर सूरि	१५५२
१५२७	" "	२११०
१५३०	" "	(पृ० २८३) ११८७
१५३४	" "	२०८६
१५३६	" "	१३३६
१५४२	" "	१२३१
१५५७	महेन्द्र सूरि	१७३१
निष्ठति गछ ।					
१४६६	श्री सूरि	१००८
निवृत्त गछ ।					
१५०६(?)	महणं गणि	१००३
पंचासरीय गछ ।					
११२५	वेङ्क	१८७३
पद्मीवल गछ ।					
१४५८	शांति सूरि	१२३७

संवत्	नाम	संख्यांक	संवत्	नाम	संख्यांक
१४७६	यशोदेव सूरि	१८८२	१५३२	" "	१७२८
१४८२	" "	१६३१	१५३३	साधुसुंदर सूरि	११५६
१५१३	" "	१८८७	१५२६	" "	१२८१
१५२८	नक्ष सूरि	२१११	१५४७	जयरत्न सूरि	१११६
१५३६	उद्योतन सूरि	१४६२ १५५५	१५४८	सौभाग्यरत्न सूरि	१७६०
			१५५६	मनसिंह सूरि	१२१२
पार्श्वचन्द्र गद्य ।			पूर्णिमा गद्य ।		
१५७७	पार्श्वचन्द्र सूरि	१५६१	जीमपद्धीय शाखा ।		
पिप्पल गद्य ।			१४८२	नयचंद्र सूरि	१५६४
१४६१	वीरप्रभ सूरि	१६७५	१५१५	" "	१३७६
१५१६	शालिभद्र सूरि	११५५	१५७६	मुनिचंद्र सूरि	१३०२
१५१७	धर्मसागर सूरि	२०७३	प्राया गद्य ।		
१५३०	चंद्रप्रभ सूरि	१२२२	१३७४	शीलभद्र सूरि	१०४२
१५७०	तिलकप्रभ सूरि	१७२६	बापदीय गद्य ।		
"	गुणप्रभ सूरि	"	१२४२	जीवदेव सूरि	१६८६
पूर्णिमा(पक्ष) गद्य ।			बोकड़िया गद्य ।		
१३८१	सोमतिलक सूरि	१६२४	१४५७	धर्मतिलक सूरि	१०६१
"	श्रीसूरि	"	१४६६	" "	१२४६
१४८५	सर्वानन्द सूरि	१२४१	१५४६	मणिचंद्र सूरि	११६७
१४८६	विद्याशेखर सूरि	१३६७	१५५६	" "	१४१४
१५०१	गुणसमुद्र सूरि	१५६५	१५६२	" "	११६६
१५११	राजतिलक सूरि	१४८०	१५८७	मलयहंस सूरि	१६१५
१५१७	" "	१६३७	ब्रह्माण गद्य ।		
१५१६	" "	१७५७	१३२०	वयरसेण उपाध्याय	२०६८
१५१७	पुण्यरत्न सूरि	२०८५	"	जम्क सूरि	"
१५१६	" "	१५६७			
१५३२	" "	११६८			
१५२१	गुणतिलक सूरि	१७५८			

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१३५५	विमल सूरि	१६२२	
१३७५	विजयसेन सूरि	१४३४	
१४३७	हेमतिलक सूरि	११२३	
१४३६	बुद्धिसागर सूरि	११३७	
१४६६	धीर सूरि	१३६४	
१४८३	" "	२१०१	
१५१६	" "	१५५१	
१४७१	उदयाणंद सूरि	२०१६	
१५००	विमल सूरि	१३६८	
१५१८	" "	१०११	
१५१६	" "	१२६६	
१५२४	" "	२०८८	
१५११	मुनिचंद्र सूरि	१२२१	
१५१३	उदयप्रम सूरि	...	१०८६, १३७४		
१५२४	" "	१४६५	
१५१३	हेमहंस सूरि	१३७४	
१५५६	बुद्धिसागर सूरि	११८८	
"	उदयाणंद सूरि	२१०८	
१६६३	जाजीग सूरि	२०६७	
जावडार(जावड़, जावहेड़ा) गद्य ।					
१५०६	धीर सूरि	२०६३	
१५२४	भावदेव सूरि	२०६५	
१५३७	" "	११६५	
१५३६	" "	१३४२	
जिन्नमाल गद्य ।					
१५६३	कर्मातिक सूरि	२०६६	
मध्यम शाखा ।					
- -	देव सूरि	१६०५	
मनाहरु(मडारुडिय, मडूहड़) गद्य ।					
१३५१	सोमतिलक सूरि	१०४६	
१४८०	धर्मचंद्र सूरि	१०६८	
१४८१	उदयप्रम सूरि	१०६६, २०४६	
१५२७	नयचंद्र सूरि	१२७६	
१५४१	कमलचंद्र सूरि	१३६०	
१५४५	" "	१३६२	
१५५७	गुणचंद्र सूरि	११३०	
"	उ० व्याणंदनंद सूरि	"	
मधुकर गद्य ।					
१५१६	— — —	१७३६	
मह्वधारि(मह्ववादि) गद्य ।					
१२३४	पूर्णचंद्र सूरि	१८७५	
१३४४	रत्नदेव सूरि	२०६६	
१४७६	विद्यासागर सूरि	२१००	
१४७७	मुनिशेखर सूरि	११२५	
१५१०	गुणासुंदर सूरि	१६६०	
१५१२	" "	१७७५	
१५१५	" "	११५४	
१५२२	" "	२१०४	
१५२५	" "	१२३०	
१५२७	गुणशेखर सूरि	१२७८	
१५३२	पुण्यनिधान सूरि	१२८५	

संवत्	नाम	संख्यांक	संवत्	नाम	संख्यांक
१५३४	गुणविमल स्त्रि	१३३८	१५३८	देवसुंदर स्त्रि	१६२१
१५५७	गुणवपान स्त्रि	११६८		लौकिक गण्ड ।	
१५६६	लक्ष्मीसागर स्त्रि	११३१	१६३२	अजयराज स्त्रि	२०३४
१५८१	" "	१४८४	१६५३	गंगारिखी यति	२०३३
१६६६	कल्याणसागर स्त्रि	१८६६		वड गण्ड ।	
"	उदयसागर स्त्रि	"	१५७२	चंद्रप्रभ स्त्रि	१३८६
	मोढ गण्ड ।			विजय गण्ड ।	
१२२७	जिनभद्राचार्य	१६६४	१६२१	शांतिसागर स्त्रि	१५६६-६७
	रडुख गण्ड ।		१६२४	" "	१५११-१८, १५३५, १५४२-४३, १५५६, १५६८, १६००-०१, १६०८, १६१५, १६२३
१५७६	श्रीस्त्रि	१६२५	१६३१	" "	१८०६, १८२५, १८३३
	रांका गण्ड ।		१६३२	" "	१८२३
१३२०	महीचंद्र स्त्रि	१७८०	१६३३	" "	१७०२-०३
	राज गण्ड ।		१६४३	" "	१८२७
१३३६	अमरप्रभ स्त्रि	१६५३-५४		विद्याधर गण्ड ।	
१५०६	पद्माणंद स्त्रि	११७४	१४११	विजयप्रभ स्त्रि	१११८
१५५२	पुण्यवर्द्धन स्त्रि	१५६१	१४१३	विनयप्रभ स्त्रि	२०८४
	रामसेनीय गण्ड ।		१५१८	हेमप्रभ स्त्रि	१६२४
१४५८	धर्मदेव स्त्रि	१२३६	१५२०	" "	१३१३
१५०३	मलयचंद्र स्त्रि	१०८०		विवंदणीक गण्ड ।	
१५११	" "	१०८७	१५६२	सिद्ध स्त्रि	१६५८
	रुद्रपल्लीय गण्ड ।		१५२४	कक स्त्रि	१७२७
१२६०	अभयदेव स्त्रि	२०२६		वृद्धगण्ड ।	
१४२१	जिनराज स्त्रि	१०५२	१३१६	हीरभद्र स्त्रि	१३२४
१५१३	सोमसुंदर स्त्रि	१३१५	१३३४	— — —	१८०१
१५१७	" "	१२६७			

संवत्	नाम	खेखांक	संवत्	नाम	खेखांक
१३८६	धर्मघोष सूरि	...	१४६३	शालिभद्र सूरि	१६३३
१४६१	रामदेव सूरि	...	१५२०	" "	२००२
१४६६	रत्नप्रभ सूरि	१२०७, १६७६	१४६४	शांति सूरि	११४१
१५०३	मलयचंद्र सूरि	...	१४६६	" "	१८५६
१५१६	" "	...	१५०१	" "	११४२
१५०७	सागर सूरि	...	१५०६	" "	१८६०
१५०८	महेन्द्र सूरि	...	१५०८	" "	१५४८
१५१३	कमलप्रभ सूरि	...	१५१८	" "	१६३१
"	सागरचंद्र सूरि	...	१५२७	" "	१५५४
१५१८	मेरुप्रभ सूरि	...	१५३३	" "	१४०८
१५४२	" "	...	१५३७	" "	२१०६
१५३१	श्री सूरि	...	१५०५	— —	१०८१
१५४२	धनप्रभ सूरि	...	१५१३	ईश्वर सूरि	१०२५
१५५६	मुनिदेव सूरि	...	१५१५	" "	१६६१
"	मनिचंद्र सूरि	...	१५३०	यशचंद्र सूरि	२०४५
"	वल्लभ सूरि	...	१५३—	— —	१६३६
			१५३२	— —	१३३७
			१५३६	सालि सूरि	१०६६, १२१०
			१५४६	सुमति सूरि	१३८३
			१५५६	शांति सूरि	१२६६
			१५६३	" "	११६०
			१५७२	" "	१६६२
			१५६६	" "	१३०६
			१५८१	ईश्वर सूरि	१४१६
			१६८६	भ० मानाजी केसजी	१६६२
				साधु पूर्णिमा पक्ष(गठ) ।	
			१५०४	पूर्णचंद्र सूरि	१७३२
			१५२१	चंद्र सूरि	१३७८
			१५३३	जयशेखर सूरि	१३८१, १४०६

व्यवसीह गठ ।

१३४३ — — ... १७०६

षं(सं)डेर(क) गठ ।

१०३६ यशोभद्र सूरि ... १६४८

१२१० — — ... १६८७

१३१७ ईश्वर सूरि ... १६५१

१३२८ ज्ञात्य सूरि ... १०३६

१३३८ सुमति सूरि ... १७०८

१३४२ " " ... १८६२

१४२५ ईश्वर सूरि ... १४८८

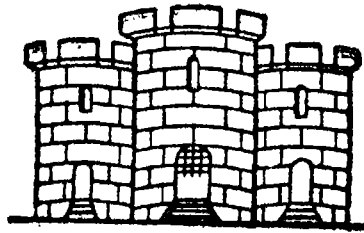
१४६६ सुमति सूरि ... १३६५

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
	सिद्धान्तिक गद्य ।		१३८०	पद्मानंद सूरि	१४३५
१४०८	माणचंद्र सूरि	१४२७	"	जगत्तिलक सूरि	"
	हर्षपुरीय गद्य ।		१३८६	धर्मप्रभ सूरि	१५०२
१५५५	गुणसुंदर सूरि	१२६५	१३६६	भावदेव सूरि	१०४७
	हुंबड़ गद्य ।		१४०५	अभयदेव सूरि	१८८६
१४५३	सिंहदत्त सूरि	१०५६	१४०७	गुणप्रभ सूरि	१०५०
	जिनमें गद्यों के नाम नहीं हैं ।		१४०६	सर्वानंद सूरि	१०५१
६३७	उद्योतन सूरि	१७०६	"	सर्वदेव सूरि	"
"	वच्छवल देव	"	१४२३	शालिभद्र सूरि	१०५४
११६६	श्रामदेव सूरि	१०३३	"	अभयचंद्र सूरि	१०५५
१२५३	जिनचंद्र सूरि	१७८५	१४३६	— —	१६२६
१२६२	भावदेव सूरि	१०३५	१४६८	श्री सूरि	२०१०
१२--	सर्वगुप्त सूरि	१०३६	१४७८	" "	१०६६
१३०२	माणिक्य सूरि	१७८३	१४७०	देव सूरि	१३६६
"	जयदेव सूरि	२०२३	१४८४	जयप्रभ सूरि	२०००
१३१०	परमानंद सूरि	१७६५	--	जिनरतन सूरि	१६६३
१३३८	" "	"	१४६३	अमरचन्द्र सूरि	१२४३
१३२२	जयचंद्र सूरि	२०४७	"	धनप्रभ सूरि	२०८३
१३२३	उद्योतन सूरि	१०३७	१४६६	शीलरत्न सूरि	१४२२
१३३८	श्री सूरि	११२१	१४६७	मुनिप्रभ सूरि	१३३१
"	पूर्णभद्र सूरि	१७६१	१५०१	मंगलचंद्र सूरि	१३६६
१३४०	प्रद्युम्न सूरि	१३६४	१५०३	धर्मशेखर सूरि	१७६८
१३६१	विबुधप्रभ सूरि	११२२	१५०६	सर्व सूरि	१०८२
१३७५	जिनभद्र सूरि	१७६५	१५०६	साधु सूरि	१२५४
"	रत्नप्रभ सूरि	१७६५	१५१६	श्री सूरि	११२७
१४२२	" "	१०५३	१५३३	" "	१४७०
			१५२१	सुविहित सूरि	११७५
			१५२३	कनकरत्न सूरि	१५६८

(१७)

दिगम्बर संघ ।

संवत्	नाम	खेखांक	संवत्	नाम	खेखांक
काष्ठा संघ ।			१४५७	पद्मनंदि	१००६
१३६०	तिहुण कीर्त्ति	११३५	१४७२	"	१०६३
"	— —	१२२६	१५३४	भ० ज्ञानभूषण	११२०
१४६७	जिनचंद्र	१४८३	"	भ० भूषणकीर्त्ति	"
१५०६	मलयकीर्त्ति	१२५२	"	रत्नकीर्त्ति	१४५८
१५४६	— —	१३४३	१५४६	जिनचंद्र	१०१५
काशी संघ ।			१५६२	" "	१४४७
१४६७	कीर्त्तिदेवा	१४२७	१५५२	— —	१४२६
१५१०	विमलकीर्त्ति	१४२८	१६१६	सुमतिकीर्त्ति	१६३६
नंदि संघ ।			१६५२	चंद्रकीर्त्ति	११३२
— —	क्षेमकीर्त्ति	१७८६	१६८६	पद्मनंदि	१७६५
मूस संघ ।			जिनमें संघ के नाम नहीं है ।		
१४४३	— —	१४२०	१६०८	क्षेमकीर्त्ति	१४७९





श्रावकों की ज्ञाति-गोत्रादि की सूची ।



ज्ञाति - गोत्र	खेवांक	ज्ञाति - गोत्र	खेवांक
अग्रोत(क) [अग्रवाल] ।		अरडक सोनी १४५१, १४५७
...	...	आरौरी १२५३
...	१६४४	आर्वि १८१८
गोत्र ।		आदित्यनाग ...	११५३, ११८२, १२६१, १२६३, १२७४, १३०५, १३४७, १३६६, १४८६, १५४७, १५७४, १६०३
गर्ग
गोत्रल
...	१४२८	आबूहरा १७६४
...	१४२७	आयत्रिण्य १४६४
आसवाल [उपकेश] ।		आयार १२६२
१०२६, १०३६, १०५७-५८, १०६८, १०७२-७३,		ईटोदडा १०६६
१११२, १११७, १११६, ११२३, ११२७-२८,		उच्छित्तवाल १२६६, १४६२
११४१-४२, ११४५, ११७१, ११८४, ११६४		उसम ...	११८७(१०२८४), १३२८, १४८७
-६५, १२०६, १२३७, १२३८, १२४३-४४,		कच्छग १२४२
१२४६, १२५४, १२५६, १२७६-७७, १२८२,		कटारिया १२८७
१२६४, १३१६, १३२०, १३३०, १३३५, १३४४,		कठउतिया १६३४
१३८३, १३६३, १३६५, १४००, १४०७, १४१४,		कनोज ११०१
१४३६, १४४४, १४६१, १४७३, १४८८, १४६३,		कयणआ १२८८
१४६५, १५०३, १५०६, १५१६, १५२२, १५३५,		करमदिया १२४८
१५४०, १५५४, १५६८, १५७३, १५८७, १६०४,		कस्याट १६३६
१६१३, १६३५, १६३६, १६५४-५५, १६५६-६०,		काकरेवा १५५६
१६६२, १७०६, १७४०, १७६४, १७७०-७१,		कांकरिया १५२६, १५२८
१७६०, १८२८, १८४३, १८८६-६०, १८६३,		काठड़ १६६२
१९००, १९१५, १९३५, १९४३, १९७१-७२,		कालापमार १४०४
१९७६, १९७६, १९८२, १९६६, २००६, २०४२,		कावड़िया १४६७
२०५०-५१, २०५८-५९, २०७४, २०८३, २०६६,			
२०६६, २१०२, २१०७-०८			
गोत्र ।			
भगडकछोली		
...	...		
भजप्रिया		
...	...		
...	१५८५		
...	१५४७		

ज्ञाति - गोत्र

लेखांक

कानू	१०३१
काश्यप	१६६१
किल्लासीया	१५५२
कुचेरा	१५६३
केकडिया	१२३६
कोठारी	...	१०२५, १३५५, १४४१, २०८४	
खां(वां)टड	...	११६५, १४६१, २०६३	
खामलेवा	११५६
खीयेपरिया	१३७५
गहिलडा	...	१२२५, १२७८, १८१६	
गादहिया	१०६२, १५४६
गांधी	...	१४१२, १४३६, १४८६, १६४५, १८४७	
गुगलिया	२००२
गूंदोवा	...	१०६४, १२६४, १३८५, १६०१	
गोठ	१३८८
गोलचछा	१८३६
घांघ	...	१४८४, १८६६, १६६०	
घोरवाड़	२०४६
चउथ	१५६०
चलउट	१२३२
चलव (?)	१०८७
चिपड	१०८३
चोपडा	...	१३५५, १५५७	
चोरडिया (चोरवेडिया)	...	१०२४, १३५५, १४५२, १४६७, १५२४, १५३०, १५७६, १५८६, १६००, १६०८, १६८५	
खंडालिया	११६८, १२८५
छमलाणी	१३४६

ज्ञाति - गोत्र

लेखांक

छानहड (छाजेड)	...	१५११, १५१३, १५३१, १८८२, १८८६-८७, २१११	
छाहखा	१४८१
छोहरिया	१४०१
जढड (जहड)	११५०, १२८६
जाइलवाल	...	११८०, १३२६, १५३८	
जाजा	१६४०
जोजाउरा	१०६७
टप	१३०४, १६३६
ठाकुर	२०८६
डवेयता	१०१३
डार्गलिक	१७३३
डामा	१५६५, १६०४
डांगरेचा	११०७
तातेहड	११८६
ताल	१०८८
ताहि	१०६५
तेलहरा	१०६६
थुंभ	१२७०
दढा (दरडा)	...	११६७, २०२२, २०३१	
दूगड	१०१७-१८, १०२२, १०२७, १२६७, १२८०, १४६८, १६२५, १६७४, १७०१-०३, १८१० -१२, १८२१-२२, १८२४, १८२६, १८३६, १८४४, १८६५, २०३२		
दूधेडिया	२०३४
दोसी	१३३५, १५५०
धरकट	१२०७
धरावही	१२६०
धाडीवाल	१४२५

हार्ति - गोत्र	लेखांक	ज्ञाति - गोत्र	लेखांक
धामो १३३६	वारडेचा १६६८
नखत १६७६	वांहरिआ १३५३
नवलक्ष (नवलखा)	११३६, १३५०, १८३४, १६५८, १६६०, १६६५, १६७५, १६७७, * १६८१, १६८४, १६८६, १६६४	विराणी १८५८
नाग २०८७	बोधग ...	१३१७, १३४१
नाहदा ...	१०१८, १०२१, १५२५, १५२७, १६४६, १८६६-६६, १८७२, १६४७, १६५७	भणसाली १४१३
नाहर ...	१०४१, १०५२, १३१८, १३२१, १३६०, १३६६, १४६०, १६२३, १८७६	भंडारा ...	१३०६, १८२७
नामनिकि (?)	... २०००	भाद्र १३३४
पटालिया (पटोल)	... १५६१	भूरी १३८४
पंचाणेचा १०७५	मडाहड १७२६
महलाघत (पाल्हाउत)	... १५२६, १५४१, १६२६-३०, २०६५, २१०४	मंडलेचा १२६५
माम्हेचा १३४२, १३७६	मारु १६६६
भूमालिया ११६०	मालकस १५१६-१७, १५५६, १८३८
पामालेचा १३८०	मातू (मातूह)	... १३२५, १३३३, १३७२, २०६४, २०७७-७८
फूलपगर १३८६	मिठडिया १६१६
बडालिया २१००	मेडनावाल ११३१, १२६५
बडेर १६४६	मोदरेचा २११०
बदाला (बडाडला)	... १२६६, २०४५	रांका १००८, १०७०, १३००
बरडिया, (बरहडिया)	... ११०६, ११६२-६६, ११६२ १५३५, १५४३	राणुबाथेच(?)	... १४०८
बलही (बलह)	... १४५०, १५७१	लालण १७८१
बहुरा १५४२	लिंगा १४४३
बंभ (बांभ)	... १३३८, १६६१	लुंकड १७५५
बाफ(प)णा ...	१११५, १३८६, २०६२, २१०५	लोढा ...	१०१०, ११०५, ११५१, १२२३, १२६६, १३१५, १४१७, १४४६, १४५६, १४६६, १४८२, १५२० -२१, १५७८-८४
बाबेल १०६४, १२३०, १२८६	लोलस ११४३
		वांताला १८६६

ज्ञाति - गोत्र	खेत्वांक	ज्ञाति - गोत्र	खेत्वांक
भणशाली
गोत्र ।
गोपुरीवाह ।
जसवाह ।
दीसावाह ।
नागर ।
गोत्र ।
पल्लीवाह ।
पापड़ीवाह ।
प्राग्वाट [पोरवाड़] ।
वायड़ा [वायट] ।
जदेउरा ।

१२७२-७३, १२७६, १२८३, १३०८, १३१४,
 १३१६, १३२२, १३२७, १३३१, १३५४, १३६१,
 १३७८ १३८१-८२, १३६१ १४०२-०३, १४११,
 १४३७, १४६५, १४७७, १४६६, १५४६, १५६१,
 १५६६-७०, १५७२, १६०२, १६४३, १६६५,
 १७१३-१४, १७२३, १७३०-३२, १७३५, १७५१
 -५४, १७५६ १७६१, १७७६-८०, १७८८, १७६३,
 १७६५, १७६६, १८८०, १८८४, १८६१, १६०२,
 १६११, १६१६, १६२४, १६२७ १६३८, १६६६,
 १६६८-६६, १६७३, २०१६-१७, २०२४, २०४८
 -४६, २०५१, २०५४, २०६०, २०७६, २०८६,
 २०६०

गोत्र ।

अंबार्ह	१२१४
कोटा०	१२५०
कोड़की	१३०८
नाग	१७४३
भंडारी	१११६

प्राग्वाट [लघुशाखा] ।

...	१६१४
-----	-----	-----	-----	------

वघेरवाह ।

...	१५६४
-----	-----	-----	-----	------

वायड़ा [वायट] ।

...	१२१६, १३२३, १५७७, १६२०, २०७५, २१०६
-----	-----	-----	-----	---------------------------------------

जदेउरा ।

...	१६३१
-----	-----	-----	-----	------

ज्ञाति - गोत्र	खेखांक	ज्ञाति - गोत्र	खेखांक
जेखड़िया वंश [साधुशाखा] ।		मेवाड़ ।	
---	...	---	...
जेणी वंश ।		मोढ ।	
---	...	---	...
महंतियाण [मंत्रिदलीय] ।		...	
---
गोत्र ।		राटउरीय ।	
...	...	---	...
काणा	...	वीर वंश ।	
काद्रडा	...	---	...
चापडा	...	श्रीमाल ।	
जाजोयाण	...	---	...
जाटड	...	---	...
जूफ	...	---	...
नान्हडा	...	---	...
पाहड़िया	...	---	...
महधा	...	---	...
माणबाण	...	---	...
मुंड	...	---	...
राहदाय	...	---	...
वजागरा	...	---	...
वालिंदिया	...	---	...
संधेला	...	---	...
मित्रवाल ।		...	
गोत्र ।		...	
सीसेरवार	...	---	...

ज्ञाति - गोत्र	लेखांक	ज्ञाति - गोत्र	लेखांक
अंबिका	११६३	श्रीमास [लघुशाखा] ।	
एलहर	१६७६	गोत्र ।	११६६
सा(वी)रड	१५२३, १६१८	फूसलाणा	१५३५, १६३२
जुनीवाल	११५८	श्रीवंश ।	
भुंगटिया	११५७	११२६, १३०१, १७७४, १७७६	
टाडो	१४३८	गोत्र ।	
टांक	१६१६, १६३८	राउन	१७१६
डउड़ा	१३७७	हूंबड़ ।	
ढोर	१२०६, १८६०-६१	१०५१, १०५६, १०७८, १०८६, ११२०, ११३५, ११४०, १३०७, १३४५, १४५४, १७२०, १७६५, १८७६	
धांधीया	१४१५	गोत्र ।	
नावर	१६६३	फडो	१७००
नांदी	१८६५, २०७२	बध	१०६३
पटणी	१२०४, १५६२	मंत्रिअर	१३०७, १६६६
फहवड़	१२६७, १४०६	रनघणा	१०६५
फोफलिया	११७६, १२२८, १५६४, १६४४, १६८३, १६८६	वजीयांणा	१६३६
भणशाली	१७८२	अररजा (?)	१०६३
भांडिया	१५३५, १६१५, १६७४	गोत्र - जिनमें ज्ञाति, वंशादि का उल्लेख नहीं है ।	
मउठिया	१६५६	काजड़	१३४८
मांथलपुरा	१४८६, १६६७	बिरुत	११४४
मुहरल	१४८५		
वहकटा (वगहटा)	१४६३, १६३२		
भे छि	२०८५		
सीघड़	१२२४, १२२७		
श्रीमास [गूर्जर] ।			
गोत्र ।			
बहरा	१४७६		

(२६)

ज्ञाति - गोत्र	लेखांक	ज्ञाति - गोत्र	लेखांक
चंडेजिया	१३६७	वज्रजातीय	१६११
चंदबाड़	११३२	विणचट	१०६०
छाहबा	१४८१	विगड	१६३४
तरट	१३४०	वेलुयुतो	१८३३
दहदहड़ा	१०८०	षटगड	१२५१
फाफटिया	१२४७	सापुठा	१२२०
भाईलेवा	१५५५	सामलिया	१५३७
मुठिया	१२५७	हिंगड	११५२

शुद्धि पत्र ।

पृ०	ले०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	ले०	अशुद्ध	शुद्ध
१२	१०५६	१४३६	१५३६	१५१	१६६५	१६७७	१८७७
"	१०५७	कारंट	कोरंट	२१३	१८३४	१८०८	१८८८
२०	११०३	नंदकल्याण	जयकल्याण	२२४	१८७१	१०२०	१६२०
३०	११६२	जिनचंद्र	जिनभद्र	२३५	१६२३	१३५६	१३७६
"	"	जिनभद्र	जिनचंद्र	२४४	१६६०	१४२५	१४६५
३६	११६५	द्वाराविजय	हीरविजय	२६५	२०३६	पावापुपी	पावापुपी
५४	१२८७	जिनचंद्र (१)	जिनभद्र	प्रतिष्ठा स्थान (उधमण)	२०७०		२०७६
६०	१३१७	"	"	" (चारकबाण)	२०५२		२०६१
८२	१४१५	जिनराज	जिनहर्ष	" (च्यारकबाण)	२०५३		२०६२
११६	१५१२	१८२४	१६२४	" (दौलतीबाद)	२०४८		२०५८

वीर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

काल नं०

२८३ नाए

लेखक

जाहर, पूर्णचन्द्र।

शीर्षक

जेन ~~विशाल~~ संग्रह।